

प्रस्तावना और रूप रेखा

वर्ष 2000-2001 के दौरान पिछले 2 वर्षों की अनेक पहलकदमियाँ सफल हुई और भारत ने न केवल एशिया में अपितु विश्व में बहुत बड़े भाग पर शान्ति, स्थायित्व, सुरक्षा और संतुलन के एक कारक के रूप में अपनी स्थिति दर्शाते हुए प्रमुख शक्तियों और अन्य मित्रों तथा साझीदारों के साथ अपने संबंध और मजबूत किए। भारत-यूरोपीय संघ के पहले शिखर-सम्मेलन और गंगा-मेकांग सहयोग परियोजना के शुभारम्भ इन दोनों क्षेत्रों के साथ अपने संबंधों में आई परिपक्वता के स्तर को प्रतिलिखित करते हुए इन क्षेत्रों के देशों के साथ मिलकर कार्य करने के लिए नए स्रोत खोले। राष्ट्रपति श्री के. आर. नारायणन की चीन यात्रा और नेपाल के प्रधानमंत्री, श्री लंका के राष्ट्रपति तथा चीन की नेशनल पीपुल्स कांग्रेस और म्यामां की राज्य शान्ति और विकास परिषद् के उपाध्यक्ष की यात्राओं ने ऐसे पड़ोसी देशों के साथ भारत के द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत किया जिनका ऐतिहासिक, सभ्यता मूलक और भौगोलीय महत्व है। संयुक्त राष्ट्र संघ में सहस्राब्दि शिखर-सम्मेलन को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने नई बहुध्रुवीय स्थिति के प्रति भारत के दृष्टिकोण का उल्लेख किया। अमरीका की उनकी यात्रा ने विश्व के दो बड़े लोकतान्त्रिक देशों के बीच उनके द्वारा बनाई गई वार्ता रूप-रेखा को व्यवहार में लाते हुए परस्पर क्रिया-कलापों की असाधारण स्थिति को प्रतिबिम्बित किया। रूस के राष्ट्रपति की भारत यात्रा के फलस्वरूप रूस के साथ पारम्परिक रूप से घनिष्ठ और एक-दूसरे को मजबूती प्रदान करने वाले सामरिक संबंधों को नई गति मिली। आस्ट्रेलिया और जापान के प्रधानमंत्रियों और मोरक्को के शाह, अल्जीरिया के राष्ट्रपति, कोलम्बिया के राष्ट्रपति और मारीशस के प्रधानमंत्री की भारत यात्राएं विश्व भर में भारत के राजनयिक क्रिया-कलापों के ज्वलन्त उदाहरण हैं। संयुक्त राष्ट्र के चार्टर के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने में भारत ने फिजी में लोकतन्त्र और संविधान की बहाली के लिए अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के प्रयास का नेतृत्व किया और सियरा लियोन

और हार्न ऑफ अफ्रीका में संयुक्त राष्ट्र शान्ति प्रयासों में योगदान दिया। लोकतन्त्र के प्रति सार्वभौम प्रवृत्ति एक जनसंख्या वाले देश में लोकतान्त्रिक शासन की सफलता से पोषित हुई; साथ ही, अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय ने लोकतान्त्रिक प्रतिपक्ष, अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद की निर्णायक रूप से निन्दा की और उसे नामंजूर किया। भारत की आर्थिक व्यवस्था और विज्ञान और प्रौद्योगिकी की शक्ति और लचीले पन ने उसे व्यापार और निवेश में और ज्ञान आधारित अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग तथा नए उद्योगों में आकर्षक साझीदार बनाया। भारत की सांस्कृतिक विविधता और अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों ने इस क्षेत्र में मानव समाज के भण्डार को समृद्ध करने में योगदान दिया।

कतिपय अनिवार्य प्राथमिकताएं और उद्देश्यों को, जो भारत की विदेश नीति की जानकारी देते हैं, मौटे तौर पर नीचे दिए अनुसार संक्षिप्त रूप से दिया जा सकता है:

- भारत की क्षेत्रीय अखण्डता और संप्रभुता की रक्षा के लिए भारत की सामरिक स्थिति को प्रोन्नत करना और अपनी निर्णय करने वाली प्रक्रियाओं की स्वायत्तता की संरक्षा करना।
- एशिया और विश्व में शान्ति, स्थायित्व, सुरक्षा और सन्तुलन के कारक के रूप में भारत की भूमिका को और मजबूत करना।
- भारत के राष्ट्रीय हितों, प्राथमिकताओं, आकांक्षाओं और चिन्ताओं के लिए अन्तर्राष्ट्रीय समझबूझ और समर्थन हासिल करना तथा जहां संभव हो, सामूहिक उद्देश्य संवर्धन में अन्तर्राष्ट्रीय सह-क्रिया-कलापों का विकास करना।
- भारतीय उप-महाद्वीप में तथा अपने निकटतम पड़ोसी देशों में ऐसी परिस्थितियां बनना जिनसे भारत अपने संसाधन और ध्यान को विकासात्मक तथा आधारभूत क्रिया-कलापों में लगा सके।

- क्षेत्र में शान्ति और स्थायित्व को मजबूत करना और अपने पड़ोसियों के साथ मित्रता, सहयोग और परस्पर लाभकारी अन्तर-निर्भरता बढ़ाना। भारतीय उप-महाद्वीप में शान्ति के क्षेत्र का विस्तार करने में भारत सामान विचारों वाले देशों के साथ सहयोग करेगा ताकि अतिवाद, रूढ़िवाद और आतंकवाद की नकारात्मक घटनाओं को अलग-थलग करना और उन्हें पराजित करना।
- सभ्यतामूलक और ऐतिहासिक संबंधों और सशक्त समसामयिक संगतता के आधार पर भारत के नए पड़ोसी देशों के साथ सहयोग, मित्रता और विश्वास की प्रवृत्तियों को मजबूत करना। दक्षिण-पूर्व एशिया, खाड़ी और हिन्द महासागर क्षेत्र के देशों की वर्तमान समय में भारत के साथ शान्ति, स्थायित्व और विकास संवर्धन में सामुहिक रुचि है।
- द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ाने के लिए पी-5 देशों और अन्य प्रमुख शक्तियों के साथ काम करना तथा उनके साथ स्थायित्व, बातचीत और सहयोग की नई रूप-रेखा के आधार पर विश्व में शान्ति, स्थायित्व और बहु-ध्रुवीय व्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में काम करना।
- सभी देशों में लोगों की रचनात्मक प्रतिभाओं का उल्लेख करने के लिए लोकतन्त्र और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के उद्देश्य को संवर्धित करना और ऐसी अनुभूति बढ़ाना कि लोकतान्त्रिक शासन और प्रणालियाँ अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति स्थायित्व के अनिवार्य हिस्से हैं।
- विश्व में सभ्यतापरक सहिष्णुता और परस्पर क्रिया-कलाप बढ़ाना और सामूहिक कार्यवाही तथा अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों के माध्यम से मानव समाज की अभूतपूर्व सांस्कृतिक घोरेहर को उसकी समस्त विविधताओं और भव्यताओं के साथ संरक्षित रखना।
- समसामाजिक चुनौतियों के प्रति अन्तर्राष्ट्रीय सामूहिक दृष्टिकोणों को तैयार करने के लिए यू. एन. एन. ए. एम., ए. आर. एफ. आई. ओ. आर. - ए. आर. सी. आदि जैसे बहु-उद्देश्यीय संस्थानों और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों में अन्य देशों के साथ रचनात्मक कार्य करना।
- प्रौद्योगिकी के न्यायोचित हस्तान्तरण का सुनिश्चय करते हुए और विश्व के साथ सामान्य आर्थिक और वाणिज्यिक सम्पर्कों को मजबूत करते हुए विदेश व्यापार और निवेश संवर्धन के उद्देश्य के साथ आर्थिक राजनयता पर और ध्यान केन्द्रित करना और प्राथमिकता देना।

- भारत का आकार और अर्थव्यवस्था की रचनात्मक प्रवृत्ति अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और विकास की गति को मूर्त रूप देने में अग्रिम भूमिका निभाने के लिए हमें क्षमता प्रदान करती है।

बंगलादेश के साथ उच्च-स्तरीय क्रियाकलापों में जल-संसाधन, व्यापार और रक्षा के क्षेत्र शामिल हैं। जल के बंटवारे में सहयोग के सभी क्षेत्रों की समीक्षा के लिए संयुक्त नदी आयोग की 34वीं बैठक जनवरी, 2001 में हुई। इस बैठक के लिए तैयारी कार्य दोनों पक्षों की ओर से की गई महत्वपूर्ण द्विपक्षीय यात्राओं के माध्यम से हुआ था। दिसम्बर, 2000 में विदेश कार्यालय परामर्शों के फलस्वरूप अगरतला-ढाका बस सेवा शुरू करने पर सहमति, वाणिज्यिक अन्योन्य-क्रियाएं बढ़ाने के लिए उपायों की समीक्षा, वीजा व्यवस्थाओं का उदारीकरण और क्षेत्र में आतंकवाद के बढ़ने पर चिन्ताओं को समझने पर सहमति हुई। भारत और बंगलादेश के बीच भू-सीमा के रेखांकन और सम्बद्ध मसलों से संबंधित करार पर भी चर्चा हुई और बकाया मामलों पर बातचीत के लिए दो कार्यकारी दलों का गठन किया गया। गृह सचिव स्तर पर तथा बी एस एफ और बंगलादेश राइफल्स के बीच परस्पर क्रिया-कलापों के माध्यम से सीमा प्रबन्ध और सुरक्षा मामलों पर भी बातचीत हुई। दोनों देशों के बीच सड़क और रेल दोनों द्वारा संचार सम्पर्कों को बढ़ाने के लिए अनेक सहमतियाँ हुईं जो जनवरी, 2001 में भाड़े के लिए तीसरी बड़ी गेज की रेल लाइन का उद्घाटन करने के अवसर पर देखने को मिली। इसी प्रकार, सक्रिय सहयोग ने शिक्षा और तकनीकी प्रशिक्षण के क्षेत्रों को विशिष्ट बनाया जहाँ अनेक बंगलादेशी छात्र अपना अध्ययन कार्य कर रहे हैं।

भारत ने निरन्तर श्री लंका की एकता, संयुक्त और क्षेत्रीय अखण्डता और बातचीत के माध्यम से स्थायी शान्ति हासिल करने के एक मात्र तरीके के रूप में ऐसी शान्तिपूर्ण, राजनीतिक प्रक्रिया के प्रति अपनी वचनबद्धता को दोहराया है जो श्रीलंका के समाज के सभी तत्वों की आकांक्षाओं की पूर्ति करेगा। दो पड़ोसी देशों के बीच उच्च-स्तरीय सम्पर्क फरवरी, 2001 में श्री लंका के राष्ट्रपति की भारत यात्रा के कारण बने रहे। भारतीय नेताओं के साथ व्यापक बातचीत परस्पर विश्वास और समझबूझ के आधार पर घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखने के लिए दोनों देशों द्वारा दी गई उच्च प्राथमिकता को दर्शाती है। इससे पूर्व जून, 2000 में विदेश मंत्री ने श्री लंका में उभर रही परिस्थितियों का अध्ययन करने के लिए वहाँ का दौरा किया था तथा परस्पर स्वीकार्य शर्तों पर श्री लंका को 100 मिलियन अमरीकी डालर का ऋण देने की भारत की इच्छा व्यक्त की थी। श्री लंका के विदेश मंत्री ने भी दिसम्बर, 2000 में भारत की यात्रा की थी। दोनों देशों के मछुआरों को पेश आ रही परेशानियों को हल करने के लिए कई पहलकदमियाँ की गईं। भारत-श्री लंका मुक्त व्यापार करार, जो 1 मार्च, 2000 से प्रचालित हुआ, से

होने वाले लाभों के प्रचार में भी पर्याप्त गति मिली। कोलम्बो स्थित भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र तथा भारत-श्रीलंका फाउण्डेशन के कार्यों से सांस्कृतिक क्रिया-कलाप संवर्धित हुआ।

भारत और मालदीव के बीच उच्च स्तरीय यात्राओं के आदान-प्रदान तथा मालदीव के राष्ट्रपति मामून अब्दुल गयूम की अगस्त 2000 की भारत की राजकीय यात्रा से भारत और मालदीव के बीच घनिष्ठ, मैत्रीपूर्ण तथा तनाव रहित संबंधों में और अधिक प्रगाढ़ता आई। इससे पूर्व मालदीव के विदेश मंत्री ने मार्च, 2000 में नई दिल्ली में भारत-मालदीव संयुक्त आयोग के चौथे सत्र में भाग लिया था। रक्षा मंत्री ने 9-12 जनवरी, 2001 तक मालदीव की यात्रा की तथा वहाँ पर विस्तृत चर्चा की। दोनों देशों के तट रक्षकों के बीच लाभकारी क्रियाकलाप तथा संयुक्त अभ्यास भी हुए। दोनों देशों के बीच संसदीय तथा शैक्षिक आदान प्रदान भी हुआ।

म्यामां के साथ रचनात्मक कार्यों में सहयोग के क्षेत्रों को विस्तृत बनाने तथा दोनों देशों के बीच उच्च स्तरीय द्विपक्षीय आदान प्रदान की परम्परा को कायम करने पर जोर दिया गया। नवम्बर 2000 में म्यामां की राज्य शान्ति एवं विकास परिषद के उपाध्यक्ष जनरल मोंग अये ने भारत में उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया तथा आर्थिक सहयोग, व्यापार, सीमापार परियोजनाओं और गतिविधियों, अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद, नशीले पदार्थों के अवैध व्यापार, संस्कृति, मानव संसाधन विकास, विज्ञान और प्रौद्योगिकी एवं बी आई एम एस टी - ई सी तथा भारत- आसियान वार्ता भागीदारी के ढांचे के भीतर क्षेत्रीय सहयोग पर व्यापक चर्चा की। दोनों पक्ष भारत-म्यामां सीमा पर अमन और शान्ति बनाए रखने के लिए कदम उठाने पर सहमत हुए। विदेश मंत्री ने फरवरी 2001 में म्यामां का दौरा किया तथा तामू-केलेम्या-कालेवा राजमार्ग का उद्घाटन किया, इस राजमार्ग से दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंध बढ़ने की आशा है। विदेश मंत्री ने म्यामां के नेताओं के साथ परस्पर हित के सभी क्षेत्रों पर विचार विमर्श किया। अप्रैल 2000 में विज्ञान और प्रौद्योगिकी से संबद्ध भारत-म्यामां संयुक्त कार्यदल की (यांगून में) प्रथम बैठक हुई। नवम्बर 2000 में शीर्ष सैन्य अधिकारी म्यामां गए तथा म्यामां के गृह मंत्री भारत की यात्रा पर आए। दोनों देशों के बीच सीमा प्रबंधन मामलों पर नियमित संस्थागत वार्ता की गई। म्यामां के संस्कृति मंत्री की जनवरी-फरवरी 2000 की भारत यात्रा तथा भारत-म्यामां के बीच सांस्कृतिक करार सम्पन्न होने से दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक संपर्क भी सक्रिय हुए।

भारत ने अपने निकटतम पड़ोसी देशों के साथ अपनी ऐतिहासिक समानताएं बनाए रखीं। उत्तर में भारत-नेपाल संबंध भी घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण थे तथा दोनों देशों के बीच

गहन सामाजिक एवं लोगों से लोगों के बीच सम्पर्क कायम रहे। 31 जुलाई से 6 अगस्त 2000 तक नेपाल के प्रधानमंत्री श्री गिरिजा प्रसाद कोइराला भारत की सद्भावना यात्रा पर आए। दोनों देशों के बीच बेहतर सहयोग सुनिश्चित करने के लिए कई करार किए गए, इन करारों में बेहतर सीमा प्रबंधन तथा सीमावर्ती जिलों के विकास पर जोर दिया गया। जुलाई 2000 में गृह सचिव स्तरीय वार्ताओं में सुरक्षा के क्षेत्र में सहयोग संवर्धित करने को कहा गया। दोनों देशों के बीच यह समझबूझ थी कि दोनों में से कोई भी देश दूसरे देश पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाली गतिविधियों के लिए अपने क्षेत्र का इस्तेमाल करने की अनुमति नहीं देगा। जल संसाधन संबंधी संयुक्त समिति गठित की गई। विगत की भांति भारत ने नेपाल में बहुत सी विकास परियोजनाओं में सहायता देना जारी रखा।

भारत और भूटान के बीच संबंध परस्पर विश्वास, समझबूझ तथा घनिष्ठ मैत्रीपूर्ण संबंधों से जाना जाता है। दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग लगातार बढ़ा है तथा यह आर्थिक सहयोग द्विपक्षीय संबंधों के प्रसार में लगातार मजबूत आधारस्तम्भ बना हुआ है। द्विपक्षीय सहयोग के भाग के रूप में भारत 1961 से भूटान को उसकी पंचवर्षीय योजनाओं में वित्तीय सहायता प्रदान कर रहा है – आठवीं पंचवर्षीय योजना के लिए 900 करोड़ रुपये की सहायता अनुमोदित की गई है। विविध क्षेत्रों की जिन परियोजनाओं को भारत की सहायता से वित्त पोषित किये जाने का प्रस्ताव है उनमें जल विद्युत उत्पादन तथा पारेषण, सड़कें, पुल तथा सामाजिक आधारभूत परियोजनाएं शामिल हैं। भूटान के विदेश मंत्री अप्रैल 2000 में भारत की सद्भावना यात्रा पर आए। इस यात्रा से सभी क्षेत्रों में संबंधों की व्यापक समीक्षा करने का अवसर मिला। विदेश सचिव सहित भारत के कई उच्चाधिकारी भी भूटान की यात्रा पर गए।

विगत की भांति भारत पाकिस्तान के साथ शान्ति, मैत्रीपूर्ण तथा सहयोगात्मक संबंध स्थापित करने के प्रति वचनबद्ध रहा। भारत ने पाकिस्तान से दुष्प्रचार बन्द करने तथा शिमला करार एवं लाहौर घोषणा का पालन करने का आह्वान किया। तथापि पाकिस्तान ने कश्मीर में घुसपैठ संबंधी कार्यों को समर्थन देना जारी रखा तथा अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत के विरुद्ध निन्दापूर्ण प्रचार करना जारी रखा। वास्तव में पाकिस्तान आतंकवादी गुटों को लगातार उन्नत किस्म के हथियार एवं प्रशिक्षण दे रहा है जो कि एक अशुभ लक्षण है। जब कभी जम्मू और कश्मीर में शान्ति की पहल की जाती है, पाकिस्तान उसको लगातार ठेस पहुंचा रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय ने पिछले वर्ष पाकिस्तान द्वारा सीमापार आतंकवाद को अपनी राजनीति के हथियार के रूप में प्रयोग करने पर गौर किया है।

समझौता एक्सप्रेस तथा दिल्ली-लाहौर बस सेवा से यह सुनिश्चित हो सका कि दोनों

देशों के जनता सीमा पार अपने संबंधियों से सम्पर्क कर सके तथा व्यापार एवं तीर्थ यात्रा के प्रयोजन से यात्रा कर सके। दोनों देशों के सैन्य प्रचालकों के महानिदेशकों के बीच हाट-लाईन सम्पर्क कायम रहा तथा संवेदनशील सीमा प्रबंधन में लगे अर्ध-सैनिक बलों के प्रभारी दिन प्रतिदिन के मसलों को निपटाने के लिए मिले।

अफगानिस्तान में चल रहा लगातार संघर्ष भारत के लिए गहरी चिन्ता का विषय बना रहा। भारत का दृढ़ विश्वास था कि अफगान समस्या का कोई सैन्य समाधान नहीं हो सकता और यह कि अफगानिस्तान की स्वतंत्रता सम्प्रभुता, एकता तथा क्षेत्रीय अखण्डता की रक्षा की जानी चाहिए। अफगानिस्तान के मसले पर अमरीका के साथ संस्थागत बातचीत की प्रक्रिया इस दिशा में भारत की एक पहल है। रूस के साथ संयुक्त कार्यदल गठित करके उसके साथ इसी प्रकार प्रयत्नों में समन्वयन किया गया है।

वर्ष के दौरान ईरान के साथ सौहार्दपूर्ण तथा बहुआयामी सम्पर्क विकसित हुए। विदेश मंत्री ने मई 2000 में भारत-ईरान संयुक्त आयोग की 11वीं बैठक में भाग लिया। द्विपक्षीय सहयोग के अन्य क्षेत्रों में ईरान की प्राकृतिक गैस को भारत में भेजने के संबंध में महत्वपूर्ण पहल की गई। तेहरान में भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र स्थापित करने का भी निर्णय लिया गया। जुलाई 2000 में ईरान के उप विदेश मंत्री भारत की यात्रा पर आए तथा सभी बकाया मसलों, विशेष तौर पर अफगान समस्या पर चर्चा की।

इस वर्ष भारत दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ संबंध घनीभूत बनाने में लगा रहा। यह विश्व के इस भाग के प्रभावी आर्थिक निष्पादन की स्वीकृति के साथ-साथ इस क्षेत्र के साथ बहुआयामी भागीदारी विकसित करने की भारत की इच्छा का भी परिचायक है। इस क्षेत्र के देशों के साथ भारत के साथ हितों के कारण वर्ष में भारत ने इन देशों के साथ अलग-अलग तथा आसियान मंच पर लगातार घनिष्ठ संबंध बनाए।

पोखरन-II के बाद आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के साथ थोड़े समय के लिए मंद संबंधों के बाद मैत्रीपूर्ण संबंध नवीकृत हुए। जुलाई 2000 में आस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री की भारत यात्रा यह स्वीकारोक्ति थी कि देश और अधिक गहन क्रियाकलाप के इच्छुक हैं। दोनों देशों के बीच रक्षा सम्पर्कों के रास्ते खुले। न्यूजीलैंड और भारत के बीच आर्थिक संबंध संवर्धित हुए तथा दोनों देशों के आयात-निर्यात बढ़े। इस क्षेत्र के प्रभावशाली देशों के रूप में आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड फिजी में बंधक-प्रकरण के दौरान प्रमुख वार्ताकार देश थे।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए कम्बोडिया द्वारा भारत के दौरे का समर्थन व्यक्त करने की भारत ने प्रशंसा की। आशा है कि वियन्तियाने में मेकांग-गंगा कार्यक्रम पर वार्ता (नवम्बर 2000) के बाद सहयोग अधिक सुदृढ़ होगा।

इस वर्ष फिजी में सिविल विद्रोह के कारण पर्याप्त भयाकुलता का माहौल था। चूँकि विद्रोहियों ने बहुत से उच्चाधिकारियों (प्रधानमंत्री श्री चौधरी सहित) को बंधक बना लिया था, भारत ने बंधकों सहित फिजी में बड़ी संख्या में भारतीय समुदाय की सुरक्षा पर गहरी चिन्ता व्यक्त की। इस मसले पर आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के साथ परामर्श हुआ और प्रधानमंत्री चौधरी ने अपनी रिहाई के बाद उच्च राजनीतिक नेतृत्व में बातचीत करने के लिए भारत की यात्रा की। फिजी में जातीय राजनीति के इस पुनरावर्तिता पर भारत की चिन्ता जारी है। भारत गैर-भेदभावपूर्ण 1997 के संविधान की वापसी का समर्थन करता है और आशा करता है कि बहुलवादी तथा बहु-जातीय शर्तों की स्थापना शीघ्र हो जाएगी जहां भारतीय समुदाय अपने वैध अधिकारों का आनन्द उठा पाएंगे।

भारत और लाओस के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध इस वर्ष नवम्बर में उस समय और दृढ़ हुए, जब विदेश मंत्री ने मेकांग-गंगा सहयोग की आरंभिक मंत्रिस्तरीय बैठक के लिए लाओस की यात्रा की थी। इस यात्रा के दौरान भारत-लाओस संयुक्त आयोग की तीसरी बैठक सम्पन्न हुई। जिसमें व्यापार, निवेश और कृषि सहयोग के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण करार सम्पन्न हुए।

जनवरी 2001 में भारत के प्रधानमंत्री की यात्रा से वियतनाम के साथ भारतीय संबंधों को और गति मिली है। उनकी यात्रा के दौरान हनोई में संयुक्त व्यवसाय परिषद की बैठक सम्पन्न हुई तथा पर्यटन और नाभिकीय उर्जा के क्षेत्रों में करार सम्पन्न हुए। वियतनाम ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता हेतु भारत की उम्मीदवारी के लिए अपना समर्थन भी दिया। इससे पूर्व, नवम्बर 2000 में, विदेश मंत्री ने आर्थिक, वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग के लिए संयुक्त आयोग के 10वें सत्र के लिए वियतनाम की यात्रा की।

जनवरी 2001 में भारत के प्रधानमंत्री की यात्रा से इस वर्ष इंडोनेशिया के साथ द्विपक्षीय सम्बन्ध और सुदृढ़ हुए हैं। जकार्ता में संयुक्त व्यवसाय परिषद की एक बैठक हुई और रक्षा, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी, कृषि और संस्कृति के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण करार सम्पन्न हुए। प्रधानमंत्री ने इंडोनेशिया की प्रादेशिक अखण्डता के लिए भारत के समर्थन को पुनः दोहराया जबकि इंडोनेशिया पक्ष ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद हेतु भारत की उम्मीदवारी के लिए अपना समर्थन व्यक्त किया।

वर्षों से मलेशिया के साथ लाभप्रद आदान-प्रदान रहा है और अक्टूबर 2000 में भारत-मलेशियाई संयुक्त आयोग का दूसरा सत्र सम्पन्न हुआ। इस सत्र में संबंधों को और सुदृढ़ करने के तरीकों की व्यापक रूप से जांच की गई, जिसके परिणामस्वरूप व्यापार

और सांस्कृतिक आदान-प्रदान में सम्बद्ध करार सम्पन्न हुए। जुलाई 2000 से, मलेशिया भारत के आसियान के साथ परस्पर बातचीत करने के लिए एक समन्वयक देश भी है।

थाईलैंड के साथ संबंध सौहार्दपूर्ण रहे हैं। आर्थिक वाणिज्यिक और सांस्कृतिक सम्पर्क उच्च स्तरीय यात्राओं के आदान-प्रदान के माध्यम से और सुदृढ़ हुए। बी आई एम एस टी - ई सी में भारत की सदस्यता से इस सहयोग को और गति मिली है। और इसमें मेकांग-गंगा पहल के आरंभ किए जाने की संभावना है। इस वर्ष में द्विपक्षीय व्यापार में यथेष्ट वृद्धि हुई है।

इस वर्ष के दौरान भारत से सिंगापुर और सिंगापुर से भारत तक महत्वपूर्ण यात्राओं का क्रम जारी रहा। विदेश मंत्री ने जून 2000 में सिंगापुर की यात्रा की और भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री के. आर. नारायणन ने नवम्बर 2000 में राजकीय यात्रा की। सूचना प्रौद्योगिकी और आर्थिक क्षेत्र में समझौता ज्ञापन सम्पन्न होने के साथ वाणिज्यिक पारस्परिक क्रिया में वृद्धि हुई है।

दक्षिण-पूर्व एशिया के अन्य देशों के साथ संबंध समान रूप से सौहार्दपूर्ण और सहयोगी रहे हैं। प्रशान्त द्वीप देशों के साथ, भारत का व्यापार परिणामक शर्तों में कम रहा लेकिन गुणात्मक दृष्टि से श्रेष्ठ रहा।

भारत और चीन ने राजनयिक संबंधों की स्थापना की अर्द्ध-शताब्दी मनाने के समय आगामी शताब्दी में दोनों अत्यधिक लोकप्रिय देशों द्वारा निभाए जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिका को परस्पर मान्यता दी। इसके लिए, भारत और चीन दोनों ने परस्पर विश्वास और भरोसे की भावना को बढ़ाने के लिए इच्छा जाहिर की है। वे इस बात से सहमत हुए हैं कि सीमा मसले पर मतभेदों को दूर करने के लिए संयुक्त-कार्यकारी दल और विशेषकर दल की एक प्रभावी संस्थागत तंत्र का गठन करें। उन्होंने उन समान हितों पर भी जोर दिया जिससे सम्पूर्ण एशिया में स्थिरता पनपे और यह स्वीकार किया कि द्विपक्षीय बातचीत राष्ट्रों के बीच सभी बकाया विवादों को निपटाने का एक श्रेष्ठ साधन है।

आठ वर्षों के अन्तराल के बाद मई-जून 2000 में भारत के राष्ट्रपति ने चीन की यात्रा की। सरकारी स्तर के सहयोग को बढ़ाने की वचनबद्धता के अलावा दोनों पक्षों ने प्रसिद्ध व्यक्तियों का एक दल बनाया। चीनी पक्ष से, सबसे पहले विदेश मंत्री ने जुलाई, 2000 में यात्रा की। इसके बाद सीमा की पुष्टि की प्रक्रिया को तेज करने के लिए एक करार सम्पन्न हुआ। नए वर्ष के शुरू में, नेशनल पीपुल्स कांग्रेस की स्थायी समिति के अध्यक्ष ली पेंग ने भारत की यात्रा की। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि चीन भारत को कभी भी खतरे के रूप में नहीं देखता बल्कि दोनों देशों के बीच अच्छे पड़ोसी संबंधों की इच्छा व्यक्त की है। सीमा प्रश्न से सम्बद्ध संयुक्त कार्यकारी दल ने बारहवीं बैठक

की और दोनों पक्ष नक्शों के परस्पर आदान-प्रदान पर सहमत हुए। सीमा मसले के अलावा दोनों देशों ने परस्पर हित के मसलों के सम्पूर्ण वर्णक्रम पर भी बातचीत की। वर्ष के दौरान-सरकारी और गैर-सरकारी दोनों के साथ सभी उच्च स्तरों पर परस्पर बातचीत हुई। इसके साथ कई महत्वपूर्ण मंत्रिस्तरीय यात्राएं हुईं और सशस्त्र सेनाओं के बीच आदान-प्रदान आरंभ हुए। भारत-चीन व्यापार में भी अच्छी प्रगति देखी गई।

परम्परागत सांस्कृतिक सम्पर्कों और दृढ़ आर्थिक संबंधों से भारत-जापान के संबंध मजबूत और दृढ़ हुए। इन प्राकृतिक संबंधों में और वृद्धि तब हुई जब प्रधानमंत्री ने अगस्त 2000 में जापान की यात्रा की। द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ाने और सूचना प्रौद्योगिकी के नए क्षेत्रों में इस भागीदारी की संभावना को स्थापित करने के लिए कई महत्वपूर्ण पहलुओं पर सहमति हुई। भारतीय पक्ष से भी महत्वपूर्ण मंत्रिस्तरीय यात्राएं की गईं जिसमें जून, 2000 में रक्षा मंत्री की यात्रा शामिल है, और इनमें द्विपक्षीय सुरक्षा वार्ता पर सार्थक विचार-विमर्श करने की अनुमति दी गई। आर्थिक रूप से व्यापार प्रवाह लोचदार रहा और इस वित्तीय वर्ष के उतरार्द्ध में लगभग 1987 मिलियन डालर रहा।

भारत और मंगोलिया ने जनवरी 2001 में मंगोलियाई राष्ट्रपति की राजकीय यात्रा के साथ सौहार्दपूर्ण और बहुफलकीय राजनयिक संबंधों के 45 वर्ष मनाए। मंगोलिया ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भारत के दावे के लिए अपने समर्थन को व्यक्त किया। और राज्य-प्रायोजित तथा सीमा पार आतंकवाद के विरुद्ध बहुपक्षीय प्रयास के लिए भारत की मांग को दोहराया।

भारत में उदारीकरण अभियान से कोरिया गणराज्य के साथ आर्थिक पारस्परिक-क्रिया में वृद्धि हो रही है। यह संबंध कोरिया गणराज्य के विदेश और व्यापार मंत्री की यात्रा से और सुदृढ़ हुए। भारत ने कोरियाई प्रायद्वीप में इस समय चल रही समाधान प्रक्रिया के लिए अपना समर्थन दिया। नवम्बर, 2000 में, सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग के लिए दोनों देशों के बीच एक समझौता ज्ञापन सम्पन्न हुआ। कोरिया लोकतांत्रिक लोक गणराज्य के साथ संबंध मैत्रीपूर्ण रहे। उप विदेश मंत्री की यात्रा से विदेश कार्यालयों के बीच परामर्श हुए। सांस्कृतिक मंच पर कलात्मक प्रदर्शन और फिल्म समारोहों के आयोजन के साथ-साथ महत्वपूर्ण परस्पर बातचीत भी हुई।

सदियों से मध्य एशियाई क्षेत्र और भारत के आर्थिक, वाणिज्यिक और सांस्कृतिक सम्पर्कों के साथ सभ्यता के सम्पर्क सदैव रहे हैं। मध्य एशियाई देशों के स्वतंत्र राष्ट्रों के रूप में उद्भव से, उनमें जीवाश्म ईंधन भंडारों की खोज और भारत तथा उनमें अन्तर्राष्ट्रीय और सीमा पार आतंकवाद जैसी समान समस्याओं के उत्पन्न होने में भारत के लिए और आवश्यक हो गया कि वह उनको भी शामिल करें। अपनी ओर से, भारत

इन राष्ट्रों के विकास प्रयास में सहायता के लिए लाभकारी तकनीकी विशेषज्ञता उपलब्ध करा सकता है। परिणाम स्वरूप वर्ष के दौरान सभी मंचों पर पहल, सम्पर्क और सुदृढ़ संबंधों का नवीकरण करने का संयुक्त प्रयास है।

बाकू में नए मिशन खुलने से भारत की अजरबैजान में कार्यात्मक उपस्थिति हुई है और वह भारतीय हितों और सूचना प्रसार के लिए सक्रिय अनुसरण कर रहा है। कजाकस्तान के साथ संबंध सौहार्दपूर्ण हैं और एशिया में कजाक ने पारस्परिक क्रिया और विश्वासोत्पादक उपायों पर सम्मेलन में भारतीयों की सक्रिय भागीदारी से लाभ उठाया। आर्थिक सहयोग का झुकाव भी बढ़ता गया। किर्गीजस्तान के साथ राजनीतिक, वाणिज्यिक और सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में सम्पर्क बने हुए हैं। यह सब किर्गीज विदेश नीति विभाग के अध्यक्ष द्वारा की गई महत्वपूर्ण यात्रा से प्रमाणित होता है।

भारत ताजिकिस्तान के साथ कई क्षेत्रीय सुरक्षा हितचिन्ता का आदान-प्रदान करता है। जिससे दोनों विदेश कार्यालयों के बीच व्यापक परामर्शों से लाभ प्राप्त होता है। इसी प्रकार उसने अपनी हित चिन्ता का आदान-प्रदान तुर्कमेनिस्तान के साथ भी किया जब तुर्कमेन विदेश मंत्री ने अप्रैल 2000 में भारत की यात्रा की थी।

मध्ययुगीन स्मरणीय व्यक्ति बैरम खान की 500वीं वर्षगांठ ने दोनों देशों को पीछे मुड़कर अपनी एक समान ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत को देखने का अवसर दिया।

इस वर्ष के दौरान, टर्की के साथ उच्च स्तरीय यात्राओं के आदान-प्रदान के कारण द्विपक्षीय सम्बन्ध सक्रिय बने रहे। मार्च-अप्रैल 2000 में टर्की के प्रधानमंत्री की अत्यधिक सफल राजकीय यात्रा से यह स्पष्ट हुआ। राजनीतिक, कृषि तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के लिए विशिष्ट करार सम्पन्न किए गए। आर्थिक सहयोग, विशेषकर उसके अवसंरचनात्मक विकास क्षेत्र के प्रति भी वचनबद्धता दर्शायी गयी।

मई 2000 में उजबेक राष्ट्रपति ने भारत की यात्रा की और इससे दोनों देशों को अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद और विश्व में धार्मिक असहिष्णुता के बढ़ने से सम्बद्ध मामले पर समान हित-चिन्ताओं का पुनरीक्षण करने का अवसर मिला। कई आशाजनक करार भी सम्पन्न हुए।

भारत पश्चिमी एशिया और उत्तरी अफ्रीका में घट रही घटनाओं के प्रति सचेत रहा। इस क्षेत्र के खाड़ी देशों में बड़ी संख्या में भारतीय प्रवासी कामगार बसे हैं और यह भारत में ऊर्जा आपूर्ति का मुख्य स्रोत है। भारत ने मध्य पूर्वी शान्ति प्रक्रिया की दीर्घकालिक और अस्वाभाविक प्रगति को भी लगातार मॉनीटर किया।

भारत-इराक संयुक्त आयोग का 14वां सत्र नवम्बर 2000 में दिल्ली में हुआ और

इसके पश्चात्, इराक के उप-राष्ट्रपति की यात्रा हुई। रसायन तथा प्राकृतिक गैस मंत्रालय के प्रतिनिधियों के साथ महत्वपूर्ण बैठकें हुई, और भारत ने इराक के लिए 'आईटेक' की सीटें बढ़ा दीं। वर्ष के प्रारम्भ में, विदेश राज्य मंत्री श्री अजीत कुमार पांजा ने दोनों देशों के बीच निकटतम संबंधों को बढ़ाने के उद्देश्य से इराक की यात्रा की।

मानव संसाधन विकास मंत्री की महत्वपूर्ण यात्रा और दो भारतीय नौसैनिक जहाजों की सद्भावना यात्रा से कुवैत के साथ हमारे पारम्परिक सौहार्द के सम्बन्ध बने रहे। विदेश राज्य मंत्री ने भी जुलाई 2000 में कुवैत की यात्रा की और महत्वपूर्ण विशिष्ट व्यक्तियों से मिले।

भारत-ओमान संयुक्त आयोग का तीसरा सत्र अप्रैल 2000 में हुआ। ओमान के विदेश संबंधी मामलों के मंत्री जुलाई 2000 में भारत आए। एक भारत-ओमान सामरिक परामर्शदात्री दल बनाया गया और आई ओ आर - ए आर सी पहल पर उपयोगी विचार-विमर्श हुआ।

इस वर्ष, भारत और बहरीन के बीच पारम्परिक मित्रतापूर्ण सम्बन्ध और मजबूत हुए तथा उनमें विविधता आई। बहरीन के परिवहन मंत्री अप्रैल 2000 में भारत की यात्रा पर आए।

प्राकृतिक गैस व्यापारीकरण के क्षेत्र में भारत और कतर के सम्बन्ध आवश्यक सामंजस्य के कारण लगातार उपयोगी बने रहे। इसे अक्टूबर 2000 में कतर के ऊर्जा, उद्योग, विद्युत तथा जल मंत्री की यात्रा से और आगे बढ़ाने में मदद मिली।

यमन के साथ मई 2000 में संयुक्त वाणिज्यिक परिषद करार के पुनः नवीकरण से उसके साथ हमारे सौहार्दपूर्ण सम्बन्धों को दर्शाते हैं।

सऊदी अरब के साथ भारत के महत्वपूर्ण संबंध इस वर्ष और भी प्रगाढ़ हुए। रसायन एवं प्राकृतिक गैस मंत्री ने अन्तर्राष्ट्रीय ऊर्जा मंच में भाग लेने के लिए नवम्बर, 2000 में सऊदी अरब की यात्रा की। वहां सितम्बर 2000 में भारतीय समान की एक उपयोगी व्यापार प्रदर्शनी हुई। सऊदी अरब में 1.5 मिलियन दृढ़ भारतीय कामगारों के कारण सऊदी अरब में सबसे अधिक प्रवासी समुदाय बना रहा और दोनों देशों के बीच निकट संबंधों की महत्ता बनी रही। भारत से एक लाख से अधिक हाजिरों ने हज यात्रा की जिससे दोनों देशों के बीच यात्रा से सम्बन्धित तैयारी के लिए समन्वय रखा गया। जनवरी 2001 में, माननीय विदेश मंत्री के स्तर पर प्रथम बार सऊदी अरब की यह पहली यात्रा की थी।

भारत तथा संयुक्त अरब अमीरात के बीच महत्वपूर्ण यात्राओं का दौर रहा, जिससे

पारम्परिक निकट संबंधों को और अधिक सुदृढ़ करने में सहायता मिली। अप्रैल 2000 में संयुक्त अरब अमीरात के सूचना एवं संस्कृति मंत्री ने और सितम्बर 2000 में अमीरात एअरलाइन के अध्यक्ष ने भारत की यात्रा की। मई 2000 में प्रत्यर्पण तथा आपसी विधिक सहायता से सम्बद्ध संधि के अनुसमर्थन दस्तावेजों का आदान-प्रदान किया गया। भारत के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री ने जून 2000 में दुबई में वाणिज्यिक प्रतिनिधियों की एक बैठक की अध्यक्षता की। भारतीय उद्योग परिसंघ के एक शिष्टमंडल की मई 2000 में संयुक्त अरब अमीरात की यात्रा से इस विशिष्ट आर्थिक भागीदारी को और अधिक गति मिली।

इस वर्ष मिस्र के साथ पारम्परिक संबंधों की प्रगति शानदार भलीभांति रही। जी-15 शिखर सम्मेलन जून 2000 को काहिरा में सम्पन्न हुआ और भारत के उपराष्ट्रपति ने उसमें भाग लिया। भारत के वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री ने सितम्बर 2000 में “इंडियाटेक” प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

जोर्डन के विदेश मंत्री दिसम्बर 2000 में भारत की यात्रा पर आए। परामर्शों के दौरान, द्विपक्षीय सहयोग और साथ ही मध्य पूर्व में स्थिति से सम्बद्ध सभी क्षेत्रों पर चर्चा हुई। अक्टूबर 2000 में सफल प्रदर्शनी के साथ आर्थिक सहयोग भी बढ़ा, विशेषरूप से वस्त्र के क्षेत्र में।

लेबनान की क्षेत्रीय अखण्डता के लिए भारत के पारम्परिक समर्थन से दोनों देशों के बीच वर्तमान मित्रता तथा विश्वास को ठोस आधार मिला।

लीबिया के साथ आर्थिक अन्योन्य क्रियाओं के बढ़ने से, उसके साथ सम्बन्ध भी सौहार्दपूर्ण बने रहे। जुलाई 2000 में विदेश मंत्री की लीबिया की यात्रा ने मैत्री की इस समझ-बूझ को पुनः दोहराने का अवसर दिया।

भारत ने फिलीस्तीन को राजनीतिक, नैतिक तथा सामग्री के रूप में सहायता देना जारी रखा। भारत ने मध्य पूर्व शान्ति प्रक्रिया स्थापित करने पर अपनी चिंता से अवगत कराया और इस बात पर कायम रहा कि इस क्षेत्र में न्यायसंगत, दीर्घकालिक और व्यापक शान्ति केवल यू एन एस सी संकल्प 242 और 338 के आधार पर ही स्थापित हो सकती है। राष्ट्रपति यासिर अराफात अगस्त 2000 में दिल्ली आए। भारतीय पक्ष की ओर से भी कई महत्वपूर्ण यात्राएं हुईं, जिनमें गृह मंत्री तथा विदेश मंत्री की यात्राएं भी शामिल हैं।

इस वर्ष, इजरायल के साथ मैत्री, आपसी सूझबूझ और सहयोग के द्विपक्षीय संबंध मजबूत हुए। जून 2000 में गृह मंत्री ने आतंकवाद का मुकाबला करने से सम्बद्ध कार्यकारी दल का नेतृत्व किया। इसके पश्चात्, विदेश मंत्री ने भी इजरायल की यात्रा

की और मंत्रिस्तरीय संयुक्त आयोग पर अपनी सहमति देकर द्विपक्षीय वार्ता के लिए सुदृढ़ आधार बनाया। इजरायल के क्षेत्रीय सहयोग मंत्री ने निकटतम आर्थिक सम्बन्धों को बनाए रखने तथा भारत को मध्यपूर्व शान्ति प्रक्रिया के विषय में सूचित करने के लिए इस वर्ष दो बार भारत की यात्रा की।

अप्रैल 2000 में विदेश राज्य मंत्री की यात्रा से सूडान के साथ द्विपक्षीय सहयोग को प्रोत्साहन मिला। विभिन्न व्यापक क्षेत्रों में करारों के लिए भारत-सूडान संयुक्त आयोग की दूसरी बैठक की सह-अध्यक्षता की।

इस वर्ष स्वर्गीय राष्ट्रपति हाफेज अल असद के निधन पर भारत ने सीरिया को अपना शोक प्रकट किया। अन्तर्दृष्टि में भारत का प्रतिनिधित्व मानव संसाधन विकास तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री ने किया। अन्य महत्वपूर्ण यात्राओं में, संयुक्त व्यापार समिति के चौथे सत्र के लिए एक उच्च स्तरीय शिष्टमंडल जुलाई 2000 में नई दिल्ली आया।

विदेश राज्यमंत्री ने अप्रैल 2000 में भारत-ट्यूनिशियाई संयुक्त आयोग की प्रथम बैठक की सह-अध्यक्षता ट्यूनिस में की। ट्यूनिशिया के विदेश मंत्री ने दिसम्बर 2000 में भारत की यात्रा की और उपयोगी वार्ताओं के कई दौर हुए।

इसी प्रकार मोरक्को के साथ संबंध सौहार्दपूर्ण और प्रगतिशील हैं जिसमें दोनों देशों के आपसी लाभ के क्षेत्रों में सहयोग बढ़ रहा है।

जून, 2000 में भारत-अल्जीरिया संयुक्त आयोग की अल्जीरिया में बैठक हुई। बाद में अक्टूबर, 2000 में विदेश मंत्री की यात्रा से दोनों देशों को और निकट आने में सहायता मिली। इस प्रक्रिया की पराकाष्ठा के रूप में अल्जीरिया के राष्ट्रपति जनवरी, 2001 में भारत की यात्रा पर आए और वे गणतंत्र दिवस परेड में मुख्य अतिथि थे।

परिवर्तनशील अफ्रीका ने भारत और अफ्रीका दोनों देशों के आपसी लाभ के लिए सहयोग तथा अन्योन्यक्रिया के लिए नए क्षेत्र प्रदान किए। इससे इस वर्ष संबंध उत्तरोत्तर मजबूत हुए। बेनिन के विदेश मंत्री, बोत्स्वाना के एक बड़े व्यवसाय शिष्टमंडल तथा केमरून, मेडागास्कर एवं कीनिया के सांसदों के शिष्टमंडलों की भारत की महत्वपूर्ण यात्राएं हुईं। एरीट्रिया तथा इथोपिया के बीच संघर्ष दोनों देशों के भारत के और निकट आने अथवा घोर अकाल का मुकाबला करने में उन्हें सहायता प्रदान करने से भारत को रोक नहीं पाए। मोजाम्बिक को भी सहायता उस समय दी गई जब वह बाढ़ तथा तूफान के प्रकोप का सामना कर रहा था। सेनेगल की पहली गैर-समाजवादी सरकार ने भारत के साथ वाणिज्यिक संबंध सुदृढ़ करने की अपनी रुचि जाहिर की। अक्टूबर, 2000 में संयुक्त आयोग की 5वीं बैठक के बाद सेशेल्स के साथ भी शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग

बढ़ाया गया, सेशेल्स के शिक्षा मंत्री की यात्रा से इस सहयोग को प्रोत्साहन मिला। तंजानिया, उगाण्डा और जाम्बिया के साथ भी सौहार्द्रपूर्ण संबंध बने रहे।

मारीशस के साथ रक्षा, आर्थिक तथा शिक्षा के क्षेत्रों में संबंधों में वृद्धि जारी रही। सर अनिरुद्ध जगन्नाथ के नेतृत्व में नई साझी सरकार द्वारा कार्यभार सम्भालने के बाद यह विशेष मित्रता बनी। मारीशस के विदेश मंत्री जनवरी, 2001 में भारत की यात्रा पर आए तथा प्रधानमंत्री सर अनिरुद्ध जगन्नाथ उसी महीने के अन्त में भारत की यात्रा पर आए।

अफ्रीका में भारत के सबसे बड़े व्यापार भागीदार नाईजीरिया ने भारत के साथ पेट्रोलियम क्षेत्र में एक और करार सम्पन्न किया। भारत की लोकतांत्रिक संस्थाओं का आभार प्रकट करने के लिए नाईजीरिया ने अपनी नेशनल एसेम्बली के 360 सदस्यों को लोकसभा सचिवालय में प्रशिक्षण प्राप्त करने का निर्णय लिया। वाणिज्य तथा उद्योग राज्यमंत्री ओमार अब्दुल्ला अक्टूबर, 2000 में नाईजीरिया की उपयोगी यात्रा पर गए।

सियरा-लियोन में, भारत ने उस बहु-राष्ट्रीय दल में भाग लिया जो उत्तरोत्तर बढ़ती हुई हिंसा को रोकना चाहता है। इस वर्ष कुछ तनाव दिखाई दिया क्योंकि विद्रोहियों ने कुछ भारतीय सैनिकों को बन्दी बना लिया था तथा बाद में उन्हें विवेकपूर्ण ढंग से छुड़ा लिया गया। सितम्बर, 2000 में भारत ने इस कार्रवाई से अपने सैनिकों को चरणबद्ध रूप से हटाना शुरू कर दिया।

आई ओ आर - ए आर सी के संस्थापक सदस्य के रूप में अपनी आर्थिक मजबूती तथा स्थिति के कारण दक्षिण अफ्रीका भारतीय परिप्रेक्ष्य में इस क्षेत्र में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण देशों में एक देश बना रहा। पिछले वर्ष में व्यापार में अच्छी गति से बढ़ोतरी जारी रही और सितम्बर, 2000 में रक्षा मंत्री की यात्रा से रक्षा सहयोग को प्रोत्साहन मिला।

भारत के यूरोपीय महाद्वीप के साथ सौहार्द्रपूर्ण और परस्पर लाभकारी संबंध बने रहे। शीतयुद्ध तनावों में कमी आने तथा पूर्वी और पश्चिमी यूरोप में एक समान राजनीतिक आर्थिक व्यवस्थाओं को अपनाने से आज भारत राष्ट्र के उदार लोकतांत्रिक मानदण्डों की व्यापक प्रशंसा हुई है। यह नयी शताब्दी के पावरहाउस के रूप में भारत की आर्थिक क्षमता की एक झलक दिखाता है। अधिकांश यूरोपीय राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद से होने वाले खतरों पर भारत के सापेक्ष महत्व में भागीदार हैं तथा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भारत की दावेदारी की वैधता को महसूस करते हैं।

जून, 2000 में सम्पन्न सबसे पहले भारत-यूरोपीय संघ शिखर-सम्मेलन जिसमें प्रधानमंत्री के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल ने भाग लिया था, यह भाव परिलक्षित हुआ। भारत और यूरोपीय संघ का उद्देश्य राजनीतिक, आर्थिक और वाणिज्यिक क्षेत्रों में सक्रिय सहयोग करके “सामरिक भागीदारी” तैयार करना है। भारत ने बड़ी अभिलाषा के साथ यूरोपीय संघ के प्रस्तावित विस्तार योजनाओं की निगरानी कर रहा है तथा साझे विदेश और सुरक्षा नीति के मसलों को शामिल करने के लिए उसके कार्यक्रम में परिवर्तनों का सुझाव दिया है। यूरोपीय समुदाय के विदेश संबंधी कमिशनर जनवरी, 2001 में भारत की यात्रा पर आए। भारत-यूरोपीय संघ गोलमेज जो गैर-सरकारी प्रतिष्ठित व्यक्तियों का एक मंच है, की शुरुआत की गई। आतंकवाद से सम्बद्ध एक संयुक्त कार्य दल पर भी सहमति हुई।

भारत राष्ट्रमंडल की परिधि के अन्तर्गत आने वाले सभी मंचों में सक्रिय रूप से भाग लेता रहा है जिसमें न्यूयार्क में सितम्बर, 2000 को राष्ट्रमंडल उच्चस्तरीय दल की शिखर बैठक में भाग लेने के लिए विदेश मंत्री ने भारतीय शिष्टमंडल का नेतृत्व किया। इससे पहले अप्रैल में राष्ट्रमंडल महासचिव भारत की यात्रा पर आए।

भारत और फ्रांस के बीच घनिष्ठ संबंधों को अप्रैल, 2000 में भारत के राष्ट्रपति की फ्रांस की राजकीय यात्रा से तरौताजा किया गया। दोनों देशों ने ‘सामरिक भागीदारी’ की ओजस्विता को दोहराया तथा द्विपक्षीय निवेश को संवर्धित करने के लिए महत्वपूर्ण करार प्रवृत्त किए। आर्थिक सहयोग से सम्बद्ध भारत-फ्रांस संयुक्त समिति के सत्र के सिलसिले में वाणिज्य और उद्योग मंत्री की यात्रा से आर्थिक संबंध और अधिक मजबूत हुए। संयुक्त कार्य दलों की उच्च सम्भावना वाले क्षेत्रों पर ध्यान देने की योजना है। आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए घनिष्ठ अन्योन्यक्रिया हेतु तौर-तरीकों की जांच करने के लिए गृह मंत्री भी फ्रांस की यात्रा की गए। रक्षा सहयोग से सम्बद्ध संयुक्त उच्चसमिति के तत्वावधान में तथा द्विपक्षीय सामरिक वार्ता के तत्वावधान में तथा द्विपक्षीय सामरिक वार्ता जिसके छठे दौर की बैठक जनवरी-फरवरी, 2001 को सम्पन्न हुई, के जरिए रक्षा तथा सुरक्षा सहयोग जारी रहा। मई, 2000 में फ्रांस के रक्षा मंत्री की भारत यात्रा से इसे गति मिली।

यूनाईटेड किंगडम के साथ भारत के ऐतिहासिक संबंध इसे हार्दिक तथा लाभकारी भागीदारी में बांधते हैं। सभी मंचों पर सहयोग के लिए कार्यात्मक संस्थागत संरचना से समय की कसौटी पर खरी उतरने वाली मैत्री का लाभ मिला। विस्तारित संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भारत की दावेदारी के प्रति यू. के. को सहानुभूति है।

द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ाने की दोनों देशों के निर्धारित आशय से वर्ष 2000 की पहली छमाही में वाणिज्यिक यातायात में एक तिहाई बढ़ोतरी हुई। पिछले वर्ष से भारत और यू.

के. ने अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद, नशीली दवाओं तथा हथियारों के गैर-कानूनी व्यापार और धार्मिक असहिष्णुता को बढ़ावा देने के आपसी चिन्ता के मसलों के रूप में मान्यता दी है जिनके लिए राजनीतिक तथा आधिकारिक स्तरों पर घनिष्ठ समन्वय की आवश्यकता है। आतंकवाद तथा नशीली दवाओं के गैर-कानूनी व्यापार से सम्बद्ध संयुक्त कार्यदल की पहली बैठक जनवरी, 2001 में हुई। अप्रैल 2000 में यू. के. के विदेश मंत्री ने भारत की महत्वपूर्ण यात्रा की। भारत और यू. के. के दोनों देशों की इस भागीदारी की महत्ता पर जोर दिया और सहयोग के लिए एक रचनात्मक मंच के रूप में भारत-यू. के. गोलमेज का उद्घाटन किया।

विदेश मंत्री मई, 2000 और फिर नवम्बर में यू. के. की यात्रा पर गए। दिसम्बर, 2000 में ब्रिटिश सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फार डिफेंस तथा जनवरी, 2001 में ब्रिटिश सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फार ट्रेड एण्ड इंडस्ट्री की अन्य महत्वपूर्ण द्विपक्षीय यात्राएँ हैं। संसदीय तथा गैर-सरकारी आदान-प्रदानों को भी सक्रिय रूप से जारी रखा गया।

जर्मनी भारत का महत्वपूर्ण आर्थिक भागीदार बना रहा तथा यूरोपीय संघ में उसके महत्व को देखते हुए भारत इसे कई सार्वभौम मसलों में प्रमुख वार्ताकार मानता है। इस वर्ष जर्मन विकास सहायता पुनः शुरू होने के साथ-साथ सामरिक वार्ता प्रक्रिया की संस्थापना हुई। मई, 2000 तथा दुबारा सितम्बर में डिप्टी चांसलर एवं जर्मन के विदेश मंत्री की भारत यात्रा से द्विपक्षीय संबंधों के समस्त पहलुओं की समीक्षा की गई। इससे दोनों देशों के बीच एक प्रगतिशील आदर्श वक्तव्य अपनाया गया। 2001 के शुरू में भारतीय राजदूतावास के नए परिसर का उद्घाटन करने के सिलसिले में विदेश मंत्री बर्लिन की यात्रा पर गए। आर्थिक संबंध महत्वपूर्ण बने रहे तथा अप्रैल, 2000 में वित्त मंत्री की जर्मनी की यात्रा की। इस यात्रा से इसे और बल मिला। पिछले वर्ष जर्मनी ने सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत की विशाल कुशल मानवशक्ति का उपयोग करने की अपनी अभिरूचि भी व्यक्त की।

प्रधानमंत्री जून, 2000 में इटली की यात्रा पर गए और इस दौरान हुई वार्ता से सभी क्षेत्रों में घनिष्ठ सहयोग को बढ़ावा मिला विशेषकर अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद का मुकाबला करने तथा पर्यटन को बढ़ावा देने में, अन्य महत्वपूर्ण आदान-प्रदानों में नवम्बर, 2000 में इटली के विदेश मंत्री की भारत यात्रा है।

आतंकवाद की धमकी की चिन्ता के एक साझे भाव को देखते पश्चिमी यूरोप के अन्य देशों के साथ संबंधों में समान प्रगतिशील गति रही, उदीयमान भारतीय अर्थव्यवस्था के साथ विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में निकटतर संबंधों के सम्भावित लाभों की सराहना हुई।

पूर्वी यूरोप के देशों के साथ कई वर्षों से भारत के घनिष्ठ तथा मैत्रीपूर्ण संबंध हैं। संस्कृति तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सुस्पष्ट सक्रिय अन्योन्यक्रिया हुई। तथापि, हाल में इस संबंध के आर्थिक पहलू को भी उसी उत्साह से जारी रखा जा रहा है।

सोवियत संघ का भावी राज्य होने के नाते रूस भारतीय विदेश नीति में एक विशेष स्थान रखता है। पिछला वर्ष रूस के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति की अक्टूबर, 2000 की भारत की राजकीय यात्रा का द्योतक है। इस यात्रा के दौरान द्विपक्षीय सहयोग के सभी सम्भावित क्षेत्रों से सम्बद्ध करार सम्पन्न हुए। दोनों देशों ने आगामी 'सामरिक भागीदारी' के लिए एक लाभकारी रूपरेखा तैयार की। रूस ने कश्मीर विवाद को हल करने के संबंध में द्विपक्षीय वार्ता के जरिए भारत के दृष्टिकोण का समर्थन किया तथा वह इस बात के लिए भी सहमत हुआ कि भारत संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए स्पष्ट दावेदार है। राष्ट्रपति की यात्रा के अलावा, जून, 2000 में विदेश मंत्री की यात्रा सहित शीर्ष स्तर पर क्रियाकलाप के लिए कई अवसर मिले।

पूर्वी यूरोप के अन्य देशों के साथ संबंधों में स्पष्ट रूप से सुधार आया। अनेक सौहार्दपूर्ण आदान-प्रदान और दौरें हुए – आर्मेनिया के विदेश मंत्री, बुल्गारिया के रक्षा मंत्री, क्रोएशिया के उप प्रधानमंत्री और रूमानिया के रक्षा मंत्री इस क्षेत्र के कुछ महत्वपूर्ण उच्चाधिकारी थे जिन्होंने इस वर्ष भारत की यात्रा की। ये देश आतंकवाद, संयुक्त राष्ट्र के सुधार अथवा लोकतंत्र के महत्व पर भारतीय दृष्टिकोण के प्रति अपने समर्थन में लगभग एकमत थे।

इस वर्ष देखी गयी और महत्वपूर्ण प्रवृत्तियों में अमरीका के साथ भारत का वृहत्तर क्रियाकलाप था। वस्तुतः भारत-अमरीकी संबंधों के लिए सुधार के लिहाज से यह वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा क्योंकि दोनों सहज भागीदारों ने व्यापक और बहुपक्षीय संबंधों के बिल्कुल नये दौर में प्रवेश किया। दोनों देशों में लोकतंत्र और व्यक्तिगत स्वतंत्रता जैसे मूल्यों की अन्तर्निहित समानता एक साझे वैश्विक दृष्टिकोण की दिशा में उन्हें समेकित करने में सहायक सिद्ध हुई। हाल में भारत और अमरीका के बीच बढ़ रहा आर्थिक क्रियाकलाप भी संबंधों के आपसी लाभकारी संवर्द्धन की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रेरक शक्ति रहा है। निश्चित ही बढ़ रही इस अन्तर-निर्भरता का सबसे स्पष्ट संकेत अमरीका में अत्यन्त ही सफल भारतीय समुदाय की महत्वपूर्ण भूमिका से मिलता है।

दोनों पक्षों ने उत्तरोत्तर बढ़ रही इस मैत्री को यथासंभव शानदार तरीके से निभाया – एक ही वर्ष में राजकीय यात्राओं का आदान-प्रदान करके। मार्च 2000 की अमरीकी राष्ट्रपति की भारत यात्रा के दौरान एक "आदर्श वक्तव्य" दिया गया जिसमें इस बात का उल्लेख है कि दोनों देश नई सदी की ओर समान ढंग से देखते हैं। आपसी हित के

सभी मामलों पर विचारों के नियमित आदान-प्रदान के लिए एक संस्थागत तंत्र भी बनाया गया है। इसमें शिखर-सम्मेलन स्तर पर और साथ ही अन्य राजनैतिक तथा आधिकारिक स्तरों पर आवधिक वार्ता शामिल हैं। प्रस्तावित वार्ता में संयुक्त राष्ट्र शांति रक्षा और अफगानिस्तान की स्थिति सहित आपसी हित के सभी मसलों को शामिल किया जाएगा।

सितम्बर 2000 में प्रधानमंत्री ने अमरीका की यात्रा की और वे 106वें कांग्रेस की संयुक्त बैठक को संबोधित करने वाले एकमात्र विदेशी नेता बन गये। उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण रात्रिभोज और स्वागत समारोहों में भाग लिया तथा चिंतको और भारतीय समुदाय के उच्च राजनीतिज्ञों और अधिकारियों के साथ बैठकें की। इस यात्रा से उत्तरोत्तर क्रियाकलाप की प्रक्रिया को और बढ़ावा मिला।

दोनों देश यह स्वीकार करते हैं कि आज संपूर्ण विश्व में लोकतांत्रिक शक्तियाँ महत्वपूर्ण हो गयी हैं और सुस्थापित तथा जीवंत लोकतंत्रों के रूप में भारत और अमरीका की इच्छा है कि वे इन शक्तियों को सहायता प्रदान करें। वे सार्वभौमिक तथा राज्य समर्थित आतंकवाद के उदय से समूचे सम्य समाज और विशेषकर लोकतंत्र के समक्ष आये खतरों को भी स्वीकार करते हैं। इन खतरों को प्रभावपूर्ण तरीके से चुनौती दी जा सकती है यदि दोनों महान लोकतंत्र इसका सामना मिलजुल कर करें। भारत और अमरीका ने एशिया के सामरिक स्थायित्व पर बल दिया और यह माना कि संबंधित राज्यों के प्रयासों से ही इसे सर्वोत्तम तरीके से सुनिश्चित किया जा सकता है।

आतंकवाद के क्षेत्र में कनाडा के साथ लाभकारी क्रियाकलाप हुआ। आतंकवाद से संबद्ध संयुक्त कार्यकारी दल की बैठक फरवरी 2000 में हुई थी जिसमें आतंकवादी गुटों से संबंधित जानकारी का आदान-प्रदान किया गया। भारत के पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री ने जून, 2000 में काल्गरी में आयोजित विश्व पेट्रोलियम कांग्रेस की 16वीं बैठक में एक शिष्टमंडल का नेतृत्व किया।

लातिन अमरीकी और कैरीबियाई देशों के साथ भारत के संबंध हमेशा ही अच्छे रहे हैं। विश्व के समक्ष आये विभिन्न मसलों पर भारत और इस क्षेत्र के देश अपने आप को एक ही ओर पाते हैं, इसके अतिरिक्त गुट-निरपेक्ष आंदोलन के मंच पर इनके बीच घनिष्ठ क्रियाकलाप है। इस क्षेत्र में भारतीय संस्कृति के प्रति पर्याप्त सम्मान और जानकारी है। हालांकि यह महसूस किया गया है कि इन संबंधों की आर्थिक क्षमता का पूर्व उपयोग नहीं किया गया जिसके फलस्वरूप इसे सुधारने के कई प्रयास किये गए लातिन अमरीका की व्यापार प्रदर्शनियों में निर्यात सवर्द्धन परिषदों और वाणिज्यिक घरानों की भागीदारी बढ़ी है। इससे एक दूसरे की आर्थिक क्षमता और तुलनात्मक लाभों के प्रति समझबूझ बढ़ी है और इससे निकट भविष्य में व्यापार प्रवाह बढ़ने की संभावना है। इस

प्रयास के एक भाग के रूप में भारत एम ई आर सी ओ एस यू आर के साथ एक कार्यकारी संस्थागत संबंध बनाने के लिए प्रयास कर रहा है। इस वर्ष के दौरान अनेक द्विपक्षीय यात्राएं हुईं जिनमें अगस्त 2000 में विदेश मंत्री की अर्जेन्टिना तथा ट्रिनिडाड और टोबैगो की यात्राएं भी शामिल हैं। वाणिज्य और उद्योग मंत्री ने भी इस क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण दौरा किया जिससे उपयोगी आर्थिक क्रियाकलाप के लिए एक संरचना बनाने में सहायता मिली। पेरू और उरूग्वे के साथ प्रथम विदेश कार्यालय स्तर परामर्शों के आरंभ होने के साथ ही इस क्षेत्र के कुछ देशों के साथ नये संपर्क बनाये गये।

इसी वर्ष के आरंभ में विदेश मंत्री ने निर्गुट आंदोलन के विदेश मंत्रियों के मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए अप्रैल 2000 में कार्टाजेना, कोलंबिया का दौरा किया। उसी माह हवाना में आयोजित जी-77 दक्षिण शिखर सम्मेलन के लिए भारतीय शिष्टमंडल का नेतृत्व मानव संसाधन विकास मंत्री ने किया।

भारत का मानना है कि चूंकि संयुक्त राष्ट्र में अनेक देश शामिल हैं इसलिए अधिकतर विश्वजनीन मसलों के समाधान के लिए यह एक उपयुक्त मंच है। तथापि भारत का विश्वास है कि इस विश्व निकाय में आवश्यक सुधार लाने की आवश्यकता है ताकि यह संपूर्ण विश्व का वैध प्रवक्ता बन सके। इसी कारण भारत ने संयुक्त राष्ट्र के सभी मंचों पर सक्रिय भागीदारी की और इसके अपेक्षित पुनर्गठन की वकालत की। संयुक्त राष्ट्र पर पुनः ध्यान केन्द्रित करने और इसका पुनर्गठन किये जाने के आह्वान को अधिकतर देशों के प्रतिनिधियों का समर्थन मिला। अनेक राष्ट्र इस बात पर भी सहमत थे कि भारत के आकार, लोकतंत्र के प्रति इसके बेदाग रेकार्ड, इसकी आर्थिक संभावनाओं और संयुक्त राष्ट्र शांति रक्षा कार्यों में इसके योगदान को देखते हुए भारत सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनने के सर्वथा योग्य है।

सार्वभौमिक निरस्त्रीकरण के मसले पर देश अपने इस अटल दृष्टिकोण पर कायम रहा कि भारत का सुरक्षा हित किसी भी पहल के लिए अंतिम कसौटी है। पूर्व के अनुरूप ही इस बात पर बल दिया गया कि नाभिकीय शस्त्र विहीन विश्व में ही सर्वोत्तम तरीके से हमारे सुरक्षा हित सुरक्षित रह सकते हैं और नाभिकीय निरस्त्रीकरण के लिए कोई सार्वभौमिक और भेद-भाव रहित व्यवस्था बनाने में भारत आगे रहेगा।

जैसा कि प्रमुख भागीदारों के साथ द्विपक्षीय सुरक्षा वार्ता होती रही और अनेक अन्य देशों के साथ भी शुरू हुई, इस ठोस कदम की पर्याप्त समझ-बूझ के साथ सराहना की। भारत अन्तर्राष्ट्रीय निरस्त्रीकरण वाद-विवाद में सक्रिय रूप से भाग लेता रहा, उदाहरणार्थ, 55वें संयुक्त राष्ट्र सहस्राब्दि सामान्य महासभा में निरस्त्रीकरण पर सम्मेलन संबंधी एक नया स्थायी मिशन स्थापित किया गया।

माननीय मानव संसाधन विकास और विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्री ने अप्रैल 2000 में हवाना में संपन्न विकासशील देशों की अब तक की पहली शिखर सम्मेलन स्तरीय बैठक का नेतृत्व किया। भारत ने इन चर्चाओं में प्रमुख भूमिका निभाई। जून, 2000 में काहिरा में संपन्न जी-15 शिखर सम्मेलन में भारतीय शिष्टमंडल ने भारत के उपराष्ट्रपति के नेतृत्व में भाग लिया और नए विश्व व्यापार संगठन दौर, विश्व व्यापार संगठन के तहत विकासशील देशों की विशेष और विभेदक आवश्यकताएं और सार्वभौमिक वित्तीय संरचना को पुनर्जीवित करने जैसे मसलों पर भारत के दृष्टिकोण के रेखांकित करने में सहायता की। भारत ने क्षेत्रीय सहयोग से संबद्ध हिन्द महासागर संगठन जिसके तहत वह चार परियोजनाओं में शामिल है, आनी सक्रिय भागीदारी जारी रखी। मंत्रालय कृषि से संबद्ध विश्व व्यापार संगठन करार के संबंध में सरकार के प्रस्तावों का अन्तिम रूप देने से संबद्ध चल रहे अन्तर-मंत्रालयी परामर्श में सक्रिय रूप से शामिल रहा। विभिन्न बहुपक्षीय बैठकों में, भारत ने विशेषरूप से गैर-तटकर प्रतिबन्धों के माध्यम से विकासशील देश निर्यातों पर लगाए गए प्रतिबन्धों को विश्व व्यापार संगठन करारों में विद्यमान असमानताओं का उल्लेख किया। भारत ने जुलाई 2000 में 33वें पश्च मंत्रिस्तरीय सम्मेलन (पी एम सी) में आसियान के एक पूर्ण संवाद भागीदार के रूप में भाग लिया। भारतीय शिष्टमंडल के प्रमुख के रूप में, विदेश मंत्री ने अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रवाहों और विकास के लिए सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग का विनियमन करने में शीघ्र कार्रवाई पर जोर दिया। पश्च मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में, भारत, कम्बोडिया, वियतनाम, थाईलैंड, म्यामां और लाओ पी डी आर ने पर्यटन, संस्कृति शिक्षा और परिवहन तथा संचार में सहयोग के लिए भी मेकांग-गंगा सहयोग पहल की भी घोषणा की। एम जी सी का लाओ पी डी आर में विएनत्येन में नवम्बर 2000 में औपचारिक सूत्रपात किया। भारत का अप्रैल 2000 में नई दिल्ली में व्यापार मंत्रियों की बैठक में भाग लेने के साथ बी आई एम एस टी - ई सी सक्रिय भागीदारी जारी रही तथा जुलाई 2000 में नई दिल्ली में तीसरी बी आई एम एस टी - ई सी मंत्रिस्तरीय बैठक, जिसमें भारत ने इस उप-क्षेत्रीय समूह की अध्यक्षता ग्रहण की थी।

ढांचागत, ऊर्जा दूरसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे प्रमुख क्षेत्रों में विशेष रूप से भारत में प्रमुख विदेशी निवेश (एफ डी आई) के प्रवाह को प्रेरित करने संबंधी संगठित प्रयास किए गए। मंत्रालय के निवेश प्रौद्योगिकी संवर्धन प्रभाग ने भारतीय मिशनों और केन्द्रों के माध्यम से संवर्धन और प्रचार प्रयासों की अगुवाई की। भारत के बारे में निवेशक सूचनाओं के मिशनों से नियमित जानकारी प्राप्त हुई।

सभी प्रमुख शक्तियों, परम्परागत भागीदारों और अन्य वार्ताकारों तथा फिजी और सिएरा लियोन में संयुक्त राष्ट्र शान्ति कार्रवाईयों के घटनाक्रम द्वारा प्रस्तुत चुनौतियों के

प्रत्युत्तर में भारत की सक्रिय भागीदारी के अनुरूप, विदेश प्रचार प्रभाग विदेश नीति और अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा मसलों से संबद्ध भारत के दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते और उसका खुलासा करने के लिए विदेश नीति प्रबंधन का एक सक्रिय माध्यम रहा। समान रूप से, विदेश प्रचार प्रभाग ने हमारी विदेश नीति गत प्राथमिकताओं कि अनुरूप कई वृत्त-चित्रों को चालू करने, एक अद्यतन वेबसाइट को संजोए रखने, विदेश स्थित भारतीय पुस्तकालयों के लिए पुस्तकों की आपूर्ति करने, 'इन्डिया पर्सपेक्टिव' मासिक पत्रिका और महत्वपूर्ण घटनाओं और शान्ति बनाए रखने, अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय मीडिया की मॉनीटरिंग मंत्री और अन्य अधिकारियों की यात्राओं के लिए मीडिया से संबद्ध गतिविधियों का प्रबंधन जैसे मसलों पर आवधिक खण्डों का प्रकाशन भी करने का कार्य किया।

विदेशों की यात्रा पर जाने वाले अधिकाधिक भारतीयों और विदेशों में कार्यरत भारतीयों की संख्या को देखते हुए, कौंसली सेवाओं का महत्व आकस्मिक ढंग से बढ़ा है। विगत की अपेक्षा पासपोर्टों की मांग में भी बहुत अधिक बढ़ोतरी हुई है। नागरिकों के लिए प्रभावकारी और तत्काल सेवा प्रदान करने के लिए इन दिशाओं में कम्प्यूटरीकरण सहित उपयुक्त सुधार जारी रहे। भारतीय मूल के लोगों (पी आई ओ) कार्ययोजना जिसे और आकर्षित तथा लोकप्रिय बनाने के लिए इसको सरल और कारगर बनाने संबंधी उपायों पर भी विचार किया जा रहा है।

विशाल और सफल प्रवासी समुदाय की क्षमताओं के दोहन के प्रयत्न में तथा उनकी बेहतर सेवा करने के लिए, एक अपर सचिव की अध्यक्षता में अप्रैल 2000 में एक पृथक एन आर आई पी आई ओ प्रभाग का गठन किया गया। यह सैल विदेशी भारतीयों से संबंधित सभी मसलों के संबंध में केन्द्र बिन्दु के रूप में कार्य करेगा। भारतीय डायसपोरा से संबद्ध एक उच्च स्तरीय समिति जो उन मसलों का अध्ययन करने तथा एक उपयुक्त नीतिगत रूपरेखा की सिफारिश करने के लिए जो एन आर आई भारतीय मूल के लोगों का देश के विकास संबंधी प्रयासों में सहभागिताओं सुविधाजनक बनाएं, सितम्बर 2000 में गठन भी किया गया। दिसम्बर, 2000 में भारतीय डायसपोरा से संबद्ध एक विशेष वेबसाइट का उद्घाटन किया गया। जनवरी 2001 में, प्रधानमंत्री ने नई दिल्ली में भारतीय मूल के लोगों के एक विश्व संगठन का उद्घाटन किया।

भारतीय तकनीकी तथा आर्थिक सहयोग कार्यक्रम तथा विशेष राष्ट्रमंडल अफ्रीकी सहायता योजना के तहत एशिया, अफ्रीका, लातिन अमरीका, पूर्वी यूरोप, मध्य एशिया, खाड़ी तथा प्रशान्त द्वीप समूह देशों में 144 विकासशील देशों को सहायता का प्रस्ताव किया। इन कार्यक्रमों ने भारत की साख बढ़ाई और इसके घरेलू कौशल और विशेषज्ञता की छवि को बढ़ाया। इन कार्यक्रमों की वर्तमान मांग के उत्तर में, वर्ष 2000-2001 के

बजट में 42.5 करोड़ रुपये की वृद्धि की गई। इस सहायता में गैर सैनिक और सैन्य प्रशिक्षण, परियोजना से संबद्ध सहायता, विशेषज्ञों की प्रति नियुक्तियाँ और वरिष्ठ अधिकारियों की अध्ययन यात्राएं शामिल हैं।

मंत्रालय अपने कार्यालय के तथा विदेश स्थित मिशनों/केन्द्रों में हिन्दी का उपयोग बढ़ाने के लिए अपने प्रयासों में दृढ़ रहा। सभी महत्वपूर्ण दस्तावेज द्विपक्षीय संधियाँ, समझौते ज्ञापन, प्रत्यय पत्र राष्ट्रपति के भाषण मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट और संसदीय प्रश्न द्विभाषिक रूप में जारी हुए। हिन्दी की राजभाषा के रूप में घोषणा का स्वर्ण जयन्ती वर्ष होने के कारण, मिशनों में विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। विदेश स्थित मिशनों में राजदूतावास के बच्चों और अन्य अधिकारियों को पढ़ाने के लिए सात हिन्दी अधिकारियों की नियुक्ति की गई। विदेश स्थित 67 मिशनों के लिए 'लीप-आफिस' हिन्दी साफ्टवेयर उपलब्ध कराया गया।

नीति योजना और अनुसंधान प्रभाग ने राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और उनके अधीन संस्थाओं तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों में स्थित क्षेत्रीय अध्ययन केन्द्रों, शैक्षिक संस्थाओं के लिए सम्मेलन और संगोष्ठियाँ आयोजित करने के लिए दी जा रही वित्तीय सहायता, दस्तावेज तैयार करने, विद्वानों का आदान-प्रदान तथा ट्रेक-II राजनय को बढ़ावा देने से संबंधित क्रिया-कलापों के लिए नोडल बिन्दु के रूप अपनी भूमिका निभाई। पी पी और आर प्रभाग ने जब कभी अपेक्षित हुआ, प्रदेशिक प्रभागों के लिए सभी संभव सहायता भी उपलब्ध कराई। मंत्रालय के पुस्तकालय में आधुनिकीकरण का कार्य, जो इस प्रभाग के पूर्ण नियंत्रण के अधीन कार्य करता है, जारी रहा।

1 सितम्बर, 2000 को इंडियन कौंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स (आई सी डब्ल्यू ए) अध्यादेश 2000 प्रख्यापित किया गया। अध्यादेश के जरिए इंडियन कौंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स को राष्ट्रीय महत्व की संस्था घोषित किया और इसके गठन और इसमें संबद्ध मामलों की व्यवस्था है। 5 जनवरी, 2001 इस अध्यादेश को पुनः प्रख्यापित किया गया। शैक्षिक/अनुसंधान संस्थाओं से संबंधित कार्यों का एक नोडल प्रभाग के रूप में, पी पी और आर प्रभाग आई सी डब्ल्यू ए के लिए सरकारी वित्त पोषण और इसके परिसर की मरम्मत के कार्यों का निरीक्षण तथा परिषद की सामान्य गतिविधियों की शीघ्र शुरुआत के लिए, नियंत्रण करता है।

विदेश सेवा संस्थान ने नियमित मोडूलों के जरिए मंत्रालय के कार्मिकों, अधिकारी और कर्मचारियों को प्रशिक्षण का अपना कार्य जारी रखा। वित्त वर्ष के दौरान विदेशी

राजनयिकों के लिए 25वें व्यावसायिक पाठ्यक्रम भी पूरे कर लिए हैं। संस्थान के कम्प्यूटर केन्द्र ने कम्प्यूटरों की जानकारी और होन कौशल को बढ़ावा देने के लिए विदेश मंत्रालय अधिकारियों से संबंधित कई पाठ्यक्रम संपन्न किए।

मंत्रालय का विदेश प्रचार प्रभाग संपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय मसलों पर सरकार के दृष्टिकोण का प्रसार करने संबंधी नोडल स्रोत है। नियमित प्रेस भेंटवार्ता, वृत्त-चित्र दिखाकर, मंत्रालय वेबसाइट को संजोए रखकर, विदेशों में भारतीय प्रभाग को और अपने स्वयं के दृश्य, श्रव्य-दृश्य सामग्री भेजकर, और मीडिया से संबद्ध गतिविधियों का समन्वय करने के जरिए, प्रभाग देश के भीतर तथा देश के बाहर भारतीय हितों को बढ़ाया है।

मंत्रालय के विधि और संधि प्रभाग ने विदेशी विधिकर मंचों पर भारत के विदेशी हितों का बचाव करते हुए और उन्हें विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय संधियों तथा करारों में प्रतिष्ठापित करते हुए अपने सामान्य कर्तव्य को निभाया। विशेष रूप से, इस प्रभाग के विधि विशेषज्ञों ने उन प्रयासों में योगदान किया जिसके फलस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय को यह निर्णय करने कि 1999 में भारतीय वायु सेना द्वारा उसके नाविक वायुयान को गिराए जाने के संबंध में पाकिस्तानी शिकायत संबंध में फैसला करने का कोई क्षेत्राधिकार नहीं है।

भातीय सांस्कृतिक संबंध परिषद ने प्रदर्शनियां आयोजित करते हुए, विदेशी छात्रों को छात्रवृत्तियां प्रदान करते हुए और संगोष्ठियों और मंचीय कलाओं के प्रदर्शनों की मेजबानी द्वारा देश के लिए एक सांस्कृतिक राजदूत के रूप में कार्य करते हुए अपने कर्तव्य का निष्पादन किया। भारतीय कलात्मक और सांस्कृतिक विरासतों में निरन्तर बढ़ती हुई सार्वभौमिक रुचि को देखते हुए, परिषद के क्रिया-कलाप विश्व के लोगों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ने का एक सबसे उत्तम मार्ग साबित हुआ।

मंत्रालय में आन्तरिक रूप में, गैर योजना व्यय को घटाने के उद्देश्य से कार्य बल को तर्कसंगत बनाने के लिए तथा ट्रेक II राजनय को भी प्रोत्साहित करने के रूप में अधिकाधिक कार्य कुशलता प्राप्त करने के लिए और शिक्षाविदों, विद्वानों और बुद्धिजीवियों के साथ अधिकाधिक क्रिया-कलाप करने के लिए विश्व मामलों की भारतीय परिषद जैसी संस्थाओं को पुनर्जीवित करने के लिए उपाय किए गए। भारत ने गुजरात के भूकंप प्रभावित क्षेत्रों के लिए भारी राहत सामग्री में विश्व समुदाय की स्वाभाविक भावना की हार्दिक रूप से सराहना की और उसे कृतज्ञता पूर्वक स्वीकार भी किया।



भारत के पड़ोसी देश

अफगानिस्तान

अफगानिस्तान में जारी संघर्ष इसके फलस्वरूप चल रही उठा-पटक, जिसका सुरक्षा सहित भारत के राष्ट्रीय हितों पर प्रभाव पड़ता है, पर भारत की चिन्ता बनी रही। अतः भारत ने अफगानिस्तान की परिवर्तनशील स्थिति पर कड़ी नजर रखी। अफगानिस्तान में तालिबान नियन्त्रित क्षेत्र आतंकवाद के प्रमुख स्रोत और विश्व में अफीम के उत्पादन और स्वापकों की अवैध व्यापार के बड़े स्रोत रहे जिससे पूरे क्षेत्र की शान्ति और स्थायित्व को गंभीर खतरा बना रहा। भारत अपने इस विश्वास पर अडिग रहा कि अफगानिस्तान समस्या का कोई सैन्य समाधान नहीं हो सकता और यह कि अफगानिस्तान की स्वतन्त्रता, संप्रभुता, एकता और क्षेत्रीय अखण्डता को बचाया जाना चाहिए।

वर्ष 2000 के जुलाई से सितम्बर महीनों में अफगानिस्तान में तेज लड़ाई होती दिखाई दी। जुलाई, 2000 में तालिबान ने शुमाली के समतल इलाकों और बागराम हवाई अड्डे पर आक्रमण किया। अगस्त में ताखर प्रदेश पर कब्जा करने के लिए अनेक जगह से आक्रमण किए और बागलान प्रदेश में ताहरीन तथा ताखर प्रदेश में ईसकामिस को कब्जे में लेने में सफलता पाई। 5-6 सितम्बर, 2000 को एक अन्य आक्रमण में तालिबान ने काल और ताखर प्रदेश की राजधानी तालोकान शहर पर भी कब्जा कर लिया। बाद में तालिबान ने खाजागहर, हजारबाग और इमामसाहिब (कुन्डूज में) के महत्वपूर्ण कस्बों पर भी अपना कब्जा कर लिया। कमाण्डर मसूद ने अक्टूबर के मध्य में जवाबी आक्रमण किया और तालोकान शहर को छोड़कर सभी महत्वपूर्ण कस्बों को तालिबान से वापस ले लिया।

भारत अपनी सुरक्षा चिन्ताओं और अफगानिस्तान में चल रही गतिविधियों से प्रभावित अपने राष्ट्रीय हितों पर चर्चा करने में सक्रिय रहा। इस मुद्दे पर मार्च, 2000 में अमरीका के राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की भारत की यात्रा के दौरान चर्चा हुई थी और बाद में सितम्बर, 2000 में प्रधानमंत्री की अमरीका की यात्रा के दौरान चर्चा हुई। भारत, अमरीका और अफगानिस्तान के संबंध में अपनी द्विपक्षीय चर्चाओं को संस्थागत रूप देने पर सहमत हुए। अफगानिस्तान की स्थिति पर रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की भारत यात्रा के दौरान भी चर्चा हुई थी। भारत और रूस अफगानिस्तान पर अपनी कोशिशों को समन्वित करने पर और अफगानिस्तान पर एक संयुक्त कार्यकारी दल बनाने पर सहमत हुए। संयुक्त कार्यकारी दल की पहली बैठक 20-21 नवम्बर, 2000 को हुई।

लड़ाई के जारी रहने और फलस्वरूप नागरिकों के कष्टों को ध्यान में रखते हुए हम अफगानिस्तान को द्विपक्षीय और संयुक्त राष्ट्र के माध्यम से मानवीय सहायता दे रहे हैं। चालू वित्तीय वर्ष के दौरान हमने अफगानिस्तान को अब तक 33.5 लाख रुपये की दवाएं भेजी हैं।

ईरान

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान भारत ईरान के साथ अपने बहुपक्षीय संबंधों को बढ़ाने में लगा रहा। विदेश मंत्री ने भारत-ईरान संयुक्त आयोग की 11वीं बैठक में भारतीय प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व करने के लिए 20 से 23 मई, 2000 तक ईरान की यात्रा की। द्विपक्षीय सहयोग की पूरी स्थिति की समीक्षा की गई और कुछ नए क्षेत्र निर्धारित किए

गए। एक महत्वपूर्ण घटना में दोनों देशों ने ईरान के तेल और गैस भण्डारों और भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं के अनुसार ऊर्जा के क्षेत्र में प्राकृतिक पूरकताओं के होने को स्वीकार किया। इस संदर्भ में भारत को ईरान की गैस भेजने में राजनैतिक, आर्थिक और तकनीकी सभी पहलुओं पर विचार करने के लिए एक संयुक्त समिति की स्थापना का निर्णय लिया गया। अपनी ईरान यात्रा के दौरान विदेश मंत्री ने ईरान के राष्ट्रपति सैयद मोहम्मद खतामी, विदेश मंत्री डा. कमल खर्जाजी, वाणिज्य मंत्री और तेल मंत्री के साथ भी बातचीत की जिनमें सभी द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा हुई। राष्ट्रपति खतामी ने राष्ट्रपति के. आर. नारायणन और प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को ईरान यात्रा के लिए आमंत्रित किया। ईरान के उप विदेश मंत्री मोहसेन अमीजादेह अफगानिस्तान पर विशेष ध्यान देते हुए द्विपक्षीय और क्षेत्रीय मुद्दों पर चर्चा के लिए 18-20 जुलाई, 2000 तक भारत यात्रा पर आए।

भारत को ईरानी गैस के वितरण पर संयुक्त समिति की पहली बैठक 19-20 अगस्त, 2000 को तेहरान में हुई। इस बैठक में दोनों पक्षों ने विभिन्न विकल्पों के माध्यम से भारत को ईरानी गैस भेजे जाने के मुद्दे पर चर्चा की और उसका मूल्यांकन किया। इस समिति की दूसरी बैठक 22-23 नवम्बर, 2000 को नई दिल्ली में हुई। दोनों बैठकों में भारतीय शिष्टमण्डल का नेतृत्व सचिव (पूर्व) ने किया और ईरानी पक्ष का नेतृत्व ईरान के आर्थिक कार्यों के उप विदेश मंत्री डा. एस.एम.एच. अदेली ने किया। भारत और ईरान समान लागत विभाजन आधार पर “गहरे समुद्री मार्ग” पर व्यवहार्यता अध्ययन आरंभ करने पर सहमत हुए।

23 मई, 2000 को वर्ष 2000-2002 के लिए एक नए सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर हस्ताक्षर हुए। 20-23 मई, 2000 तक तेहरान में संयुक्त आयोग की 11वीं बैठक में तेहरान में एक भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र खोलने का निर्णय हुआ। नवम्बर, 2000 में नई दिल्ली में आयोजित सेमिनार में ‘नागरिक, वार्ता और राष्ट्रीय पहचान: भारत-ईरान सम्मेलन’ भारत और ईरान के सुविख्यात विद्वानों ने भाग लिया। यह सेमिनार सभ्यतामूलक सम्पर्कों की समीक्षा के लिए महत्वपूर्ण कार्य था और भविष्य की और आशा भी।

अन्तर्राष्ट्रीय मामलों पर भारत-ईरान कार्यकारी दल की तीसरी बैठक नई दिल्ली में 15-16 जनवरी, 2001 को हुई। राजनैतिक और आर्थिक मामलों पर भारत-ईरान संयुक्त

कार्यकारी दल की दूसरी बैठक 17-18 जनवरी को नई दिल्ली में हुई। भारत को ईरानी गैस स्थानान्तरण पर ईरान-भारत संयुक्त समिति की तीसरी बैठक और भारत-ईरान निवेश कार्यालय स्तर पर वार्षिक परामर्श 13-14 फरवरी, 2001 को तेहरान में होंगे। भारत की ओर से “डायलॉग एशियन सिविलाइजेशन” पर सेमिनार में भाग लेने के लिए एक शिष्टमंडल 17 फरवरी को तेहरान जाएगा।

पाकिस्तान

भारत-पाकिस्तान के साथ शान्ति, मित्रता और सहयोग पूर्ण संबंध स्थापित करने के लिए बचनबद्ध रहा। इस दिशा में भारत ने पाकिस्तान से अपनी बाह्यकारी पूर्ण कार्यवाही और भारतीय हितों को क्षति पहुँचाने तथा अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय में उसकी प्रतिष्ठा को कम करने के सतत् किन्तु निरर्थक प्रयास बन्द करने का अनुरोध किया। भारत ने पाकिस्तान से शिमला समझौता और लाहौर घोषणा, जो भारत-पाकिस्तान द्विपक्षीय संबंधों की आधार-शिला है, का पालन करने के लिए भी कहा। तथापि, पाकिस्तान ने अपनी नकारात्मक नीति, विशेषकर सीमापार आतंकवाद को उसके समर्थन और उसके भारत-विरोधी प्रचार में निहित हो, को जारी रखा है।

पाकिस्तान ने भारत में जम्मू और कश्मीर राज्य में और अन्य भागों में सीमा पार आतंकवाद को अपने समर्थन में वृद्धि की है। इस बात का संकेत जेश-ए-मुहम्मद, लश्करए तोयबा और इख़दत-उल-मुजाहिदीन जैसे पाकिस्तान आधारित आतंकवादी ग्रुपों को दिए गए बेहतर किस्म के हथियारों, संचार उपकरणों और प्रशिक्षण तथा ऐसे ग्रुपों द्वारा किए जा रहे घुसपैठ के प्रयासों को और अधिक समर्थन से मिलता है। जम्मू और कश्मीर के लोगों में शान्ति की प्रगाढ़ इच्छा पर ध्यान न देते हुए पाकिस्तान ने शान्ति की किसी भी संभावना को, जब भी इस दिशा में पहल की गई, समाप्त करने का भी निरन्तर प्रयास किया। जुलाई, 2000 में हिजबुल मुजाहिदीन द्वारा घोषित एक पक्षीय युद्ध बन्दी घोषणा को हिंसा में तेजी लाकर तथा और 2 अगस्त, 2000 को जम्मू और कश्मीर में नागरिकों का सामूहिक संहार करके भंग किया गया। 19 नवम्बर, 2000 को घोषित प्रधान मंत्री की पहलकदमी, जिसमें जम्मू और कश्मीर में आतंकवादियों के विरूद्ध सशस्त्र बलों को सैन्य कार्यवाही शुरू न करने के निदेश थे, को हिंसा में वृद्धि करके नष्ट करने का प्रयास किया गया जिसमें नई दिल्ली में लाल किले में और श्रीनगर में

हवाई अड्डे पर पाकिस्तान समर्थित आतंकवादियों के आक्रमण, जम्मू और कश्मीर में मुख्य मंत्री की हत्या का प्रयास और प्रधान मंत्री कार्यालय पर हमले की धमकी शामिल है।

भारत ने ठोस वार्ता प्रक्रिया को पुनः शुरू करने की उस इच्छा को बरकरार रखा जो 1998 में उसकी पहलकदमी में पेश की गई थी और जिसमें दोनों देशों के बीच विश्वास और सद्भाव बनाने, सहयोग की एक स्थायी रूप रेखा और सभी बकाया मामलों को निपटाने की कोशिश की गई है। वार्ता को पुनः शुरू करने के लिए आतंकवाद और दुष्प्रचार से मुक्त उचित वातावरण अत्यन्त आवश्यक है। पाकिस्तान ने ऐसा वातावरण बनाने के लिए कोई कार्यवाही नहीं की।

भारत और पाकिस्तान की सरकारों के बीच कार्य स्तर पर सम्पर्क और दोनों देशों के लोगों के बीच सम्पर्क बने रहे। दोनों सेनाओं के महानिदेशक सैन्य सक्रियता (डी. जी. एल. ओ.) के बीच साप्ताहिक सम्पर्क रहे। सीमा प्रबन्ध संबंधी मसलों को सुलझाने के लिए सीमा सुरक्षा बल और पाक रेंजर के अधिकारियों की नियमित बैठकें हुईं। समझौता एक्सप्रेस और दिल्ली-लाहौर बस सेवा निर्बाध जारी रही और, अनजाने में एक दूसरे की सीमाओं में भटक गए मछुआरों को छोड़ा गया। शिक्षाविदों, सेवा-निवृत्त सरकारी अधिकारियों, पत्रकारों और मत निर्माताओं के बीच आदान-प्रदान तथा तीर्थ यात्रियों की यात्राएं भी होती रहीं।

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय ने भी आतंकवाद को पाकिस्तान के सरकारी समर्थन की ओर ध्यान देना आरंभ किया। अनेक देशों के नेताओं और अधिकारियों एवं सभाओं ने खुले रूप में अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद में पाकिस्तान के उग्रवादी ग्रुपों के हाथ होने की बात स्वीकार की।

दिसम्बर, 2000 में पाकिस्तान ने भारत-पाक सीमा पर अपनी ओर से बिना कारण की जा रही गोलाबारी के स्तर में कमी लाकर और अपने कुछ सैनिक हटा लिए जाने का दावा करके “अधिकतम संयम” बरतने की नीति की घोषणा की परन्तु सीमा पार से घुसपैठ और भारत में आतंकवादी कार्यों को अपना समर्थन देना जारी रखा। इन आत्म सेवी उपायों से पाकिस्तान द्वारा समर्थित सीमा पार आतंकवाद से जुड़ी भारत की चिन्ताओं का हल नहीं हुआ।

अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में मामला

10 अगस्त, 1999 को भारतीय अन्तरिक्ष में घुसपैठ कर रहे पाकिस्तानी नौ सेना के निगरानी करने वाले एवं लड़ाकू विमान ‘अटलान्टिक’ को उस समय मार गिराया गया था जब उसने भारतीय वायु सेना के विमान द्वारा उसे दिए गए संकेतों के उत्तर में शत्रुतापूर्ण कार्यवाही की। पाकिस्तान ने घुसपैठ विमान की क्षति के लिए और विमान में मौजूद नौ सेना अधिकारियों के जीवन की क्षतिपूर्ति के लिए भारत से बेतुका और तर्कहीन दावा किया। क्षति-पूर्ति के अपने दावे के लिए पाकिस्तान ने 1999 में अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में मामला दायर किया। आरंभ में ही यह स्पष्ट था कि दावे के लिए कोई ठोस कानूनी आधार नहीं है; यह केवल प्रचार के प्रयोजन से ही किया गया था।

भारत ने अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय को बताया कि 1974 में न्यायालय के अनिवार्य क्षेत्राधिकार को स्वीकार करते समय उसके द्वारा मामले में उसका कोई अधिकार नहीं बनता है। अप्रैल, 2000 में मौखिक सुनवाई हुई और 21 जून, 2000 को न्यायालय ने अपना निर्णय दिया जिसमें 14-2 के अन्तर से भारत के पक्ष में यह निर्णय रहा कि पाकिस्तान द्वारा दायर आलेख पर विचार करने के लिए न्यायालय के पास अधिकार नहीं है।

सिख जत्था

वर्ष 2000 में, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति ने आई. एस. आई. के. भूतपूर्व प्रमुख की अध्यक्षता में पाकिस्तान गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति बनाए जाने के विरोध में पाकिस्तान को सिख जत्था नहीं भेजा। तथापि, सिखों के विभिन्न धार्मिक उत्सवों को मनाने के लिए कुछ निजी जत्थे अवश्य पाकिस्तान गए। इन अवसरों पर 2000 से अधिक सिख तीर्थ यात्री पाकिस्तान गए। पाकिस्तान की सरकार ने भारत के विरुद्ध तीर्थ यात्रियों को दुष्प्रेरित करने का प्रयास किया। शदानी दरबार से सिंध (पाकिस्तान) में हयात पताफी गया हिन्दु तीर्थ यात्रियों का एक जत्था हिंगलाज मन्दिर की अपनी तीर्थ यात्रा में पाकिस्तान द्वारा अपना व्यवहार बदलने और जत्थे के आवागमन पर प्रतिबन्ध लगाए जाने के विरोध में अपनी यात्रा को बीच में समाप्त कर लौट आया। हजरत ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया के उर्स और हजरत ख्वाजा मोईनुद्दीन चिस्ती के उर्स के अवसर पर पाकिस्तान के तीर्थ यात्रियों के दो दल भारत आए।

बंगलादेश, श्रीलंका, मालदीव और म्यामां के साथ विभिन्न स्तरों पर नियमित रूप से परस्पर क्रियाकलापों और आदान-प्रदानों से विविध क्षेत्रों से मौजूदा विस्तृत आधार वाले संबंधों को बढ़ाने और उन्हें प्रगाढ़ करने में सफलता मिली है। सरकार का ध्यान आर्थिक और आधारभूत सेवाओं वाले क्षेत्रों में परस्पर लाभकारी सम्पर्कों को बढ़ाने, सुरक्षा, जिसमें क्षेत्र में आतंकवाद और धार्मिक उग्रवाद का बढ़ता हुआ खतरा शामिल है और सीमा प्रबन्ध जैसे प्रमुख क्षेत्रों में पारस्परिक, विश्वास और सहयोग बढ़ाने और मानव संसाधन विकास, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और यात्रा संबंधी कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों के बीच सम्पर्क सुचारू करने पर केन्द्रित रहा है।

यह भारत सरकार के अन्य मंत्रालयों/एजेंसियों और इन देशों की सीमा से लगे राज्यों के साथ घनिष्ठ रूप से समन्वय करके किया गया।

बंगलादेश

जल संसाधन, व्यापार तथा रक्षा के क्षेत्रों में उच्च स्तर की अन्योन्यक्रियाएं हुईं।

जल संसाधन मंत्री श्री अर्जुन चरन सेठी ने 12-13 जनवरी 2001 को ढाका में 34वें संयुक्त नदी आयोग की बैठक में भाग लेने के लिए बंगलादेश की यात्रा की। संयुक्त नदी आयोग ने जल संसाधन के क्षेत्र में भारत-बंगलादेश सहयोग का पुनरीक्षण किया। विचार-विमर्शों में शामिल विषयों में इसके साथ तीस्ता जल का बंटवारा, फरक्का (1996) का गंगा जल के बंटवारे से सम्बद्ध संधि का क्रियान्वयन, बाढ़ की पूर्व सूचना तथा चेतावनी में मौजूदा सहयोग को मजबूत करना, तथा एक समान/सीमा नदियों से सम्बद्ध मसले शामिल थे। भारत ने बंगलादेश में प्रस्तावित गंगा बैराज परियोजना की व्यवहार्यता और व्यापक इंजीनियरिंग कार्य के लिए वित्तीय एवं तकनीकी सहायता के संबंध में बंगलादेश के अनुरोध को स्वीकार कर लिया। दोनों पक्ष भू-जल में संख्या मिलावट वाला पानी मिलने की समस्या का सामना करने में सहयोग करने पर सहमत हुए।

जल संसाधन राज्य मंत्री श्रीमती बिजय चक्रवर्ती ने 25-29 सितम्बर 2000 तक बंगलादेश की सद्भावना यात्रा की। बंगलादेश की जल संसाधन संसदीय स्थायी समिति ने सद्भावना तथा परिचय के लिए 1-15, 2000 तक भारत की यात्रा की। शिष्टमंडल

ने अपने हित की परियोजनाओं को देखा और इन अधिकारियों के साथ-साथ पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र की राज्य सरकारों के अधिकारियों के साथ भी बातचीत की।

बंगलादेश को सितम्बर-अक्टूबर 2000 में दक्षिणी पश्चिमी क्षेत्र में प्रचण्ड बाढ़ का सामना करना पड़ा। सहानुभूति तथा सहयोग के रूप में भारत सरकार ने बंगलादेश के प्रधानमंत्री राहत कोष के लिए पांच करोड़ रुपये का दान दिया।

बंगलादेश के विदेश सचिव श्री सी. एम. शफी सामी बंगलादेश के प्रधानमंत्री के विशेष दूत के रूप में 6-8 अगस्त 2000 तक नई दिल्ली आए और प्रधानमंत्री शेरवोहरी को एक पत्र दिया। उन्होंने विदेश मंत्री से भी मुलाकात की तथा विदेश सचिव के साथ विचार विमर्श किया।

बंगलादेश के विदेश सचिव श्री सी. एम. शफी सामी विदेश कार्यालय परामर्शों के सिलसिले में 13-14 दिसम्बर, 2000 को नई दिल्ली की यात्रा पर आए। उनकी इस बातचीत में भारत और बंगलादेश के बीच बहु-आयामी संबंधों के समस्त क्षेत्र शामिल थे। दोनों विदेश सचिवों ने दोनों देशों के बीच बहु-रूपात्मक संचार सम्पर्कों को बहाल करने के उपायों की समीक्षा की, कलकत्ता-ढाका बस सेवा के सुव्यवस्थित संचालन पर सन्तोष व्यक्त किया और वे अगरतला तथा ढाका के बीच बस सेवा शीघ्र शुरू करने पर सहमत हुए। दोनों पक्षों ने परस्पर लाभकारी व्यापार तथा आर्थिक सहयोग संवर्धित करने के तौर-तरीकों, जल संसाधन, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने वीजा प्रबंधों को उदार बनाने, सांस्कृतिक आदान-प्रदान तथा इस क्षेत्र में आतंकवादी गतिविधियों की वृद्धि के बारे में साझी चिन्ता की समीक्षा की। भारत और बंगलादेश के बीच भू-सीमा के सीमांकन से संबंधित करार तथा उससे संबंधित बकाया मामलों पर विस्तृत चर्चा हुई। दोनों विदेश सचिवों ने दो संयुक्त कार्य दलों की स्थापना का निर्णय लिया जो इन मसलों का सुव्यवस्थित रूप से हल निकालेंगे।

वाणिज्य सचिव स्तर की व्यापार समीक्षा बातचीत मई, 2000 में नई दिल्ली में हुई जिसमें द्विपक्षीय व्यापार एवं आर्थिक संबंधों की समीक्षा की गई और इन्हें अधिक सुदृढ़ बनाने के तौर-तरीकों पर चर्चा हुई। दोनों देशों के बीच अवसंरचनात्मक सम्पर्कों में सुधार और उनके उन्नयन के लिए चल रहे प्रयास जारी रहे। कलकत्ता ढाका बस सेवा सफलतापूर्वक चलती रही। अगरतला-ढाका बस सेवा के लिए तौर-तरीके तैयार करने

के लिए आरम्भिक चर्चा हुई। पेत्रापोल (भारत) और बेनापोल (बंगलादेश) के बीच माल की आवाजाही के लिए तीसरी बड़ी लाईन रेल सम्पर्क को बहाल करने के लिए जुलाई, 2000 में ढाका में भारतीय रेलवे और बंगलादेश रेलवे के बीच एक कार्यकारी करार सम्पन्न हुआ। इस माल-भाड़े सेवा का उद्घाटन रेल मंत्री सुश्री ममता बनर्जी और बंगलादेश के संचार मंत्री श्री अनवर हुसैन मंजु ने 21 जनवरी, 2001 को संयुक्त रूप से किया।

सीमा प्रबंधन से सम्बद्ध मुख्य मसलों और सुरक्षा से सम्बद्ध मामलों पर संस्थागत वार्ता में अप्रैल, 2000 में गृह सचिव स्तर की बातचीत, नई दिल्ली और ढाका में क्रमशः अप्रैल, 2000 तथा अक्टूबर, 2000 में सीमा सुरक्षा बल (बी. एस. एफ.) और बंगलादेश राईफल्स (बी. डी. आर.) के बीच महा निदेशक स्तर की बातचीत तथा 15-17 फरवरी, 2001 तक नई दिल्ली में संबंधित गृह मंत्रालयों के संयुक्त कार्यदल की बैठक शामिल है। सीमा सुरक्षा बल और बंगलादेश राईफल्स के बीच महानिदेशक स्तर की अगली बैठक मार्च, 2001 में होनी निश्चित हुई है।

भारत और बंगलादेश के सशस्त्र सेनाओं के बीच नियमित कार्यकलाप के एक अंग के रूप में थल सेनाध्यक्ष जनरल वी. पी. मलिक मई, 2000 को बंगलादेश की सरकारी यात्रा पर गए। पहला भारत-बंगलादेश सेना संयुक्त बड़ा अभियान तीस्ता और ब्रह्मपुत्र (बंगलादेश में जमुना) पर अप्रैल, 2000 में हुआ।

शिक्षा और तकनीकी प्रशिक्षण के क्षेत्रों में सक्रिय सहयोग जारी रहा। बंगलादेश के कई हजार छात्र भारत में अध्ययन कर रहे हैं उनमें से कई भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की छात्रवृत्तियों का उपयोग कर रहे हैं। सांस्कृतिक आदान-प्रदानों और मीडिया कार्यकलाप को गहन किया गया। ढाका स्थित भारत के हाई कमिशन ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की एक श्रृंखला का आयोजन किया जिसमें संगीत गोष्ठियाँ, नृत्य कलाएं, फिल्म शो और कला प्रदर्शनियाँ आदि शामिल हैं, इनमें व्यापक जनसमूह ने भाग लिया। बंगलादेश स्थित भारतीय मिशनो ने वर्ष 2000 में बंगलादेशी राष्ट्रियों को 3,63,204 वीजा जारी किए।

श्री लंका

श्री लंका के साथ भारत के बहु-फलकीय संबंधों के अंतर्गत विशेषकर राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में गहन कार्यकलाप हुए। भारत ने श्री लंका की एकता संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता, श्री लंका में स्थायी शांति की बहाली और बातचीत पर आधारित समाधान, जिससे श्रीलंकाई समाज के सभी तत्वों की आकांक्षाओं की पूर्ति होगी, के द्वारा स्थायी शांति प्राप्त करने के लिए एक शान्तिपूर्ण राजनैतिक प्रक्रिया के प्रति अपनी वचनबद्धता को निरंतर दोहराया है।

दोनों सरकारों के बीच उच्च-स्तरीय संपर्क की परंपरा को जारी रखते हुए श्री लंका की राष्ट्रपति श्रीमती चन्द्रिका भंडारनायके कुमारतुंगा ने 22 से 25 फरवरी, 2001 तक भारत की यात्रा की। राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री के साथ उन्होंने द्विपक्षीय क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मसलों पर चर्चा की जो इस बात को परिलक्षित करता है कि दोनों देश आपसी विश्वास और समझबूझ पर आधारित घनिष्ट और मैत्रीपूर्ण संबंधों को उच्च प्राथमिकता प्रदान करते हैं। श्री लंका की राष्ट्रपति ने श्री लंका में शान्ति स्थापित करने के लिए हाल ही में की गयी गतिविधियों के बारे में भारतीय नेताओं को अवगत कराया।

विदेश मंत्री श्री जसवंत सिंह ने श्री लंका में उभरती स्थिति जिसके संबंध में 4 मई, 2000 को सरकार ने दोनों सदनों में मिलते जुलते वक्तव्यों के द्वारा चिंता व्यक्त की थी, पर श्री लंका के राष्ट्रपति और विदेश मंत्री के साथ विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए 11 से 12 जून, 2000 तक श्री लंका की यात्रा की थी। अपनी यात्रा के दौरान विदेश मंत्री ने विपक्ष के नेता श्री रानिल विक्रमसिंह और अन्य राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों से भी मुलाकात की। भारत ने आपसी सहमत शर्तों पर श्रीलंका को 100 मिलियन अमरीकी डालर की ऋण श्रृंखला उपलब्ध कराने की अपनी इच्छा जाहिर की। तत्पश्चात इस ऋण श्रृंखला की शर्तें निर्धारित की गयी और 45 मिलियन अमरीकी डालर की पहली किस्त के सिर एक करार जनवरी 2001 में संपन्न किया गया।

श्री लंका की भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती श्रीमाओ भंडारनायके का 10 अक्टूबर, 2000 को निधन हो गया। 14 अक्टूबर, 2000 को कोलंबो के नजदीक हुई राजकीय अंत्येष्टि में भारत का प्रतिनिधित्व उप-राष्ट्रपति महोदय ने की।

श्री लंका के विदेश मंत्री श्री लक्ष्मण कादिर गमर ने 15 दिसम्बर, 2000 को भारत का दौरा किया और उन्होंने अन्य बातों के साथ-साथ क्षेत्रीय सहयोग और दोनों देशों के मछुआरों की समस्याओं पर विदेश मंत्री के साथ व्यापक वार्ता की। इसकी विधिक प्रक्रियाओं को समझने के लिए श्रीलंका भारत में एक दल भेज रहा है। विदेश मंत्रालय ने कहा है कि इस दल को भारत में पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। विदेश मंत्री ने भारतीय मछुआरों पर गोली चलाये जाने पर चिंता व्यक्त की और इन घटनाओं से परहेज करने की आवश्यकता पर बल दिया।

भारत-श्री लंका मुक्त व्यापार करार, जो 1 मार्च, 2000 को प्रचालित हुआ था, उससे व्यापार और निवेश की वृद्धि संबंधी नए अवसर मुहैया होने की संभावना है। दोनों देशों के व्यवसायी समुदाय इस करार के क्षेत्र और संभावित प्रचारित करने के लिए कदम उठाने में सरकार के साथ जुड़ गए हैं। संयुक्त सीमा शुल्क समूह ने 14-15 सितम्बर, 2000 तक कोलम्बो में सीमाशुल्क से संबद्ध क्षेत्रों में प्रगति और समस्याओं की समीक्षा करने के लिए बैठक की। विश्व आर्थिक मंच के भारतीय आर्थिक शिखर सम्मेलन 2000 की बैठक नवम्बर, 2000 में नई दिल्ली में संपन्न हुई जिसका एक विशेष सत्र इस करार के लिए समर्पित था। प्रोफेसर जी. एल. पीयरिस, संवैधानिक मामले और औद्योगिक विकास मंत्री ने इसमें भाग लेने वाले श्री लंकाई शिष्टमंडल का नेतृत्व किया।

श्री लक्ष्मण जया कोडी, बुद्ध साना, संस्कृति और धार्मिक मामलों के मंत्री 4-6 जुलाई, 2000 तक श्री लंका के राष्ट्रपति के एक विशेषदूत के रूप में दिल्ली की यात्रा पर आए। वे पुनः 23 सितम्बर, 2000 को कृषि मंत्री श्री नीतिश कुमार के साथ बातचीत करने के लिए एक उच्चस्तरीय शिष्ट मंडल के प्रमुख के रूप में भारत आए। इन वार्ताओं में एक दूसरे की हिरासत में दोनों देशों के मछुआरे और मछली पकड़ने वाली नौकाओं से संबद्ध मसले शामिल थे। दोनों देशों के वास्तविक मछुआरों के सामने आई समस्याओं और उन गरीब लोगों जिनकी मात्र आजीविका मछली पकड़ना है, के समक्ष पेश आई समस्या के मानवीय पहलू पर ध्यान केन्द्रित किया गया। इस बात पर सहमति हुई कि उनके साथ सहानुभूतिपूर्वक और सदभावनापूर्ण व्यवहार किया जाना चाहिए और उनकी रिहाई आवश्यक क्रिया-विधियाँ पूर्ण करने के लिए अपेक्षित अवधि के बाद लम्बित नहीं किया जाना चाहिए।

भारत की अन्य यात्राओं में शामिल हैं: 24-30 मई 2000 तक श्री महिन्दा राजापाक्से, श्रीलंका के मछलीपालन और जलचर संसाधन विकासमंत्री, 18-21 अप्रैल, 2000, 21 दिसम्बर से 2 जनवरी, 2001 तक श्री राजिल विक्रम सिंघे, सांसद, श्री लंका के प्रतिपक्ष के नेता, और 2-9 नवम्बर, 2000 तक श्रीलंका की नौसेना के कमांडर, वाईस एडमिरल एच. सी. ए. टी. टिसेरा की यात्रा और वायुसेना प्रमुख एयर मार्शल ए. वाई. टिपनिस 11-14 मई, 2000 तक श्री लंका की सद्भावना यात्रा पर गए।

भारतीय संस्कृति केन्द्र कोलम्बो और भारत-श्रीलंका फाउंडेशन की गतिविधियों के माध्यम से सांस्कृतिक क्रिया-कलाप समृद्ध हुए।

मालदीव

भारत-मालदीव संबंध घनिष्ठ, मैत्रीपूर्ण तथा समस्याविहीन हैं। भारत-मालदीव को उसके विकासगत कार्यों, विशेषतौर पर मानव संसाधन विकास तथा लोक स्वास्थ्य के क्षेत्र, में सहायता प्रदान कर रहा है। समीक्षाधीन अवधि में उच्च स्तरीय यात्राओं के आदान-प्रदान से मित्रता और अधिक घनिष्ठ हुई है।

अगस्त 2000 में मालदीव के राष्ट्रपति मैमून अब्दुल गयूम की भारत की राजकीय यात्रा से भारत और मालदीव के बीच वर्तमान संबंधों को और अधिक सुदृढ़ बनाने में मदद मिली। मार्च 2000 में मालदीव के विदेश मंत्री श्री फतुल्ला जमील भारत की सरकारी यात्रा पर आए उस दौरान 6-7 मार्च 2000 तक नई दिल्ली में भारत-मालदीव संयुक्त आयोग का चौथा सत्र सम्पन्न हुआ। इनका आगे क्रियान्वयन करने के लिए इस बैठक में सहयोग के बहुत से नए क्षेत्रों की पहचान की गई। मालदीव के रक्षा एवं राष्ट्रीय सुरक्षा राज्यमंत्री मेजर जनरल अब्दुल सत्तार अन्बारी के आमंत्रण पर रक्षा मंत्री 9-12 जनवरी, 2001 तक मालदीव की यात्रा पर गए। जनरल अन्बारी से विस्तृत विचार विमर्श के अतिरिक्त रक्षा मंत्री ने राष्ट्रपति श्री गयूम, विदेश मंत्री श्री फातुल्ला जमील से मुलाकात की तथा विभिन्न रक्षा स्थापनाओं का दौरा किया। इससे पूर्व मालदीव के रक्षा तथा राष्ट्रीय सुरक्षा के राज्यमंत्री 19-23 नवम्बर 2000 तक भारत की यात्रा पर आए।

8-12 अक्टूबर, 2000 तक मालदीव में माले बंदरगाह से दूर भारत-मालदीव पांचवां संयुक्त तटरक्षक कार्यक्रम, दोस्ती श्रृंखला सम्पन्न हुई। तटरक्षक महानिदेशक ने मालदीव

में अपने समकक्ष के आमंत्रण पर मालदीव की यात्रा की तथा इस कार्यक्रम को देखा। यह कार्यक्रम व्यासायिक दृष्टि से अत्यन्त लाभप्रद पाया गया।

सम्पन्न हुई अन्य महत्वपूर्ण यात्राओं में मालदीव की पीपुल्स मजलिस के अध्यक्ष श्री अब्दुल्ला हामिद की यात्रा, जिन्होंने 9-12 मई, 2000 तक भारत में मालदीव के संसदीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया, तथा नौसेना प्रमुख एडमिरल सुशील कुमार की मार्च, 2000 की यात्राएं शामिल हैं।

सैन्य प्रशिक्षण, पुलिस प्रशिक्षण तथा सूंघने वाले कुत्तों और कुत्तों का रखरखाव करने वालों के प्रावधान करने के क्षेत्रों में सुरक्षा संबंधी मामलों में सतत् सहयोग जारी है।

भारत ने दवाओं, अभियांत्रिकी, कम्प्यूटर, शिक्षा, नर्सिंग तथा कृषि जैसे क्षेत्रों में मालदीव के विद्यार्थियों को प्रशिक्षण सुविधाएं देना जारी रखा।

म्यामां

म्यामां के साथ रचनात्मक रूप से जुड़ने की भारत की नीति दोनों देशों के बीच सहयोग के क्षेत्रों का आधार विस्तृत करने तथा उच्च-स्तरीय द्विपक्षीय आदान-प्रदान की परम्परा को बहाल करने पर केन्द्रित है। तकनीकी और अधिकारिक स्तरों पर परस्पर क्रिया-कलाप जारी रहे।

उप राष्ट्रपति के आमन्त्रण पर राज्य शान्ति और विकास परिषद् के उपाध्यक्ष जनरल मायूंग आये की अध्यक्षता में एक उच्च-स्तरीय शिष्टमंडल, जिसमें उप प्रधानमंत्री और 7 मंत्री शामिल थे, ने 14-21 नवम्बर, 2001 तक भारत की 7 दिन की यात्रा की। जनरल मायूंग आये राष्ट्रपति से मिले और उन्होंने उप राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, विदेश मंत्री, गृह मंत्री, वाणिज्य और उद्योग राज्य मंत्री तथा लोक सभा में विरोधी पक्ष के नेता से मुलाकात की। बातचीत व्यापक रही और उसमें आर्थिक सहयोग, व्यापार, सीमा पार परियोजनाएँ और क्रिया-कलाप, अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद, नशीली दवाओं के अवैध व्यापार, संस्कृति के क्षेत्र में सहयोग, मानव संसाधन विकास, विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा बी. आई. एम. एस. टी. - ई. सी. (जिसके कि दोनों देश सदस्य हैं) की संरचना के भीतर क्षेत्रीय सहयोग

और भारत-आसियान वार्ता भागीदारी शामिल है। दोनों पक्ष भारत-म्यामां सीमा पर चैन और अमन सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाने पर सहमत हुए।

इस यात्रा के दौरान म्यामां को 15 मिलियन अमरीकी डालर का भारतीय ऋण देने के लिए एक करार पर हस्ताक्षर हुए।

विदेश मंत्री श्री जसवन्त सिंह ने 13-15 फरवरी, 2001 तक म्यामां की यात्रा की। इस यात्रा से दो मित्र पड़ोसी देशों के नेताओं के बीच व्यक्तिगत सम्पर्कों की परम्परा बनी रही। इस यात्रा में उल्लेखनीय कार्य मणिपुर में भारत-म्यामां सीमा से आरंभ नामू-काले-म्यो-कलेवा राजमार्ग का उद्घाटन था। यह सड़क दोनों देशों के बीच सीमा पार सम्पर्क प्रदान करती है और क्षेत्र में आर्थिक विकास, सीमा पार व्यापार और पर्यटन के विकास की संभावना है। यांगून में रिमोट सेन्सिंग और डाटा प्रोसेसिंग के लिए भारत-म्यामां मेजी केन्द्र का इस यात्रा के दौरान उद्घाटन हुआ। विदेश मंत्री ने माण्डले और यांगून की यात्रा की जहाँ वे वरिष्ठ जनरल थान श्वे, राज्य शान्ति और विकास परिषद् के अध्यक्ष और प्रधान मंत्री तथा ले. जनरल विहन न्यूनत, सचिव-1 से मिले। इन वार्ताओं और म्यामां के विदेश मंत्री और अन्य मंत्रियों के साथ हुई बातचीत में सीमा व्यापार और आधारभूत परियोजनाओं सहित द्विपक्षीय संबंधों के सभी पहलु शामिल थे।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी में बढ़ते हुए क्रिया-कलापों के भाग के रूप में विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर भारत-म्यामां संयुक्त कार्यकारी दल की 4-9 अप्रैल, 2000 तक यांगून में पहली बैठक हुई थी और 2000-2002 के लिए कार्य-योजना तैयार की। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव ने भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। सितम्बर, 2000 में जैव-प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव ने जैव-प्रौद्योगिकी से सम्बद्ध पहली भारत-म्यामां संयुक्त कार्यशाला के लिए म्यामां के लिए एक चार-सदस्यीय दल का नेतृत्व किया।

म्यामां के उप विदेश मंत्री अन्तर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन में भारत का समर्थन प्राप्त करने के लिए मई 2000 में म्यामां सरकार के विशेष दूत के रूप में और 15-20 अक्टूबर 2000 के दौरान विदेश कार्यालय परामर्शों के लिए शिष्टमंडल के नेता के रूप में वर्ष में दो बार नई दिल्ली की यात्रा पर आए। इन वार्ताओं में सम्पूर्ण द्विपक्षीय संबंधों के पूर्ण विस्तार की समीक्षा करने के लिए एक लाभप्रद अवसर प्राप्त हुआ। यह निर्णय लिया गया कि इस तरह के परामर्श वार्षिक रूप से आयोजित किए जाएंगे।

सेनाध्यक्ष जनरल वी. पी. मलिक ने राजकीय शान्ति और विकास परिषद के उपाध्यक्ष और म्यामां सेना के सी. इन. सी. जनरल मांउग आई के आमंत्रण पर 3 से 6 जुलाई 2000 तक म्यामां की यात्रा की। नौसेनाध्यक्ष एडमिरल सुशील कुमार ने 16 से 19 जनवरी 2001 तक म्यामां की यात्रा की।

म्यामां के गृह मंत्री यू टिन लेइंग ने 2 से 8 नवम्बर 2000 तक भारत की यात्रा की। उन्होंने केन्द्रिय गृह मंत्री, विदेश मंत्री और रक्षा मंत्री के साथ सीमा प्रबन्ध के क्षेत्रों में सहयोग के साथ-साथ द्विपक्षीय मसलों पर विचार-विमर्श किया।

सीमा प्रबन्ध सम्बन्धी मामलों पर नियमित संस्थागत वार्ता की गई। 7वीं राष्ट्रीय स्तर की बैठक 28 से 30 अगस्त 2000 तक म्यामां में सम्पन्न हुई, इस बैठक के लिए भारतीय शिष्टमंडल का नेतृत्व गृह-सचिव ने किया। सीमा पर औषध नियंत्रण प्राधिकारियों और स्थानीय सैनिक कमांडरों के बीच संस्थागत वार्ता के भाग के रूप में अन्य बैठकें भी सम्पन्न की गईं।

यांगोन में भारत दूतावास ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक आयोजन किया जिसमें बौद्ध धर्म पर प्रदर्शनी भी शामिल थी, इसे 50,000 दर्शकों ने देखा। म्यामां से रामायण और कठपुतली मंडली भी भारत में आईं।

म्यामां के संस्कृति मंत्री यू सिन वेन ने संस्कृति और पर्यटन मंत्री के आमंत्रण पर 24 जनवरी से 2 फरवरी 2000 तक भारत की यात्रा की, दोनों मंत्रियों ने भारत-म्यामां सांस्कृतिक करार पर हस्ताक्षर किए जो दोनों देशों के बीच और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए रूपरेखा तैयार करेगा। म्यामां के विज्ञान और प्रौद्योगिकी उप मंत्री के नेतृत्व में एक 15 सदस्यीय व्यावसायिक शिष्टमंडल फरवरी, 2001 में सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र का अध्ययन करने के लिए भारत आया।

भारत-म्यामां से आए छात्रों को शिक्षा और तकनीकी प्रशिक्षण की सुविधा उपलब्ध करा रहा है।

नेपाल

भारत और नेपाल के परम्परागत घनिष्ठ एवं मैत्रीपूर्ण संबंध गहन सामाजिक तथा लोगों से लोगों के संपर्क पर आधारित हैं। वर्षों से नेपाल से द्विपक्षीय सहयोग बढ़ रहा

है तथा सघन हो रहा है। समीक्षाधीन अवधि में उच्च स्तरीय यात्राओं के आदान प्रदान के अलावा इन संबंधों को और अधिक, समृद्ध बनाने तथा दोनों देशों के बीच घनिष्ठ एवं बहुआयामी सहयोग को मजबूत बनाने के उद्देश्य से कई प्रकार से पहल की गई।

विदेश मंत्री के आमंत्रण पर नेपाल के विदेश मंत्री श्री चक्रप्रसाद बस्तोला 7-10 मई 2000 तक भारत की सरकारी यात्रा पर आए। अपनी यात्रा के दौरान विदेश मंत्री ने भारत के विदेश मंत्री के साथ विस्तार से चर्चा की। काठमांडू से इंडियन एअर लाइंस की उड़ानें पुनः शुरू करने की घोषणा इस यात्रा की महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। यह भी सहमति हुई कि द्विपक्षीय संबंधों को नई गति प्रदान करने के लिए द्विपक्षीय संस्थागत मंचों की बैठकें शीघ्र हों।

नेपाल के विदेश मंत्री की यात्रा के दौरान लिए गए निर्णय के अनुसरण में 20-21 मई 2000 को काठमांडू में विदेश सचिव स्तर की वार्ता हुई। इस वार्ता में हमारे द्विपक्षीय संबंधों के सभी पहलू शामिल थे।

विदेश सचिव की यात्रा के बाद द्विपक्षीय सहयोग के अन्तर्गत चल रही परियोजनाओं के स्तर की समीक्षा करने तथा भारत की सहायता से नेपाल में कार्यान्वित की जाने वाली नई परियोजनाओं का सुझाव देने के लिए भारत-नेपाल उच्च स्तरीय कार्य दल की पांचवीं बैठक में भाग लेने हेतु प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव श्री बृजेश मिश्रा के नेतृत्व में उच्च स्तरीय भारतीय प्रतिनिधिमण्डल ने 6-7 जून 2000 को नेपाल की यात्रा की। उच्च स्तरीय कार्यदल ने सिफारिश की कि भविष्य में सहयोग के कार्यक्रमों में सीमा चैक पोस्टों तथा सीमा से सटे जिलों में आधारभूत सुविधाओं में सुधार, डेयरी विकास सहित समेकित ग्रामीण विकास हेतु पाइलट योजनाएं, सूचना प्रौद्योगिकी तथा लघु/मध्यम आकार की जल परियोजना में सुधार पर जोर दिया जाएगा।

नेपाल में भारत के नए राजदूत श्री देव मुखर्जी ने 23 जून 2000 को काठमांडू में शाही महल में आयोजित समारोह में नेपाल के महाराजाधिराज को अपने पद के प्रत्यय पत्र सौंपे।

5-7 जुलाई, 2000 को काठमांडू में गृह सचिव स्तरीय वार्ता हुई तथा सुरक्षा से जुड़े सभी मसलों पर विस्तार से चर्चा हुई। इन बैठकों में हमारे अपने-अपने परिप्रेक्ष्यों में विचारों का आदान प्रदान हुआ, तथा आतंकवादियों, अपराधियों तथा अन्य अनपेक्षित

तत्वों की गतिविधियों का सामना करने में सहयोग बढ़ाने तथा भारत-नेपाल सीमा के बारे में चर्चा की गई। इस बैठक में दोनों देशों के विधि प्रवर्तन अधिकरणों में सहयोग तथा भारत-नेपाल सीमा प्रबंधन में सुधार पर भी चर्चा की गई।

रेल राज्य मंत्री श्री दिग्विजय सिंह ने भारतीय सहायता से बनने वाले रक्सौल-बीरगंज बड़ी रेल लाइन सम्पर्क की नींव रखने के लिए आयोजित समारोह में भाग लेने के लिए 9-11 जुलाई 2000 को नेपाल की यात्रा की।

नेपाल के प्रधानमंत्री श्री गिरिजा प्रसाद कोइराला भारत के प्रधानमंत्री के आमंत्रण पर 31 जुलाई से 6 अगस्त 2000 तक भारत की अधिकारिक सद्भावना यात्रा पर आए। उनके साथ विदेश मंत्री श्री चक्र प्रसाद बस्तोला तथा नेपाल की शाही सरकार के वरिष्ठ अधिकारी भी आए। नई दिल्ली में अपने कार्यक्रमों के दौरान 1 तथा 2 अगस्त 2000 को नेपाल के प्रधान मंत्री ने अन्य बातों के साथ-साथ राष्ट्रपति तथा उपराष्ट्रपति से मुलाकात की तथा भारत के प्रधानमंत्री के साथ एक बैठक की तत्पश्चात् प्रतिनिधिमण्डल स्तर पर वार्ता हुई। इस वार्ता में नेपाल के साथ हमारे द्विपक्षीय संबंधों के सभी पहलुओं को शामिल किया गया।

यात्रा के अंत में जारी संयुक्त प्रेस वक्तव्य में दोनों देशों के बीच घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण संबंधों को और अधिक समृद्ध करने के उद्देश्य से किए गए वृहत वार्तालाप तथा लिए गए निर्णयों पर प्रकाश डाला गया। अन्य बातों के साथ साथ इसमें उच्च स्तरीय कार्यदल द्वारा सुझाए गए नेपाल में नई आर्थिक सहयोग परियोजनाएं शुरू करना, भारत में नेपाल के निर्यात पर से सीमाशुल्क पर 4 प्रतिशत विशेष अतिरिक्त शुल्क लगाने से छूट, नेपाल के नए एमिशन मानकों के अन्तर्गत नेपाल में भारतीय वाहनों के आयात की अनुमति, जल संसाधन क्षेत्र में सहयोग पर विचार करने तथा उन्हें क्रियान्वित करने के लिए शीर्ष निकाय के रूप में जल संसाधन से संबद्ध संयुक्त समिति गठित करना शामिल है। दोनों सरकारें आतंकवाद तथा सीमा पार अपराधों का सामना करने के उद्देश्य से भारत-नेपाल खुली सीमा के प्रबंधन के संबंध में वर्तमान सहयोग को मजबूत करने के प्रभावी तौर तरीकों एवं उपायों पर सहमत हुए हैं। दोनों देशों ने दूसरे देश की सुरक्षा के विरुद्ध अपना प्रतिकूल गतिविधियों के लिए अपने-अपने क्षेत्रों का उपयोग करने की अनुमति न देने की अपनी-अपनी वचनबद्धता दोहराई।

यात्रा के परिणामों से परस्पर लाभकारी सहयोग द्वारा सार्थक आर्थिक विकास को प्राप्त करने के साझे दृष्टिकोण की झलक के साथ-साथ संबंधों की स्थायी नींव तथा उनमें लगातार प्रगति की पुष्टि होती है।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री श्री सी. पी. ठाकुर विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा काठमांडू में आयोजित दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र के स्वास्थ्य मंत्रियों की 18वीं बैठक में भाग लेने के लिए 23-25 अगस्त, 2000 को नेपाल गए।

नेपाल के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री श्री सुरेन्द्र प्रसाद चौधरी मुम्बई आधारित सूचना प्रौद्योगिकी फार्मों के साथ, परस्पर क्रियाकलाप हेतु 4-7 सितम्बर 2000 तक भारत आए, उन्होंने इन फार्मों से नेपाल में सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र के विकास में सहयोग मांगा।

भारतीय व्यापार संवर्धन परिषद ने 19-24 सितम्बर, 2000 तक नेपाल में चौथी भारतीय व्यापार प्रदर्शनी लगाई। इस प्रदर्शनी में दिखाई गई भारतीय वस्तुओं और सेवाओं ने दोनों देशों के व्यापारी समुदायों को एक दूसरे के निकट लाने में मदद दी। भारत की तरफ से 96 भागीदार थे। इस प्रदर्शनी में निजी एवं सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों के प्रतिनिधियों के उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमण्डल ने भाग लिया तथा दोनों देशों के बीच व्यापार संबंध बढ़ाने के लिए प्रतिनिधि मण्डल ने नेपाली व्यापारियों के साथ क्रिया कलाप किया।

वाणिज्य तथा उद्योग राज्य मंत्री डा. रमन सिंह ने भारतीय व्यापार प्रदर्शनी 2000 के उद्घाटन समारोह में भाग लेने के लिए 18-22 सितम्बर 2000 तक नेपाल की यात्रा की। 19 सितम्बर, 2000 को नेपाल के प्रधानमंत्री श्री गिरिजा प्रसाद कोइराला ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

नेपाल के प्रधानमंत्री की अगस्त 2000 की यात्रा के दौरान लिए गए निर्णय के अनुसरण में दोनों देशों के जल संसाधन सचिवों के स्तर की जल संसाधन से सम्बद्ध भारत-नेपाल संयुक्त समिति गठित की गई। काठमांडू में 1-3 अक्टूबर 2000 को संयुक्त समिति की प्रथम बैठक हुई, इस बैठक में दोनों पक्षों ने वर्तमान करारों तथा समझ बूझों के क्रियान्वयन के अलावा जल संसाधन क्षेत्र में भारत-नेपाल द्विपक्षीय सहयोग की व्यापक समीक्षा की।

भारत-नेपाल के साथ आर्थिक और वाणिज्यिक संबंधों के विकास को उच्च प्राथमिकता देता है। कई वर्षों से विविध क्षेत्रों में नेपाल के आर्थिक विकास में भारत का योगदान बढ़ रहा है। हाल ही में भारत सरकार की निधि से कार्यान्वित होने वाली प्रमुख परियोजनाओं में काठमांडू में वीर अस्पताल में आपातकालीन और ट्रौमा केन्द्र का निर्माण, एक्सौल-सिरसिया रेल सम्पर्क को बड़ी लाइन में बदलना, तथा टनकपुर-महेन्द्र नगर सड़क सम्पर्क का निर्माण शामिल है। नेपाल में भारत की प्रसिद्ध परियोजनाओं में से एक नेपाल के पूर्व-पश्चिम राजमार्ग पर कोहालपुर-महाकाली क्षेत्र में 22 पुलों के निर्माण का कार्य हाल ही में पूरा हुआ है। सबसे दुर्गम तराई क्षेत्र में बने इन पुलों से भारत की सीमा से लगे नेपाल के इस भाग के व्यापार, निवेश तथा आर्थिक विकास की नई संभावनाएं जगी हैं। इससे सामाजिक आर्थिक विकास होगा तथा बाद में नेपाल के सम्पूर्ण पश्चिमी क्षेत्र को लाभ होगा।

नेपाल के साथ व्यापार और निवेश में उदारता बरतने हेतु भारत सरकार की पहल से आने वाले वर्षों में द्विपक्षीय आर्थिक आदान प्रदान को गति मिलेगी। आज तक नेपाल में विदेशी निवेश में भारतीय निवेश लगभग 36 प्रतिशत है। 1998-99 के 1124.36 करोड़ के द्विपक्षीय व्यापार के मुकाबले 1999-2000 का व्यापार 1153.67 करोड़ रुपये था। अप्रैल-जुलाई 2000 की अवधि में दोनों ओर का व्यापार 453.98 करोड़ रुपये था।

बहुत से नेपाली छात्र भारत में शैक्षिक तथा प्रशिक्षण सुविधाओं का लाभ उठा रहे हैं। सिल्वर जुबली छात्रवृत्ति, बी. पी. कोईराला फाउण्डेशन छात्रवृत्ति जैसी छात्रवृत्ति योजनाएं इंजीनियरी, दवाओं तथा तकनीकी क्षेत्रों जैसे विविध क्षेत्रों में नेपाल के छात्रों को भारत सरकार द्वारा दी गई सामान्य छात्रवृत्ति तथा स्ववित्त पोषित अध्ययन सुविधाओं की अनुपूरक हैं। नेपाल को सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत नेपाल से चुने हुए विद्यार्थियों के लिए विशिष्ट व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा उन्मुखीकरण कार्यक्रम शुरू किए गए हैं। नेपाल से बड़ी संख्या में विद्यार्थी भारत के स्कूल कालेजों में सीधे दाखिला लेते हैं।

भूटान

भूटान के साथ भारत के संबंध परस्पर विश्वास, समझ बूझ तथा गहन मित्रता पर आधारित हैं। दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग तेजी से बढ़ रहा है तथा यह सहयोग संवर्धित द्विपक्षीय मैत्री की नींव को पुष्ट कर रहा है।

गहन द्विपक्षीय सहयोग के भाग के रूप में भारत 1961 से भूटान की पंच वर्षीय योजनाओं में भूटान को वित्तीय सहायता प्रदान कर रहा है। इस समय भूटान में आठवीं पंच वर्षीय योजना (1 जुलाई 1997 से 30 जून 2002) चल रही है। भारत सरकार ने आठवीं पंचवर्षीय योजना में 900 करोड़ रुपये की मदद की है। इस कुल वचनबद्धता में से 500 करोड़ रुपये परियोजनाओं को सहायता के लिए रखे गए हैं। सहायता के अन्तर्गत चलने वाली परियोजनाओं में थिम्पू तथा मोंगार में अस्पताल परियोजनाएं, छोटी जल परियोजनाएं, पूर्वी ग्रिड ट्रांसमिशन लाइन तथा पुलों एवं सड़कों को शामिल करती हुई अन्य आधारभूत परियोजनाएं प्रमुख परियोजनाएं हैं।

इसके अतिरिक्त योजना विधि से भूटान में तीन बड़ी परियोजनाएं, यथा, 1020 मेगावाट ताला जल विद्युत परियोजना; 60 मेगावाट कुरिचु जल विद्युत परियोजना; और 0.5 मिलियन टन प्रतिदिन डुंगसुम सीमेंट परियोजना चल रही है। ताला तथा कुरिचु परियोजनाओं के लिए 60 प्रतिशत अनुदान तथा 40 प्रतिशत ऋण दिया गया है। डुंगसुम परियोजना पूरी तरह से अनुदान पर आधारित है।

वर्ष के दौरान विभिन्न उच्च स्तरीय यात्राएं भारत और भूटान के बीच घनिष्ठ क्रिया कलापों की निरन्तरता को दर्शाता है। भूटान के विदेश मंत्री श्री लियोन्पो जिग्मी वाई. थिन्ले 17-26 अप्रैल 2000 तक भारत की यात्रा पर आए। दोनों देशों के बीच घनिष्ठ मित्रता तथा सहयोग को और अधिक मजबूत करने के उद्देश्य से यह सद्भावना यात्रा थी। इस यात्रा के दौरान दोनों पक्षों ने दोनों देशों के बीच वृहद सहयोग की समीक्षा की तथा चल रही परियोजनाओं, विशेषकर जल विद्युत क्षेत्र, में समय से हो रही प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। दोनों पक्ष भारत में अक्टूबर/नवम्बर 2001 में भूटानी प्रदर्शनी भूटान की जीती जागती धार्मिक तथा सांस्कृतिक परम्पराएं - आयोजित करने पर सहमत थे।

भारत के विदेश सचिव श्री ललित मानसिंह 7-9 मार्च 2000 तक भूटान की यात्रा पर गए। अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने भूटान के महाराजाधिराज से मुलाकात की। भूटान के महाराजाधिराज ने विश्वास प्रकट किया कि दोनों देशों के बीच मैत्री, सहयोग तथा समझबूझ बढ़ना जारी रहेगा। विदेश सचिव ने 19-21 अक्टूबर 2000 को पुनः भूटान की यात्रा की तथा परस्पर हित के मसलों पर चर्चा की।

वर्ष के दौरान भारत से भूटान को कई अन्य महत्वपूर्ण यात्राएं हुईं। सचिव (कृषि सहयोग) तथा महानिदेशक (भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद) ने 20-24 जुलाई 2000 को भूटान की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान चावल, गेहूँ, मक्का, बागवानी जैसी फसलों की उत्पादकता में सुधार, बीज विकास कार्यक्रम, कृषि मशीनरी औजार तथा छोटे उपकरणों के क्षेत्र में परस्पर सहयोग से संबंधित मसलों पर चर्चा की गई।

सचिव (डाक) की 30 मार्च से 2 अप्रैल 2000 की भूटान यात्रा के समय डाक सेवा में संभावित सहयोग की संभावनाएं तलाशी गईं। सहयोग के क्षेत्रों के रूप में (क) मेघदूत 98 साफ्टवेयर प्रदान करने में भूटान की डाक सेवा को भारतीय डाक सेवा द्वारा सहायता तथा (ख) प्रशिक्षण तथा तकनीकी आदान-प्रदान सहयोग की पहचान की गई। दोनों देशों के बीच नियमित तथा उच्चस्तरीय परस्पर क्रिया कलाप विशिष्ट सम्पर्कों को परिलक्षित करता है।

दोनों सरकारें दक्षिण भूटान में उल्फा-बोडो उग्रवादियों के मसलों पर एक दूसरे के साथ सम्पर्क बनाए हुए हैं। भूटान की शाही सरकार इस समस्या से अत्यन्त चिंतित है। भूटान की राष्ट्रीय असेम्बली के जुलाई 1999 के 77वें सत्र में इस समस्या से निबटने के लिए त्रिआयामी नीति बनाई गई - (क) उग्रवादियों की आपूर्ति लाइनें काटना; (ख) उग्रवादियों के साथ किसी भी रूप में सहयोग करने वाले व्यक्तियों के खिलाफ 1992 के राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम के अन्तर्गत दृढ़ कार्रवाई करना, और (ग) उग्रवादियों से शांतिपूर्वक भूटान का क्षेत्र छोड़ने के लिए उन पर बातचीत की प्रक्रिया हेतु बराबर दबाव बनाना। जुलाई 2000 में राष्ट्रीय असेम्बली के 78वें सत्र में पारित संकल्प में 77वें सत्र में लिए गए निर्णयों को दोहराया गया तथा सरकार को उस दशा में उल्फा/बौडो की उग्रवादी गतिविधियों के विरुद्ध सैन्य कार्रवाई करने के लिए प्राधिकृत किया जब उग्रवादियों के साथ जारी शांतिपूर्ण बातचीत से अपेक्षित परिणाम प्राप्त न हों।

नेपाल में भारत के नए राजदूत श्री के. एस. जसरोटिया ने 6 नवम्बर 2000 को थिम्पू में शाही महल में आयोजित समारोह में अपने पद के प्रत्यय पत्र प्रस्तुत किए।

सार्क

वर्ष 2000 के दौरान सार्क क्रियाकलापों पर एक नजर

अक्टूबर 1999 में पाकिस्तान में सेना द्वारा तख्ता पलटने से सार्क प्रक्रिया पर प्रभाव पड़ने तथा ग्यारहवें सार्क शिखर सम्मेलन के (नवम्बर 1999) स्थगित होने के बावजूद सार्क के अन्तर्गत तकनीकी और कार्यात्मक सहयोग जारी रहा। इस वर्ष के दौरान लोगों से लोगों के बीच सभी प्रकार का बढ़ता हुआ सम्पर्क एक उल्लेखनीय घटना रही।

दक्षिण एशियाई विकास निधि (एस. ए. डी. एफ.)

दक्षिण एशियाई विकास निधि के शासी निकाय की छठी बैठक 22-23 मई, 2000 को मालदीव में हुई, जिसमें निधि के क्रियाकलापों की समीक्षा की तथा व्यावसायिक आधार पर निधियों को रखने के प्रस्तावों पर चर्चा हुई।

खुले तथा सुदूर शिक्षा के सार्क संकाय की बैठक (एस. ए. सी. ओ. डी. आई. एल.)

खुले तथा सुदूर शिक्षा के सार्क संकाय की संचालन समिति की पहली बैठक 28-29 अगस्त, 2000 को सार्क सचिवालय में हुई। इसने शिक्षा के सभी स्तरों पर खुली और सुदूर शिक्षा के उपयोग को प्रोत्साहन देने के लिए सार्क क्षेत्र में सहयोग के प्रस्तावों की जांच की।

अनुसंधानकर्त्ताओं के सार्क नेटवर्क की बैठक

अनुसंधानकर्त्ताओं के सार्क नेटवर्क की सार्वभौम वित्तीय और आर्थिक मसलों से सम्बद्ध तीसरी बैठक 31 अक्टूबर, 2000 को सार्क सचिवालय में हुई। अर्थशास्त्रियों तथा सरकारी विशेषज्ञों को मिलाकर नेटवर्क चयनित सार्वभौम मसलों तथा इस क्षेत्र पर उनके प्रभावों का गहन अध्ययन करता है ताकि जहाँ कहीं सम्भव हो साझी नीतियाँ और प्रस्तावों को तैयार किया जा सके। नेटवर्क के संबंध में भारत में नोडल संस्थान गुट-निरपेक्ष देशों की अनुसंधान और सूचना पद्धति ने श्रीलंका के नीति अध्ययन संस्थान के सहयोग से

दक्षिण एशिया आर्थिक पत्रिका का पहला अंक प्रकाशित किया। गुट-निरपेक्ष देशों की अनुसंधान और सूचना पद्धति सार्क के संबंध में एक वार्षिक कार्यकलाप के रूप में आर्थिक एवं विकास सर्वेक्षण भी प्रकाशित करेगी।

सार्क श्रव्य-दृश्य आदान-प्रदान बैठक

सार्क श्रव्य-दृश्य आदान-प्रदान समिति की उन्नीसवीं बैठक 19-20 दिसम्बर, 2000 को ढाका में हुई। समिति ने सहमत समय सूची के अनुसार सदस्य देशों को प्रसारित करने के लिए वर्ष 2001 के लिए टेलीविजन और रेडियो कार्यक्रमों को अन्तिम रूप दिया। समिति ने वार्षिक सार्क टेली-फिल्म समारोह के आयोजन का भी निर्णय लिया।

वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक

सार्क के वरिष्ठ अधिकारियों की विशेष बैठक 13-15 नवम्बर, 2000 तक कोलम्बो में हुई। बैठक में अन्य बातों के साथ-साथ तकनीकों समितियों, दक्षिण एशिया अधिमानी व्यापार व्यवस्था (साफ्टा) की विशेषज्ञ स्तर की बैठकों और दक्षिण एशिया मुक्त व्यापार क्षेत्र (साफ्टा) की बैठकों का आयोजन करने के लिए कलेण्डर को अन्तिम रूप दिया गया। सार्क सामाजिक चार्टर, दोहरे कराधान के परिहार तथा आतंकवाद से सम्बद्ध अभिसमय की समीक्षा के लिए विधि विशेषज्ञों की बैठकों का आयोजन करने की समय-सारिणी को भी अन्तिम रूप दिया गया। भारत (इस समय समन्वयक होने के नाते) ने 22-25 जनवरी, 2001 तक विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी से सम्बद्ध तकनीकी सहयोग और मानकों, कोटि नियंत्रण एवं नाप से सम्बद्ध स्थायी दल की दूसरी बैठक की मेजबानी दिल्ली में करने का प्रस्ताव किया।

सार्क तकनीकी समितियाँ

सार्क एकीकृत कार्यक्रम को क्रियान्वित करने के लिए सार्क तकनीकी समितियाँ प्रमुख तंत्र हैं। चूँकि सार्क एकीकृत कार्यक्रम को 1999 में दुबारा तैयार किया गया है, इसलिए पुनर्गठित समितियों की बैठकें तब शुरू हुई जब 4-5 जुलाई, 2000 को काठमाण्डु में कृषि और ग्रामीण विकास से सम्बद्ध तकनीकी समिति (पुनर्गठित) की पहली बैठक आयोजित हुई। इसने ग्रामीण अवसंरचना के विकास से सम्बद्ध मसलों, बेहतर भण्डारण के जरिए खाद्य उत्पादन में बढ़ोतरी, प्रसंस्करण तथा कोटि, बायोमास

ऊर्जा का प्रयोग, डेयरी उत्पादन की मछलियों की बिक्री, पशुधन विकास तथा स्वच्छता और कृषि के पादप स्वच्छता पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित किया।

संचार तथा परिवहन से सम्बद्ध तकनीकी समिति की पहली बैठक 5-6 जनवरी, 2001 को इस्लामाबाद में सम्पन्न हुई। समिति ने विचाराधीन विषयों को अन्तिम रूप दिया और संचार तथा परिवहन के क्षेत्रों में सहयोग के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा हुई।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी से सम्बद्ध तकनीकी समिति की पहली बैठक 23-25 जनवरी, 2001 तक नई दिल्ली में हुई। इस बैठक में जीव-प्रौद्योगिकी पर विशेष ध्यान देते हुए विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग पर चर्चा हुई।

गैर-सरकारी संगठनों की बैठकें

इस क्षेत्र में सिविल समाज स्तर पर विभिन्न क्रियाकलाप हुए जिनमें कार्यशालाएँ और सेमिनार शामिल हैं जो दक्षिण एशियाई समाज के विभिन्न समुदायों के भीतर सम्पर्क बढ़ाने के लिए किए गए थे।

नवीकरण योग्य ऊर्जा की वित्त-व्यवस्था से सम्बद्ध क्षेत्रीय बैठक

दक्षिण एशिया में स्थायी विकास के लिए नवीकरण योग्य ऊर्जा की वित्त-व्यवस्था तथा ग्रामीण निर्धनता के उन्मूलन से सम्बद्ध क्षेत्रीय बैठक विश्व ऊर्जा परिषद के साथ संयुक्त रूप से 12-14 जून, 2000 को कोलम्बो में सम्पन्न हुई। सतत् ऊर्जा भविष्य से सम्बद्ध क्षेत्रीय संदर्शों पर चर्चा करने के लिए सरकारी अधिकारियों, नीति-निर्माताओं और विशेषज्ञों को एक मंच प्रदान करता है।

शहरी शासन पहलकदमी के सहयोग से सार्क सचिवालय ने 10-12 जुलाई, 2000 तक “शहरीकरण और अच्छे शहरी शासन” से सम्बद्ध एक सम्मेलन की मेजबानी की। सरकारी अधिकारियों, शहरी प्राधिकारियों और उसी मंच की भागीदारी करने वाले नागरिक समुदाय के संगठनों ने शहरी प्राधिकारियों और नागरिक समुदाय के बीच भागीदारी मानव संसाधन विकास तथा अनुकूलतम संसाधन उपयोगिता आदि पर चर्चा की।

दक्षिण एशिया व्यवसाय नेतृत्व शिखर-सम्मेलन

कर्नाटक व्यापार मण्डल तथा उद्योग परिसंघ, भारतीय व्यापार मण्डल तथा उद्योग परिसंघ तथा सार्क व्यापार तथा उद्योग मंडल की एक संयुक्त पहल के रूप में 18-19 अगस्त, 2000 को बंगलौर में दक्षिण एशिया व्यवसाय नेतृत्व शिखर सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस शिखर सम्मेलन ने देश की उन विस्तृत प्रस्तुतियों का उल्लेख किया जिन्होंने प्रत्येक देश के तुलनात्मक लाभ के विशिष्ट क्षेत्रों को तय किया। इनमें वस्त्र और गारमेंट क्षेत्र, सूचना प्रौद्योगिकी, चमड़े का सामान, दूर-संचार, पर्यटन, चाय आदि शामिल हैं।

सार्क विधि सम्मेलन

सार्क विधि सम्मेलन जो सार्क का मान्यता प्राप्त क्षेत्रीय शीर्ष निकाय है, ने 22-24 सितम्बर, 2000 तक नेपाल में अपना आठवां वार्षिक सम्मेलन किया। सार्क की परंपरा को देखते हुए सार्क देशों के मुख्य न्यायाधिशों का पांचवा सम्मेलन सार्क विधि सम्मेलन के साथ-साथ हुआ।

अन्य क्षेत्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय निकायों के साथ सहयोग

सार्क ने दक्षिण एशियाई क्षेत्र में स्वास्थ्य के क्षेत्र में सुधार के अपने प्रयासों के भाग के रूप में 23 अगस्त, 2000 को विश्व स्वास्थ्य संगठन के साथ समझौता ज्ञापन सम्पन्न किया। इस समझौता-ज्ञापन में काठमांडु स्थित सार्क ट्यूबरक्यूलोसिस तथा दक्षिण एशिया विशेषकर वे जो मलेरिया, क्षयरोग और एच आई वी/एड्स के उन्मूलन में सक्रिय हैं, की अन्य संस्थानों के बीच सहयोग की व्यवस्था है।

एस्केप ने सार्क क्षेत्र में व्यापार को सुविधाजनक बनाने के संबंध में 3-4 अगस्त, 2000 को दिल्ली में एक क्षेत्रीय कार्यशाला आयोजित की। उसमें क्रियाविधियों को सरल बनाने और व्यापार को सुविधाजनक बनाने सहित इलेक्ट्रॉनिक डाटा इन्टरचेंज और ई-कामर्स से संबंधित मसलों को निपटाया।

यूरोपीय संघ ने सार्क सदस्य देशों को 1 अक्टूबर, 2000 से क्षेत्रीय मौलिक भण्डार के लाभ की पेशकश करने का निर्णय लिया।



2

दक्षिण पूर्व एशिया और प्रशांत

दक्षिण प्रभाग के अन्तर्गत म्यामां, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड तथा प्रशान्त द्वीप के देशों तथा फिजी और पपुआ न्यू गिनी के देशों को छोड़कर दक्षिण पूर्व एशिया (आसियान के सदस्य देश) के देश आते हैं। दक्षिण पूर्वी एशिया में इन देशों के साथ भारत के संबंध परम्परागत तौर पर घनिष्ठ एवं निकट के हैं क्योंकि हमारी साझी तथा ऐतिहासिक विरासत है। शीत युद्ध की समाप्ति तथा पिछली शताब्दी के अंतिम दशक में आर्थिक सुधार शुरू होने से इन देशों के साथ द्विपक्षीय स्तर तथा क्षेत्रीय ग्रुप अर्थात् आसियान के साथ भारत के संबंधों के प्रसार तथा उनमें विविधता लाने में भारत द्वारा अपनाई गई 'लुक ईस्ट' की नीति तथा प्रमुख बाजारों के रूप में हमारी संभाव्यता ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस सानिध्य से दोनों ओर से उच्च स्तरीय यात्राएं हुईं। भारत 1992 में आसियान का क्षेत्रीय वार्ता भागीदार बना तथा 1996 में पूर्ण वार्ता भागीदार तथा आसियान क्षेत्रीय मंच का सदस्य बना। इस भागीदारी से निश्चय ही आसियान सदस्य देशों के साथ इसके संबंधों में महत्वपूर्ण विस्तार एवं विविधता आई।

भारत और आसियान के बीच कुल द्विपक्षीय व्यापार 1993-1994 के 2.5 बिलियन अमरीकी डालर से 1999-2000 में 7.3 बिलियन अमरीकी डालर की नई ऊँचाई तक पहुँच गया। यह महत्वपूर्ण वृद्धि इस तथ्य के बावजूद हुई कि 1997-99 के दौरान वित्तीय तथा आर्थिक संकटों से गुजरे बहुत से आसियान देश अभी भी अपनी अपनी अर्थव्यवस्थाओं को सुदृढ़ बनाने की प्रक्रिया में लगे हैं।

आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड के साथ पोखरन-II के बाद संबंधों में आई संक्षिप्त अवधि की गिरावट के बाद इन देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों को नवीकृत किया गया

है। आस्ट्रेलिया के प्रधान मंत्री हावर्ड ने जुलाई 2000 की यात्रा एफ. एम. श्री डाउनर, आस्ट्रेलियाई अप्रवासन मंत्री व्यापार मंत्री श्री मुरासोली मारन और संसदीय शिष्टमंडल ने अप्रैल 2000 में न्यूजीलैंड की यात्रा की तथा न्यूजीलैंड के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री जिम सुतन पिछले वर्ष नवम्बर में भारत यात्रा पर आए।

दक्षिणी प्रशान्त द्वीप के देशों के साथ भारत के संबंध सौहार्दपूर्ण एवं मैत्रीपूर्ण हैं, फिजी की आंतरिक परिस्थितियों के कारण वह इसका अपवाद है। भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ के नवीनतम सदस्य के रूप में तुवालू के प्रवेश को सह प्रायोजित किया। ए. आर. एफ. पी. एम. सी. बैठकों के दौरान बैंकाक में पापुआ न्यू गिनी के साथ मंत्रिस्तरीय संपर्क कायम किया गया।

आस्ट्रेलिया

जुलाई 2000 में प्रधान मंत्री जान हावर्ड की यात्रा के बाद भारत और आस्ट्रेलिया के बीच द्विपक्षीय संबंधों को नई गति तथा स्फूर्ति मिली। इस वर्ष की गई महत्वपूर्ण यात्राओं में विपक्ष के नेता श्री किम बीजले (अप्रैल), आस्ट्रेलिया के अप्रवासन तथा बहु सांस्कृतिक मामलों के मंत्री श्री फिलीप रूडाक (17-20 जुलाई), आस्ट्रेलिया के व्यापार मंत्री श्री मार्क वेली (17-20 अक्टूबर) तथा आस्ट्रेलियाई संसदीय शिष्ट मण्डल (17-23 नवम्बर) की यात्राएं प्रमुख हैं।

आस्ट्रेलियाई विदेश मंत्री श्री एलेक्जेंडर डाउनर की मार्च 2000 की यात्रा के दौरान दोनों देशों द्वारा सिद्धान्ततः रक्षा संबंध शुरू करने की घोषणा के बाद रक्षा संबंध शुरू

करने पर विचार करने के लिए मई 2000 में रक्षा वार्ता हुई। तत्पश्चात तत्कालीन विदेश सचिव श्री टी. आर. प्रसाद ने अगस्त/सितम्बर 2000 में आस्ट्रेलिया का दौरा किया। एक दूसरे के देश में अन्योन्य आधार पर रक्षा अताशे रखने का कार्य प्रगति पर है।

भारतीय पक्ष की ओर से की गई प्रमुख आस्ट्रेलिया यात्राओं में वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री मुरासोली मारन की 11-12 अप्रैल तक की यात्रा, जिन्होंने अधिकारियों तथा व्यापारियों के भारतीय प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व किया, विश्व आर्थिक मंच की बैठक में भाग लेने के लिए विनिवेश मंत्री श्री अरूण शोरि की 11-13 सितम्बर की यात्रा सिडनी 2000 ओलम्पिक खेल में शामिल होने के लिए युवा मामलों तथा खेल मंत्री श्री शहनवाज हुसैन की यात्रा तथा वस्त्र मंत्री श्री कांशीराम राणा की 5-12 नवम्बर की यात्रा प्रमुख हैं। फिजी में संकट के दौरान सचिव (ई. आर.) श्री एस. टी. देवरे 31 मई से 1 जून तक आस्ट्रेलिया की यात्रा पर गए। आस्ट्रेलिया में अपने प्रवास के दौरान उन्होंने विदेश मंत्री श्री डाउनर से मुलाकात की तथा विदेश मामलों तथा व्यापार विभाग के अधिकारियों के साथ गोल मेज बैठक की। विदेश मंत्री श्री जसवंत सिंह ने आसियान पी. एम. सी. बैठकों के दौरान जुलाई 2000 में आस्ट्रेलिया के विदेश मंत्री श्री एलेक्जेंडर डाउनर से मुलाकात की।

आस्ट्रेलिया के संचार, सूचना प्रौद्योगिकी एवं कला मंत्री श्री रिचर्ड एल्लस्टन के नेतृत्व में एक व्यापार मिशन 8-11 दिसम्बर 2000 तक भारत आया। इस प्रतिनिधिमंडल में सूचना प्रौद्योगिकी तथा संचार क्षेत्र के प्रतिनिधि शामिल थे। अपनी यात्रा के दौरान सीनेटर एल्लस्टन ने इस उपमहाद्वीप की सबसे बड़ी सूचना प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी दि. आई. टी. वर्ल्ड 2000/कामडेक्स इंडिया में भाग लिया। अपने समकक्ष सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री प्रमोद महाजन की बैठक के अलावा पेंटासोफ्ट, एन. आई. आई. टी., इन्फोसिस के प्रतिनिधियों और आस्ट्रेलिया भारत सूचना उद्योग व्यवसाय नेटवर्क के प्रतिनिधियों की बैठकें हुईं। सीनेटर एल्लस्टन ने 8 दिसम्बर 2000 को नासकाम बिजनेस नेटवर्किंग में दोपहर के भोजन के समय प्रतिनिधियों को भी संबोधित किया।

सैन्य सलाहकार कर्नल पाल पावर दो वर्ष के अन्तराल के बाद नई दिल्ली में आस्ट्रेलियाई उच्चायोग में अपने पद पर नियुक्ति के लिए जनवरी 2001 में भारत आए। आस्ट्रेलिया ने पोखरन-II विस्फोट के बाद अपना रक्षा सलाहकार वापस बुला लिया था।

विदेश व्यापार महानिदेशक श्री एन. एल. लखनपाल के नेतृत्व में 7 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल कृषि एवं पशुपालन संबंधी मसलों पर आस्ट्रेलियाई सरकार के संबंधित मंत्रालयों और विभागों के साथ क्रियाकलाप करने तथा एस. पी. एस. मानकों तथा आस्ट्रेलिया में क्रियान्वयन तंत्रों का अध्ययन करने के लिए 21-27 जनवरी तक आस्ट्रेलिया की यात्रा पर गया।

अन्य घटनाओं में ले. कर्नल महेश के नेतृत्व में तीन सदस्यीय भारतीय याचिंग दल द्वारा जनवरी 2001 में मेलबार्न इन्टरनेशनल रिगेटा 2001 में भाग लेना तथा आस्ट्रेलियाई नौ सैनिक जहाज 'डार्विन', जो 17 फरवरी 2001 को मुम्बई में आयोजित होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय फ्लीट रिव्यू में भाग लेगा, का भाग लेना शामिल है।

ब्रुनेई

ब्रुनेई दार-ए-सलाम के साथ द्विपक्षीय संबंध सौहार्दपूर्ण तथा मैत्री पूर्ण बने रहे जो परस्पर सद्भावना और समझबूझ पर आधारित हैं। दोनों पक्षों ने सतत् वार्ता को आगे बढ़ाने तथा द्विपक्षीय संबंधों का प्रसार करने हेतु अपने प्रयत्न जारी रखे।

ब्रुनेई के विदेश मंत्रालय की स्वतंत्र राजदूत सुल्तान की बहन महामान्या राजकुमारी मासाना अप्रैल 2000 में भारत आई। तेल और गैस के क्षेत्र में ब्रुनेई को प्रमुख महत्व देते हुए इंडियन आयल कार्पोरेशन के अध्यक्ष के नेतृत्व में भारत का पैट्रोलियम शिष्टमण्डल जुलाई में ब्रुनेई गया। एक अन्य घटना में ब्रुनेई ने जनवरी 2001 से राष्ट्रीय रक्षा कालेज, दिल्ली में वरिष्ठ अधिकारियों के पाठ्यक्रम में भाग लेने के लिए रायल ब्रुनेई एअर फोर्स के एक वरिष्ठ अधिकारी कमांडर को नामांकित किया। हमारे विशेष आसियान तकनीकी सहायता कार्यक्रम के भाग के रूप में भारत द्वारा ब्रुनेई को प्रस्तावित 10 प्रशिक्षण सीटों का उपयोग करते हुए ब्रुनेई के मध्यम श्रेणी के सात अधिकारियों के एक दल ने भारत में 5 सप्ताह के सूचना प्रौद्योगिकी पाठ्यक्रम में भाग लिया।

द्विपक्षीय व्यापार अभी भी कम है। 1999-2000 के दौरान ब्रुनेई को हमारा निर्यात 6.46 करोड़ रूपए का था। भारतीय कम्पनियों विशेष तौर पर सूचना प्रौद्योगिकी तथा दवाओं ने ब्रुनेई की कम्पनियों के साथ वाणिज्यिक संबंध बनाने में व्यापक रुचि दिखाई।

कम्बोडिया

कम्बोडिया के साथ हमारे संबंधों की पराकाष्ठा तब देखने को मिली जब प्रधान मंत्री श्री सामदेक हुन सेन ने 12 अप्रैल को हवाना में आयोजित पहले दक्षिण शिखर सम्मेलन में खुले तौर पर संयुक्त राष्ट्र महासभा की सीट पर हमारे दावे का समर्थन किया तथा तीसरे विश्व की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए विश्व निकाय को नवीकृत करने की आवश्यकता पर बल दिया। इस कार्य की तत्काल हवाना में ही मानव संसाधन मंत्री ने सराहना की। 16 नवम्बर को पुनः संयुक्त राष्ट्र महा सभा के 55 वें अधिवेशन में कम्बोडिया के पी. आर. ने एक वक्तव्य देकर सुरक्षा परिषद की सीट पर भारत की दावेदारी का समर्थन किया। प्रधानमंत्री श्री सामदेक हुन सेन की फरवरी की भारत यात्रा के दौरान कम्बोडिया का यह विचार एक अन्य पहल थी कि भारत को आसियान + चीन तथा आसियान + 3 (चीन, जापान तथा दक्षिण कोरिया) के आधार पर आसियान में भागीदारी करनी चाहिए।

भारत ने कम्बोडिया को 10 मिलियन अमरीकी डालर के ऋण का प्रस्ताव किया। इस ऋण का उपयोग कम्बोडिया की सिंचाई परियोजनाओं, जल संसाधनों के विकास तथा कम्बोडिया के रायल कृषि विश्वविद्यालय में मानव संसाधन क्षमताओं के विकास के लिए किया जाएगा। उन्होंने निम्नलिखित चार क्षेत्रों में विस्तृत परियोजना प्रस्ताव भेजे हैं, जिनकी जांच की जा रही है :- क) स्थायी वन सम्पत्ति की स्थापना, ख) नोम तामऊ वन्य जीवन पार्क, ग) कृषि प्रसार संबंधी प्रमाणपत्र कार्यक्रम, और (घ) सामुदायिक वन्य भागीदारी द्वारा स्थायी वन प्रबंधन हेतु ग्रामीण व्यक्तियों के जीवन स्तर में सुधार।

कम्बोडिया के साथ हमारा आईटेक कार्यक्रम जोर-शोर से चल रहा है। हमने विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत कम्बोडिया को 40 सीटें तथा सैन्य प्रशिक्षण के लिए 4 सीटें दी हैं। इनका पूरी तरह से उपयोग किया गया है।

कम्बोडिया ने दिसम्बर में खजुराहो में सम्पन्न अन्तर्राष्ट्रीय रामायण मेले में 15 सदस्यीय दल भेजा। इस से पूर्व कलकत्ता के अन्तर्राष्ट्रीय कला केन्द्र ने मिशन तथा संस्कृति तथा फाइन आर्ट्स मंत्रालय के सहयोग से नाम्पेन्ह में वीभिग एन एशियन केनवास विषय पर पेंटिंग प्रदर्शनी आयोजित की।

कम्बोडिया ने 8-10 नवम्बर को वियन्तियाने में हाल में सम्पन्न गंगामेकांग कार्यक्रम

वार्ता में भाग लिया इससे शिक्षा, सूचना प्रौद्योगिकी तथा मेकांग क्षेत्र में आधारभूत विकास के क्षेत्रों में पर्याप्त लाभ मिलने की आशा है।

भारत ने पिछले वर्ष कम्बोडिया में बाढ़ से मुकाबला करने के लिए 35 लाख रुपये मूल्य की सामान्य दवाओं की चिकित्सा सहायता भेजी। यह सामग्री 12 जनवरी 2001 को कम्बोडियाई रेडक्रास को सौंपी गई।

कम्बोडियाई विदेशी मामलों तथा अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग मंत्रालय के स्थायी सचिव डॉ. चाम विद्या आसियान-भारत वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक में भाग लेने के लिए 18-19 जनवरी को दिल्ली आए।

दिसम्बर 2000 में खजुराहो में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय रामायण महोत्सव में संस्कृति एवं ललित कला मंत्रालय की ओर से आए 15 सदस्यीय कम्बोडियाई रायल बैलेट ने कला मंचन किया। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद ने इस यात्रा के दौरान अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा व्यय तथा स्थानीय आतिथ्य पर हुए सम्पूर्ण व्यय को वहन किया।

अन्तर संसदीय संघ की अध्यक्षा माननीया नजमा हेपतुल्ला एसोसिएशन ऑफ एशियन पार्लियामेंट्स फॉर पीस कान्फ्रेंस के पूर्ण सत्र में प्रमुख अभिभाषण देने के लिए 23-24 जनवरी 2001 को नामपेन्ह गई। अपने संबोधन में उन्होंने एशियाई सांस्कृतिक एकता तथा एशियाई जीवन मूल्यों, जो एशिया प्रशान्त के देशों में अंतरंग क्रियाकलाप करते हैं, को सक्रिय बनाने पर जोर दिया।

विदेश सेवा संस्थान के डीन श्री दलीप मेहता 24-25 जनवरी 2001 को नामपेन्ह गए तथा उन्होंने कम्बोडिया की शाही सरकार के विदेशी मामलों एवं अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से संबद्ध मंत्रालय तथा विदेश सेवा संस्थान के बीच सहयोग से संबंधित मामलों पर चर्चा की। उन्होंने अपने प्रमुख वार्ताकारों को समझौता ज्ञापन का एक प्रारूप विचारार्थ सौंपा जिसमें दोनों विदेश कार्यालयों के बीच संवर्धित सहयोग की व्यवस्था है। उन्होंने अपने मेजवानों को यह आश्वासन दिया कि भारत कम्बोडिया को मदद देने के लिए अपने विदेश सेवा संस्थान के अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों में और अधिक प्रशिक्षण सीटें प्रदान करने का प्रयत्न करेगा।

कम्बोडियाई रक्षा मंत्री एवं उनका प्रतिनिधिमंडल बंगलौर में 7-9 फरवरी 2000 को आयोजित होने वाली तीसरी एअरोस्पेस प्रदर्शनी एरो इंडिया 2001 को देखने भारत आएंगे।

फिजी

मई 2000 में सिविल विद्रोह के बाद उस समय दोनों देशों के बीच संबंध खराब हुए जब जार्ज स्पेट के नेतृत्व में सशस्त्र दल ने संसद में पथराव किया, उन व्यक्तियों ने प्रधान मंत्री सहित अन्य मंत्रियों को बन्दी बना लिया। यह संकट 56 दिन बाद 13 जुलाई को खत्म हुआ।

19 मई को विद्रोह की खबर सुनकर भारत सरकार ने वक्तव्य जारी किया तथा 'गहरी आकुलता एवं खेद' व्यक्त किया। एवं प्रधान मंत्री श्री महेन्द्र पाल चौधरी तथा उनके मंत्रिमण्डल के सहयोगियों के कल्याण के बारे में चिन्ता जताई। वक्तव्य में फिजी से हरारे घोषणा के सिद्धान्तों तथा मिलब्रुक कार्य योजना का पालन करने का आह्वान किया गया। 23 मई को प्रधान मंत्री श्री चौधरी के रिश्तेदारों के दल से प्रधान मंत्री श्री वाजपेयी की मुलाकात के बाद एक प्रेस वक्तव्य जारी किया गया। 29 मई को फिजी में मार्शल लॉ लागू होने के बाद विदेश मंत्री ने सचिव (ई. आर.) श्री एस. टी. देवरे को परामर्श हेतु आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड का दौरा करने का निर्देश दिया। श्री देवरे 1 तथा 2 जून को भारतीय मूल के व्यक्तियों की दशा का पता लगाने के लिए सूचा भी गए। आस्ट्रेलिया में भारतीय उच्चायुक्त श्री सी. पी. रविन्द्र नाथन भी श्री देवरे के साथ गए।

बन्धक अवस्था से मुक्त होने के बाद प्रधान मंत्री चौधरी 16-26 अगस्त 2000 जक भारत यात्रा पर आए। श्री चौधरी ने राष्ट्रपति प्रधान मंत्री तथा विदेश मंत्री से मुलाकात की प्रधान मंत्री तथा विदेश मंत्री दोनों ने श्री चौधरी को फिजी में 1997 के संविधान के अनुसार प्रजातंत्र की स्थापना के लिए भारत के पूरे समर्थन का आश्वासन दिया।

इसके बाद भारत ने राष्ट्रमण्डल में तथा आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड और यूनाइटेड किंगडम की सरकारों के साथ मिलकर फिजी पर दबाव बनाए रखा है।

विदेश मंत्री ने 19 सितम्बर 2000 को संयुक्त राष्ट्रमहासभा में फिजी पर अपने वक्तव्य के दौरान कहा कि फिजी की घटनाएं चिन्ता का विषय है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि फिजी में शीघ्र ही 1997 की संवैधानिक व्यवस्था लागू होगी तथा जातीय भेदभाव दूर करके शीघ्र ही विधि सम्मत शासन कायम होगा।

सचिव (ई. आर.) ने 15वें राष्ट्रमंडलीय सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमण्डल का

नेतृत्व किया तथा फिजी में प्रजातांत्रिक संस्थाओं के भंग होने और विशेष तौर पर भारतीय समुदाय की प्रहार्यता को रेखांकित किया। उन्होंने यह भी कहा कि राष्ट्रमण्डल, जिसके पर्यवेक्षण में 1997 के फिजी का संविधान बना है तथा गारंटी देता है तथा यह फिजी के दीर्घावधिक हित में है। संविधान समीक्षा समिति/आयोग की स्थापना द्वारा संविधान को पुनर्जीवित करने के प्रयासों से वहां के लोगों में और अधिक परेशानी पैदा करेगा।

15 नवम्बर को लाउटोका उच्च न्यायालय के जज श्री एथोनी गेटस ने एक ऐतिहासिक व्यवस्था दी कि जार्ज स्पेट के मई के विद्रोह के दौरान 1997 के संविधान को रद्द करना अवैध था। न्यायमूर्ति एंथनी गेटस ने बाद में निर्देश दिया कि शत्रु सर कामिसेसे मारा को राष्ट्रपति पद पर आसीन किया जाए, संसद दोबारा बुलाई जाए, और यह कि नया 'संविधान समीक्षा आयोग' जिसे अवैध माना गया है, तत्काल रद्द किया जाए।

16 नवम्बर 2000 को जारी प्रेस वक्तव्य में भारत सरकार ने फिजी हाई कोर्ट के 15 नवम्बर 2000 के फैसले का स्वागत किया तथा कहा कि 1997 का संविधान सर्वोच्च तथा कायम है तथा यह कि फिजी में राष्ट्रपति, सीनेट तथा हाउस ऑफ रिप्रेजेन्टेटिव से युक्त फिजी की संसद अभी भी कायम है। हाई कोर्ट ने व्यवस्था दी है कि संविधान समीक्षा आयोग का कोई वैध आधार नहीं है। भारत सरकार इसे फिजी में लोकतांत्रिक शक्तियों की विजय मानती है तथा हाईकोर्ट द्वारा व्यक्त इस आशा का समर्थन करती है कि सेवा संवैधानिक प्रक्रिया द्वारा सत्ता को बिना वाधा के तथा शांतिपूर्वक हस्तांतरित करेगी।

संयुक्त सचिव (दक्षिण) तथा संयुक्त सचिव (कार्मिक) श्री अजय सिंह सहित एक शिष्टमण्डल ने 20-23 अक्टूबर तक परिचय यात्रा के तौर पर फिजी का दौरा किया। उन्होंने विभिन्न पदाधिकारियों तथा फिजी की जनता के अनेक वर्गों से मुलाकात की।

राष्ट्रमंडल महासचिव डान मैक किन्नन ने 1 दिसम्बर 2000 को दक्षिण अफ्रीका के संवैधानिक न्यायालय के उपाध्यक्ष न्यायमूर्ति पियस लांगा को फिजी में प्रजातंत्र की पुनः स्थापना तथा राष्ट्रीय एकता को संवर्धित करने की प्रक्रिया को तेज करने में सहायता देने के लिए कार्य करने हेतु फिजी में अपना विशेष दूत नियुक्त किया।

आस्ट्रेलिया ने सितम्बर 2000 में समाप्त हुई आयात ऋण योजना से संबद्ध अगला करार करने का निर्णय लिया। इस योजना के अन्तर्गत फिजी में तैयार कपड़ों को आयात ऋण के मद्दे आस्ट्रेलियाई कम्पनियाँ आयात कर सकती हैं।

लाटोका हाईकोर्ट के न्यायाधीश न्यायमूर्ति एंटनी गेट्स ने 15 नवम्बर 2000 को महत्वपूर्ण व्यवस्था दी कि जार्ज स्पेट के मई के विद्रोह के बाद 1997 के संविधान को रद्द करना एक अवैध कृत्य था। न्यायमूर्ति एंटनी गेट्स ने परिणाम स्वरूप निर्देश दिया कि शतु सर कामिसेसे मारा को पुनः राष्ट्रपति बनाया जाए, संसद का अधिवेशन पुनः बुलाया जाए तथा यह कि संविधान समीक्षा आयोग जिसे अवैध कहा गया है, तत्काल भंग किया जाए। यह निर्णय फिजी के भारतीय मूल के किसान श्री चंडिका प्रसाद द्वारा दायर उस याचिका में दिया गया जिसमें इस विद्रोह से हुई हानि के लिए राहत सहायता देने की मांग की गई थी।

आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड ने 16 दिसम्बर को कहा कि वे फिजी में उपयुक्त तरीके से गठित प्राधिकरण द्वारा चुने गए किसी नेता को स्वीकार कर लेंगे।

देश भर में 31 दिसम्बर 2000 को 1133 जमीनी पट्टे समाप्त हो गए। इसके परिणाम स्वरूप बहुत से किसान, जिनमें अधिकतर भारतीय मूल के फिजीवासी हैं, घर तथा जीवन यापन के साधनों से विहीन हो गए। 71 पट्टाधारी किसानों को, जिनके पट्टे समाप्त हो गए, अंतरिम सरकार ने 29 दिसम्बर 2000 को 28000 अमरीकी डालर का पुनर्वास अनुदान प्रदान किया।

अंतरिम प्रशासन के अटार्नी जनरल श्री क्वेराकी ने उन पांच जजों के नामों की घोषणा की जो न्यायमूर्ति गेट्स के निर्णय के विरुद्ध की गई अपील को 19-2-2001 से सुनेंगे। इनमें टोंगा के मुख्य न्यायधीश, समोआ के उप मुख्य न्यायधीश, आस्ट्रेलिया के दो जज तथा एक न्यूजीलैंड का जज शामिल है।

फिजी की स्थिति तथा फिजी में भारतीय मूल के व्यक्तियों के हितों पर चर्चा करने के लिए फिजी की पीपुल्स को कोलीजन सरकार के प्रधानमंत्री महेन्द्र पाल चौधरी के, 26 फरवरी 2001 को भारत यात्रा पर आने की संभावना है।

इण्डोनेशिया

इस अवधि में इंडोनेशिया में जनतंत्रीकरण और आर्थिक सुधार की परिस्थितियाँ धीरे-धीरे सुधरी हैं।

हमारे द्विपक्षीय संबंध, जिन्हें राष्ट्रपति वाहिद की फरवरी 2000 की भारत की राजकीय यात्रा के दौरान बल मिला, संवर्धित हुए। सूचना प्रौद्योगिकी एवं संसदीय कार्य मंत्री श्री प्रमोद महाजन जून में (30 जून से 21 जूलाई) सूचना प्रौद्योगिकी से सम्बद्ध अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार में तीन से एक प्रमुख वक्ता के रूप में भाग लेने के लिए इण्डोनेशिया गए। अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने इण्डोनेशिया के राष्ट्रपति श्री अब्दुर्रहमान वाहिद से मुलाकात की।

जकार्ता में सम्पन्न इण्डोनेशियाई अन्तर्राष्ट्रीय तेल, गैस तथा ऊर्जा सम्मेलन तथा प्रदर्शनी में भाग लेने के लिए पैट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस मंत्री श्री राम नाइक सितम्बर (18-22) में इण्डोनेशिया गए। अपनी यात्रा के दौरान श्री राम नाइक ने इण्डोनेशिया के राष्ट्रपति से मुलाकात की तथा तेल एवं गैस के क्षेत्र में भारत एवं इंडोनेशिया के बीच सहयोग, हेतु वहां अपने समकक्ष मंत्री से मुख्य वार्ता की। उनकी इस यात्रा से भारत और इण्डोनेशियाई तेल कम्पनियों के बीच चल रही वार्ता में ठोस परिणाम प्राप्त करने की प्रक्रिया को गति मिली।

लोकसभा के माननीय स्पीकर श्री सी. एम. सी. बालयोगी ने अक्टूबर (15-21) में जकार्ता में सम्पन्न अन्तर संसदीय संघ सम्मेलन के 104वें सम्मेलन में 10 सदस्यीय संसदीय प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व किया।

राज्य सभा की माननीय उप सभापति डॉ. (श्रीमती) नजमा हेपतुल्ला ने आई.पी. यू. सम्मेलन में अन्तर संसदीय परिषद की अध्यक्ष की हैसियत से भाग लेने के लिए अक्टूबर (15-21) में इण्डोनेशिया की यात्रा की।

रिपोर्ट की अवधि में उच्च स्तरीय यात्राओं द्वारा प्रदान रक्षा के क्षेत्र में भी सहयोग बढ़ा। एन. डी. सी. की एक टीम ने मई (27 मई-2 जून) में इंडोनेशिया का दौरा किया। इंडोनेशिया के नौ सेना प्रमुख एडमिरल एकहैमद सुतजीपतो सितम्बर (सितम्बर 17-21) में भारत आए। भारतीय नौ सेना की पूर्वी कमान के भारतीय नौ सेना पोत आई. एन.

एस. दिल्ली, आई. एन. एस. आदित्य तथा आई. एन. एस. कुठार सद्भावना यात्रा पर अक्टूबर (5-8) में गए।

इंडोनेशिया में आर्थिक संकट के समय हमारे द्विपक्षीय संबंधों में अच्छा सुधार हुआ। द्विपक्षीय व्यापार 1998-99 में 4267.50 करोड़ रुपये का था जो बढ़कर 1999-2000 में 5707.70 करोड़ रुपये का हुआ। इस वर्ष हमारे आर्थिक एवं वाणिज्यिक संबंधों में विविधता आई तथा उनमें वृद्धि हुई। वाणिज्यिक तौर पर भारत के ट्रेक्टरों, सिंचाई पम्पों तथा दुपहिया वाहनों जैसे उत्पादों ने इंडोनेशिया के बाजार में प्रवेश किया आर्थिक दृष्टि से हमने तेल तथा गैस के क्षेत्र में सहयोग की शुरुआत की है।

दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देने के रूप में भारत और इंडोनेशिया के सांस्कृतिक दल एक दूसरे के देशों में गए। अप्रैल में सुश्री जयलक्ष्मी इश्वर के नेतृत्व में भरतनाट्यम दल इंडोनेशिया गया। दिसम्बर में खजुराहो में सम्पन्न अन्तर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलन में भाग लेने के लिए बाली से 30 सदस्यीय रामायण बैले दल आया। इस दल ने अन्य शहरों में भी मंचन किया। इंडोनेशिया ने पंचवटी, मध्य प्रदेश में राम दर्शन के लिए स्थापित की जाने वाली नुमाइशी वस्तुओं को भिजवाया।

प्रधानमंत्री की 10-14 जनवरी 2001 की इण्डोनेशिया की यात्रा के बाद भारत-इण्डोनेशिया द्विपक्षीय संबंधों को बड़ा बल मिला। प्रधानमंत्री के साथ विदेश राज्य मंत्री, वाणिज्य एवं उद्योग राज्यमंत्री, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री बृजेश मिश्र, तथा रक्षा, कृषि एवं संस्कृति सचिवों से युक्त उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल भी गया। इण्डोनेशिया आने पर उन्होंने राष्ट्रपति श्री वाहिद से दो बार मुलाकात की, प्रतिनिधिमंडल स्तरीय चर्चा की जिसमें द्विपक्षीय सहयोग संवर्धित करने पर जोर दिया गया। प्रारम्भिक दौर की बातचीत के बाद कृषि, रक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, सूचना प्रौद्योगिकी इत्यादि क्षेत्रों में निम्नलिखित करार सम्पन्न किए गए:-

- i) रक्षा के क्षेत्र में सहयोगात्मक गतिविधियों से संबद्ध करार।
- ii) दोनों देशों के विदेश मंत्रियों के नेतृत्व में संयुक्त आयोग गठित करने संबंधी समझौता ज्ञापन।
- iii) विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में समझौता ज्ञापन।

iv) वर्ष 2001-2003 के लिए सी. ई. पी. व्यवस्था।

v) कृषि सहयोग संबंधी कार्य योजना।

अपने प्रवास के दौरान प्रधानमंत्री ने उपराष्ट्रपति मेगावती, पीपुल्स कंसल्टेटिव असेम्बली (डी. पी. आर.) के अध्यक्ष अकबर तांदजुंग से मुलाकात की। वित्त मंत्री अली शहाब, रक्षा मंत्री महफूद एम. डी., कृषि और वन मंत्री बंगारन सारागिह तथा मत्स्य एवं समुद्री मामलों के मंत्री सारखेनो कुसुमात्माजा ने प्रधानमंत्री से मुलाकात की।

प्रधानमंत्री के साथ 40 सदस्यीय व्यापारिक प्रतिनिधिमंडल भारत से गया। व्यापारिक प्रतिनिधिमंडल ने अपनी समकक्ष इंडोनेशियाई प्रतिनिधिमंडल से संयुक्त व्यापार परिषद की बैठक में वार्ता की। 11 जनवरी को प्रधानमंत्री ने वाणिज्य और उद्योग मंडल द्वारा आयोजित लंच के दौरान भाषण दिया। अपने भाषण में उन्होंने दोनों देशों के बीच बढ़ रहे घनिष्ठ द्विपक्षीय व्यापार और आर्थिक संबंधों पर जोर दिया।

17 जनवरी से 31 मार्च के दौरान होने वाली प्रमुख घटनाएँ

- i) 15 से 19 फरवरी 2001 तक अन्तर्राष्ट्रीय फ्लीट रिव्यू में भाग लेने के लिए एक इण्डोनेशियाई नौसैनिक जहाज तथा एक वरिष्ठ अधिकारी मुम्बई आएगा।
- ii) 22 से 29 फरवरी 2001 तक वायु सेनाध्यक्ष एअर चीफ मार्शल ए वाई टिपणिस उनकी पत्नी तथा तीन अधिकारियों के साथ इण्डोनेशिया की यात्रा।
- iii) इण्डोनेशियाई वायुसेना के एअर चीफ मार्शल हानाटि असनान तथा पांच अधिकारियों की यात्रा।

लाओस पी डी आर

भारत-लाओस संयुक्त आयोग की तीसरी बैठक में भारतीय शिष्टमण्डल का नेतृत्व करने तथा मेकांग-गंगा सहयोग - जो कि भारत और पांच दक्षिण पूर्व एशियाई देशों यथा कम्बोडिया, लाओस, म्यामा, थाईलैण्ड और वियतनाम ने पहल की है, की मंत्री स्तरीय उद्घाटन बैठक में भाग लेने के लिए माननीय विदेश मंत्री श्री जसवंत सिंह ने 8-11 नवम्बर 2000 को लाओस की यात्रा की। यात्रा के दौरान, जिनमें भारत-लाओस संयुक्त आयोग की तीसरी बैठक भी हुई, भारत और लाओस ने तीन प्रमुख करारों, यथा व्यापार

और आर्थिक सहयोग करार, द्विपक्षीय विदेश संरक्षण करार तथा कृषि क्षेत्र में कार्य योजना पर हस्ताक्षर किए।

चार वर्ष की समाप्ति के बाद लाओ पी. डी. आर. की नींव रखने की 25वीं वर्षगांठ की पूर्व संध्या पर संपन्न विदेश मंत्री की यात्रा से लाओस के साथ संबंध और अधिक संबंधित करने का रास्ता खुला। यात्रा के दौरान विदेश मंत्री ने लाओस के राष्ट्रपति तथा प्रधान मंत्री के साथ शिष्टाचार के तौर पर मुलाकात की।

9 नवम्बर 2000 को दो प्रमुख करार-एक व्यापार और आर्थिक सहयोग, तथा दूसरा निवेश संवर्धन एवं संरक्षण - सम्पन्न किए गए। इन करारों से भारत से व्यापार तथा विदेश का मूल ढाँचा तैयार हुआ। कृषि सहयोग के भाग के रूप में भारत और लाओस ने सघन कार्य कलाप के लिए विशिष्ट क्षेत्रों में गठजोड़ करते हुए वर्ष 2000-2001 की कार्य योजना पर हस्ताक्षर किए।

लाओस सरकार ने भारत द्वारा 1999 में दिए गए 2 मिलियन अमरीकी डालर के ऋण का पूरा उपयोग किया। भारतीय ऋण का उपयोग करने के तौर पर जगुआर ओवरसीज लिमिटेड ने ट्रैक्टरों तथा कृषि उपकरणों की आपूर्ति की तथा टाटा इण्टरनेशनल शीघ्र की पम्पों तथा कृषि उपकरणों के स्पेयर पार्टों के निर्माण के लिए फाउण्डरी का निर्माण करेगा। लाओ सरकार ने भारत से अतिरिक्त ऋण प्राप्त करने में रूचि दिखाई है।

भारतीय कम्पनियों को लाओ सरकार से सिंचाई हेतु पम्पों की आपूर्ति के नए आर्डर मिले हैं। किलोस्कर ब्रदर्स लि. ने 3.1 मिलियन अमरीकी डालर के पम्पों की आपूर्ति की जबकि कलकत्ता की डब्लू. पी. आई. एल. शीघ्र ही 4.1 मिलियन अमरीकी डालर मूल्य के पम्पों की आपूर्ति करेगा। किलोस्कर ब्रदर्स ने इस वर्ष अक्टूबर में लाओस में दूसरा सर्विस सेन्टर स्थापित किया जिसका कृषि एवं वन मंत्री तथा प्राविन्स के गवर्नर ने संयुक्त रूप से उद्घाटन किया। इस संबंध में किलोस्कर कम्पनी के वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारियों ने लाओस का दौरा किया।

लाओस के धान्गोन तथा सबान्ना खेत क्षेत्रों में पोटाश खनन की संभावनाओं का पता लगाने के लिए भारतीय खनन विशेषज्ञों के तीन सदस्यीय दल ने लाओस का दौरा किया वहाँ उन्होंने अपने समकक्ष अधिकारियों के साथ गहन चर्चा की।

भारतीय दवाओं तथा इंजीनियरी सामानों की निर्माता कम्पनियों ने लाओस में अपने उत्पाद संवर्धन में पर्याप्त रूचि दिखाई। भारतीय कम्पनियों विशेष कर के ई सी अंतर्राष्ट्रीय और कलपट पावर ट्रांस मिशन सक्रिय रूप से इलैक्ट्रिकल पावर परियोजनाओं में अंतर्राष्ट्रीय रूप से आगे बढ़ रहे हैं।

मिशन ने जुलाई 2000 में वियान्तियाने के राष्ट्रीय सांस्कृतिक हाल में 'भारत में बौद्ध एतिहासिक स्थलों तथा स्मृति चिह्न की एक सप्ताह की फोटो प्रदर्शनी आयोजित की। इस प्रदर्शनी का लाओ पीपुल्स रब्यूलेशनरी पार्टी के एक पालित ब्यूरो सदस्य ने उद्घाटन किया तथा मंत्रियों एवं उपमंत्रियों सहित लाओ के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने भाग लिया।

18 अगस्त 2000 को वियान्तियाने में श्री इदा गुन्जी महागणपति यक्षगण मंडली केरेमाने की 10 सदस्यीय यक्षगण मंडली ने रामायण महाकाव्य से 'बालिवध' प्रस्तुत किया। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद ने इस ग्रुप को प्रायोजित किया। इस मंचन को लाओ सरकार के वरिष्ठ पदाधिकारियों सहित बड़े समूहों में व्यक्तियों ने देखा।

मेकांग-गंगा सहयोग से संबद्ध मंत्रिस्तरीय बैठक के उद्घाटन के अवसर पर 9-10 नवम्बर, 2000 को वियान्तियाने में सुश्री माधवी मुदगल के नेतृत्व में 15 सदस्यीय ओडिसी नृत्य दल ने नृत्य का मंचन किया। नृत्य मंचन विशेष तौर पर इस अवसर हेतु "गंगा से मेकांग: स्वर्णभूमि" शीर्षक पर आधारित थे। नृत्य मंचनों को व्यापक प्रसिद्धि मिली। मिशन ने अक्टूबर 2000 में महात्मा गांधी की जन्म वर्षगांठ के अवसर पर सप्ताह भर का फिल्मोत्सव आयोजित किया।

मेकांग-गंगा सहयोग मंत्रीस्तरीय बैठक के उद्घाटन को देखने के लिए भारत लाओ मैत्री संघ का दो सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल भी लाओस गया। प्रतिनिधिमण्डल ने लाओ-भारत मैत्री संघ के अध्यक्ष की हैसियत से कृषि और वन मंत्री से तथा लाओ पी. डी. आर. के विदेश मंत्री से मुलाकात की।

इस अवधि के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में कम समयावधि तथा मध्यम समयावधि प्रशिक्षण को आगे बढ़ाने के लिए छात्रवृत्तियों के तौर पर मानव संसाधन विकास के क्षेत्र में लाओस को भारत की सहायता जारी रही। मिशन ने कोलम्बो योजना के अन्तर्गत 15 सीटों तथा आईटेक कार्यक्रम के अन्तर्गत 35 सीटों में से 34 सीटों का उपयोग किया। लगातार दूसरे वर्ष भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के जी. सी. एस. एस. कार्यक्रम के

अधीन स्नातक/स्नातकोत्तर डिग्री के लिए लाओस से 4 विद्यार्थी भारत आए। इसके अतिरिक्त मई 2000 में आसियान देशों के लिए एन. आई. आई. टी. द्वारा आयोजित सूचना प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण माड्यूल में लाओस के विभिन्न मंत्रालयों के 13 अधिकारियों ने भाग लिया।

विदेश मंत्री ने अपनी लाओस यात्रा के समय विशेष सहायता पैकेज की घोषणा की। इसमें 3.15 लाख रुपये की दवाओं के रूप में बाढ़ राहत सहायता लाओ सशस्त्र सेना को 25 जीपें तथा 10 ट्रक तथा आईटेक कार्यक्रम के अन्तर्गत दस सीटें शामिल हैं। इसकी लाओ सरकार ने बहुत सराहना की।

लाओ के उप प्रधानमंत्री तथा विदेश मंत्री ने विस्तारित संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सहायता के लिए भारत की उम्मीदवारी को लाओस के समर्थन को दोहराया।

चिनायमो सैन्य अकादमी वियन्तियाने में भारतीय सेना के दो थल सेना अधिकारियों द्वारा चलाए जा रहे सतत् प्रशिक्षण कार्यक्रम को देखने के लिए उप थल सेना प्रमुख (टी. एण्ड. सी.) ले. जनरल आर. के. साहनी 12-17 फरवरी 2001 को लाओस की यात्रा पर जाएंगे।

लाओस के उप प्रधानमंत्री तथा रक्षा मंत्री ले. जनरल चोऊमाली साइनासोन ने फरवरी 2001 के उत्तरार्ध में भारत यात्रा पर आने की इच्छा व्यक्त की। इस मामले पर पत्राचार किया जा रहा है।

17 जनवरी 2001 को राजदूत महोदय ने श्रम एवं सामाजिक कल्याण मंत्री श्री सोमाफान्ह फेन्डखामी को भारत सरकार की ओर से 35 लाख रुपये मूल्य की बाढ़ राहत चिकित्सकीय सहायता प्रदान की। भारत सरकार द्वारा भेजी गई दवाएं छः दक्षिणी प्रांतों में जिला स्तरीय अस्पतालों में वितरित की जाएंगी।

मार्च 2001 के तीसरे अथवा चौथे सप्ताह में भारतीय खाद्य महोत्सव और राजकपूर की पुरानी फिल्मों पर एक लघु भारत महोत्सव आयोजित करने का मिशन का प्रस्ताव है।

मलेशिया

भारत मलेशिया संबंध और अधिक प्रगाढ़ हुए तथा रक्षा, वाणिज्य आर्थिक तथा

सांस्कृतिक क्षेत्रों में उच्च स्तरीय राजनीतिक आदान प्रदान तथा पहल की गई। आठ वर्ष के अन्तराल के बाद 9-11 अक्टूबर 2000 को नई दिल्ली में भारत मलेशिया संयुक्त आयोग का दूसरा सत्र हुआ। मलेशिया के विदेश मंत्री श्री दानुक सेरी सईद हामिद अल्बर तथा विदेश मंत्री श्री जसवंत सिंह ने इस बैठक की सह अध्यक्षता की। इसमें व्यापार, निवेश, संस्कृति, मानव संसाधन विकास, रक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, पर्यटन, स्वास्थ्य, कृषि, श्रम तथा कौंसली मामलों जैसे विस्तृत क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंधों पर चर्चा की गई। दोनों देशों के बीच व्यापार करार तथा वर्ष 2000-2002 के लिए सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम पर हस्ताक्षर किए गए।

जुलाई 2000 से तीन वर्ष की अवधि के लिए आसियान के साथ भारत के क्रियाकलापों के लिए मलेशिया ने समन्वयककर्ता का भार उठाया।

पिछले कुछ वर्षों से भारत और मलेशिया के बीच द्विपक्षीय व्यापार लगातार बढ़ा। आज आसियान में भारत-मलेशिया का सबसे बड़ा व्यापार साझेदार है। हमारा व्यापार 2.7 बिलियन अमरीकी डालर के करीब तक पहुँच गया। यद्यपि व्यापार हमेशा ही मलेशिया के पक्ष में रहा है, मलेशिया भारत के लिये आवश्यक उपभोक्ता वस्तु ऑयल की प्रमुख आपूर्तिकर्ता देश है। 1999 में भारत मलेशिया के आयल का सबसे बड़ा खरीददार था जिसने 920 मिलियन अमरीकी डालर मूल्य का 2.38 मिलियन टन तेल आयात किया। निवेश के क्षेत्र में भी हाल के वर्षों में द्विपक्षीय निवेश बढ़े हैं। अनुमोदनों के हिसाब से मलेशिया भारत में 8वां बड़ा निवेशकर्ता देश है जबकि भारत मलेशिया में 11वां बड़ा निवेशकर्ता देश बना। मलेशिया की बहुत सी कम्पनियाँ आधारभूत क्षेत्र में पहले से ही कार्य कर रही हैं।

24-5-2000 को क्वालालम्पुर में नाभिकीय मुक्त क्षेत्र से संबद्ध संगोष्ठी आयोजित की गई। राजनय और विदेश संबंध संस्थान ने भारतीय उच्चायोग के सहयोग से इसका उद्घाटन किया। 3 अगस्त 2000 को क्वालालम्पुर में “सूचना प्रौद्योगिकी में मलेशिया-भारत सहयोग एक व्यापार कुशल भागीदारी” नामक संगोष्ठी आयोजित की गई।

14-17 अप्रैल 2000 को आई. एन. एस. राणा तथा आई. एन. एस. खुकरी मलेशिया के पोर्ट कलांग की सद्भावना यात्रा पर गए।

जिन प्रमुख यात्राओं का आदान-प्रदान किया गया उनमें इस्कान तथा मलेशियाई

सरकार के बीच 121 मिलियन अमरीकी डालर मूल्य के करार पर हस्ताक्षर करने के लिए रेल राज्य मंत्री श्री बंगारू लक्ष्मण की 6-9 अप्रैल 2000 तक क्वालालम्पुर की यात्रा, 10-15 अप्रैल 2000 तक रक्षा सेवा एशिया प्रदर्शनी 2000 में भाग लेने के लिए रक्षा उत्पादन राज्य मंत्री श्री हरि पाठक की मलेशिया की यात्रा, सड़क क्षेत्र में भारत और मलेशिया के बीच सहयोग की संभावना का पता लगाने के लिए भूतल मंत्री श्री राजनाथ सिंह के नेतृत्व में 5 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल की 10-12 जुलाई 2000 की मलेशिया यात्रा प्रमुख हैं।

भारत की प्रथम महिला श्रीमती उषा नारायणन ने 25-29 सितम्बर 2000 तक द्वितीय आर. एस. सी. ए. पी. सम्मेलन में भाग लेने के लिए क्वालालम्पुर की यात्रा की। विदेश राज्यमंत्री श्री कृष्णम राजू ने 6-8 नवम्बर 2000 तक क्वालालम्पुर की यात्रा की तथा अपने समकक्ष मलेशियाई मंत्री के साथ विचारों का आदान-प्रदान किया।

मलेशिया की ओर से पाम आयल के विभिन्न शुल्क दरों पर चर्चा करने के लिए प्राथमिक उद्योग मंत्री श्री आनुक सेरी, डॉ. लिम केंग यियाक 2000 में भारत आए। निर्माण मंत्री श्री दानुक सेरी सामी विभिन्न आधारभूत परियोजनाओं को आगे बढ़ाने हेतु 24-30 जून 2000 तक भारत यात्रा पर आए। मलेशिया का 36 सदस्यीय व्यापार और निवेश प्रतिनिधि मण्डल भारत आया। मलेशिया के संस्कृति, कला, तथा पर्यटन मंत्री श्री दानुक अब्दुल कादिर मुख्यतया पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए भारत आए। घरेलू व्यापार तथा उपभोक्ता मामलों के मंत्री श्री तान श्री मुहिद्दीन यासीन नवम्बर 2000 में भारत आए। घरेलू व्यापार तथा उपभोक्ता मामलों के मंत्री की यात्रा से मलेशिया को भारतीय गोشت निर्यातकों का पी. ई. टी. ए. द्वारा प्रतिकूल प्रचार को बंद करने में मदद मिली।

मलेशिया ने गुजरात में आए भूकम्प के लिए 1,00,000 अमरीकी डालर की सहायता देने की घोषणा की तथा विशेष मलेशियाई आपदा सहायता एवं राहत दल भेजा।

न्यूजीलैंड

भारत और न्यूजीलैंड के बीच द्विपक्षीय संबंध मैत्रीपूर्ण बने रहे तथा दोनों देशों के बीच राजनीतिक तथा वाणिज्यिक क्रियाकलाप का स्तर संतोषप्रद था। जून 1999 से जून 2000 की अवधि में न्यूजीलैंड को भारत का निर्यात 166.49 मिलियन न्यूजीलैंड डालर

का था (वो पिछले वर्ष के मुकाबले 13.3% अधिक था) तथा इसी अवधि में भारत को, न्यूजीलैंड का निर्यात 178.71 मिलियन न्यूजीलैंड डालर का था (जो 4.3% अधिक था)।

इस अवधि में की गई यात्राओं में आकलैंड में (13 अप्रैल) भारत-न्यूजीलैंड जे. बी. सी. की नौवीं संयुक्त बैठक तथा बैलिंगटन (14 अप्रैल) में भारत न्यूजीलैंड जे. टी. सी. सातवीं बैठक में भाग लेने के लिए वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री मुरासोली भारत की यात्रा प्रमुख है। सचिव (ई. आर.) श्री एस. टी. देवरे ने जून 2000 में न्यूजीलैंड में फिजी की वर्तमान घटनाओं पर परामर्श किया।

न्यूजीलैंड पक्ष की ओर से प्रमुख यात्राओं में दोनों देशों के बीच शिक्षा के क्षेत्र सहित विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग/संयुक्त उपक्रम संवर्धित करने के लिए व्यापार वार्ता मंत्री श्री जिम सुतन (नवम्बर 14-21), विदेश कार्यालय परामर्श के लिए विदेशी मामलों एवं व्यापार के उप सचिव श्री किस एल्डर की यात्रा (18 अक्टूबर) की यात्राएँ शामिल हैं। उन्होंने विदेश मंत्रालय के सचिव (पश्चिम) श्री आर. एस. काल्हा के साथ द्विपक्षीय, क्षेत्रीय तथा बहुपक्षीय मसलों पर वार्ता की।

न्यूजीलैंड के विदेश एवं व्यापार मंत्री महामान्य श्री फिल गौफ 2-8 मार्च 2001 तक भारत की यात्रा कर रहे हैं। इस यात्रा से विचारों का आदान प्रदान होगा तथा द्विपक्षीय संबंधों के और अधिक विकास में मदद मिलेगी।

पापुआ न्यू गिनी

भारत और पापुआ न्यू गिनी के बीच घनिष्ठ एवं मैत्रीपूर्ण संबंध कायम रहे। भारत ने पापुआ न्यू गिनी के राष्ट्रियों को भारतीय संस्थानों में अध्ययन के लिए आईटेक के अंतर्गत दस सीटें, तकनीकी सहयोग के लिए विशेष निधि के अन्तर्गत दस सीटें तथा प्रशिक्षण के लिए कोलम्बो योजना के अन्तर्गत छः सीटें आबंटित कीं। दोनों देशों का व्यापार 12 मिलियन अमरीकी डालर का था जिसमें आधा व्यापार तीसरे देशों के माध्यम से हुआ। इस वर्ष के शुरू में ए. आर. एफ. बैठकों के दौरान पापुआ न्यू गिनी के विदेश मंत्री ने विदेश मंत्री से मुलाकात की।

फिलीपींस

शांतिपूर्ण विद्रोह, जिसमें राष्ट्रपति श्री जोसेफ एस्ट्राडा को पदच्युत होना पड़ा, के पश्चात 20 जनवरी, 2001 को राष्ट्रपति ग्लोरिया मेकापागल एरोयाओ ने फिलीपींस के 14वें राष्ट्रपति के रूप में पदभार संभाला। यह श्री इरेडा पर असफल महाभियोग प्रक्रिया के बाद हुआ, यह प्रक्रिया पिछले वर्ष 7 सितम्बर को शुरू हुई। जिसमें सीनेट ने 10 के मुकाबले 11 मतों से यह व्यक्त किया कि उस लिफाफे को खोलने की आवश्यकता नहीं थी जिसमें कथित रूप से श्री इरेडा के गुप्त बैंक खाते का विवरण था। विपक्षी दलों ने यह मामला सार्वजनिक बना दिया तथा 19 जनवरी 2001 को रक्षा सचिव तथा सशस्त्र सेना प्रमुख ने राष्ट्रपति श्री इरेडा से समर्थन वापस ले लिया।

दक्षिण प्रशांत क्षेत्र के देश

प्रशांत द्वीपों के साथ संबंध सौहार्दपूर्ण तथा मैत्रीपूर्ण बने रहे यद्यपि इन देशों के साथ सम्पर्क न्यूनतम था। भारत ने तवालू को संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता प्रदान करने के लिए महासभा संकल्प को सह प्रायोजित किया। तवालू संयुक्त राष्ट्र संघ का 189वां सदस्य बना।

फिजी की तरह सीलोमन द्वीपों में भी 5 जून को विद्रोह हुआ परन्तु संसद द्वारा 30 जून को नया प्रधानमंत्री चुन लेने के बाद विद्रोह थम गया।

माइक्रोनेशिया संघीय राज्य के राजदूत महामान्य श्री एलिक एल. एलिक ने 10 जनवरी को अपने पद के प्रत्यय पत्र प्रस्तुत किए। वह जापान में माइक्रोनेशिया के राजदूत हैं तथा उन्हें भारत में सह प्रत्यायित किया गया है।

सिंगापुर

भारत और सिंगापुर के बीच उच्च स्तरीय यात्राओं के आदान-प्रदान से दोनों देशों के बीच घनिष्ठ संबंधों में और अधिक विविधता आई तथा मजबूती आई। इन यात्राओं में जून 2000 में हमारे विदेश मंत्री की सिंगापुर की यात्रा, और नवम्बर 2000 में राष्ट्रपति श्री के. आर. नारायणन की सिंगापुर की यात्रा शामिल है। अन्य प्रमुख यात्राओं में मई 2000 में नागर विमानन मंत्री श्री शरद यादव, जून 2000 में आंध्र प्रदेश के प्रमुख उद्योग

मंत्री श्री के. वी. राव की यात्रा, जून 2000 में तमिलनाडू के कृषि मंत्री श्री वी.एस. असमुगम की यात्रा, जून 2000 में उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमण्डल के साथ कर्नाटक के मुख्य मंत्री की यात्रा, अक्टूबर 2000 में 22 सदस्यीय औद्योगिक प्रतिनिधिमंडल के साथ हरियाणा के मुख्य मंत्री की यात्रा, नवम्बर 2000 में पंजाब के गृह एवं शहरी विकास मंत्री डॉ. उपिन्दर जीत कौर की यात्रा शामिल है।

सिंगापुर से आर्थिक विकास बोर्ड के अध्यक्ष ने 5 जून 2000 को बंगलौर में सार्वभौम निवेशकों के सम्मेलन में सिंगापुर का प्रतिनिधित्व किया। संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय में स्थायी सचिव एवं इन्फोकॉम डेवलपमेंट एथारिटी के अध्यक्ष श्री लान चुआन लिआंग सूचना प्रौद्योगिकी संबंधी कार्यदल की प्रथम बैठक में भाग लेने के लिए अक्टूबर 2000 में भारत आए। सिंगापुर के व्यापार और उद्योग मंत्री ने नवम्बर-दिसम्बर 2000 में 8 दिन की भारत की यात्रा के दौरान व्यापार और निवेश संवर्धन प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

दोनों देशों ने सूचना प्रौद्योगिकी तथा आर्थिक क्षेत्र में सहयोग के लिए दो संयुक्त कार्यदल गठित करने के लिए इस वर्ष दो समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए।

भारत-सिंगापुर के बीच 1998-99 में व्यापार इसके पिछले वर्ष के मुकाबले 4.7% कम था (1884.42 मिलियन अमरीकी डालर)। व्यापार में यह कमी पूर्वी एशियाई क्षेत्र में आर्थिक संकट के कारण हुई। तथापि 1999-2000 में कुल द्विपक्षीय व्यापार ने अच्छी प्रगति दर्ज की (2197.61 मिलियन अमरीकी डालर)। इस अवधि में हमारे निर्यात 33.57% बढ़े जबकि आयात 8.83% बढ़े।

प्रमुख आर्थिक क्रिया-कलापों में सिंगापुर टेलीकॉम (सिंगटेल) द्वारा अगस्त में भारत की भारती समूह के टेलीकॉम में 400 मिलियन अमरीकी डालर लगाने से संबद्ध करार सम्पन्न करना था। सिंगापुर स्टॉक एक्सचेंज ने राष्ट्रीय स्टॉक एक्सचेंज के साथ स्टॉक सूचकांक आंकड़े, ठेके शुरू करने तथा कृत्रिम ट्रेडिंग, बाजार सूचना देने, कर्मचारियों को प्रशिक्षण तथा तकनीकी सहायता से संबद्ध क्षेत्रों में सहयोग करने के लिए करार संपन्न किया। सिंगटेल तथा भारती समूह सिंगापुर और चेन्नई को समुद्र के भीतर केबिल नेटवर्क से जोड़ने के लिए 150 मिलियन अमरीकी डालर निवेश कर रहे हैं। एन. आई. आई. टी. सिंगापुर के बढ़ते हुए सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग के लिए एक वर्ष के भीतर

इस क्षेत्र के 1000 सूचना प्रौद्योगिक व्यवसायियों को नियुक्त करने में मदद करेगा। इसके लिए इनफोकाम डेवलपमेंट अथॉरिटी तथा एन. आई. आई. टी. के बीच करार सम्पन्न हुआ। इन्टरनेशनल टेक्नालाजी पार्क, बंगलौर का प्रथम चरण पूरा होने के बाद 29 नवम्बर 2000 को इनका दूसरा चरण शुरू किया गया।

भारत के राष्ट्रपति की सिंगापुर यात्रा के दौरान भारत और सिंगापुर के बीच 2000-2002 के बीच कला, दाय, लेखागार तथा पुस्तकालय के क्षेत्र में सहयोग करने के लिए एकजीव्यूटिव प्रोग्राम पर हस्ताक्षर होने तथा सिंगापुर के एशियन सिविलाइजेशन म्यूजियम को हस्त निर्मित वस्तुएं उधार देने के संबंध में समझौता ज्ञापन सम्पन्न होने से दोनों देशों के बीच कला एवं संस्कृति के क्षेत्रों में क्रियाकलाप भी बढ़ा।

17 जनवरी 2001 को नई दिल्ली में भारत-सिंगापुर विदेश कार्यालय परामर्श प्रारम्भ हुआ। सचिव (ई.आर.) ने भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया तथा सिंगापुर के विदेशी मामलों के स्थायी सचिव ने सिंगापुर के प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। प्रतिनिधिमंडलों ने द्विपक्षीय क्षेत्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय मसलों पर विस्तृत चर्चा की।

सिंगापुर ने गुजरात के भूकम्प पीड़ितों के लिए 50,000 अमरीकी डालर मूल्य की सहायता का प्रस्ताव किया।

थाईलैंड

भारत और थाईलैंड के बीच संबंध मैत्रीपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण हैं। दोनों पक्षों के बीच आर्थिक, वाणिज्यिक तथा सांस्कृतिक संपर्क बढ़ने तथा उच्च स्तरीय यात्राओं के आदान-प्रदान से विविध क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंध और भी घनिष्ठ हुए। आसियान में हमारी पूर्ण वार्ता भागीदारी तथा आर. एफ. प्रक्रिया में भागीदारी से थाईलैंड के साथ हमारे संबंधों में और भी मजबूती आई। उपक्षेत्रीय ग्रुपों, बंगलादेश, म्यामां, श्रीलंका और थाईलैंड को शामिल करके बी. आई. एम. एस. टी. - ई. सी. में भारत की सदस्यता से दोनों देशों के बीच सहयोग संवर्धन करने में नई स्फूर्ति मिली। कम्बोडिया, भारत, लाओस, म्यामां, थाईलैंड तथा वियतनाम जैसे छः देशों की 9 नवम्बर 2000 को वियन्तियाने में सम्पन्न मंत्रिस्तरीय बैठक में मेकांग गंगा परियोजना शुरू करने से भारत और थाईलैंड के बीच सहयोग, विशेष रूप से पर्यटन, संस्कृति और शिक्षा के क्षेत्रों में, और भी गहन होगा।

भारत और थाईलैंड के बीच द्विपक्षीय व्यापार 1996-97 में 651 मिलियन अमरीकी डालर तक पहुँच गया था, 1997-98 में 577 मिलियन अमरीकी डालर तक गिर गया। यह कमी दक्षिण पूर्वी एशियाई क्षेत्र की आर्थिक समस्याओं के कारण हुई। 1998-99 के दौरान यद्यपि दोनों देशों के बीच सम्पूर्ण व्यापार (594 मिलियन अमरीकी डालर) में थोड़ा सुधार हुआ था परन्तु इस दौरान भारत के निर्यात में कमी आई थी और थाईलैंड के निर्यात में वृद्धि हुई थी। थाईलैंड की अर्थव्यवस्था में तेजी से सुधार होने के साथ ही 1999-2000 के द्विपक्षीय व्यापार में अच्छी खासी वृद्धि (31%) हुई, पिछले वर्ष की इसी अवधि के मुकाबले भारत के निर्यात 42% तथा आयात 18% बढ़े।

द्विपक्षीय यात्राओं में थाईलैंड के विदेश मंत्री डॉ. सुरिन पिट्सुवान की 8-10 जुलाई 2000 की भारत यात्रा प्रमुख यात्रा थी। अपनी यात्रा के दौरान वह शिक्षा, संस्कृति, स्वास्थ्य, कृषि, सुरक्षा, परिवहन और पर्यटन जैसे क्षेत्रों में भारत और थाईलैंड के बीच सहयोग बढ़ाने के लिए “भारत-थाईलैंड कार्यसूची 2000” तैयार करने पर सहमत हुए। भारत और थाईलैंड के बीच सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में सहयोग तथा सूचना प्रौद्योगिकी में थाईलैंड के राष्ट्रियों को प्रशिक्षण में भारत की सहायता तथा कृषि एवं मत्स्य पालन के क्षेत्रों पर भी चर्चा की गई। थाईलैंड के विदेश मंत्री डॉ. सुरिन पिट्सुवान और विदेश मंत्री श्री जसवंत सिंह ने दो द्विपक्षीय करारों – अर्थात् द्विपक्षीय निवेश संवर्धन एवं संरक्षण करार तथा शान्तिपूर्ण प्रयोजनों के लिए आणविक ऊर्जा के प्रयोग से संबद्ध करार पर हस्ताक्षर किए।

दोनों देशों के बीच अन्य प्रमुख यात्राओं में निम्नलिखित यात्राएँ महत्वपूर्ण रहीं :-

राज्यसभा की उप सभापति डा. नजमा हेपतुल्ला की 9-16 फरवरी 2000 तक बैंकाक की यात्रा, यू. एन. सी. टी. ए. डी. एकस ने भाग लेने वाले भारतीय प्रतिनिधिमंडल के नेता के रूप में वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री मुरासोली मारन की 11-17 फरवरी 2000 की बैंकाक यात्रा। माननीय विदेश मंत्री श्री जसवंत सिंह ने 26-29 जुलाई 2000 तक बैंकाक में ए. आर. एफ. और पी. एम. सी. बैठकों में भारतीय प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व किया। वित्त मंत्री श्री यशवन्त सिन्हा ने 5-7 मई 2000 तक एशियाई विकास बैंक के बोर्ड ऑफ गवर्नर की 33वीं वार्षिक बैठक में भाग लेने के लिए च्यांगमाई की यात्रा की।

उप प्रधान मंत्री तथा वाणिज्य मंत्री डॉ. सुपाचायी पानित्व पाकडि 27 अप्रैल 2000 को नई दिल्ली में बी. आई. एम. एस. टी - ई. सी. आर्थिक मंत्रियों की बैठकों में भाग लेने के लिए भारत आए। उपप्रधान मंत्री और एन आई टी सी के अध्यक्ष डा. ट्रेडराग सुवानकिरी ने 8-11 जून, 2000 तक बंगलौर तथा चेन्नई में सूचना प्रौद्योगिकी साफ्टवेयर पार्क में भ्रमण करने वाले छः सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व किया उप निदेशक मंत्री डॉ. सुखुम बंद परिबाजा ने 6 जुलाई 2000 को नई दिल्ली में सम्मन् बी. आई. एम. एस. टी. ई. सी. की तीसरी मंत्रिस्तरीय बैठक में भाग लेने के लिए भारत का दौरा किया।

वियतनाम

आर्थिक, वैज्ञानिक तथा तकनीकी सहयोग से संबद्ध भारत वियतनाम संयुक्त आयोग, जिसकी दिसम्बर 1982 में स्थापना की गई थी, का 6-8 नवम्बर 2000 को दसवां सत्र हुआ। वियतनाम के विदेश मंत्री महामान्य श्री न्गुएन डिनिएन तथा भारत के विदेश मंत्री श्री जसवंत सिंह ने इसकी सह अध्यक्षता की।

संयुक्त आयोग में आर्थिक, वाणिज्यिक, वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकीय क्षेत्रों में भारत-वियतनाम क्रियाकलाप की सम्पूर्ण रेंज की समीक्षा की गई। इन क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग सुदृढ़ करने के लिए कुछ ठोस उपायों की पहचान की गई।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी से संबद्ध भारत वियतनाम संयुक्त प्रोटोकाल के अन्तर्गत कार्यात्मक स्तरीय आदान प्रदान, जिसमें भारत की वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद तथा वियतनाम के वियतनामी नेशनल सेन्टर फॉर नेचुरल साइंस एण्ड टेक्नोलोजी की कार्य योजना शामिल है, जारी रहा। भारत में उन्नत क्षेत्रों में वियतनाम के वैज्ञानिकों को प्रशिक्षण देने के लिए आईटेक कार्यक्रम के अन्तर्गत 30 सीटें रखी गई हैं। वियतनाम की सरकार ने भारत को सूचना प्रौद्योगिकी का भागीदार माना है तथा वियतनाम की एफ. पी. टी. (वियतनाम की प्रमुख सूचना प्रौद्योगिकी कम्पनी) ने बंगलौर में एक कार्यालय स्थापित किया है।

श्री के. टी. नरसिंहम, अधीक्षक पुरातत्ववेदी तथा श्री एम. एम. कणादे, पुरातत्ववेदी अभियन्ता ने वियतनाम में मकबरों के जीर्णोद्धार के कार्य में एस आई की सल्लिप्तता की संभावनाओं का पता लगाने के लिए 24 अप्रैल से 5 मई 2000 तक वियतनाम की यात्रा की।

मार्च 2000 में रक्षा मंत्री जार्ज फर्नांडीस की वियतनाम से द्विपक्षीय रक्षा सहयोग को अत्याधिक बल मिला। कार्यात्मक स्तरीय सहयोग के कई क्षेत्रों की पहचान की गई।

राष्ट्रीय रक्षा कालेज नई दिल्ली के 15 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 28 जुलाई से वियतनाम की पांच दिन की अधिकारिक यात्रा की।

भारतीय नौसेना जहाज आई एन एस राजपूत 28 सितम्बर से 1 अक्टूबर तक हो ची मिन्ह शहर की सद्भावना यात्रा पर गया।

वियतनाम युथ फेडरेशन के निमंत्रण पर राष्ट्रीय कैडेट कोर के महानिदेशक ले. जनरल ए. एस. राव 15-21 नवम्बर तक वियतनाम की सरकारी यात्रा पर गए।

वियतनाम आयल एण्ड गैस कार्पोरेशन ओ. एन. जी. सी., यू. के. की बी. पी/ एमोको तथा नार्वे की स्टेट आयल द्वारा उत्पाद- साझी ठेके में नाम कोन सोन गैस की संयुक्त परियोजना के लिए 1 सितम्बर को काउन्टर गारंटी करार पर हस्ताक्षर किए। यह पहला अवसर है कि वियतनाम की साकार ने विदेशी निवेशित परियोजना के लिए काउन्टर गारंटी दी है। परियोजना का लक्ष्य अक्टूबर 2002 तक गैस निकालने का है।

पोलित ब्यूरो सदस्य तथा लोक सुरक्षा मंत्री, वरिष्ठ लेफ्टीनैंट जनरल ली मिन्ह हुआंग के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय वियतनामी शिष्टमंडल 12-14 अक्टूबर तक भारत आया। इस प्रतिनिधिमंडल ने भारत में अपने समकक्षों से अपराधों का मुकाबला करने, दवाओं के अवैध व्यापार को रोकने और मुद्रा के आदान प्रदान के लिए सहयोग को संवर्धित करने के उपायों पर चर्चा की। यह शिष्टमंडल श्री के. आर. नारायणन से भी मिला।

भारत के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी 7-10 जनवरी 2001 तक वियतनाम की राजकीय यात्रा पर गए। हनोई में अपने प्रवास के दौरान उन्होंने अपने समकक्ष प्रधानमंत्री श्री फाओ वान खई से अनौपचारिक एवं प्रतिनिधिमंडल स्तर पर वार्ता की तथा वियतनाम के राष्ट्रपति श्री दान दुओ लुआंग तथा वियतनाम की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव श्री ली खा फिएऊ से मुलाकात की। वे वियतनाम की कम्युनिस्ट पार्टी के वरिष्ठ सलाहकार जनरल वो न्गुयेन गिएय से भी मिले। विदेश मंत्री श्री न्गुएन डिनिएन तथा रक्षा मंत्री जनरल फाम वान द्रा ने प्रधानमंत्री से मुलाकात की। प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी ने वियतनाम के विद्वानों एवं प्रबुद्ध व्यक्तियों से अलग से मुलाकात की।

दोनों प्रधानमंत्री पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग संबंधी करार, आणविक ऊर्जा विभाग तथा वियतनाम के विज्ञान और प्रौद्योगिकी और पर्यावरण मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आदान प्रदान के प्रसार के लिए प्रोटोकाल जैसे तीन दस्तावेजों पर हस्ताक्षर के समय उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री के साथ यात्रा करने वालों में आणविक ऊर्जा, विदेश एवं पर्यटन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ-साथ विदेश राज्य मंत्री श्री अजित कुमार पांजा, वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री श्री उमर अब्दुल्ला तथा प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव श्री बृजेश मिश्र शामिल थे। भारत-वियतनाम संयुक्त व्यापार परिषद की हनोई में हुई चौथी बैठक में भाग लेने के लिए 35 प्रमुख व्यापारियों का प्रतिनिधिमंडल भी प्रधानमंत्री के साथ गया। प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी ने संयुक्त व्यापार परिषद तथा वियतनाम के वाणिज्य एवं उद्योग मण्डल द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में वियतनाम के आमंत्रितों को संबोधित किया। ओ. एन. जी. सी. तथा वियतनाम की पेट्रोलियम निवेश एवं विकास कम्पनी, टाटा कंसलटेन्सी

सर्विसेज तथा वियतनाम के ट्रांसिनको और फिक्की एवं भारतीय व्यापार चेम्बर (वियतनाम) के बीच समझौते ज्ञापन सम्पन्न किए गए। रेनबेक्सी ने हो ची मिन्ह शहर के निकट उत्पादन इकाई में 10 मिलियन अमरीकी डालर का निवेश करने का प्रस्ताव किया।

दोनों देशों के बीच विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग के कार्यक्रम के अनुरूप सतत् सहयोग के भाग के रूप में वैज्ञानिकों की अदला-बदली की गई।

वियतनाम युवा फैडरेशन, लोक सुरक्षा मंत्रालय, रक्षा मंत्रालय इत्यादि से 21 सदस्यीय युवा प्रतिनिधिमंडल 12 जनवरी 2001 को भारत के लिए रवाना हुआ। यह यात्रा 20 दिन की होगी। इससे पूर्व प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी ने हनोई में राष्ट्रपति के महल में 9 फरवरी 2001 को युवा प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की थी।



चीन

हम चीन के साथ मैत्रीपूर्ण, सहयोगी, अच्छे पड़ोसी और आपसी हित के सम्बन्ध बनाए रखना चाहते हैं, जो भारत और चीन द्वारा संयुक्त रूप से घोषित शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्तों पर आधारित हों। हम दीर्घकालिक, स्थायी सम्बन्ध स्थापित करना चाहते हैं, जहां दोनों देश एक दूसरे के हित-चिन्ताओं के प्रति उत्तरदायी हों। हम अनसुलझे मतभेदों को बातचीत के द्वारा सुलझाना चाहते हैं और 21वीं शताब्दी में रचनात्मक सहयोगी संबंध स्थापित करना चाहते हैं।

भारत और चीन दोनों ने संयुक्त रूप से 1 अप्रैल 2000 को राजनीतिक सम्बन्धों की स्थापना की 50वीं वर्षगांठ मनाई। दोनों देशों के राज्याध्यक्षों, शासनाध्यक्षों और विदेश मंत्रियों ने बधाई संदेशों का आदान-प्रदान किया। दोनों देशों में राजदूतावासों ने स्मरणोत्सव का आयोजन किया और दोनों पक्षों ने इस समारोह की यादगार में प्रथम दिवस आवरण पृष्ठ जारी किया।

पचासवीं वर्षगांठ के अवसर पर राष्ट्रपति जियांग जेमिन के निमंत्रण पर भारत के राष्ट्रपति श्री के. आर. नारायणन ने 28, मई से 3 जून, 2000 तक चीन की राजकीय यात्रा की। आठ वर्षों में हमारे राष्ट्रपति की यह प्रथम यात्रा थी। राष्ट्रपति जियांग जेमिन के साथ उनकी उपयोगी और रचनात्मक बातचीत हुई और वह प्रीमियर झू रोंगज़ी, नैशनल पीपुल्स कांग्रेस के चेयरमैन ली फंग और चाइनीज़ पीपुल्स पोलिटिकल कंसल्टेटिव कांग्रेस के चेयरमैन श्री ली रूईहुआन से भी मिले। दोनों राष्ट्रपति द्विपक्षीय

कार्यकलाप, जिनमें उच्च स्तर के कार्यकलाप भी शामिल हैं, और सभी क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने के लिए सहमत हुए। प्रसिद्ध व्यक्तियों का एक समूह गठित करने पर भी सहमति हुई।

राज्य सभा और लोक सभा अध्यक्षों के संयुक्त आमन्त्रण पर नेशनल पीपल्स कांग्रेस की स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री ली फेंग ने 9-17 जनवरी 2001 तक भारत की यात्रा की उनके साथ उनकी पत्नी मादाम झू-लीन, श्री बू ही, नेशनल पीपल्स कांग्रेस के उपाध्यक्ष, नेशनल पीपल्स कांग्रेस और विदेश कार्यालय के अन्य वरिष्ठ सदस्य आए। उन्होंने मुम्बई, नई दिल्ली, आगरा, बंगलौर और हैदराबाद की यात्रा की। नई दिल्ली में वे राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, उपराष्ट्रपति, लोक सभा अध्यक्ष, राज्य सभा की उपाध्यक्षा और विरोधी दल के नेता से मिले। उन्होंने संसदीय ग्रुपों के नेताओं के साथ भी बैठक की।

श्री ली-फेंग ने “समझ-बूझ बेहतर बनाना, मित्रता बढ़ाना और सहयोग मजबूत करना” शीर्षक से इण्डिया इन्टरनेशनल सेन्टर में (13 जनवरी) एक भाषण दिया जिसमें उन्होंने बताया कि भारत को चीन खतरे के रूप में नहीं मानता और भारत के साथ अच्छे पड़ोसियों जैसे और मित्रतापूर्वक संबंध बनाए रखना चाहता है। उन्होंने यह भी कहा कि चीन भारत के साथ परस्पर समझबूझ और विश्वास बढ़ाने को महत्व प्रदान करता है, और भारत के साथ सहयोग मजबूत करने के लिए तैयार है। ली फेंग ने आशा व्यक्त की कि दक्षिण एशिया में विवादों को बातचीत के माध्यम से शान्ति के साथ निपटा दिया जाएगा।

ली फेंग की यह यात्रा दोनों देशों के बीच उच्चस्तरीय यात्राओं के आदान-प्रदान की प्रक्रिया का एक अंग थी। 1996 में राष्ट्रपति जियांग झेमिंग की यात्रा के पश्चात् चीन की ओर से यह उच्चतम स्तर की यात्रा थी। इस यात्रा से दोनों पक्षों को द्विपक्षीय मसलों और परस्पर हित के क्षेत्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय मामलों पर विचारों के आदान-प्रदान का मौका मिला।

चीन के विदेश मंत्री तांग जिआजुआन ने विदेश मंत्री के निमंत्रण पर 21-22 जुलाई, 2000 को भारत की यात्रा की। दोनों मंत्रियों ने सभी क्षेत्रों में द्विपक्षीय सम्बन्धों को विकसित करने की इच्छा की पुनः पुष्टि की। दोनों पक्षों में, भारत-चीन सीमा क्षेत्र में वास्तविक नियंत्रण रेखा के स्पष्टीकरण और पुष्टिकरण की प्रक्रिया शीघ्र करने के लिए समझौता हुआ। दोनों पक्ष द्विपक्षीय सुरक्षा वार्ता को सहायक विदेश मंत्री/अपर सचिव स्तर पर करने के लिए भी सहमत हुए। सुरक्षा वार्ता का दूसरा दौर फरवरी, 2001 के पूर्वार्द्ध में होगा।

सीमा से सम्बद्ध प्रश्न पर संयुक्त कार्यकारी दल की बारहवीं बैठक 28 अप्रैल, 2000 को नई दिल्ली में हुई। दोनों पक्षों ने, वास्तविक नियंत्रण रेखा जिसे भारत-चीन सीमा के मध्य क्षेत्र में दोनों देश अनुभव करते हैं, के नक्शों को एक-दूसरे को दिखाया और उनका आदान-प्रदान किया। सीमा संबंधी मामलों के अतिरिक्त, दोनों पक्षों ने द्विपक्षीय संबंधों का पुनरीक्षण किया और आपसी हित चिन्ता के क्षेत्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधियों पर विचारों का आदान-प्रदान किया। संयुक्त कार्यदल के उप-दल, भारत-चीन विशेषज्ञ दल के राजनयिक और सैन्य अधिकारियों की आठवीं बैठक 13 नवम्बर, 2000 को बीजिंग में सम्पन्न हुई। जैसे कि दोनों विदेश मंत्रियों के बीच सहमति थी, दोनों पक्षों ने वास्तविक नियंत्रण रेखा जिरों, भारत-चीन सीमा के मध्य क्षेत्र में दोनों देश अनुभव करते हैं, के नक्शों को एक-दूसरे को दिखाया और उनका आदान-प्रदान किया। दोनों पक्षों ने 1993 और 1996 में हस्ताक्षरित द्विपक्षीय समझौतों के अनुरूप अमन-चैन कायम रखने की अपनी वचनबद्धता की पुष्टि की।

वर्ष के दौरान, सरकारी, संसदीय, गैर-सरकारी और जनता से जनता के स्तर का आदान-प्रदान जारी रहा। वर्ष के दौरान, व्यापार एवं वाणिज्य, श्रम, शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, सूचना प्रौद्योगिकी और संस्कृति के क्षेत्र में कार्यात्मक आदान-प्रदान हुए।

सशस्त्र सेनाओं के बीच आदान-प्रदान पुनः आरम्भ हो गए। अकादमी ऑफ मिलिटरी साइंस के वाइस प्रेजीडेंट लेफ्टिनेंट जनरल तियां शुगेन सात सदस्यीय पीपुल्स लिबरेशन आर्मी का शिष्टमण्डल लेकर 18 से 23 अगस्त 2000 तक भारत की यात्रा पर आए। भारतीय नौ सेना के दो जहाज 17-20 सितम्बर, 2000 चीन की सद्भावना यात्रा पर गए।

वर्ष 2000-2001 में दोनों पक्षों के बीच उच्च-स्तरीय यात्राएं

- सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री, श्री प्रमोद महाजन ने 15-21 जुलाई 2000 तक चीन की यात्रा की। सचिव (आई. टी.) उनके साथ थे। सूचना एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग से सम्बद्ध एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।
- श्रम मंत्री डॉ सत्यनारायण जाटिया ने 26-30 सितम्बर 2000 तक चीन की यात्रा की। श्रम के क्षेत्र में सहयोग से सम्बद्ध एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।
- मानव संसाधन विकास मंत्री श्री मुरली मनोहर जोशी ने 4-7 नवम्बर 2000 तक चीन की यात्रा की। शिक्षा सचिव मंत्री उनके साथ थे।

दोनों पक्षों के बीच हुए कार्यात्मक आदान-प्रदान में शामिल हैं:

- सचिव (संस्कृति) ने 10 से 14 अप्रैल 2000 तक चीन की यात्रा की। यात्रा के दौरान, वर्ष 2000 से 2002 की अवधि के लिए सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम पर हस्ताक्षर किए।
- महासागर विकास विभाग के सचिव ने 8-14 मई 2000 तक चीन की यात्रा की। “महासागर से सम्बद्ध कार्यक्रमों के क्षेत्र में सहयोग की इच्छा” पर एक दस्तावेज पर हस्ताक्षर किए गए।
- गैर पारम्परिक एवं पुनः प्रयोजीय ऊर्जा संसाधन मंत्रालय के सचिव 9-15 जुलाई 2000 तक चीन की यात्रा की।
- चीन के श्रम एवं सामाजिक सुरक्षा उप मंत्री श्री ली कियान ने 21-25 अक्टूबर 2000 तक भारत की यात्रा की।
- भारत और चीन की 1 और 2 दिसम्बर 2000 को कोयला पर कार्यकारी दल की 7वीं बैठक सम्पन्न हुई।

□ चीनी उप शिक्षा मंत्री ने 5-12 दिसम्बर 2000 को भारत की यात्रा की।

भारत के राजनैतिक दलों और चीन के साम्यवादी दलों के बीच आदान-प्रदान जारी रहा। भारतीय जनता पार्टी के आमंत्रण पर चीन के साम्यवादी दल के अन्तर्राष्ट्रीय विभाग के मंत्री दायी बिन्गो ने 29 मार्च से 3 अप्रैल 2000 तक भारत की यात्रा की। आन्ध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री चीन के साम्यवादी दल के निमंत्रण पर 22 से 26 अक्टूबर 2000 तक चीन की यात्रा पर गए।

इस वर्ष भारत-चीन व्यापार संबंध बढ़े हैं। (टिप्पणी: वार्षिक द्विपक्षीय व्यापार के आंकड़े बाद में दिए जाएंगे।) एक 'एफ. आई. ई. ओ.' शिष्टमण्डल ने 10-19 सितम्बर, 2000 तक चीन का दौरा किया। भारत में 6-9 दिसम्बर तक एक चीनी इंजीनियरिंग एवं उत्पाद मेला लगा।

चीन में भारत के नए राजदूत श्री शिवशंकर मेनन ने अगस्त 2000 में अपना कार्यभार संभाल लिया।

मंगोलिया

भारत और मंगोलिया के बीच पारम्परिक रूप से घनिष्ठ धार्मिक और सांस्कृतिक संबंध हैं। इस वर्ष दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंधों की 45वीं वर्षगांठ मनायी गयी। पिछले 45 वर्षों में हमारे संबंधों में विविधता आई है और दोनों देशों के बीच युगों पुराने संबंध और मजबूत करते हुए नये क्षेत्र बने हैं। इस अवसर की स्मृति प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री स्तर पर बधाई संदेशों के आदान-प्रदान द्वारा हुआ।

मंगोलिया के राष्ट्रपति नात्सागीन बागबन्दी 1-5 जनवरी 2001 तक भारत की राजकीय यात्रा पर आए उनके साथ विदेश मंत्री तथा वाणिज्य और उद्योग मंत्री थे। यह यात्रा नई सहस्राब्दि में भारत की पहली राजकीय यात्रा थी। मंगोलिया की ओर से भारत की पिछली राष्ट्रपति यात्रा 1994 में हुई थी। राष्ट्रपति बागबन्दी ने राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, विदेश मंत्री और राज्यसभा की उपाध्यक्षा के साथ मुलाकात की। इन मुलाकातों में द्विपक्षीय मुद्दों और आपसी हित के क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा हुई। दोनों पक्षों में सहयोग के क्षेत्र का विस्तार करने और सहयोग के मौजूदा क्षेत्रों को मजबूत करने के लिए सहमति हुई।

इस यात्रा के दौरान एक संयुक्त घोषणा जारी हुई थी जिसमें द्विपक्षीय संबंधों की भावी दिशा का उल्लेख था। संयुक्त घोषणा में मंगोलिया ने सार्वजनिक तौर पर विस्तारित संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता के लिए भारत को अपने समर्थन की बात कही। मंगोलिया ने आतंकवाद और ऐसे राज्यों की भी निन्दा की जो सीमा पार और अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद को सहायता देते हैं, उकसाते हैं और प्रत्यक्ष समर्थन प्रदान करते हैं। उन्होंने आतंकवाद के विरुद्ध भारत के अन्तर्राष्ट्रीय अभिसमय के प्रस्ताव का भी समर्थन किया।

प्रत्यर्पण, रक्षा सहयोग, सूचना प्रौद्योगिकी में सहयोग, निवेश संवर्धन और संरक्षण, आपराधिक मामलों में परस्पर विधिक सहायता और सिविल तथा वाणिज्यिक मामलों में विधिक सहायता और विधिक संबंध से संबंध छह करारों पर हस्ताक्षर हुए।

प्रधानमंत्री ने मानवीय सहायता के लिए मंगोलिया को 1 करोड़ रुपये के अनुदान की घोषणा की।

उच्च स्तरीय यात्राओं में शामिल हैं -

- 29 मार्च से 2 अप्रैल 2000 तक एनलाइनटमेंट मंत्री श्री ए. बतूर की भारत यात्रा। इस यात्रा के दौरान वर्ष 2000-2001 के लिए सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम सम्पन्न किया गया।
- मंगोलिया के उप रक्षा मंत्री श्री टी. टोगू ने 6-10 दिसम्बर, 2000 तक भारत की यात्रा की।

मंगोलिया में भारत के नए राजदूत श्री करमा तोपदेन ने सितम्बर, 2000 में अपना कार्यभार संभाला।

जापान

हम जापान के साथ अपने मैत्रीपूर्ण सहयोग एवं आपसी लाभ के संबंधों के प्रति वचनबद्ध हैं, जिसके साथ हम सांस्कृतिक सम्पर्कों और मानव स्वतंत्रता के मूल्यों, एशिया और विश्व में शांति, स्थायित्व एवं आर्थिक विकास के प्रति वचनबद्धता के भागीदार हैं।

जापान के प्रधानमंत्री श्री योशियो मोरी 21 से 25 अगस्त, 2000 तक भारत की

राजकीय यात्रा पर आए। 1990 के बाद से इस स्तर की यह पहली यात्रा थी। वे बंगलौर और आगरा भी गए। जापान के प्रधानमंत्री मोरी राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति से मिले और प्रधानमंत्री के साथ आधिकारिक बातचीत की। विदेश मंत्री उनसे मिलने गए। दोनों प्रधानमंत्री 21वीं शताब्दी के लिए बहुफलकीय सार्वभौमिक साझेदारी बनाने पर सहमत हुए।

बातचीत में अनेक मुद्दे शामिल हैं जिनमें द्विपक्षीय राजनैतिक और आर्थिक सम्बन्ध, अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद, संयुक्त राष्ट्र सुधार, दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 50वीं वर्षगांठ का मनाया जाना, उच्च स्तरीय बातचीत को संस्थागत रूप दिया जाना, सूचना प्रौद्योगिकी में सहयोग, व्यापक सुरक्षा वार्ता, नकल को रोकने में सहयोग और भारत-जापान प्रमुख व्यक्ति दल की स्थापना शामिल है।

अन्य बातों के साथ-साथ यह सहमति हुई कि (1) 2002 में द्विपक्षीय राजनयिक संबंधों की स्थापना की 50वीं वर्षगांठ उचित तरीके से मनाई जाए, (2) जापान में भारत-जापान सूचना प्रौद्योगिकी शिखर सम्मेलन आयोजित किया जाएगा, (3) सुरक्षा वार्ता आरंभ की जाएगी, (4) दोनों देश संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् के सुधार में सहयोग करेंगे, (5) भारत-जापान संसदीय मैत्री संघ बनाया जाएगा, और (6) भारत-जापान के प्रमुख व्यक्तियों के दल की शीघ्र ही बैठक होगी।

प्रधानमंत्री मोरी ने घोषणा की कि अक्टूबर, 2000 और जनवरी, 2001 में दो उच्च स्तरीय आर्थिक मिशन भारत की यात्रा करेंगे।

इसी अवधि के दौरान हुई अन्य उच्च स्तरीय यात्राओं में निम्नलिखित शामिल हैं:

- ग्यारहवें गृह साज-सज्जा मेले में भाग लेने के लिए कपड़ा राज्य मंत्री श्री जी.एन. रामचन्द्र ने 22 से 25 मई, 2000 तक ओसाका और टोक्यो की यात्रा की।
- जे. आर. ईस्ट रेलवे द्वारा आयोजित सम्मेलन में भाग लेने के लिए रेलवे राज्य मंत्री श्री दिग्विजय सिंह ने 25 से 27 मई, 2000 तक जापान की यात्रा की।
- रक्षा मंत्री ने जापान के स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री ओबूची की अन्त्येष्टि में भाग लेने के लिए 7-9 जून, 2000 तक जापान की यात्रा की और जापान के विदेश मंत्री योही कोनो और जापान की रक्षा एजेन्सी के महा निदेशक टी. काबारा के साथ

बातचीत की। इस यात्रा के दौरान जहाजों की यात्राओं के आदान-प्रदान और द्विपक्षीय सुरक्षा वार्ता पर चर्चा हुई।

- ईको-एशिया 2000 तथा पर्यावरण और विकास पर मंत्री स्तर के चौथे सम्मेलन में भाग लेने के लिए पर्यावरण मंत्री श्री टी. आर. बालू ने 4 सितम्बर, 2000 तक फुकुओका की यात्रा की।
- एशिया प्रशान्त से सम्बद्ध खाद्य और कृषि संगठन के क्षेत्रीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए कृषि मंत्री श्री नीतिश कुमार 28 अगस्त से 1 सितम्बर, 2000 तक योकोहामा की यात्रा पर गए।
- संचार मंत्री श्री राम विलास पासवान सूचना सोसाइटी से सम्बद्ध एशिया-प्रशान्त शिखर-सम्मेलन में भाग लेने के लिए 29 अक्टूबर, से 3 नवम्बर, 2000 तक टोक्यो की यात्रा पर गए।
- 21वीं शताब्दी में स्वास्थ्य और कल्याण प्रणाली विकास से संबंधित सार्वभौमिक सिम्पोजियम में भाग लेने के लिए संघ के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री श्री सी. पी. ठाकुर ने 1-2 दिसम्बर, 2000 को कोबे की यात्रा की।

जापान की और से भारत की महत्वपूर्ण यात्राओं में निम्नलिखित यात्राएं शामिल हैं:

- विश्व व्यापार संगठन से जुड़े मुद्दों पर वाणिज्य और उद्योग मंत्री के साथ चर्चा के लिए अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और उद्योग मंत्री श्री ताकाशी फुकाया ने 4-5 मई, 2000 को भारत की यात्रा की। श्री फुकाया ने प्रधानमंत्री और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री से भी मुलाकात की।
- 29 अक्टूबर से 5 नवम्बर, 2000 तक श्री ताकाशी इमई अध्यक्ष के दानरेन (जापान के आर्थिक संगठनों का संघ) और श्री नोबूहीको कावामोटो, अध्यक्ष जापान-भारत व्यवसाय सहयोग समिति की अध्यक्षता में उच्च स्तरीय मिशन ने राष्ट्रपति, विदेश मंत्री और वित्त मंत्री से मुलाकात की और हमारे सूचना प्रौद्योगिकी तथा बिजली मंत्री के साथ विचार-विमर्श किया और फिक्की तथा सी. आई. आई. के साथ चर्चा की। मिशन ने हैदराबाद, बंगलौर और चेन्नई की भी यात्रा की।

इसी अवधि में निम्नलिखित कार्यपरक यात्राएं भी हुईं:

- जैव-प्रौद्योगिकी विभाग की सचिव श्रीमती मंजु शर्मा की राइस जीनोम सर्जरी से 8 से 10 फरवरी, 2000 की यात्रा।
- प्रथम भारत-जापान ऊर्जा वार्ता 7 मार्च, 2000। अन्तर्राष्ट्रीय और क्षेत्रीय ऊर्जा स्थिति, माँग और आपूर्ति दृष्टिकोण और ऊर्जा स्थिति और दोनों देशों की ऊर्जा स्थिति से जुड़े मुद्दों पर चर्चा हुई। इस बातचीत से एक-दूसरे की ऊर्जा मुद्दों पर चर्चा हुई। इस बातचीत से एक दूसरे की ऊर्जा नीति और उससे सम्बद्ध स्थिति को और संभालने में सहायता मिली। दोनों पक्ष इस बात पर चर्चा को जारी रखने पर सहमत हुए कि कोयला, बिजली और पर्यावरण से जुड़े मसलों के क्षेत्रों में किस प्रकार सहयोग किया जाए।
- 26 मार्च, 2000 को विदेश मंत्रालय और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और उद्योग मंत्रालय की चर्चा। जिन मुद्दों पर बातचीत हुई उनमें निवेश और व्यापार संबंधी मामले शामिल हैं। दोनों पक्षों ने दोनों देशों के बीच आर्थिक और वाणिज्यिक सहयोग बढ़ाने की इच्छा दोहराई। विशेष अर्थ में दोनों पक्षों ने सूचना प्रौद्योगिकी और खाद्य संसाधन क्षेत्रों में तथा सामान्य रूप से व्यापार और निवेश में सहयोग बढ़ाने के तौर तरीकों पर चर्चा की।
- भारतीय नौ सेना के दो जहाजों, आई. एन. एस. दिल्ली और आई. एन. एस. कोरा ने सितम्बर 2000 में जापान में सासेबो नौसेना बन्दरगाह की यात्रा की, उनका भव्य स्वागत हुआ।
- भारत में निवेश पर एक सेमिनार में संबोधन के लिए सचिव और निवेश आयुक्त, श्री एन. वालूरी की यात्रा 26 से 29 सितम्बर 2000।
- पंजाब और हरियाणा के चैम्बर्स ऑफ कामर्स के प्रतिनिधिमंडल के अध्यक्ष के रूप में हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री ओमप्रकाश चोहला की यात्रा 11 से 14 अक्टूबर, 2000। प्रतिनिधिमंडल ने अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और उद्योग मंत्रालय के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के राज्य सचिव री तत्सूया इतो से मुलाकात की और जापान के विदेश व्यापार संगठन और जापान-भारत व्यवसाय सहयोग समिति के साथ बैठक की।

- सूचना प्रौद्योगिकी के प्रतिनिधिमंडल के नेता के रूप में आन्ध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री चन्द्रबाबू नायडू की यात्रा 18 से 22 अक्टूबर, 2000। वे प्रधानमंत्री मोरी से मिले और 18 अक्टूबर को प्रमुख मंत्रिमंडल सचिव नाकागावा से भी मिले।
- अध्ययन दौरे पर पंजाब सरकार की आवास और शहरी विकास मंत्री की यात्रा 15 से 18 नवम्बर 2000।
- श्री विनय कोहली सचिव (आई. टी.) की यात्रा 26-28 नवम्बर 2000। टोक्यो में “डाटफोर्स” की बातचीत में भाग लेने।
- भारत-जापान निवेश वार्ता 7 दिसम्बर 2000। भारतीय प्रतिनिधिमंडल की अध्यक्षता, आई. पी. पी. विभाग के सचिव श्री पी. मंकड ने की जबकि जापान प्रतिनिधिमंडल की अध्यक्षता एम. आई. टी. आई. के उपमंत्री श्री एच. अरई ने की। बातचीत के दौरान दोनों पक्षों ने भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश नीति को और उदार बनाए जाने की आवश्यकता को स्वीकार किया, और धन के प्रवाह को और बढ़ाए जाने में परस्पर लाभ पर गौर किया। भारतीय पक्ष ने निवेशकों के विश्वास को बढ़ाने के लिए अपनी वचनबद्धता व्यक्त की। बातचीत में सूचना और प्रौद्योगिकी खाद्य संसाधन और आधारभूत सेवाओं से संबंधित तीन कार्यकारी ग्रुपों के क्रियाकलापों की समीक्षा की गई। रसायन और पर्यावरण क्षेत्रों को और सहयोग के क्षेत्रों में निर्धारित किया।
- भारत-जापान विज्ञान परिषद् की छठी बैठक 20-22 दिसम्बर 2000 को क्योटो में हुई।
- भारत-जापान प्रमुख व्यक्तियों का एक दल गठित किया गया है और इसकी पहली बैठक नई दिल्ली में 29-30 जनवरी, 2001 में हुई।

अप्रैल से दिसम्बर 2000 की अवधि के दौरान जापान के साथ हमारा व्यापार लगभग 1987 मिलियन अमरीकी डालर था। निर्यात: लगभग 900 मिलियन अमरीकी डालर और आयात लगभग 1087 मिलियन अमरीकी डालर। जनवरी-अप्रैल 2000 की अवधि के दौरान भारत को जापान से प्राप्त वास्तविक निवेश लगभग 31.2 मिलियन अमरीकी डालर था।

छात्रों और अनुसंधानकर्ताओं का आदान-प्रदान जारी रहा।

कोरिया गणराज्य

कोरिया गणराज्य के साथ हमारे सौहार्दपूर्ण और समझ-बूझ के संबंध बने रहें।

विदेश मंत्री के निमंत्रण पर कोरिया गणराज्य के विदेश एवं व्यापार मंत्री श्री ली जूंग बिन ने 30 जुलाई से 1 अगस्त 2000 तक भारत की यात्रा की। दोनों विदेश मंत्रियों ने आपसी हित के द्विपक्षीय, क्षेत्रीय तथा अन्तर राष्ट्रीय मसलों पर चर्चा की। विदेश मंत्री ने कोरिया गणराज्य के विदेश मंत्री को कोरियाई प्रायद्वीप के पुनःएकीकरण तथा वार्ता की प्रक्रिया में भारत के समर्थन का आश्वासन दिया।

इस वर्ष के दौरान उच्च स्तरीय आदान-प्रदान:

- भारत-कोरिया गणराज्य व्यापार मंत्रियों की तृतीय बैठक नई दिल्ली में 9 मई, 2000 को हुई। भारतीय शिष्टमण्डल की अध्यक्षता वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री ने की। कोरिया गणराज्य के शिष्टमण्डल की अध्यक्षता व्यापार मंत्री डॉ. हान डक सू ने की।
- मैसर्स कोरिया इलेक्ट्रिक पॉवर कारपोरेशन के साथ समझौता सम्पन्न करने के लिए आणविक ऊर्जा विभाग के अपर सचिव ने 26-30 जून 2000 तक सिओल की यात्रा की।
- एक एफ. आई. ई. ओ. शिष्टमण्डल ने 21-24 सितम्बर, 2000 तक कोरिया गणराज्य की यात्रा की।
- हरियाणा के मुख्य मंत्री की अध्यक्षता में एक व्यापार एवं निवेश शिष्टमण्डल ने 14-17 अक्टूबर 2000 तक भारत की यात्रा की।

दो भारतीय जहाज 18-21 सितम्बर, 2000 तक पूसान में पोर्ट-काल के लिए गए। पूर्वी नेवी कमांड के फ्लैग ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ ने भी इस अवसर पर कोरिया की यात्रा की और कोरिया गणराज्य की नेवी के चीफ नेवी अधिकारी तथा अन्य वरिष्ठ नेवी अधिकारियों से मुलाकात की।

जनवरी-सितम्बर 2000 की अवधि के दौरान, कोरिया गणराज्य के साथ भारत का व्यापार 9 प्रतिशत तक बढ़कर 1.75 बिलियन अमरीकी डालर हो गया।

सांस्कृतिक शिष्टमण्डलों, छात्रों और अनुसंधान के विद्वानों का आदान-प्रदान होता रहा।

एक संयुक्त कोरियाई आई टी शिष्टमण्डल ने 23-25 नवम्बर, 2000 तक भारत की यात्रा की, जिसमें सरकार, कोरियन इन्स्टीट्यूट ऑफ मल्टीमीडिया कान्टेन्ट एन्ड सोफ्टवेयर तथा निजी क्षेत्रों के प्रतिनिधि शामिल थे। के. ओ. एम.एस. तथा एन. ए. एस. एस. सी. ओ. एम. के बीच एक समझौता ज्ञापन सम्पन्न हुआ और दोनों पक्षों ने संयुक्त परियोजनाओं का पता लगाने के लिए विचार-विमर्श किया।

कोरिया लोकतांत्रिक जन गणराज्य

कोरिया लोकतांत्रिक जन गणराज्य के साथ भारत के संबंध मैत्रीपूर्ण बने रहे।

उप विदेश मंत्री पी. के. जिल यों ने विदेश संबंधी मामलों पर चर्चा के लिए 24-28 अप्रैल 2000 तक भारत की यात्रा की। यात्रा के दौरान, विदेश मंत्रालय के सचिव (ई आर) के साथ बातचीत हुई।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत अप्रैल स्प्रिंग फ्रैंडशिप आर्ट फेस्टिवल में भाग लेने के लिए एक दस सदस्यीय भरतनाट्यम नृत्य दल ने 10-18 अप्रैल 2000 तक कोरिया लोकतांत्रिक जन गणराज्य की यात्रा की।

कोरिया लोकतांत्रिक जन गणराज्य में 17-21 अगस्त, 2000 तक एक भारतीय फिल्म सप्ताह आयोजित किया गया। इस अवसर पर, प्रसिद्ध फिल्म डायरेक्टर श्री हरिहरण की अध्यक्षता में एक भारतीय शिष्टमण्डल ने कोरिया लोकतांत्रिक जन गणराज्य की यात्रा की।

नई दिल्ली में 28 सितम्बर से 1 अक्टूबर 2000 तक एक कोरियाई फिल्म सप्ताह आयोजित किया गया। कोरिया लोकतांत्रिक जनगणराज्य से एक तीन सदस्यीय शिष्टमण्डल ने इस समारोह में भाग लिया।

कोरिया लोकतांत्रिक जन गणराज्य के राजदूत पाक म्योंग गू का सेवाकाल नवम्बर 2000 में समाप्त हो गया और वह वापिस चले गए। नए राजदूत को अभी आना है।



मध्य एशियाई क्षेत्र भारत के लिए एक विस्तारित पड़ोस है, जिसके साथ दीर्घावधिक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध निकट समसामयिक संबंध बनाने के लिए आधारशिला का कार्य कर रहे हैं। इस क्षेत्र के घटनाक्रम का भारत के राष्ट्रीय हित और सुरक्षा पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। मध्य एशियाई राज्यों की धर्म निरपेक्ष राजनैतिक परम्परा, ऊर्जा सहित महत्वपूर्ण आर्थिक संसाधन, भारत के लिए सद्भावना की मौजूदा निधि, और आर्थिक विकास के वर्तमान चरण वस्तुओं और प्रौद्योगिकीय दक्षता की एक व्यापक विविधता की आवश्यकता के फलस्वरूप ये राज्य और भारत प्राकृतिक भागीदार बन जाते हैं।

मध्य एशियाई राज्यों की स्वतंत्रता के लगभग दस वर्ष बीत चुके हैं। इस अवधि के दौरान, भारत की विदेश नीति का उद्देश्य उनके साथ प्रगतिशील और बहुआयामी द्विपक्षीय संबंध स्थापित करना रहा है। मध्य एशियाई राज्यों के साथ राजनैतिक संबंधों की विशेषता व्यापक क्षेत्रीय और सार्वभौम मसलों पर समझबूझ और वैचारिक समानता रही है। इनमें से अनेक राज्यों में हाल ही में उत्पन्न धार्मिक कट्टरपंथ और सीमा पार आतंकवाद की एक गंभीर समस्या ने इन नकारात्मक शक्तियों से मध्य एशिया और भारत तथा इस प्रकार की ताकतों के विरुद्ध संयुक्त कार्रवाई संबंधी आवश्यकता द्वारा प्रस्तुत धमकी की समानता को और आगे रेखांकित किया है।

मध्य एशियाई अर्थ व्यवस्थाओं के परिवर्ती प्रतिबन्धों और इस क्षेत्र की स्थल-रुद्ध प्रकृति ने अभी तक व्यापार और आर्थिक क्रिया-कलापों की उपलब्ध क्षमता के पूर्ण

दोहन को रोका है। इन समस्याओं का समाधान किया जा रहा है जिससे आगामी वर्षों में व्यापार और अधिक संयुक्त उद्यमों का प्रवाह अपेक्षाकृत अधिक मुक्त हो सकें। वर्ष के दौरान, उजबेकिस्तान और किर्गीजस्तान ने भारत से बन्दर अब्बास के जरिए वस्तुओं के परिवहन संबंधी करार संपन्न किया जिसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र के लिए सतह मार्ग का उपयोग अधिकाधिक बढ़ा है।

सांस्कृतिक संबंधों का सक्रिय रहना जारी रहा। भारत और तुर्कमेनिस्तान दोनों में तुर्कमेनिस्तान के एक प्रख्यात सपूत और भारतीय इतिहास की एक प्रमुख हस्ती, बैरम खान के पांच सौवें जन्म दिवस का संयुक्त समारोह विशिष्ट कार्यक्रम था। सभी मध्य एशियाई देशों के साथ विद्वानों का आदान प्रदान जारी रहा। ताशकंद स्थित मिशन ने भारत और मध्य एशिया के बीच पूर्व इस्लाम संबंधों से संबद्ध एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया जिससे शैक्षिक क्षेत्रों में जीवन्त रूचि उत्पन्न हुई।

अजरबैजान

मार्च, 1999 में बाकू में एक नए आवासी मिशन की स्थापना ने अजरबैजान में भारत की उपस्थिति स्थापित करने में मदद की है। यह मिशन पूर्णरूप से कार्यकर रहा है और, कौंसली सेवाएं प्रदान करने के अलावा, सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए और पर्यटक और व्यवसायी सूचना का प्रसार किया है। राजनैतिक क्षेत्र में, संयुक्त सचिव (मध्य एशिया) की यात्रा के दौरान बाकू में मई, 2000 में अजरबैजान के विदेश कार्यालय के साथ परामर्श किया था।

कजाकस्तान

भारत के कजाकस्तान के साथ संबंध परम्परागत रूप से हार्दिक और मैत्रीपूर्ण रहे हैं तथा दोनों देशों में संबंधों को अतिरिक्त क्षमता प्रदान करने के लिए पर्याप्त दिलचस्पी है।

अगस्त, 2000 में अस्ताना में विदेश कार्यालय परामर्श संपन्न हुए। सचिव (पूर्व) ने भारतीय शिष्ट मण्डल का नेतृत्व किया। दोनों पक्षों ने संपूर्ण द्विपक्षीय संबंधों की समीक्षा की और सामान्य हित के क्षेत्रीय मसलों पर विचारों का आदान-प्रदान किया।

दिसम्बर 2000 में महामहिम झारमाखान तयूकवाएवं, संसद के निम्न सदन मजलिस के अध्यक्ष के नेतृत्व में एक कजाक संसदीय शिष्टमण्डल भारत आया। यह यात्रा दोनों देशों के बीच अन्तर-संसदीय संबंधों को प्रगाढ़ करने में उपयोगी हुई।

भारत एशिया (सी आई सी ए) में क्रिया-कलाप और विश्वासोत्पादक उपायों से संबंध सम्मेलन में एक भागीदार है जो कि एक कजाक पहल है। भारत इस प्रक्रिया का समर्थक है और विगतवर्ष विदेश मंत्री ने सी आई सी ए सिद्धांतों की घोषणा पर हस्ताक्षर किए थे। नवम्बर-दिसम्बर 2000 में विशेष कार्यदल की एक बैठक अलमाती में संपन्न हुई थी और भारत ने इस बैठक में अधिकारिक स्तर पर प्रतिनिधित्व किया था।

कजाक वाणिज्य और उद्योग मण्डल ने मई, 2000 में अलमाती में भारत-कजाक संयुक्त व्यवसाय परिषद की पहली बैठक की मेजबानी की थी। भारतीय फर्मों ने फार्मेस्युटिकल्स, संचार का प्रतिनिधित्व किया और परामर्शी और व्यापारिक घरानों ने बैठक में भाग लिया। चाय बोर्ड ने अलमाती में आयोजित अन्तर खाद्य प्रदर्शनी में भाग लिया।

कजाकस्तान में आईटेक कार्यक्रम लोकप्रिय है और सीटों को 60 से बढ़ाकर 70 कर दिया गया है।

किर्गीजस्तान

भारत और किर्गीजस्तान के बीच उच्च स्तरीय-आदान प्रदान की गति को राष्ट्रपति प्रशासन की विदेश नीति विभाग प्रमुख, श्री असकर एतमातोव की मई, 2000 में भारत की एक कार्य यात्रा द्वारा बनाए रखा गया।

भारत-किर्गीज संयुक्त व्यवसाय परिषद की दूसरी बैठक 10-12 मई, 2000 तक विश्केक में संपन्न हुई थी। इस बैठक के फलस्वरूप दोनों देशों के व्यवसायी समुदायों को एक दूसरे के साथ प्रत्यक्ष रूप से कार्य-कलाप करने का एक अवसर मिला।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा प्रायोजित एक 30 सदस्यीय सांस्कृतिक मण्डली ने ओश में संपन्न “पीस एण्ड रेस्पेक्ट” उत्सव में भाग लेने के लिए अगस्त, 2000 में किर्गीजस्तान की यात्रा की।

आईटेक कार्यक्रम के तहत, सीटों की संख्या 35 से बढ़ाकर 50 कर दी गई है और इन प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों को किर्गीजस्तान के लिए लाभदायक रूप में देखा गया है।

ताजिकिस्तान

क्षेत्रीय सुरक्षा मसलों पर, भारत और ताजिकिस्तान में समान निकट समझबूझ है। संयुक्त सचिव (मध्य एशिया) ने अक्टूबर, 2000 में दुशान्बे में ताजिक विदेश मंत्रालय के साथ परामर्श किए।

सितम्बर, 2000 में एक भारतीय कम्पनी द्वारा खोजेंट हवाई अड्डे के रनवे को पूरा किया था।

विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाओं के तहत ताजिक छात्र भारत के विभिन्न संस्थानों और विश्वविद्यालयों में शैक्षिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत हैं।

तुर्कमेनिस्तान

तुर्कमेनिस्तान के विदेश मंत्री, महामहिम श्री बोरिस शिखमुरादोव अप्रैल, 2000 में भारत की यात्रा पर आए। आतंकवाद और नशीली दवाओं के अवैध व्यापार द्वारा पेश धमकियों सहित, द्विपक्षीय और क्षेत्रीय मसलों पर चर्चाएँ केन्द्रित रहीं। भारत और तुर्कमेनिस्तान ने द्विपक्षीय व्यापार और आर्थिक सहयोग का विस्तार करने के लिए अपने-अपने सामान्य हित को दोहराया।

दोनों देशों ने तुर्कमेनिस्तान के एक प्रख्यात सपूत और भारतीय इतिहास की एक प्रमुख हस्ती, बैरम खान की पांच सौ वीं वर्षगांठ को संयुक्त रूप से मनाया। अगस्त, 2000 में भारत में “डेज ऑफ तुर्कमेन कल्चर इन इन्डिया” नामक कार्यक्रम संपन्न

किया। तुर्कमेनिस्तान के संस्कृति मंत्री, महामहिम श्री ओरेझ एदोगदीव कलाकारों और विद्वानों के एक शिष्ट मण्डल को अपने साथ लेकर भारत की यात्रा पर आए। एक सांस्कृतिक मण्डली ने दिल्ली, मुम्बई, बंगलौर और मैसूर में अभिनय किए थे।

सितम्बर, 2000 में पर्यटन और संस्कृति मंत्री, श्री अनन्त कुमार की अशगाबात की यात्रा के दौरान, “डेज ऑफ इन्डियन कल्चर” उत्सव मनाया गया। भारतीय हस्तलिपियों की एक प्रदर्शनी भी संपन्न हुई और एक भारतीय सांस्कृतिक मण्डली ने कार्यक्रम पेश किए।

विदेश मंत्रालय एच एम टी (इन्टरनेशनल) लिमिटेड के माध्यम से अशगाबात में एक टूल रूप सेंटर स्थापित कर रहा है। यह परियोजना लगभग पूरी होने वाली है।

आईटेक कार्यक्रम के तहत तुर्कमेनी विद्यार्थी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

तुर्की

वर्ष के दौरान, तुर्की के साथ संबंध उच्च स्तरीय यात्राओं के एक क्रम के साथ सक्रिय रहे जिसके फलस्वरूप द्विपक्षीय संबंधों को अपेक्षाकृत अधिक बल मिला। दोनों देशों की आर्थिक संपन्नताएं एक संपूरक के रूप में देखी गईं और द्विपक्षीय विचार-विमर्श में महत्ता प्रदान की गई।

भारत तुर्की संबंधों में 30 मार्च से 2 अप्रैल 2000 तक तुर्की के प्रधानमंत्री महामहिम श्री बुलेन्त एसेविट की सरकारी यात्रा एक युगान्तरकारी घटना थी। तीन दस्तावेज – विदेश मंत्रालयों के बीच राजनैतिक परामर्श से संबंधित तंत्र की स्थापना से संबंधित एक समझौता ज्ञापन, कृषि तथा संबंधित विषयों के क्षेत्र में सहयोग से संबंधित समझौता ज्ञापन, और सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम (सी ई पी) संपन्न हुए थे। तुर्की के प्रधानमंत्री ने भारत-तुर्की संयुक्त व्यवसाय परिषद को संबोधित किया था। उन्हें विश्व भारती, शान्ति निकेतन द्वारा डाक्टर ऑफ लिटरेचर की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया।

राजदूत मिथाट बाल्कन, डिप्टी अण्डर सेक्रेटरी विदेश मंत्रालय अक्टूबर, 2000 में भारत की यात्रा पर आए। चर्चाओं में अवरसंरचना के क्षेत्र में सहयोग की संभावनाएं शामिल थीं। राजदूत बाल्कन ने सचिव (पूर्व) के साथ अपनी बैठक के अलावा, भूतल

परिवहन मंत्रालय, रेलवे बोर्ड, वाणिज्य मंत्रालय और ओवरसीज कन्सट्रक्शन कोशिल ऑफ इन्डिया, नेशनल बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन कार्पोरेशन, नेशनल हाईवे अथोरिटी ऑफ इन्डिया तथा टाटा प्रोजेक्ट्स लिमिटेड के साथ चर्चाएं की थीं। यह पाया गया कि तृतीय देशों सहित ढाँचागत क्षेत्र में भारतीय और तुर्की फर्मों के बीच सहयोग के लिए पर्याप्त क्षेत्र विद्यमान है

तुर्की की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के सचिव, जनरल कुमहुर असपारूक 6-12 नवम्बर, 2000 तक भारत की यात्रा पर आए। उन्होंने रक्षा मंत्री से मुलाकात की और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार, सचिव भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद, सचिव (पूर्व), विदेश मंत्रालय तथा स्टाफ समिति के प्रमुखों के अध्यक्ष के साथ बैठकें की थीं।

उजबेकिस्तान

उजबेकिस्तान के साथ भारत के संबंधों को मई, 2000 में उजबेक राष्ट्रपति महामहिम इस्लाम करीमोव की यात्रा के फलस्वरूप प्रोत्साहन मिला। इस यात्रा ने दोनों पक्षों के लिए द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मसलों पर विचारों के आदान प्रदान का एक अवसर उपलब्ध कराया। भारत और उजबेकिस्तान की धार्मिक कट्टरवाद और सीमापार आतंकवाद से चुनौतियों के संबंध में समान सामान्य हित-चिंताएं हैं और अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में धर्म-निरपेक्ष और प्रजातांत्रिक आदर्शों को और मजबूत करने की आवश्यकता को रेखांकित किया। इस यात्रा के दौरान, संबंधों के सिद्धान्तों से संबंधित एक संयुक्त घोषणा और 8 करार संपन्न किए गए।

उजबेक राष्ट्रपति ने सी आई आई द्वारा आयोजित व्यवसायियों के एक समूह को संबोधित किया और उड्डयन प्रौद्योगिकी, आटोमोबाइल-सहायकों, कपास प्रसंस्करण, फार्मेस्युटिकल्स, सूचना और कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, सौर ऊर्जा, दवा और स्वर्ण आभूषणों के उत्पादन में लेजर प्रौद्योगिकी का उपयोग जैसे क्षेत्रों में सहयोग का प्रस्ताव किया।

सचिव (पूर्व) जुलाई, 2000 में उजबेकिस्तान की यात्रा पर गए। द्विपक्षीय मसलों और भारत तथा उजबेकिस्तान को धार्मिक कट्टरपंथ और आतंकवाद द्वारा पेश सामान्य चुनौती से संबंधित मसलों पर परामर्श किया गया।



5

खाड़ी, पश्चिमी एशिया और उत्तरी अफ्रीका

भारत खाड़ी के सभी देशों के साथ अपने घनिष्ठ पारंपरिक सांस्कृतिक संबंधों को अत्यन्त महत्वपूर्ण मानता है। भौगोलिक, आर्थिक और सामाजिक कारणों से खाड़ी के देशों और भारत के बीच एक विलक्षण रिश्ता बना है जो असंख्य संबंधों में परिलक्षित होता है। हाल के वर्षों में खाड़ी के हमारे पड़ोसियों और भारत द्वारा इस रिश्ते को एक मजबूत आपसी लाभकारी संबंध में विकसित करने का निरन्तर प्रयास किया गया है।

नई सहस्राब्दि के पहले वर्ष के दौरान, अनेक उच्च-स्तरीय यात्राओं से भारत और खाड़ी के देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों को संवर्द्धित और सुदृढ़ करने में पर्याप्त सहायता मिली। राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में भारत-खाड़ी सहयोग को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से कई महत्वपूर्ण करारों को नवीकृत किया गया और नये करारों एवं सहमतियों पर पहुँचा गया।

बहरीन

बहरीन के परिवहन मंत्री शेख अली बिन खलीफा अल खलीफा ने 4-5 अप्रैल, 2000 तक भारत की राजकीय यात्रा की। उन्होंने उप-राष्ट्रपति से मुलाकात की और उन्हें प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी को सम्बोधित बहरीन के प्रधान मंत्री का एक पत्र सौंपा।

इराक

भारत इराक संयुक्त आयोग के 14वें सत्र की बैठक 26-27 नवम्बर, 2000 तक

नई दिल्ली में आयोजित हुई, जिसकी सह-अध्यक्षता भारत गणराज्य के पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री महामान्य श्री राम नाइक तथा इराक गणराज्य के तेल मंत्री महामान्य डा. अमीर मोहम्मद रशीद ने की। यह बैठक इराक के उप राष्ट्रपति महामान्य ताहा यासिन रामधन की 27-29 नवम्बर, 2000 तक हुई भारत यात्रा की पूर्व संध्या पर हुई।

इराक के उप राष्ट्रपति महामहिम श्री रामधन ने महामान्य श्री के. आर. नारायणन से मुलाकात की और उप-राष्ट्रपति महामहिम श्री कृष्णकांत और प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी से मुलाकात की। उन्होंने पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री महामहिम श्री राम नाइक, विदेश मंत्री महामहिम श्री जसवंत सिंह तथा वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री महामहिम श्री उमर अब्दुल्ला से भी मुलाकात की। वे बंगलौर भी गये। बंगलौर की अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने महामहिम वी एस रमा देवी, और कर्नाटक के मुख्यमंत्री श्री एस एम कृष्णा से भी मुलाकात की। बंगलौर में उन्होंने एच. ए. एल. लि. और टेक्नॉलोजी पार्क भी देखा।

संयुक्त आयोग की बैठक से दोनों पक्षों को जारी तकनीकी, शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक सहयोग की समीक्षा करने का अवसर मिला। भारत ने वर्ष 2001-2002 के लिए आइटेक कार्यक्रम के अन्तर्गत स्थानों की कुल संख्या को 70 तक बढ़ाने पर सहमति व्यक्त की। दोनों पक्ष अपने विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों के बीच सहयोग और विनिमय को बढ़ावा देने पर सहमत हुए। स्वास्थ्य देख-रेख, कृषि, सिंचाई, दूर-संचार, परिवहन और बिजली के क्षेत्रों में सहयोग तेज करने के लिए विशिष्ट उपायों की पहचान भी की गयी। भारत के तेल और प्राकृतिक गैस मंत्रालय की ओ एन जी

सी - विदेश लि. और इराक के तेल मंत्रालय की ऑयल एक्सप्लोरेशन कंपनी ने एक्सप्लोरेशन ब्लाक सं 8 परियोजना के क्रियान्वयन के लिए एक करार संपन्न किया। अनेक विशिष्ट ओ एण्ड एम परियोजनाएं, तेल शोधक कारखानों का पुनरुद्धार और उन्नयन भी निश्चित किया गया। दोनों पक्ष संयुक्त राष्ट्र के खाद्य के लिए तेल कार्यक्रम के अन्तर्गत इराक से भारत को कच्चे तेल की बढ़ी हुई मात्रा प्राप्त होने की संभावना की जांच करने पर भी सहमत हुए।

29 नवम्बर, 2000 को नई दिल्ली में भारत गणराज्य के प्रधानमंत्री महामहिम श्री अटल बिहारी वाजपेयी और इराक गणराज्य के उप राष्ट्रपति महामहिम श्री ताहा यासिन रामधन की उपस्थिति में भारत गणराज्य की सरकार और इराक गणराज्य की सरकार के बीच आर्थिक, वैज्ञानिक, तकनीकी और सांस्कृतिक सहयोग से संबद्ध एक करार संपन्न किया गया।

वर्ष के दौरान पारंपरिक रूप से सौहार्द्रपूर्ण भारत-इराक संबंधों को नये आयाम मिले। विदेश राज्य मंत्री श्री अजित कुमार पांजा ने 22-25 सितम्बर, 2000 तक इराक का दौरा किया। यात्रा के दौरान, विदेश राज्य मंत्री ने राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन से मुलाकात की और उन्हें प्रधानमंत्री का एक पत्र सौंपा जिसमें राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने की भारत की इच्छा को दोहराया गया। इस यात्रा के दौरान दोनों विदेश कार्यालयों के बीच आवधिक विचार-विमर्श के लिए एक समझौता ज्ञापन संपन्न किया गया। उन्होंने उप-राष्ट्रपति ताहा यासिन रामधन, इराकी संसद के अध्यक्ष, डा. सदोन हमादी और उप-प्रधान मंत्री तारिक अजीज से भी मुलाकात की। इसी यात्रा के दौरान भारत-इराक संयुक्त वाणिज्य परिषद ने उद्घाटन सत्र भी आयोजित किया।

वर्तमान वर्ष के दौरान, 60 इराकी नामजदों ने 'आइटेक' कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत में प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त 30 इराकी छात्रों को स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में भारतीय विश्वविद्यालयों में दाखिला दिलाया गया। भारत ने मानवीय आधार पर इराक के पांच हृदय रोगियों को भारत के अस्पतालों में इलाज किये जाने का भी प्रस्ताव दिया।

अप्रैल, 2000 में एक तीन सदस्यीय भारतीय कृषि शिष्टमंडल ने इराक का दौरा किया। पंजाब के कृषि मंत्री श्री गुरदियाल सिंह बादल ने अप्रैल में इराक का दौरा किया

और पी ए यू और इराकी पक्ष के बीच कृषि में सहयोग के लिए कृषि मंत्रालय के साथ एक समझौता ज्ञापन संपन्न किया।

काशी से कर्बला के नारे के तहत काशी के एक ग्यारह सदस्यीय युवा दल ने शांति मिशन पर इराक का दौरा किया। भारत ने बेबीलोन अन्तर्राष्ट्रीय महोत्सव और बगदाद अन्तर्राष्ट्रीय महोत्सव में भाग लिया।

इराक ने इस वर्ष के दौरान गैस टरबाइन की आपूर्ति के लिए 100 मि. अमरीकी डालर का दूसरा ठेका भी बी एच ई एल को दिया। खाद्य के लिए तेल कार्यक्रम के अन्तर्गत भारतीय कंपनियों का अभी तक 700 मिलियन अमरीकी डालर का ठेका मिला है।

कुवैत

दो भारतीय नौसैनिक जहाज, आई एन एस तीर और कृष्णा ने 8-11 अप्रैल तक कुवैत की सद्भावना यात्रा की। इस यात्रा की काफी प्रशंसा हुई और अनेक भारतीयों, कुवैत के स्थानीय लोगों, राजनयिकों और स्कूली बच्चों ने इन जहाजों को देखा।

केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री डा. मुरली मनोहर जोशी ने 13 जून, 2000 को कुवैत की यात्रा की। विदेश राज्य मंत्री श्री अजित कुमार पांजा ने 8-11 जुलाई, 2000 तक कुवैत का दौरा किया। कुवैत के विदेश राज्य मंत्री श्री सुलेमान माजेद अल शाहीन ने उनका स्वागत किया। विदेश राज्य मंत्री ने कुवैत के युवराज महामहिम शेख साद अल-अब्दुल्ला अल सलेम अल सबाह तथा कुवैत के प्रधानमंत्री से मुलाकात की और उन्हें प्रधानमंत्री का एक पत्र सौंपा। विदेश राज्य मंत्री ने नेशनल असेम्बली के अध्यक्ष महामहिम श्री जासेम अल खोराफी और कुवैत के विदेश मंत्री महामहिम शेख सबाह अल अहमद अल जाबेर अल सबाह से भी मुलाकात की। इस यात्रा के दौरान विदेश कार्यालय परामर्शों से संबद्ध एक समझौता ज्ञापन संपन्न किया गया।

दिनांक 22-24 फरवरी 2001 तक के वी. राजन, सचिव (ईस्ट) के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल ने विदेश कार्यालय परामर्श के लिए कुवैत का दौरा किया। इस दौरे ने कुवैत और भारत के दोनों पक्षों के पूरे द्विपक्षीय संबंधों की समीक्षा की।

ओमान

भारत-ओमान संयुक्त आयोग का तीसरा सत्र 27-28 अप्रैल को नई दिल्ली में हुआ। ओमान के शिष्टमण्डल के नेता, वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री मकबूल अली सुल्तान के साथ उन्होंने दिनों दिल्ली में आयोजित जे बी सी की बैठक में भाग लेने के लिए एक उच्च स्तरीय वाणिज्य शिष्टमण्डल भी आया। यात्रा पर आये मंत्री ने प्रधान मंत्री से मुलाकात की और उन्हें सुल्तान काबूस का एक संदेश सौंपा। उन्होंने विदेश मंत्री, वित्त मंत्री, सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री, वाणिज्य मंत्री, उर्वरक और रसायन मंत्री, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री तथा नागर विमानन मंत्री से भी मुलाकात की। संयुक्त आयोग ने विभिन्न क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग की समीक्षा की और इसे और संवर्द्धित करने का निर्णय लिया। सूचना प्रौद्योगिकी, पर्यटन और खाद्य प्रसंस्करण की सहयोग के प्रमुख क्षेत्रों के रूप में पहचान की गयी।

ओमान के विदेशी मामलों के मंत्री युसुफ अलावी ने 17-18 जुलाई तक भारत की यात्रा की। प्रधानमंत्री से मुलाकात करने के अतिरिक्त, उन्होंने विदेश मंत्री के साथ द्विपक्षीय संबंधों और क्षेत्रीय मसलों पर चर्चा की। द्विपक्षीय संबंधों को और संवर्द्धित करने के लिए भारत-ओमान नीतिगत परामर्शी समूह गठित करने का निर्णय लिया गया। उन्होंने आई ओ आर - ए आर सी पर भारत द्वारा शुरू की गयी वार्षिक व्याख्यान श्रृंखला में व्याख्यान भी दिया।

भारत-ओमान संयुक्त उद्यम परियोजना का भारत सरकार द्वारा अनुमोदन कर दिये जाने के पश्चात्, ओमान के वाणिज्य और उद्योग मंत्री मकबूल सुल्तान ने हमारे रसायन और उर्वरक मंत्री के साथ परियोजना के क्रियान्वयन से संबंधित कतिपय लंबित मसलों पर चर्चा करने के लिए 15 सितम्बर को भारत का दौरा किया। ओमान में स्थापित उर्वरक संयंत्र 1.6 मिलियन टन यूरिया और 248 हजार मीट्रिक टन की अतिरिक्त मर्चेट ग्रेड अमोनिया की वार्षिक क्षमता वाला होगा। भारतीय प्रगतिशील कम्पनियाँ, जैसे इफको और क्रिभको, 25 प्रतिशत इक्विटी रखें भी और शेष 50 प्रतिशत ओमान ऑयल कम्पनी के पास रहेगा, भारत द्वारा समस्त यूरिया उत्पाद एक द्विपक्षीय करार द्वारा खरीदा जाएगा। इसके पश्चात् भारत सरकार के उर्वरक सचिव की अध्यक्षता में एक शिष्टमंडल ने अन्य विचार-विमर्शों के लिए 5-7 अक्टूबर तक मस्कट की यात्रा की। दोनों पक्ष इस परियोजना की शीघ्र उन्नति और वित्तीय मामलों को निपटाने के लिए उत्सुक हैं।

कतर

भारत और कतर के पारंपरिक रूप से घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण संबंध हैं। ये संबंध जिन्हें अप्रैल 1999 में कतर के महामहिम अमीर की ऐतिहासिक भारत यात्रा से नई गति मिली थी, दोनों देशों के बीच अन्य घनिष्ठ क्रियाकलापों के द्वारा जारी रहे।

कतर राज्य के विदेश मंत्रालय में स्थायी अंडर सेक्रेटरी महामहिम श्री अब्देल रहमान बिन हमद अल अतिया ने 10-12 अप्रैल, 2000 तक भारत का दौरा किया। उन्होंने सचिव (पश्चिम) श्री आर.एस. काल्हा के साथ चर्चा की। अन्य बातों के साथ-साथ यह यात्रा भारत और कतर के बीच होने वाली उच्च संयुक्त समिति (एच जे सी), जिसका गठन महामहिम अमीर की भारत यात्रा के दौरान किया गया था, की प्रथम बैठक की तैयारी के सिलसिले में हुई। एच जे सी की सह-अध्यक्षता दोनों पक्षों के विदेश मंत्रियों द्वारा की जाती है। इसकी पहली बैठक, 21-22 अक्टूबर, 2000 को विदेश मंत्री की कतर यात्रा के दौरान होनी थी परन्तु नियत तिथि के कुछ दिन पूर्व, कतर पक्ष के अनुरोध पर इसे स्थगित कर दिया गया क्योंकि इसी समय काहिरा में आकस्मिक अरब शिखर सम्मेलन होना था।

पहली बार कतर के किसी राजनयिक ने विदेश मंत्रालय के विदेश सेवा संस्थान में प्रशिक्षण प्राप्त किया। श्री हमद युसुफ अल महमूद ने 2 मार्च से 14 अप्रैल तक विदेश सेवा संस्थान में 24वें पी सी एफ डी में भाग लिया।

डॉ. एस. नारायणन, सचिव (पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस) तथा पेट्रोनेट इन्डिया के सी ई ओ और एम डी श्री एस सी माथुर एवं अन्य अधिकारियों ने 17 जून, 2000 को कतर का दौरा किया और उन्होंने उर्जा, उद्योग, बिजली एवं जल मंत्री महामहिम श्री अब्दुल्ला बिन हमद अल अतिया, वित्त, अर्थव्यवस्था और वाणिज्य मंत्री महामहिम श्री युसेफ हुसैन कमाल एवं अध्यक्ष के साथ अधिकारिक बातचीत की जिनमें दोनों पक्षों ने रासगैस से एल एन जी का पहला नौ.भार प्राप्त करने के लिए की गयी तैयारियों में हुई प्रगति की समीक्षा की। कतर राज्य की सरकार के उर्जा, उद्योग, बिजली और जल मंत्री महामहिम श्री अब्दुल्ला बिन हमद अल अतिया ने भारत के पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री श्री राम नाइक के आमंत्रण पर 17-19 अक्टूबर, 2000 तक भारत का दौरा किया। अपनी यात्रा के दौरान कतर के मंत्री ने अपने भारतीय समकक्ष और

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री तथा पेट्रोनेट एल एन जी लि. के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ चर्चा की। यात्रा के अंत में, कतर के मंत्री ने कहा कि भारतीय टर्मिनलों में एल एन जी प्राप्त करने की सुविधा स्थापित करने से संबंधित कतर के रासगैस और पेट्रोनेट एल एन जी लि. के बीच सभी लंबित मामलों का समाधान कर लिया गया है। दोनों कंपनियों ने 25 वर्षों की अवधि में 7.5 एम एम टी पी ए की आपूर्ति के लिए एक क्रय और विक्रय करार संपन्न किया।

कतर ने 20-23 नवम्बर, 2000 तक दोहा में आंतरिक राज्य सुरक्षा, पुलिस उपकरण, औद्योगिक स्थल सुरक्षा और नागरिक सुरक्षा पर एक अंतराष्ट्रीय प्रदर्शनी का भी आयोजन किया। यह प्रदर्शनी बारी-बारी से दोहा और पेरिस में आयोजित की जाती है। भारत ने इसमें पहली बार भाग लिया जिसमें भारतीय शिष्टमंडल का नेतृत्व माननीय गृह राज्य मंत्री श्री विद्यासागर राव ने किया तथा आई बी के संयुक्त निदेशक श्री बी सी नायक, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के आई जी श्री एस एस किरपेकर भी उनके साथ गये। यात्रा के दौरान माननीय राज्य मंत्री ने कतर के प्रधान मंत्री महामहिम शेख अब्दुल्ला बिन खलीफा अल थानी से भी भेंट की।

खाड़ी औद्योगिक परामर्शी संगठन (जी ओ आई सी) के सहायक महासचिव डा. लुलवा ए अल मिसनेद ने भारतीय महिला व्यावसायी परिसंघ (एफ आई डब्ल्यू ई) द्वारा आयोजित महिला व्यवसायिकों के 7वें सार्वभौमिक सम्मेलन में भाग लेने के लिए 7-9 फरवरी, 2000 तक भारत का दौरा किया। डा. लुलवा ने प्लास्ट इन्डिया फाउन्डेशन द्वारा आयोजित प्लास्ट इन्डिया 2000 प्रदर्शनी में भाग लेने के लिए 19-24 फरवरी, 2000 तक पुनः नई दिल्ली की यात्रा की। कतर पेट्रोकेमिकल कंपनी (क्यू ए पी सी ओ) के एक सात सदस्यीय शिष्टमंडल ने प्लास्ट इन्डिया 2000 प्रदर्शन में भाग लिया और प्रदर्शनी में अपना पवेलियन लगाया।

इस अवधि के दौरान कई भारतीय कंपनियों को कतर में महत्वपूर्ण ठेके मिले। मैसर्स डोडसाल लिमिटेड को मेसईद में कतर केमिकल कंपनी (क्यू केम) योजना के लिए 60 मिलियन डालर का उप ठेका मिला जबकि लार्सन और टूब्रो (एल एण्ड टी) को 5.3 बिलियन रुपये का दो स्टेडियमों के निर्माण का ठेका मिला।

भारत को 1999 के दौरान कतर से होने वाले निर्यात के प्रमुख गंतव्यों में सातवें

स्थान पर और कतर को माल आपूर्ति करने वाले सबसे प्रमुख देशों में दसवें स्थान पर रखा गया। 1999 के दौरान कतर से भारत का आयात 567.74 मिलियन क्यू आर और कतर को भारत का निर्यात 238.52 मिलियन क्यू आर का हो गया।

इस वर्ष के दौरान कतर में आयोजित महत्वपूर्ण सांस्कृतिक गतिविधियों में भारतीय फीचर फिल्मों और वृत्तचित्रों का “सिनेफेस्ट 2000” नामक महोत्सव था जो 5-10 मई, 2000 तक मनाया गया और जिसमें फिल्म महोत्सव निदेशालय द्वारा भेजी गयी पुरस्कृत और महत्वपूर्ण फिल्मों का दोहा में प्रदर्शन किया गया।

सऊदी अरब

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री ने 17-19 नवम्बर, 2000 तक रियाद में हुए सातवें अंतराष्ट्रीय ऊर्जा मंच में भाग लेने के लिए रियाद का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान, मंत्री महोदय ने सऊदी अरब के अपने समकक्ष के साथ बातचीत की। उन्होंने कई देशों के तेल मंत्रियों के साथ भी चर्चा की।

“इन्डिया 2000” नामक भारतीय उत्पादों का एक सप्ताह चलने वाला व्यापार मेला सितम्बर माह में धहरान में आयोजित किया गया। इनमें सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग, उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक, मसाले और अन्य पारंपरिक भारतीय निर्यात की वस्तुएं शामिल की गयी। इस मेले में 30 से अधिक भारतीय कंपनियों ने भाग लिया।

दो भारतीय नौसैनिक जहाज, आई एन एस तीर और आई एन एस सुजाता ने 30 सितम्बर से 3 अक्टूबर 2000 तक, चार दिन के लिए जद्दा की सद्भावना यात्रा की। इस यात्रा के दौरान, दोनों जहाजों के कैप्टनों ने जद्दा के गवर्नर, राजकुमार मिशाल बिन माजेद, सऊदी पश्चिमी बेड़े के कमांडर और वहां के अन्य वरिष्ठ नौसैनिक अधिकारियों के साथ बातचीत की। दोनों जहाजों ने सऊदी नौसैनिक जहाजों के साथ संयुक्त सैनिक अभ्यास भी किया।

वर्ष 1999-2000 के दौरान सऊदी अरब से भारत में 2.265 बिलियन अमरीकी डालर का आयात हुआ जबकि भारत से सऊदी अरब को 742 मिलियन अमरीकी डालर का निर्यात किया गया। अद्यतन उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, लगभग 1.5 मिलियन भारतीय कामगार तथा व्यवसायी सऊदी अरब में कार्य कर रहे थे जो सऊदी अरब में सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय है।

सचिव (पूर्व) के नेतृत्व में एक चार सदस्यीय शिष्टमंडल ने हज यात्रियों के आवास और परिवहन से संबंधित प्रबंधों को अंतिम रूप देने के लिए अक्टूबर में रियाद की यात्रा की और सऊदी अरब के हज मंत्री डा. इयाद मदानी के साथ बातचीत की। वर्ष 2001 में कुल 1,20,000 भारतीयों के हज करने की आशा है।

विदेश मंत्री श्री जसवंत सिंह ने 19 जनवरी से 21 जनवरी, 2001 तक सऊदी अरब की राजकीय यात्रा की। इस यात्रा के दौरान, विदेश मंत्री ने सऊदी अरब के विदेश मंत्री राजकुमार सऊद अल-फैजल के साथ क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मसलों पर व्यापक द्विपक्षीय बातचीत की। विदेश मंत्री ने सम्राट फहद और युवराज अब्दुल्ला से भी मुलाकात की। इस यात्रा के दौरान वार्षिक विदेश कार्यालय परामर्शों से संबंधित एक करार भी संपन्न किया गया।

संयुक्त अरब अमीरात

मंत्रिस्तरीय यात्राओं के अतिरिक्त अन्य आपसी यात्राओं, विशेषकर व्यापारिक और वाणिज्यिक शिष्टमंडलों की यात्राओं में वृद्धि होने के साथ ही इस वर्ष भारत और संयुक्त अरब अमीरात के बीच विद्यमान बहु आयामी और घनिष्ठ संबंध और भी सुदृढ़ हुए।

संयुक्त अरब अमीरात सरकार के सूचना और संस्कृति मंत्री महामहिम शेख अब्दुल्ला बिन जायेद अल नाहयान, सूचना और प्रसारण राज्य मंत्री श्री अरूण जेतली के निमंत्रण पर 3.4.2000 से 7.4.2000 तक के लिए भारत आये। उन्होंने प्रधानमंत्री से भेंट की और उन्हें संयुक्त अरब अमीरात के राष्ट्रपति महामहिम शेख जायेद बिन सुल्तान अल नाहयान का एक पत्र सौंपा। उन्होंने विदेश मंत्री श्री जसवंत सिंह से भी मुलाकात की। उन्होंने श्री अरूण जेतली के साथ चर्चा की और उसके बाद दोनों मंत्रियों के नेतृत्व में शिष्टमंडल स्तर की वार्ता हुई। यात्रा के दौरान 4.4.2000 को नई दिल्ली में सूचना के क्षेत्र में सहयोग से संबंधित एक करार भी संपन्न किया गया। समाचारों के आदान-प्रदान के लिए एक अन्य करार पी टी आई और डब्ल्यू ए एम (अमीरात की सरकारी एजेंसी) के बीच संपन्न किया गया। बाद में वे जयपुर और बंगलौर गये। बंगलौर में वे अन्तर्राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी पार्क और भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान देखने गये और उन्होंने निवेश एवं सूचना प्रौद्योगिकी तथा ई-कामर्स क्षेत्रों में निवेश और संयुक्त उपक्रम लगाने में रुचि दिखाई।

विदेश मंत्री श्री जसवंत सिंह जनवरी, 2000 में अपनी यात्रा के बीच में वहाँ रुके। उन्होंने दुबई के युवराज (जनरल) शेख मोहम्मद बिन रशीद अल मकतूम और रक्षा मंत्री से भेंट की तथा उन्होंने भारत और दुबई के बीच विद्यमान विविधतापूर्ण और बढ़ रहे संबंधों की समीक्षा की। विदेश मंत्री ने वहाँ के विदेश राज्य मंत्री शेख हमदान बिन जायेद अल नाहयान से भी मुलाकात की और क्षेत्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मसलों पर अपने विचार व्यक्त करने के अतिरिक्त भारत-यू ए ई संबंधों की समीक्षा की।

आबू धाबी में संबंधित अनुसमर्थन दस्तावेजों का आदान-प्रदान किये जाने के साथ ही प्रत्यर्पण एवं सिविल और आपराधिक मामलों में आपसी सहायता से संबद्ध संधियाँ, जो नई दिल्ली में 25.10.1999 को संपन्न की गयी थीं, 29.5.2000 को प्रवृत्त हो गयीं।

अमीरात एयरलाइंस (दुबई सरकार के स्वामित्व की) के अध्यक्ष शेख अहमद बिन सईद अल मकतूम ने 11 सितम्बर 2000 को चेन्नई के लिए एयरलाइंस की पहली उड़ान में एक बड़े वाणिज्यिक शिष्टमंडल का नेतृत्व किया। अमीरात ने दुबई-चेन्नई सेक्टर में एयर इन्डिया के साथ साझे संकेत से संबंधित व्यवस्था की। पहली उड़ान में शेख अहमद के साथ जल एवं ऊर्जा मंत्री शेख अहमद बिन नासर अल ओवैस, दुबई सीमा शुल्क के महानिदेशक डा. ओबैद सक्र बुसित भारत में संयुक्त अरब अमीरात के राजदूत अहमद अब्दुल्ला अल मुसाली, गल्फ न्यूज के मालिक एवं डी सी सी (दुबई वाणिज्य परिसंघ) के अध्यक्ष श्री ओबैद अल तायेर, यू ए ई के प्रमुख भारतीय व्यवसायी और एक बड़ा मीडिया शिष्टमंडल भी आया। तमिलनाडू के राज्यपाल ने शेख अहमद और शिष्टमंडल के स्वागत में दिन के भोजन की मेजबानी की। फिक्की के मनोनीत अध्यक्ष श्री ए सी मुथैया ने एक स्वागत समारोह का आयोजन किया जिसमें प्रसिद्ध उद्योगपतियों, इत्यादि ने भाग लिया।

भारत के गणराज्य बनने की 50वीं वर्षगांठ के समारोहों को मनाने के लिए आबू धाबी सांस्कृतिक फाउंडेशन के सहयोग से “भारत सप्ताह” का आयोजन किया गया। अर्थव्यवस्था और वाणिज्य मंत्री ने इस महोत्सव को आरंभ करने के लिए 17, सितम्बर, 2000 को एक फोटो प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

इन्टरनेशनल पेट्रोलियम इन्वेस्टमेंट कंपनी के एक उच्च-स्तरीय शिष्टमंडल ने 6.6.2000 से 9.6.2000 तक भारत का दौरा किया। शिष्टमंडल ने भारत के पेट्रोलियम

ओर प्राकृतिक गैस मंत्री और इन्डियन ऑयल कंपनी, भारत पेट्रोलियम और हिन्दुस्तान पेट्रोलियम के अध्यक्षों से मुलाकात की। यू ए ई पक्ष ने पेट्रोलियम के क्षेत्र में भारत - यू ए ई सहयोग बढ़ाने में गहरी रुचि दिखाई।

दो भारतीय नौसैनिक कैडेट प्रशिक्षण जहाज आई एन एस तीर ओर आई एन एस कृष्णा ने 3.4.2000 से 6.4.2000 तक पोर्ट रशीद की यात्रा की। जहाजों पर एक स्वागत समारोह आयोजित किया गया जिसमें चुनिंदा भारतीय और स्थानीय अधिकारियों ने भाग लिया।

1998-1999 में यू ए ई को 1868 मिलियन अमरीकी डालर का भारतीय निर्यात 1999-2000 से बढ़कर 2148 मिलियन अमरीकी डालर का हो गया। यह भारत के कुल निर्यात का लगभग 6 प्रतिशत है। 1998-99 में 10 प्रतिशत की निर्यात वृद्धि दर वर्ष 1999-2000 में बढ़कर 15 प्रतिशत हो गयी।

भारतीय वाणिज्य परिषदों की स्थापना फुजायरा ओर शारजाह में क्रमशः नवम्बर, 1999 और मई 2000 में हुई। भारतीय वाणिज्य परिषद फुजायरा, कालबा, खोफखान और डिब्बा तथा शारजाह नगरों में भारतीय वाणिज्यिक समुदाय को एक साथ मिलाता है। ये वाणिज्य परिषद अपने-अपने क्षेत्रों में वाणिज्य एवं उद्योग परिसंघों के साथ तथा मुक्त क्षेत्रों में क्रियाकलाप कर रहे हैं। अपनी स्थापना के बाद से ही इन्होंने संयुक्त अरब अमीरात के राष्ट्रियों और साथ ही भारतीय उद्यमियों और व्यवसायियों को साथ लाने के अपने प्रयास में अनेक गतिविधियाँ आयोजित कीं।

भारतीय औद्योगिक परिसंघ (सी आई आई) दक्षिणी क्षेत्र के एक वाणिज्यिक मिशन ने 7-11 मई, 2000 तक संयुक्त अरब अमीरात का दौरा किया तथा इसने दुबई में व्यापक वाणिज्यिक बैठकें की और आबू धाबी, शारजाह, अजमान ओर फुजायरा के स्थानीय औद्योगिक परिसंघों के साथ विचार-विमर्श किया। इन विचार-विमर्शों से संयुक्त अरब अमीरात में लघु वाणिज्य की संभावनाओं के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिली जिससे यह मिशन सफल रहा। यह भारत- यू ए ई संबंधों को और सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध हुआ।

केन्द्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री मुरासोली मारन ने 14 जून, 2000 को दुबई में जी सी सी देशों (बहरीन, कुवैत, कतर, ओमान, सऊदी अरब और संयुक्त अरब

अमीरात), इरान तथा इराक में भारत के वाणिज्यिक प्रतिनिधियों की व्यापार और निवेश संवर्द्धन गतिविधियों की समीक्षा की। तेजी से बदलते हुए आर्थिक परिवेश में वाणिज्यिक प्रतिनिधियों की नई भूमिका का उल्लेख करते हुए मंत्री महोदय ने इस क्षेत्र के साथ भारत की व्यापार और निवेश क्षमताओं का पूर्ण उपयोग करने के लिए उन्हें नयी नीति अपनाने का सुझाव दिया।

फिक्की के एक दो सदस्यीय शिष्टमंडल ने 26, सितम्बर, 2000 को दुबई का दौरा किया तथा इसने दुबई के वाणिज्य और उद्योग परिसंघ के साथ उपयोगी बैठक की और अनिवासी व्यवसायियों के साथ विचार विनिमय किया। अनिवासी व्यवसायियों ने प्रस्ताव रखा कि फिक्की का एक कार्यालय दुबई में खोला जाना चाहिए। फिक्की के शिष्टमंडल ने प्रस्ताव पर विचार करने का वचन दिया।

अल घुरेयर समूह के अध्यक्ष श्री अब्दुल्ला अल घुरेयर ने अगस्त, 2000 में भारत (दिल्ली, बंगलौर और मुम्बई) की यात्रा की। उनका मुख्य उद्देश्य भारत में एक गैस आधारित ऊर्जा संयंत्र में निवेश करने की थी। उनका उद्देश्य सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में मशरूक बैंक (उनके बैंक जिनकी शाखाएं दिल्ली और मुम्बई में हैं) और एक भारतीय वित्तीय संस्थान के साथ एक संयुक्त उद्यम निधि स्थापित करने का भी था।

अगस्त के अंत में शारजाह आर्थिक विकास विभाग और मुक्त व्यापार क्षेत्र के अध्यक्ष शेख तारिक अल कासिमी दिल्ली और हैदराबाद सहित 7 शहरों के मुक्त व्यापार क्षेत्र में संवर्द्धन के लिए 12 सदस्यीय शिष्टमंडल के साथ एक पखवाड़े की यात्रा पर भारत आये। शिष्टमंडल ने पर्यटन, स्वास्थ्य, सूचना प्रौद्योगिकी, आई टी शिक्षा, मसाले और समुद्री प्रसंस्करण जैसी विभिन्न क्षेत्रों में निवेश प्रस्तावों को बढ़ावा दिया।

विश्व सीमा शुल्क संगठन के अध्यक्ष और दुबई सीमा शुल्क के महानिदेशक डा. ओबैद सकर बुसित ने भारत का दौरा किया (11-20 सितम्बर, 2000)। इस यात्रा की मुख्य बात भारतीय सीमा-शुल्क के साथ द्विपक्षीय सहयोग से संबद्ध एक समझौता ज्ञापन की पहल करना था। उन्होंने सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री प्रमोद महाजन और वित्त राज्य मंत्री श्री धनंजय कुमार से मुलाकात की। उन्होंने दुबई सीमा शुल्क की 100वीं वर्षगांठ समारोहों के अवसर पर नवम्बर 2000 में श्री प्रमोद महाजन को दुबई आने का निमंत्रण दिया।

पिछले वर्ष के दौरान जनता को कौंसली सेवाएं उपलब्ध कराने में पर्याप्त सुधार हुआ है।

पंजाब के मुख्य मंत्री श्री प्रकाश सिंह बादल ने कनाडा अमरीका से वापिस आते समय 11-14 नवम्बर, 2000 तक तीन दिन के लिए संयुक्त अरब अमीरात की यात्रा की।

यमन

संयुक्त व्यापार परिषद करार, जो 6.12.1998 को समाप्त हो गया था, को 17 मई 2000 को साना में नवीकृत किया गया।

लघु उद्योग, कृषि और ग्रामीण उद्योग, कार्मिक और पेंशन राज्य मंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे (स्वतंत्र प्रभाग) ने यमन गणराज्य के एकीकरण की 10वीं वर्षगांठ के समारोहों के अवसर पर भारत सरकार का प्रतिनिधित्व करने के लिए 21 मई, 2000 को साना की यात्रा की। यह एक सार्थक यात्रा सिद्ध हुई। राज्य मंत्री ने उप-प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री अब्दुल कादर बा-जमाल सहित यमन के अन्य उच्चाधिकारियों से मुलाकात की। इन बैठकों के दौरान भारत-यमन सहयोग और औद्योगिक, वाणिज्यिक, राजनैतिक एवं स्वास्थ्य के क्षेत्रों से संबंधित उपयोगी चर्चा हुई।

विशेष कुवैत सैल

विशेष कुवैत सैल 1991 से उन भारतीयों के लिए मुआवजा दिलवाने का कार्य कर रहा है जिन पर 1990-91 के खाड़ी युद्ध के दौरान प्रतिकूल प्रभाव पड़ा था। काफी समय के बाद संयुक्त राष्ट्र मुआवजा आयोग (यू. एन. सी. सी.) जेनेवा द्वारा निधियां सौंपी जा रही है। नियमित अंतराल पर अब लेखों का हस्तांतरण पुनरीक्षित किया जा रहा है। सफल दावेदारों को चार नियमित नामित बैंकों के द्वारा मुआवजे की राशि का भुगतान किया जा रहा है। विशेष कुवैत सैल के सक्रिय सहयोग और निर्देशन में चारों बैंक सफल दावेदारों (जिनमें से अनेकों ने अपना आवास बदल लिया है और विदेश चले गये हैं) का पता लगाते रहे और उन्हें दावों की राशि का भुगतान करने का कार्य कर रहे हैं।

वर्ष 1999-2000 तक यू. एन. सी. सी. से प्राप्त कुल राशि 514358014 अमरीकी डालर थी। अप्रैल नवम्बर, 2000 के बीच 272787000 अमरीकी डालर की अतिरिक्त

राशि 787145014 अमरीकी डालर तक पहुंच गयी। जहाँ तक 1999-2000 के बीच अदायगी का प्रश्न है, 94993 दावों के लिए 128093560 डालर का भुगतान किया गया। 1-4-2000 - 10-1-2001 के बीच 447358000 अमरीकी डालर (लगभग) की अतिरिक्त राशि अलग-अलग दावेदारों के बीच बांटी गयी। इसमें 98676 व्यक्तिगत दावे हैं। उल्लेखनीय है कि निधियों की कमी के कारण यू. एन. सी. सी. अंशों में निधियाँ भेज रहा हैं। अतः 1.4.2000 - 10.1.2001 के बीच शामिल किये गये दावों में पर्याप्त संख्या में दावे होंगे जिन्हें पहले भी शामिल किया गया है। विशेष कुवैत सैल यू. एन. सी. सी. द्वारा अनुमोदित दावे की राशि का भुगतान किये जाने के लिए नामित बैंकों के साथ सक्रिय संपर्क में है।

विशेष कुवैत सैल यू. एन. सी. सी. द्वारा श्रेणी ड. (सामूहिक) और च (सरकारी) दावों का निपटान करने और अनुमोदित कराने में सहायक रहा है। ड. श्रेणी के अनुमोदित दावों की संख्या अब लगभग 20 है। श्रेणी ड. के दावों के लिए अब तक 16006454 अमरीकी डालर की राशि प्राप्त हुई है। विदेश मंत्रालय का च श्रेणी का 93 मिलियन अमरीकी डालर (लगभग) के दावे का अनुमोदन 1998 में किया गया। च श्रेणी के अनुमोदित दावे के लिए यू. एन. सी. सी. ने अब तक 5 मिलियन अमरीकी डालर दिया है।

पश्चिमी एशिया और उत्तरी अफ्रीका क्षेत्र

भारत ने उच्च स्तरीय यात्राओं के माध्यम से पश्चिमी एशिया और उत्तरी अफ्रीका क्षेत्र के देशों के साथ गहन और व्यापक बहुमुखी अन्योन्य-क्रियाएं संपन्न करने के प्रयास किए। भारत की इस क्षेत्र में शान्ति, विकास, स्थायित्व और आर्थिक और वाणिज्यिक संबंध और अधिक मजबूत बनाने में रूचि लेता रहा। इस क्षेत्र के साथ भारत के व्यापार में भी तेजी आई। मोरक्को और जोर्डन में संयुक्त उद्यम परियोजनाओं के अतिरिक्त, ट्यूनिशिया और मिस्र में संयुक्त उद्यम पर समझौते किए जा रहे हैं। भारत में आने वाला फास्फेट का घना स्रोत इसी क्षेत्र के देशों में है। भारत फिलीस्तीनी लोगों को राजनैतिक, सामग्री के रूप में पदार्थ और तकनीकी सहायता पहुंचाता रहता है। भारत ने बहुत बार इस क्षेत्र में हिंसा फैलाने जैसी घटनाओं के प्रति अपनी चिन्ता व्यक्त की है और बल के बहुत अधिक प्रयोग एवं भड़काऊ गतिविधियों का खण्डन किया है। भारत ने यू. एन.

, ई. सी. ओ. एस. ओ. सी., यू. एन. एच. सी. आर. और अन्य संयुक्त राष्ट्र निकायों और अवयवों के द्वारा अपनाए गए फिलीस्तीनी संकल्पों का समर्थन किया है। भारत मध्य पूर्वी शान्ति प्रक्रिया में मौजूदा बाधा के प्रति बहुत चिन्तित है और इसके सभी पहलुओं पर ध्यान दे रहा है। भारत का मानना है कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद संकल्पों और 'शान्ति भूमि' के सिद्धान्तों के आधार पर ही न्यायसंगत, दीर्घवधिक और स्थायी शान्ति बनाए रखी जा सकती है। भारत महसूस करता है कि इजरायल सहित इस क्षेत्र के सभी देशों को सुरक्षित और अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त सीमाओं में मौजूद रहने का अधिकार है। इस क्षेत्र में उत्तरोत्तर स्थितियों को ध्यान में रखते हुए और संबंधित पक्षों के बीच वर्तमान विचार-विमर्शों को ध्यान में रखते हुए भारत ने सहारवी अरब लोकतांत्रिक गणराज्य को 26 जून, 2000 से अस्वीकृत करने के अपने निर्णय की घोषणा की।

अल्जीरिया

अल्जीरिया के साथ मधुर और घनिष्ठ संबंध बने रहे। विदेश मंत्री श्री जसवन्त सिंह ने 23-25 अक्टूबर, 2000 तक अल्जीरिया की यात्रा की। उन्होंने विदेश मंत्री अब्दुल आजीज बेलखादेम के साथ विस्तार से बातचीत की और राष्ट्रपति अब्दल अजीज बोटेफ्लिया और प्रधानमंत्री अली बैनफ्लिस से मुलाकात की। अल्जीरिया में उनके प्रवास के दौरान विदेश कार्यालय परामर्श से सम्बद्ध एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुए। न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा के अवसर पर विदेश मंत्री ने विदेश मंत्री अब्दल अजीज बेलखादेम से भेंट की। 25 से 27 जून, 2000 तक भारत अल्जीरियाई संयुक्त आयोग की एक बैठक अल्जीरिया में हुई। वाणिज्य और उद्योग राज्य मंत्री श्री ओमार अब्दुल्ला ने भारतीय शिष्टमंडल का नेतृत्व किया। ओ. ए. यू. शिखर सम्मेलन के अवसर पर श्री के. वी. राजन, सचिव (पूर्व) की अगुवानी विदेश मंत्री यूसफ यूसफी ने की। अल्जीरिया के राष्ट्रपति गणतंत्र दिवस 2001 पर सम्मानित अतिथि होंगे। अल्जीरिया के वायु सेना के प्रमुख मेजर जनरल बेन्स लीमेन एअरो इण्डिया 2001 में भाग लेने भारत आएंगे।

अल्जीरिया के राष्ट्रपति अब्दुल अजीज बुतेफ्लीका ने 24-29 जनवरी 2001 तक भारत की यात्रा की और गणतंत्र दिवस समारोह के प्रमुख अतिथि रहे। भारत के राष्ट्रपति के साथ विचारों का विस्तृत आदान-प्रदान करने के अतिरिक्त, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, विदेश मंत्री, राज्य मंत्री और वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री से मुलाकात की। भारत की

यात्रा के दौरान उन्होंने निम्नलिखित दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए:

- द्विपक्षीय भागीदारी घोषणा।
- पादप स्वास्थ्य एवं वनस्पति संरक्षण के क्षेत्र में सहयोग से सम्बद्ध करार।
- पशु चिकित्सा के क्षेत्र में सहयोग से सम्बद्ध करार।
- दोहरे कराधान के परिहार से सम्बद्ध करार।

अल्जीरिया ने गुजरात के भूकम्प पीड़ितों के लिए राहत सामग्री के रूप में टेन्ट, कम्बल, ग्लूकोज/दवाईयाँ, प्रतिकारक दवाईयाँ, कॉटन की पट्टियाँ भिजवाईं।

मिस्र

मिस्र के साथ पारम्परिक संबंधों में अच्छी प्रगति हुई। उप राष्ट्रपति श्री कृष्ण कान्त ने जून, 2000 में काहिरा में जी-15 के शिखर सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व किया। काहिरा में अपने प्रवास के दौरान उप-राष्ट्रपति ने राष्ट्रपति हुस्नी मुबारक से चर्चा की। विदेश मंत्री श्री जसवन्त सिंह ने न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा के दौरान विदेश मंत्री आमरे मौसा से मुलाकात की। विदेश राज्य मंत्री श्री अजित कुमार पांजा ने 6-7 अप्रैल 2000 को काहिरा होते हुए वहां की यात्रा की। श्री के.वी. राजन, सचिव (पूर्व) ने 25 सितम्बर, 2000 को काहिरा यात्रा की और मिस्र के निवेश कार्यालय में वरिष्ठ अधिकारियों के साथ विचार विनिमय किया। काहिरा में 23 से 26 सितम्बर, 2000 तक इण्डिया टेक प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। इसका उद्घाटन वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री श्री ओमार अब्दुल्ला ने किया। काहिरा में अपने प्रवास के दौरान वाणिज्य और उद्योग मंत्री ने विदेश मंत्री श्री आम्ने मौसा से मुलाकात की। 18 सितम्बर, 2000 को काहिरा में भारत के राजदूत ने भारतीय इंजीनियरिंग निर्यात संबंधन कोष के बीच सहयोग से सम्बद्ध ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस ज्ञापन में भारत और मिस्र के लघु और मध्यम उद्यमियों के बीच व्यावसायिक क्रिया-कलाप बढ़ाने के लिए कोशिश की गई है। विदेश मंत्री श्री जसवन्त सिंह भारत-मिस्र संयुक्त आयोग की बैठक की सह-अध्यक्षता के लिए फरवरी, 2001 में काहिरा जाएंगे।

विदेश मंत्री श्री जसवन्त सिंह ने संयुक्त आयोग बैठक की अध्यक्षता के लिए 1-4 फरवरी 2001 तक मिस्र की यात्रा की। मिस्र के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री से मिलने के

अतिरिक्त उन्होंने मिस्र के विदेश मंत्री तथा आर्थिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मंत्री से

अरब लीग

भारत ने काहिरा और नई दिल्ली में अरब लीग के साथ लगातार निकट सम्बन्ध बनाए रखा।

विदेश मंत्री श्री जसवन्त सिंह ने 1 फरवरी 2001 को काहिरा में अरब लीग के महा-सचिव अस्मत अब्दल मेगुईद से मुलाकात की।

लीबिया

लीबिया के साथ भारत के संबंधों में आपसी समझबूझ बनी रही। लीबिया के विदेश मंत्री अब्दल रहमान शलगम 6-8 जुलाई, 2000 तक भारत यात्रा पर आए। विदेश मंत्री श्री जसवन्त सिंह के साथ विचार विनिमय के अतिरिक्त विदेश मंत्री शलगम ने उप राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री रक्षा मंत्री और पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस मंत्री के साथ मुलाकात की। भारतीय कम्पनियाँ निरन्तर लीबिया में आर्थिक गतिविधियों में भाग लेती रहीं।

मोरक्को

मोरक्को के साथ संबंधों में काफी प्रगति देखी गई। विदेश मंत्री श्री जसवन्त सिंह न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र महा सभा के अवसर पर मोरक्को के विदेश मंत्री मोहम्मद बेनाइस से मिले। मोरक्को के शाह महा महिम शाह मोहम्मद VI 27 फरवरी से 3 मार्च, 2001 तक भारत की राजकीय यात्रा पर आएँगे। मोरक्को का नौसेना जहाज भारतीय नौ-सेना द्वारा आयोजित की जा रही अन्तर्राष्ट्रीय फ्लीट रिब्यू में भाग लेगा।

मोरक्को के शाह ने गुजरात के भूकम्प पीड़ितों के लिए प्रधानमंत्री राहत कोष में 250,000 अमरीकी डालर की राशि दान स्वरूप दी।

फिलीस्तीन

भारत ने फिलीस्तीन को राजनैतिक, सामग्रीगत और तकनीकी सहयोग देना जारी रखा। भारत ने बार-बार क्षेत्र में हिंसा भड़काने पर अपना गहरा क्षोभ व्यक्त किया और सेना के अत्याधिक उपयोग और भड़काने वाली कार्रवाई की निन्दा की। भारत ने मध्य पूर्व शान्ति प्रक्रिया के रूकने पर अपनी चिन्ता व्यक्त की। भारत ने निरन्तर यह कहा

कि क्षेत्र में न्यायोचित, स्थायी और व्यापक शान्ति की स्थापना केवल संयुक्त संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद संकल्प 242 और 338 और “शान्ति के लिए भूमि” के सिद्धान्त पर ही हो सकती है। भारत ने फिलीस्तीन लोगों के स्वदेश के उल्लंघनीय अधिकार के प्रति अपना समर्थन दोहराया। राष्ट्रपति यासर अराफात 18-19 अगस्त, 2000 को नई दिल्ली कार्य-यात्रा पर आए और उन्होंने प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी से विस्तृत बातचीत की। राष्ट्रपति यासर अराफात राष्ट्रपति से भी मिले। गृह मंत्री श्री एल. के. आडवाणी और विदेश मंत्री श्री जसवन्त सिंह ने 17 जून, 2000 और 30 जून 2000 को क्रमशः गाजा की यात्रा की और राष्ट्रपति यासर अराफात से मुलाकात की, गृह मंत्री श्री एल. के. आडवाणी के साथ गए वरिष्ठ अधिकारियों ने फिलीस्तीनी सुरक्षा अधिकारियों के साथ चर्चा की। गाजा में विदेश मंत्री ने भारतीय सहायता प्राप्त दो परियोजनाओं का उद्घाटन किया। वाणिज्य और उद्योग राज्य मंत्री श्री रमन सिंह 6 मई, 2000 को गाजा गए और राष्ट्रपति अराफात से मिले। श्री के. वी राजन, सचिव (पूर्व) 4 दिसम्बर, 2000 को गाजा गए और राष्ट्रपति अराफात से मिले। इससे पूर्व श्री के.वी. राजन, सचिव (पूर्व) 2 दिसम्बर को गाजा गए और प्रेजीडेन्सी में महा सचिव तय्यब अब्दूल रहीम से मिले और उन्हें राष्ट्रपति अराफात के नाम प्रधानमंत्री का पत्र दिया। अपनी गाजा यात्रा के दौरान सचिव (पूर्व) पी एन ए के स्वास्थ्य मंत्री और पर्यटन मंत्री से मुलाकात की और फिलीस्तीनी लोगों के लिए तात्कालिक आवश्यक राहत आपूर्ति भेजने के लिए 50 लाख रुपये का विशेष कोष बनाने के लिए भारत सरकार के निर्णय की घोषणा की। भारत सरकार ने पहले पी एन ए क्षेत्रों के लिए 25 लाख रुपये की राहत आपूर्ति भेजने की घोषणा की थी। संयुक्त सचिव (वाना) ने 23 सितम्बर को ट्यूनिश में पी एल ओ के राजनैतिक विभाग के अध्यक्ष फारूख यादोमी से मुलाकात की।

राज्य सभा के सभापति और लोक सभा के अध्यक्ष के आमन्त्रण पर फिलीस्तीनी विधान परिषद् के अध्यक्ष श्री अहमद अब्दूल क्वारी (अबु-अला) के नेतृत्व में फिलीस्तीन का एक संसदीय शिष्टमंडल 16-20 अगस्त, 2000 तक भारत यात्रा पर आया। अपने प्रवास के दौरान, शिष्टमंडल राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति और विदेश मंत्री से मिला और लोक सभा अध्यक्ष से चर्चा भी की। फिलीस्तीनी लोगों के मानव संसाधन विकास के लिए भारतीय तकनीकी सहायता कार्यक्रम का क्रियान्वयन जारी रहा। भारत ने फिलीस्तीन के शैक्षिक संस्थानों को विभिन्न विषयों पर पुस्तकें भेंट कीं।

सहारावी अरब लोकतान्त्रिक गणराज्य (एस ए डी आर)

क्षेत्र में बन रही परिस्थितियों के सभी पहलुओं और सम्बद्ध पक्षों के बीच चल रही बातचीत को ध्यान में रखते हुए भारत ने 26 जून, 2000 से सहारावी अरब लोकतान्त्रिक गणराज्य (एस. ए. डी. आर.) को सामान्य करने के अपने निर्णय की घोषणा की। भारत संयुक्त राष्ट्र प्रयासों के लिए अपने समर्थन के अनुरूप हो रही गतिविधियों से जुड़ा रहा और सभी सम्बद्ध पक्षों के साथ पारस्परिक रूप से मौजूद मधुर और मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखे।

सूडान

सूडान के साथ संबंध मजबूत हुए। विदेश राज्य मंत्री श्री अजित कुमार पांजा भारत-सूडान संयुक्त आयोग की दूसरी बैठक की सह अध्यक्षता के लिए 8-9 अप्रैल, 2000 तक सूडान यात्रा पर गए। अपने समकक्ष के साथ विचार-विनिमय करने के अतिरिक्त वे राष्ट्रपति ओमर हसन अहमद अल-बशीर से भी मिले। संयुक्त आयोग की बैठक के दौरान व्यापार करार, वार्षिक विदेश व्यापार परामर्शों से सम्बद्ध समझौता ज्ञापन लघु उद्यम क्षेत्र में सहयोग पर करार, विदेश सेवा संस्थान विदेश मंत्रालय और राष्ट्रीय राजनयिक अध्ययन केन्द्र, विदेश मंत्रालय, सूडान के बीच करार, 2000-2002 के लिए सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, प्रैस ट्रस्ट ऑफ इण्डिया और सूडान न्यूज एजेन्सी के बीच करार, प्रसार भारती प्रोटोकॉल और भारतीय वाणिज्य और उद्योग परिसंघ (फिक्की) तथा ए एस एस ओ सी एच एम और सूडानीज बिजनैसमैन जनरल फैडरेशन के बीच संयुक्त व्यवसाय परिषद् की स्थापना संबंधी करार पर हस्ताक्षर हुए। श्री के. वी. राजन, सचिव (पूर्व) ने विदेश कार्यालय परामर्शों के पहले दौर के लिए 26-28 सितम्बर, 2000 तक सूडान की यात्रा की। सचिव (पूर्व) की अगवानी विदेश राज्य मंत्री अब्दल रहमान अजी ने की। सूडान के राष्ट्रीय अनुसन्धान केन्द्र के निदेशक प्रो. अब्दल करीम मोहम्मद सालिह के नेतृत्व में चार सदस्यों के एक शिष्टमंडल ने 22-31 मई, 2000 तक भारत यात्रा की। इस यात्रा के दौरान वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसन्धान परिषद सी. एस. आई. आर. और सूडान के राष्ट्रीय अनुसन्धान केन्द्र (एस एन सी आर) के बीच वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय सहयोग के जून, 2000 से मई 2002 तक के एक कार्यकारी कार्यक्रम पर हस्ताक्षर हुए।

राजनैतिक दलों और संगठनों के रजिस्ट्रार मोहम्मद अहमद सलीम के नेतृत्व में दो सदस्यों के एक शिष्टमंडल ने 9-12 जनवरी, 2001 तक भारत की यात्रा की। भारत में अपने प्रवास के दौरान शिष्टमंडल ने मुख्य निर्वाचन आयुक्त, राज्य सभा के उप सभापति, लोक सभा अध्यक्ष, राज्य सभा महा सचिव और संविधान के कार्य की समीक्षा के लिए राष्ट्रीय आयोग के सचिव के साथ मुलाकात की। वाणिज्य और उद्योग राज्य मंत्री श्री ओमार अब्दुल्ला खार्तूम अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में भाग लेने के लिए फरवरी के शुरू में सूडान जाएंगे। सूडान के कृषि और वन मंत्री अफ्रीकी-एशियाई ग्रामीण विकास संगठन की कार्यकारी समिति के 48वें अधिवेशन में भाग लेने 16-18 जनवरी, 2001 तक नई दिल्ली आए।

सीरिया

सीरिया के संबंध में भारत के संबंध निरन्तर सही दिशा में आगे बढ़े। मानव संसाधन विकास और विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी ने 12-13 जून, 2000 को स्वर्गीय राष्ट्रपति हफाज अल असद की अन्त्योष्टि में भारत का प्रतिनिधित्व किया। दमिश्क में अपने प्रवास काल में डॉ. जोशी बशर अल असद से मिले और उन्हें व्यक्तिगत तौर पर सरकार और भारत के लोगों की ओर से गहरी संवेदना व्यक्त की और सीरिया के साथ वर्तमान मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखने और उन्हें और मजबूत करने का सरकार का संकल्प अभिव्यक्त किया। भारत और सीरिया के बीच व्यापार करार के अन्तर्गत गठित संयुक्त व्यापार समिति का चौथा अधिवेशन 25-26 जुलाई, 2000 को नई दिल्ली में हुआ। सीरियाई प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व सीरिया के आर्थिक कार्यों से सम्बन्धित उप प्रधानमंत्री डॉ. खालेद रोद ने की और अन्य लोगों में सीरिया के योजना कार्य राज्य मंत्री, उच्च शिक्षा मंत्री, प्रौद्योगिकी विकास राज्य मंत्री, उद्योग मंत्री, विदेश मंत्रालय में पूर्णाधिकारी विकास राज्य मंत्री, उद्योग मंत्री अर्थव्यवस्था और विदेश व्यापार उप मंत्री योजना उप मंत्री, अर्थ-व्यवस्था और विदेश व्यापार उप मंत्री शामिल थे। नई दिल्ली में प्रवास के दौरान उप प्रधान मंत्री विदेश मंत्री श्री जसवन्त सिंह से मिले। संयुक्त व्यवसाय परिषद की बैठक भी संयुक्त व्यापार समिति की बैठक के दौरान विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में सहयोग पर समझौता ज्ञापन, उच्च शिक्षा और उससे सम्बद्ध विषयों के क्षेत्र में सहयोग पर समझौता ज्ञापन और योजना आयोगों के बीच सहयोग पर सहमत कार्यवृत्तों

पर हस्ताक्षर हुए। विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री बच्ची सिंह रावत ने 12-16 नवम्बर, 2000 तक सीरिया की यात्रा की और 2000-2002 के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग कार्यक्रम करार पर हस्ताक्षर हुए। कपड़ा मंत्री श्री कांशी राम राणा 14-16 अक्टूबर, 2000 तक दमिश्क में आयोजित की गई भारतीय वस्त्र प्रदर्शनी के उद्घाटन के समय उपस्थित थे। विदेश मंत्री श्री जसवन्त सिंह जनवरी, फरवरी, 2001 के अन्त में सीरिया जाएंगे।

विदेश मंत्री श्री जसवन्त सिंह ने 30 जनवरी से 1 फरवरी, 2001 तक सीरिया की यात्रा की। दमिश्क में अपनी यात्रा के दौरान, श्री जसवन्त सिंह राष्ट्रपति बशर अल असद एवं प्रधानमंत्री मोहम्मद मुस्तफा मेरो से मिले उनका विदेश मंत्री श्री फारूख अल शारा के साथ विचारों का व्यापक आदान-प्रदान हुआ। सीरिया में, विदेश मंत्री ने यह घोषणा की कि 'आईटेक' कार्यक्रम को सीरिया के लिए बढ़ाकर 20 लाख रुपये कर दिया।

सीरिया ने एक हवाई जहाज से रेड क्रिसेन्ट मखौद आबू हमदेह के सीरियाई राज्य मंत्री की अध्यक्षता से एक सरकारी प्रतिनिधिमण्डल के साथ गुजरात के भूकम्प पीड़ितों के लिए राहत सामग्री भेजी।

ट्युनिश

ट्युनिश के साथ भारत के संबंधों को और मजबूत बनाया गया। विदेश राज्य मंत्री श्री अजित कुमार पांजा भारत ट्युनिशियाई संयुक्त आयोग की पहली बैठक की

सह-अध्यक्षता के लिए 4-6 अप्रैल, 2000 तक ट्युनिशियाई गए। अपने समकक्ष के साथ विचार-विनिमय के अतिरिक्त विदेश राज्य मंत्री श्री अजीत कुमार पांजा प्रधानमंत्री, विदेश मंत्री और अन्य आर्थिक मंत्रालयों के मंत्रियों से मिले। संयुक्त आयोग की बैठक के दौरान प्रत्यर्पण संधि, कृषि क्षेत्र में सहयोग पर समझौता ज्ञापन, सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम और भारतीय उद्योग परिसंघ और यू टी आई सी ए के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुए। ट्युनिशियाई के विदेश मंत्री हबीब बेन याहिया ने 7-8 दिसम्बर, 2000 तक भारत की यात्रा की। भारत की यात्रा करने वाले वे पहले ट्युनिशियाई विदेश मंत्री थे। विदेश मंत्री के साथ मध्य पूर्व शान्ति प्रक्रिया और संयुक्त रूप से आतंकवाद का मुकाबला करने पर विचारों के आदान-प्रदान के अतिरिक्त विदेश मंत्री ने प्रधान मंत्री और गृह मंत्री से भी मुलाकात की। उनकी भारत यात्रा के दौरान पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग पर करार और विदेश कार्यालय परामर्शों से सम्बद्ध समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुए।

ट्युनिशिया के विदेश मंत्री श्री हबीब बेन याहिया ने 7-9 दिसम्बर, 2000 तक भारत की यात्रा की। विदेश मंत्री के साथ विस्तृत चर्चा करने के अतिरिक्त, विदेश मंत्री याहिया ने प्रधानमंत्री और गृह मंत्री से मुलाकात की। अपनी इस यात्रा के दौरान, विदेश कार्यालय परामर्शों से सम्बद्ध समझौता ज्ञापन और पर्यटन सहयोग पर करार सम्पन्न किए गए।

ट्युनिशिया ने गुजरात के भूकम्प पीड़ितों के लिए राहत सामग्री के दो हवाई जहाज भेजे।



6

अफ्रीका (दक्षिण सहारा)

उप सहारा अफ्रीकी क्षेत्र के देशों के साथ ऐतिहासिक तौर पर घनिष्ठ, सौहार्द्रपूर्ण तथा समय की कसौटी पर खरे उतरे संबंध भारत के लिए पर्याप्त महत्व के हैं। इस क्षेत्र में बड़े पैमाने पर भारतीय मूल के व्यक्तियों की उपस्थिति से इन संबंधों को विशेष आयाम मिला है। यह महत्वपूर्ण है कि भारत प्रजातांत्रिक विकास, आर्थिक सुधार और पुनर्गठन में गहरी छाप छोड़ते हुए, बदलते हुए अफ्रीका में संवर्धित क्रियाकलाप कर रहा है। विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में इसकी साख तथा आर्थिक विकास के क्षेत्र में इसके अनुभवों ने भारत और अफ्रीका दोनों के परस्पर लाभ के लिए सहयोग तथा क्रियाकलाप के नए क्षेत्र खोले हैं। इस अवधि में बड़ी संख्या में मंत्रिस्तरीय तथा आधिकारिक यात्राएं हुईं। उप सहारा अफ्रीकी क्षेत्र के बहुत से नए प्रजातांत्रिक देशों के संसदीय शिष्टमण्डल हमारी संसदीय प्रणाली की जानकारी लेने के लिए भारत आए।

अंगोला

अंगोला के राष्ट्रपति श्री जोस इडूआर्डो सान्तोस अपनी जापान तथा दक्षिण कोरिया की यात्रा पर जाते एवं आते समय 27-28 जनवरी एवं 3-4 फरवरी 2001 को भारत में रुके।

बेनिन

24-26 अक्टूबर 2000 तक बेनिन के विदेशी मामलों तथा सहयोग मंत्री श्री इडिज कोलावोले एन्टोइने एक बड़े शिष्टमण्डल के साथ भारत आए। उनकी यात्रा के दौरान,

भारत ने बेनिन सरकार को 60 डीजल वाटर पम्प, 30 राइस हुलर्स तथा 30 ग्राउन्डनट शेलर दान में देने की घोषणा की। मानव संसाधन विकास, एस एम ई तथा रक्षा के क्षेत्रों में सहयोग पर भी चर्चा की गई। फ्रांकोफोन अफ्रीका में कोट डि आइवरी तथा सेनेगल के बाद बेनिन भारत का तीसरा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है।

बोत्स्वाना

बोत्स्वाना के साथ भारत के लगातार घनिष्ठ तथा मैत्रीपूर्ण संबंध विद्यमान हैं। वर्ष के आरम्भिक भाग में अत्यधिक बाढ़ के बाद तथा सरकार द्वारा की गई अपील के प्रत्युत्तर में भारत सरकार ने 2500 कम्बल बोत्स्वाना को दान में दिए। इसके अतिरिक्त बोत्स्वाना में भारतीय समुदाय ने भारतीय उच्चायोग के माध्यम से काफी मात्रा में राहत सामग्री दान में दी। हाल के वर्षों में, बोत्स्वाना के प्रभावी आर्थिक निष्पादन तथा विदेशी निवेश को आकर्षित करने के इसके प्रयासों से दोनों देशों के बीच व्यापारिक सम्पर्क और अधिक घनीभूत हुए। बोत्स्वाना निर्यात विकास तथा निवेश प्राधिकरण (बी ई डी आई ए) का एक शिष्टमण्डल सितम्बर में भारत आया, इसने कई शहरों का दौरा किया, तथा भारतीय कम्पनियों के साथ अलग अलग बैठकें कीं। भारत से दो बड़े व्यापारिक शिष्टमण्डल अगस्त तथा नवम्बर में बोत्स्वाना गए तथा बहुत सी भारतीय कम्पनियों ने बोत्स्वाना में संयुक्त प्रतिष्ठान स्थापित करने में रुचि दिखाई है। बैंक ऑफ बोत्स्वाना ने बोत्स्वाना में सहायक बैंक स्थापित करने के लिए बैंक ऑफ बड़ौदा के आवेदन को अनुमोदित कर दिया है। बोत्स्वाना सरकार द्वारा भारतीय विशेषज्ञों की जारी नियुक्ति में 35 अध्यापकों

के नए बैच को नियुक्त किया गया। ऐसी सरकारी नियुक्तियां 1989 से एजुकेशनल कंसलटेन्ट्स इंडिया लिमिटेड (एजु सैल) के माध्यम से की जाती हैं।

बोत्स्वाना के निर्यात विकास तथा निवेश प्राधिकरण के आमंत्रण पर भारतीय व्यापारियों का प्रतिनिधिमण्डल 8-14 अगस्त 2000 को बोत्स्वाना गया। बोत्स्वाना की वाणिज्य मंत्री श्रीमती टी. सीरीत्सी जनवरी 2001 में भारत आई। इस यात्रा के दौरान भारत-बोत्स्वाना के बीच एक व्यापार करार सम्पन्न हुआ। बोत्स्वाना के शिक्षा मंत्रालय ने एजुकेशनल कंसलटेन्ट इंडिया लि. के माध्यम से भारत से 200 अध्यापकों को नियुक्त करने का निर्णय लिया।

कैमेरून

कैमेरून की राष्ट्रीय असेम्बली के अध्यक्ष श्री कावे येगुई डिजिब्रिल के नेतृत्व में 8 सदस्यीय संसदीय प्रतिनिधिमण्डल 20-26 जुलाई 2000 तक भारत आया। कैमेरून का प्रतिनिधिमण्डल विदेश मंत्रालय से संबद्ध संसदीय स्थायी समिति से मिला। दोनों पक्षों के बीच बातचीत द्विपक्षीय संबंधों में सुधार तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में सहयोग के मसलों पर केंद्रित रही।

इथियोपिया

जब इथियोपिया तथा इरिट्रिया के बीच पूरे पैमाने पर युद्ध भड़का तब वहाँ भयंकर सूखा पड़ा। तथापि इससे इस देश के साथ भारत के संबंधों, मुख्यतया वाणिज्यिक संबंधों के विकास पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। प्रतिकूल बाह्य एवं घरेलू परिस्थितियों के बावजूद इथियोपिया में व्यापारिक अवसरों के प्रत्युत्तर में भारतीय व्यापारियों ने अत्यन्त उत्साहपूर्वक कार्य किया और उत्साहवर्धक परिणाम निकले। भारतीय कम्पनियों ने अन्तर्राष्ट्रीय टेण्डरों के माध्यम से कई बड़े ठेके प्राप्त किए। भारत सरकार ने इथियोपिया के सूखा पीड़ित व्यक्तियों के लिए राहत सहायता के तौर पर 81 मीट्रिक टन दुग्ध पाउडर भिजवाया।

इरिट्रिया

दक्षिण-दक्षिण कृषि सहयोग परियोजना के अन्तर्गत भारत, एफ ए ओ तथा इरिट्रिया के बीच त्रिपक्षीय करार के अनुसार 24 भारतीय कृषि विशेषज्ञों को इरिट्रिया में नियुक्त

किया गया। 12 और विशेषज्ञों को शीघ्र नियुक्त किए जाने की संभावना है। इरिट्रिया के दुरभिक्ष पीड़ित व्यक्तियों के लिए भारत ने 1500 मीट्रिक टन गेहूँ तथा चीनी दान स्वरूप दिया।

कीनिया

कीनिया के साथ भारत के संबंध लगातार अत्यन्त सहयोगपूर्ण तथा सौहार्द्रपूर्ण थे। दिसम्बर 1999 में कीनिया के विदेश मंत्री डा. बोनाया गोडाना की भारत की सफल यात्रा के बाद दोनों सरकारों ने परस्पर हित के विभिन्न क्षेत्रों में करारों/समझौता ज्ञापनों को सम्पन्न करने पर जोर दिया। श्रम मंत्रालय तथा मानव संसाधन विकास मंत्रालय के दो सहायक मंत्रियों की अध्यक्षता में छोटे तथा मध्यम उद्योगों के अधिकारियों का एक प्रतिनिधिमण्डल अक्टूबर 2000 में भारतीय लघु एवं मध्यम उद्योग नीतियों का अध्ययन करने के लिए भारत आया। कीनिया के शर्करा प्राधिकरण ने नवम्बर में कीनियाई संसद की कृषि समिति के सदस्यों की भारत यात्रा प्रायोजित की। कीनियाई संसद द्वारा कीनिया का शर्करा अधिनियम तैयार करने से पूर्व इन सदस्यों ने, शर्करा मिलों की यात्रा तथा अपने अध्ययन के भाग के रूप में ए पी ई डी ए के साथ बैठकों के अलावा दिल्ली के कृषि मंत्रालय के अधिकारियों के साथ मुलाकात की। कीनिया भारत मैत्री संघ के दो नए केन्द्र कीनिया के प्रमुख शहरों मोम्बासा तथा किसुमु में खोले गए। इन कीनिया भारत मैत्री संघ की गतिविधियों में बड़ी संख्या में कीनिया के स्वदेशी नागरिकों तथा कीनिया के एशियाई मूल के व्यक्तियों ने भाग लिया। पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भारतीय उच्चायोग तथा भारत सरकार, पर्यटन कार्यालय, जोहांसबर्ग ने एअर इंडिया सेरोबी की सहायता से सेरोबी, किसुमु तथा मोम्बासा में 'एक्सप्लोर इंडिया मिलेनियम वर्ष 1999-2000 का आयोजन किया।

मेडागास्कर

लोकसभाध्यक्ष तथा राज्य सभा के सभापति के आमंत्रण पर अगस्त 2000 में मेडागास्कर का संसदीय शिष्टमण्डल भारत आया।

मलावी

भारत तथा मलावी के संबंध मैत्रीपूर्ण बने रहे तथा अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर परस्पर सहयोग इसकी विशेषता रही। अक्टूबर 2000 में मलावी चुनाव आयोग के प्रतिनिधिमण्डल ने भारतीय चुनाव आयोग का दौरा किया। टेलीकाम कंसल्टेंट्स इंडिया लिमिटेड ने मलावी पोस्ट एण्ड टेलीकम्यूनिकेशन कांफॉरेशन के लिए टेलीकाम क्षेत्र में 20 मिलियन अमरीकी डालर मूल्य का एक ठेका हाल ही में पूरा किया है।

मारीशस

मारीशस मध्दैपख्दरैमृवरदैपख्छै००० ँख्दैमध्दैपख्छीकामदैपख्छैनुनावदैपख्छुए॥वदैपख्छूसूरदैपख्छअनिरुद्ध०० ँख्दैगिन्नाथ०० ँख्छैकै ँख्छनेतृत्वपरन्तमःःशुःःश्रुतुक्मःःख्छैकुम्पैमें न्त्रखै न्त्र
में न्त्रिसे .।। भारत क्छनिकसे .।। दाद्यहयगिकास वन्दडल

नाईजीरिया

इस वर्ष भारत और नाईजीरिया के बीच सौहार्द्रपूर्ण एवं मैत्रीपूर्ण संबंध और अधिक विकसित हुए। जनवरी 2000 में गणतंत्र दिवस समारोहों में मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रपति श्री ओबेसेंजो की सफल भारत यात्रा के बाद दोनों देशों के प्रजातांत्रिक संस्थानों के बीच क्रियाकलाप तेजी से बढ़ा। नाईजीरिया के विभिन्न संघीय राज्यों के गवर्नरों तथा वहां की राष्ट्रीय असेम्बली के नेतृत्व में कई प्रतिनिधिमण्डल भारत यात्रा पर आए। इस कार्य कलाप की मुख्य बात लोकसभा सचिवालय में नाईजीरिया की राष्ट्रीय असेम्बली के 360 सदस्यों को प्रशिक्षित करने का नाईजीरिया द्वारा लिया गया निर्णय था। अफ्रीका में नाईजीरिया भारत का सबसे बड़ा व्यापार भागीदार बना रहा। अगस्त 2000 में नाईजीरियाई राष्ट्रीय पेट्रोलियम निगम तथा भारतीय तेल निगम के बीच सम्पन्न करार से दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंध और अधिक उच्चतर हुए। भारत एच एम टी (आई) की सहायता से नाईजीरियाई मशीन टूल (एन एम टी) लिमिटेड के पुनर्जीवन के लिए 5 मिलियन अमरीकी डालर दान देने पर सहमत हुआ। जब नाईजीरियाई मशीन टूल्स पूरी तरह से कार्य करने लगेगा, तब वह नाईजीरिया के लघु एवं मध्यम उद्योगों के विकास को गति प्रदान करेगा। वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री श्री उमर अब्दुल्ला ने 2-4 अक्टूबर 2000 तक नाईजीरिया की यात्रा की। अपने प्रवास के दौरान, उन्होंने नाईजीरिया के राष्ट्रपति, तथा वाणिज्य एवं परिवहन मंत्रियों से मुलाकात की।

नाईजीरिया के उद्योग मंत्री श्री स्टीफन आई अकीगा तथा अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में नाईजीरिया के राष्ट्रपति के विशेष सलाहकार डा. पैट्रिक डेलेकोले दिसम्बर 2000 के तीसरे सप्ताह में भारत यात्रा पर आए। उन्होंने भारी उद्योग और लोक उद्यम मंत्री श्री मनोहर जोशी तथा वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री श्री उमर अब्दुल्ला से मुलाकात की। इस यात्रा का उद्देश्य भारी उद्योग के क्षेत्र में और अधिक सहयोग की संभावनाओं का पता लगाना तथा भारत से ट्रेक्टरों की खरीद के लिए निर्माताओं से बातचीत करना था।

नाईजीरिया के विदेश राज्यमंत्री नई दिल्ली में नाईजीरियाई उच्चायोग के दौरे पर 29-31 जनवरी 2001 तक भारत की यात्रा पर आए।

सेनेगल

सेनेगल में स्वतंत्रता के बाद 40 वर्ष तक सत्ता में रहने के बाद सोशलिस्ट पार्टी 1 अप्रैल 2000 को राष्ट्रपति चुनाव हार गई तथा डेमोक्रेटिक पार्टी के श्री अब्दुल्ला वाडे ने प्रथम नॉन् सोशलिस्ट राष्ट्रपति के रूप में सत्ता की बागडोर सम्भाली। नई सरकार ने भारत-सेनेगल राजनीतिक तथा आर्थिक संबंधों को और अधिक घनीभूत करने की इच्छा प्रकट की। भारत सेनेगल की वस्तुओं का दूसरा सबसे बड़ा आयातक देश बना रहा। आई टी पी ओ ने 23 नवम्बर से 5 दिसम्बर 2000 तक 14वें डकर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में भाग लिया। 16 जून 2000 को जी-15 के अन्तर्गत भारतीय तकनीकी तथा वित्तीय सहायता से एच. एम. टी. (आई) द्वारा 4.49 मिलियन अमरीकी डालर की अनुमानित लागत पर बनाए गए उद्यम प्रशिक्षण एवं विकास केन्द्र को सेनेगल सरकार को सौंपा गया।

सेशेल्स

मार्च 2000-2001 भारत-सेशेल्स संबंधों के लिए अत्यन्त फलदायक रहा। अक्टूबर 2000 में दिल्ली में सम्पन्न संयुक्त आयोग की पांचवी बैठक मुख्य आकर्षण रही। दोनों पक्ष अनुपालन पर बल देने के लिए समयबद्ध कार्यक्रम का पालन करने पर सहमत हुए। सौर ऊर्जा, लघु उद्योग, दवाओं आदि को सहयोग के नए क्षेत्रों के रूप में पहचाना गया। जुलाई में 'एड सी आई एल' के दल की यात्रा के बाद सेशेल्स के शिक्षा मंत्री को भारत के विभिन्न शैक्षिक केन्द्रों की एक सप्ताह की यात्रा शिक्षा के क्षेत्र में एक उपलब्धि रही। 2 मिलियन अमरीकी डालर के ऋण का उपयोग किया जाना, सेशेल्स में 24 टाटा बसों को आगमन तथा टाटा द्वारा 2 कि.मी. पक्की सड़क बैरियर दान दिया जाना, इस वर्ष के पूर्वाद्ध की प्रमुख घटनाएं थीं। वर्ष के उत्तराद्ध में, उपहार के रूप में दवाओं तथा खाना पकाने के तेल का पारेषण, तथा भारतीय नौ सेना जहाजों की उच्च स्तरीय यात्राओं ने भारत को सेशेल्स के समीप ला दिया।

सियरा लियोन

सियरा लियोन में एक वर्ष से अधिक की अवधि की शांति के बाद भयंकर युद्ध आरम्भ हुआ। भारत ने यू एन ए एम एस आई एल को दो बटालियन दीं। मेजर जनरल

वी. के. जेतली को बहुराष्ट्रीय सेना का कमांडर नियुक्त किया गया। विद्रोहियों ने भारतीय सैनिकों सहित बड़ी संख्या में यू. एन. ए. एम. एस. आई. एल. के सैनिकों को बन्दी बना लिया। अत्यन्त उत्कृष्ट सैन्य कार्यवाई द्वारा उन बंधकों को सफलतापूर्वक छुड़वा लिया गया। सितम्बर 2000 में, भारत ने चरणबद्ध तरीके से यू. एन. ए. एम. एस. आई. एल. से भारतीय शांति रक्षण सैनिकों को हटाने के अपने निर्णय के बारे में संयुक्त राष्ट्र महा सचिव को सूचित कर दिया है।

दक्षिण अफ्रीका

दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंध बहु-सांस्कृतिक समाज में प्रजातंत्र तथा धर्मनिरपेक्षता के प्रति साझी वचनबद्धता तथा मतैक्यता की राजनीति पर आधारित हैं। दक्षिण अफ्रीका हिन्द महासागर रीम संघ का प्रमुख संस्थापक सदस्य है इस क्षेत्र के देशों के साथ आर्थिक संबंध विकसित करने के लिए दक्षिण अफ्रीकी विकास समुदाय (एस. ए. डी. सी.) का आर्थिक तौर पर सबसे शक्तिशाली सदस्य के रूप में दक्षिण अफ्रीका एक महत्वपूर्ण देश है। द्विपक्षीय व्यापार तेजी से बढ़ा तथा वार्षिक वृद्धि दर 10 प्रतिशत से अधिक पर कायम रही। इस समय भारत-दक्षिण अफ्रीकी द्विपक्षीय व्यापार करीब 1. 8 बिलियन अमरीकी डालर है। दिसम्बर 1996 में रक्षा उपकरणों संबंधी समझौता ज्ञापन सम्पन्न होने के बाद भारत को दक्षिण अफ्रीकी द्वारा रक्षा निर्यात तेजी से बढ़ा। दक्षिण अफ्रीका के रक्षा मंत्री के आमंत्रण पर रक्षा मंत्री सितम्बर में दक्षिण अफ्रीका की यात्रा पर गए। इस यात्रा के दौरान, दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग करार सम्पन्न हुआ। इसमें शांति रक्षण कार्यों, आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष तथा अन्य रक्षा संबंधी मामलों को शामिल किया गया। भारत, दक्षिण अफ्रीका तथा विश्वभर के समाचारों में दक्षिण अफ्रीका क्रिकेट कप्तान हैंसी क्रोजे के क्रिकेट मैच फिक्सिंग मामले में शामिल होने के समाचार छाए रहे। तथापि, भारत तथा दक्षिण अफ्रीका ने यह दोहराया कि इस घटना से भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच, जो सामरिक भागीदारी के क्रियान्वयन के प्रति वचनबद्धता है, घनिष्ठ एवं सौहार्द्रपूर्ण संबंधों पर किसी भी प्रकार का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। 1 अगस्त 2000 को प्रिटोरिया में सचिव स्तर पर भारत-दक्षिण अफ्रीकी विदेश कार्यालय परामर्श का तीसरा दौर सम्पन्न हुआ।

दक्षिण अफ्रीका के रक्षा सचिव के नेतृत्व में एक रक्षा प्रतिनिधिमण्डल 13 दिसम्बर 2000 को थल सेनाध्यक्ष से मिला तथा दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग की वर्तमान स्थिति पर संतोष व्यक्त किया।

हमारे समुद्री विकास विभाग ने केपटाउन को अन्टार्क्टिक के वार्षिक अभियानों का आधार क्षेत्र बनाया है। दक्षिण अफ्रीका के पर्यटन मंत्री श्री वाली मोस्सा ने 8 दिसम्बर 2000 को केपटाउन से भारतीय अभियान दल को रवाना किया।

भारत दक्षिण अफ्रीका संयुक्त समिति की बैठक का चौथा सत्र मार्च 2001 में होने की आशा है।

स्वाज़ीलैन्ड

दोनों देशों की सरकारों ने भारत और स्वाज़ीलैन्ड के बीच व्यापार करार को अनुमोदित कर दिया है तथा इस पर शीघ्र हस्ताक्षर होने की आशा है।

तंजानिया

भारत और तंजानिया के बीच मैत्रीपूर्ण तथा सौहार्दपूर्ण संबंध बने रहे। उप सहारा के अफ्रीकी देशों द्वारा महसूस की जा रही आवास समस्या तथा गृह निर्माण सामग्री की विद्यमान उच्च लागत को देखते हुए भारत में विकसित कम लागत की आवास प्रौद्योगिकी की जुलाई 2000 में दार-ए-सलाम में विशेषज्ञ प्रदर्शनी लगाई गई। इस अवसर पर भाग लेने के लिए माननीय ग्रामीण रोजगार तथा गरीबी उन्मूलन राज्यमंत्री ने तंजानिया की यात्रा की। इस प्रदर्शनी को यूनिडो ने संयुक्त रूप से प्रायोजित किया तथा अफ्रीका और भारत के बीच तकनीकी हस्तांतरण के संवर्धन के लिए दक्षिण-दक्षिण सहयोग की भावना से किया। इस प्रदर्शनी से न केवल तंजानिया में बल्कि उगाण्डा तथा जाम्बिया में भी उत्साह जगा। उन्होंने हमारी पहल की सराहना की क्योंकि यह अफ्रीकी जनता की आवश्यकताओं के अनुरूप थी। राष्ट्रपति म्कापा तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भी प्रदर्शनी का दौरा किया।

उगाण्डा

भारत और उगाण्डा के बीच संबंध सौहार्दपूर्ण बने रहे। उगाण्डा के स्थानीय सरकार के मंत्री के नेतृत्व में चार सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल ने आंध्रप्रदेश तथा कर्नाटक की यात्रा की (17-28 जुलाई 2000)। इस प्रतिनिधिमंडल ने संबंधित मुख्य मंत्रियों तथा राज्य सरकारों के अधिकारियों से मुलाकात की तथा विकेन्द्रीकरण, गरीबी उन्मूलन, तथा निम्नतम स्तर पर क्षमता बढ़ाने संबंधी मसलों पर चर्चा की। उगाण्डा के व्यापार एवं उद्योग राज्यमंत्री, जो स्वयं एक कृषक हैं, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्माल इंडस्ट्रीज एक्सटेंशन ट्रेनिंग, हैदराबाद में 'लघु उद्योग नीति एवं संवर्द्धन' पर एक पाठ्यक्रम में शामिल हुए। भारतीय व्यापारियों ने भी उगाण्डा में अपना नया उत्साह दिखाया। गुजरात का एक 15 सदस्यीय व्यापारिक प्रतिनिधिमण्डल अगस्त 2000 में उगाण्डा गया। इस यात्रा के दौरान, उगाण्डा में बहुत से संयुक्त प्रतिष्ठान स्थापित करने का प्रस्ताव शुरू किया गया।

जाम्बिया

इस वर्ष भारत और जाम्बिया के बीच संबंध लगातार बढ़े। जाम्बिया की विद्युत आपूर्ति कम्पनी ने 11 उप स्टेशनों के पुनरोद्धार तथा 330 किलोवाट क्षमता का एक नया उप स्टेशन बनाने के लिए जुलाई 2000 में 15 मिलियन अमरीकी डालर मूल्य का ठेका भेल को दिया। राइट्स ने जाम्बियन प्राइवेटाइजेशन एजेंसी द्वारा इस कम्पनी को सौंपी गई एक परियोजना - जाम्बियाई रेलवे की परिसम्पत्तियों के मूल्यांकन का कार्य सफलतापूर्वक पूरा किया। भारत जाम्बिया बैंक लिमिटेड जो तीन भारतीय बैंकों (बैंक ऑफ इंडिया, बैंक ऑफ बड़ौदा तथा सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया) तथा जाम्बिया सरकार की संयुक्त कम्पनी है ने इस वर्ष बढ़िया कार्य निष्पादन किया। जाम्बिया के विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा वोकेशनल शिक्षा मंत्री (अगस्त-सितम्बर 2000), जाम्बिया के ऊर्जा तथा जल विकास मंत्री (अक्टूबर 2000) तथा वाणिज्य, व्यापार तथा उद्योग उपमंत्री (नवम्बर 2000) भारत के दौरे पर आए।



पूर्वी यूरोप

पूर्व और मध्य यूरोप के देशों के साथ भारत के संबंध ऐतिहासिक घनिष्ठ और परम्परागत रूप से हार्दिक और मैत्रीपूर्ण रहे हैं। इन देशों के साथ हमारा सहयोग स्वरूप में बहु आयामी और वस्तुविषय में व्यापक है। प्रत्येक देश के साथ राजनीतिक संबंध समस्या मुक्त हैं। तथापि, व्यापार और आर्थिक सहयोग अपने सत्य संभाव्यता के अनुरूप नहीं है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सभी देशों के साथ महत्वपूर्ण आदान-प्रदान रहा है और सांस्कृतिक आदान-प्रदानों से लोगों से लोगों के बीच घनिष्ठ सम्पर्क बना है। क्षेत्र के अधिकतर देशों के यूरो- अंटलाटिक स्ट्रक्चरो के साथ वृहत एकता के आंदोलन के बावजूद, भारत के साथ पारम्परिक संबंधों पर बल देना जारी रखा है।

पूर्व और मध्य यूरोप के देशों के साथ हमारे संबंध यात्राओं के माध्यम से और सुदृढ़ हुए हैं। उच्च स्तर की यात्राओं के अलावा इन देशों के साथ मंत्रिस्तरीय, संसदीय और सरकारी स्तरों पर पारस्परिक-क्रिया का आदान-प्रदान नियमित आधार पर जारी है। इन आदान-प्रदानों में मुख्य प्रसंग रूसी परिसंघ के राष्ट्रपति श्री व्लादिमीर पुतिन की अक्टूबर, 2000 में भारत की राजकीय यात्रा का था।

वर्ष 2000 के दौरान पूर्वी और मध्य यूरोप के काफी देशों में राष्ट्रपति और संसद के चुनाव सम्पन्न हुए। रूसी परिसंघ में राष्ट्रपति के चुनाव 26 मार्च 2000 को सम्पन्न हुआ। श्री व्लादिमीर पुतिन को मतदान के पहले दौर में निर्वाचित किया गया। जिसमें 52.52 प्रतिशत मत प्राप्त हुए थे। औपचारिक रूप से श्री पुतिन ने 7 मई, 2000 को रूसी परिसंघ के राष्ट्रपति के रूप में कार्यालय संभाला। इसके बाद प्रधानमंत्री के रूप

में श्री मिखाइल कास्पानोव की अध्यक्षता में नई सरकार ने 17 मई 2000 को कार्य संभाला। जार्जिया में 9 अप्रैल 2000 को राष्ट्रपति के चुनाव हुए जिसमें उम्मीदवार राष्ट्रपति श्री एदुआर्ड शेवरडनाइज 79.82 प्रतिशत मतों के साथ चुनाव के पहले दौर में विजयी हुए। हंगरी में राष्ट्रपति चुनाव में, श्री फेरेनक मैडल 7 जून 2000 को हंगरी संसद में मतदान के तीसरे दौर में हंगरी गणराज्य के राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। युगोस्लाविया संघीय गणराज्य में 24 सितम्बर 2000 को राष्ट्रपति चुनाव हुए और चुनाव में अपनी विजय के बाद डा. वाजीस्लाव कौस्तूनिका ने 7 अक्टूबर 2000 को युगोस्लाविया गणराज्य के राष्ट्रपति के रूप में कार्यालय संभाला। 8 अक्टूबर 2000 को पोलैंड में राष्ट्रपति चुनाव में, उम्मीदवार राष्ट्रपति श्री अलैक्जेंडर क्वासनिवस्की ने 53.9 प्रतिशत मतों से पहले दौर में चुनाव जीता। रोमानिया में, राष्ट्रपति चुनाव 26 नवम्बर 2000 को सम्पन्न हुए। श्री यान इलेस्कू ने 66.83 प्रतिशत मत प्राप्त करके 10 दिसम्बर 2000 को दूसरे दौर में राष्ट्रपति का चुनाव जीता। संसदीय चुनाव युगोस्लाविया संघीय गणराज्य में 24 सितम्बर 2000, लिथुआनिया में 8 अक्टूबर 2000, बेलारूस में 15 अक्टूबर 2000, स्लोवीनिया में 15 अक्टूबर 2000, बोस्निया हर्जोगोविना में 11 नवम्बर, 2000 और रोमानिया में 26 नवम्बर 2000 को सम्पन्न हुए। प्रधानमंत्री संबंधी परिवर्तन लात्विया में अप्रैल 2000 और अर्मेनिया में मई 2000 में प्रभावित हुए।

वर्ष के अंत में, यूरोपियन संघ और बल्गारिया, चैक गणराज्य, एस्तोनिया, हंगरी, लात्विया, लिथुआनिया, पोलैंड, रोमानिया, स्लोवाकिया और स्लोवेनिया के बीच पदग्रहण वार्ता पर पर्याप्त प्रगति हुई है।

रूसी परिसंघ के राष्ट्रपति श्री व्लादिमीर पुतिन द्वारा 2-5 अक्टूबर 2000 तक की गई भारत की राजकीय यात्रा भारत रूस के द्विपक्षीय संबंधों में एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना थी। इससे बहुत प्रेरणा मिली है। रूसी राष्ट्रपति ने अक्टूबर 2000 को राजघाट में राष्ट्रपिता को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने भारत के राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री के साथ बैठकें की। रूसी राष्ट्रपति ने भारत के उप-राष्ट्रपति, विदेश मंत्री और विरोधी पक्ष के नेता से मुलाकात की। श्री पुतिन ने संसद के दोनों सदनों के सदस्यों को सम्बोधित किया। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय ने उन्हें विधि की मानद डाक्टरेट प्रदान की। यात्रा के दौरान विज्ञान और प्रौद्योगिकी, संस्कृति, डाक संचार क्षेत्रों के बीच सहयोग, सिविल और वाणिज्यिक मामलों में विधिक सहायता, कृषि, रक्षा, हीरों का परिष्करण और व्यापार, न्याय के मंत्रालयों के बीच सहयोग, बैंकिंग क्षेत्र में सहयोग, परमाणु उर्जा और तेल तथा गैस के क्षेत्रों के अन्वेषण और विकास के क्षेत्रों में 17 द्विपक्षीय करार/दस्तावेज सम्पन्न किए गए। राष्ट्रपति पुतिन ने आगरा और मुम्बई की यात्रा की। मुम्बई में, उन्होंने प्रमुख औद्योगिक और व्यवसाय गृहों के सी. ई. ओ. से बातचीत का आदान-प्रदान किया और बी. ए. आर. सी की भी यात्रा की। इस यात्रा के अंत में एक संयुक्त वक्तव्य जारी किया गया।

राष्ट्रपति पुतिन की यात्रा के दौरान भारत और रूसी परिसंघ के बीच सामरिक भागीदारी से सम्बद्ध एक घोषणा सम्पन्न की गई। इस दस्तावेज में 21वीं सदी में भारत और रूस के बीच, गुणता के नये स्तर को बढ़ाने के लिए द्विपक्षीय संबंधों की व्यापक रूपरेखा स्थापित की गई।

राष्ट्रपति पुतिन की यात्रा के दौरान, रूसी पक्ष ने जम्मू और कश्मीर में आतंकवाद का सामना करने और प्रसामान्यता में पहुंचने के लिए भारत सरकार द्वारा उठाए गए उपायों की सराहना की। राष्ट्रपति पुतिन ने जम्मू और कश्मीर में हिंसा के प्रति भारत की चिंता महसूस की। उन्होंने इस मुद्दे पर समझौता और नियंत्रण रेखा के प्रति शर्तहीन सम्मान के माध्यम से द्विपक्षीय आधार पर निपटाने के लिए बातचीत की। उन्होंने विदेशी हस्तक्षेप बन्द करने के लिए भी कहा। राष्ट्रपति पुतिन ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भारत की उम्मीदवारी के लिए रूस का पूरा-पूरा समर्थन दिया। रूस ने नाभिकीय परीक्षण पर भारत के स्वैच्छिक स्थगन प्रस्ताव का स्वागत किया है और व्यापक परीक्षण प्रतिबंध संधि के मुद्दे पर व्यापक राष्ट्रीय सर्वसम्मति को विकसित

करने के भारत सरकार के प्रयासों की सराहना की। अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद संबंधी व्यापक अभिसमय पर भारत के प्रारूप को भी समर्थन दिया है।

रूसी परिसंघ के सुरक्षा परिषद के सचिव श्री सरजी इवानोव ने 26-28 अप्रैल 2000 तक भारत की सरकारी यात्रा की। श्री इवानोव ने प्रधानमंत्री, विदेश मंत्री और रक्षा मंत्री से मुलाकात की। उन्होंने प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार के साथ द्विपक्षीय मसलों और परस्पर हित के राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मसलों पर व्यापक विचार-विमर्श किया। उनकी यात्रा के दौरान भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद और रूसी परिसंघ की सुरक्षा परिषद के बीच सहयोग से सम्बद्ध एक प्रोटोकॉल सम्पन्न किया गया।

भारत के मुख्य न्यायाधीश ने 21-26 मई 2000 तक रूसी परिसंघ की सरकारी यात्रा की।

विदेश मंत्री ने 22-24 जून 2000 तक रूसी परिसंघ की सरकारी यात्रा की। विदेश मंत्री ने द्विपक्षीय मामलों और परस्पर हित के क्षेत्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों पर रूसी परिसंघ के विदेश मंत्री श्री आइगर इवानोव के साथ विस्तृत विचार-विमर्श किया। विदेश मंत्री ने रूसी परिसंघ के राष्ट्रपति श्री व्लादिमीर पुतिन, सुरक्षा परिषद के सचिव श्री सर्जी इवानोव, और उप प्रधान मंत्री और व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक प्रौद्योगिकी और सांस्कृतिक सहयोग से सम्बद्ध भारत-रूस अन्तर-सरकारी आयोग के सह-अध्यक्ष डा. दिकर खिस्तेनको से भी मुलाकात की। विदेश मंत्री ने सेंट पीटर्सबर्ग की भी यात्रा की जहां उन्होंने सेंट पीटर्सबर्ग के गवर्नर, श्री व्लादिमीर याकोवलेव से भी भेंट की। उन्होंने 'नई सहस्राब्दि में भारत की विदेश नीति के आयाम' पर सेंट पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध संकाय को भी संबोधित किया।

रक्षा मंत्री ने 26-30 जून 2000 तक रूसी परिसंघ की यात्रा की। रक्षा मंत्री ने रूसी परिसंघ के रक्षा मंत्री मार्शल आइंगर सरजीयेव के साथ भारत-रूस रक्षा से सम्बद्ध मामलों और सैन्य-तकनीकी सहयोग पर व्यापक विचार विमर्श किया। रक्षा मंत्री ने रूसी परिसंघ के राष्ट्रपति श्री व्लादिमीर पुतिन, सुरक्षा परिषद के सचिव और उप प्रधानमंत्री श्री लिया क्लेवेनॉव से भी भेंट की।

मानव संसाधन विकास, विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा महासागर विकास मंत्री ने 2 से 8 जुलाई 2000 तक रूसी परिसंघ की सरकारी यात्रा की। उन्होंने रूसी परिसंघ के

उप प्रधानमंत्री डा. विक्टर ख्रिस्टेनको, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अलेक्जेंडर दोंदूकोव, और शिक्षा तथा मानव संसाधन विकास मंत्री श्री व्लादिमीर फिलीपोव के साथ बैठकें की। 3 जुलाई, 2000 को मानव संसाधन विकास मंत्री ने परम 1000 सुपर कम्प्यूटर की संस्थापना के साथ रूसी विज्ञान अकादमी के कम्प्यूटर एडिड डिजायन संस्थान में रूस-भारत के उच्च संगणना (कम्प्यूटिंग) अनुसंधान केन्द्र का उद्घाटन किया। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग और खुरचातोव नाभिकीय भौतिकी केन्द्र के बीच विज्ञान और प्रौद्योगिकी में सहयोग से सम्बद्ध एक समझौता ज्ञापन भी सम्पन्न हुआ।

नौसेना प्रमुख ने 17-21 जुलाई, 2000 तक रूसी परिसंघ की सरकारी यात्रा की।

रूसी परिसंघ के उप प्रधानमंत्री और आई. आर. आई. जी. सी के सह-अध्यक्ष श्री लिया क्लेबानोव ने 19-22 सितम्बर 2000 तक भारत की सरकारी यात्रा की। उन्होंने रक्षामंत्री के साथ भारत-रूस रक्षा सहयोग पर विचार-विमर्श किया। आई. आर. आई. जी. सी. के सह-अध्यक्ष के रूप में उन्होंने वित्त मंत्री से मुलाकात की। श्री क्लेबानोव ने मानव संसाधन विकास, विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा महासागर विकास मंत्री, नागर विमानन मंत्री और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री से भी अलग से बैठकें की।

भूतल परिवहन मंत्री ने 12 और 13 सितम्बर 2000 का सेंट पीटर्सबर्ग में सम्पन्न यूरो-एशियाई परिवहन सम्मेलन में भाग लेने के लिए रूसी परिसंघ की यात्रा की। अपनी यात्रा के दौरान भारत, ईरान और रूसी परिसंघ के बीच अन्तर्राष्ट्रीय 'उत्तर-दक्षिण' कारीडोर की स्थापना से सम्बद्ध एक अन्तर सरकारी करार सम्पन्न हुआ। इस करार से ईरान के समुद्री मार्ग से भारत को जोड़ने वाले कारीडोर तथा रूसी परिसंघ और इससे आगे तक केस्पियन सागर के रास्ते से माल को आसानी से ले जाने की सुविधा होने की आशा है। इस पहल से रूसी परिसंघ और यूरोपीय देशों तक माल के परिवहन की लागत और मार्गस्थ समय में कमी होने की संभावना भी है।

विदेश मंत्री ने रूसी परिसंघ के विदेश मंत्री श्री आइगर इवानोव से संयुक्त राष्ट्र महासभा के सत्र के दौरान 19 सितम्बर 2000 को न्यूयार्क में मुलाकात की।

वायुसेना के अध्यक्ष ने 19-23 सितम्बर 2000 तक रूसी परिसंघ की सद्भावना यात्रा की।

भारत और रूसी परिसंघ के बीच अफगानिस्तान की संयुक्त कार्यदल की पहली

बैठक 20 और 21 नवम्बर, 2000 को नई दिल्ली में सम्पन्न हुई। रूसी परिसंघ के विदेश सचिव और प्रथम उप विदेश मंत्री श्री व्याचस्लाव टुबनिकोव के नेतृत्व में क्रमशः भारतीय और रूसी शिष्टमंडल ने बातचीत की। बैठक के अन्त में एक संयुक्त वक्तव्य जारी किया गया।

मुम्बई में रूसी कोंसलावास के खोलने की शताब्दी को 22 नवम्बर 2000 को स्मरणोत्सव मनाया गया। रूसी परिसंघ के पहले उप विदेश मंत्री, श्री व्याचस्लाव टुबनिकोव ने इस स्मरणोत्सव में भाग लिया। प्रधानमंत्री और रूसी परिसंघ के राष्ट्रपति के साथ-साथ विदेश मंत्री और रूसी परिसंघ के विदेश मंत्री के बीच बधाई संदेशों का आदान-प्रदान हुआ।

रूसी परिसंघ के प्रधान सूचना अधिकारी की 2-8 नवम्बर 2000 तक की यात्रा के दौरान आर आई ए नोवोस्त्री और भारत के प्रेस सूचना ब्यूरो के बीच 3 नवम्बर, 2000 को एक करार सम्पन्न हुआ।

रूसी परिसंघ की फ़ेडरल असेम्बली (संसद का उच्च सदन) की संघीय परिषद की अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों की समिति से एक शिष्टमंडल ने समिति के उपाध्यक्ष श्री शोलबन कराऊल के नेतृत्व में 17-20 दिसम्बर 2000 तक भारत की यात्रा की। इस शिष्टमंडल ने लोकसभा के अध्यक्ष, संसदीय कार्य मंत्री और भारत के विदेश मंत्रालय की संसदीय स्थायी समिति के अध्यक्ष से भी मुलाकात की।

रूसी परिसंघ के साथ भारत के संबंधों की सुदृढ़ता और समस्या के मानवीय आयामों को ध्यान में रखते हुए, ध्यानपूर्वक विचार करने के पश्चात् और संविधान के अनुच्छेद 72 के अन्तर्गत प्रदत्त शक्तियों के अनुसरण में, राष्ट्रपति ने पुरुलिया में शस्त्र गिराने में शामिल पांच रूसी पायलटों की सजा की शेष अवधि को 21 जुलाई 2000 को माफ कर दिया। अक्टूबर 2000 में अपनी भारत यात्रा के दौरान राष्ट्रपति पुतिन ने भारत के राष्ट्रपति को पायलटों के रिहा करने पर व्यक्तिगत रूप से धन्यवाद दिया। इससे पहले उन्होंने 31 जुलाई 2000 को हाटलाइन पर प्रधानमंत्री से बात की और पांचों रूसी पायलटों को रिहा करने की सहृदय भावना के लिए धन्यवाद दिया। अपनी भारत-यात्रा के दौरान राष्ट्रपति पुतिन ने पायलटों के रिहा किए जाने पर विदेश मंत्री को व्यक्तिगत तौर पर धन्यवाद दिया, जबकि इससे पहले भी 22 जुलाई 2000 को विदेश मंत्री श्री

आइगर इवानोव ने ओकिनावन से विदेश मंत्री से फोन पर बात की थी और उन्हें धन्यवाद दिया था।

राष्ट्रपति पुतिन ने 27 नवम्बर 2000 को हॉटलाइन पर प्रधानमंत्री से बात की और अपनी बातचीत के दौरान जम्मू और कश्मीर में शांति प्रक्रिया के लिए प्रधानमंत्री के युद्धविराम प्रस्ताव का स्वागत किया। वर्ष 2000 के दौरान प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति पुतिन के बीच हॉटलाइन पर यह चौथी बातचीत थी।

रूसी विदेश मंत्रालय ने जम्मू और कश्मीर में आतंकवादी कार्रवाईयों की निंदा करते हुए 15 अगस्त 2000 को एक वक्तव्य जारी किया। विदेश मंत्रालय ने जम्मू और कश्मीर में प्रधानमंत्री के शांति प्रक्रिया प्रस्ताव और इसके विस्तार का स्वागत करते हुए क्रमशः 22 नवम्बर 2000 और 21 दिसम्बर 2000 को भी वक्तव्य जारी किए।

कार्यसूची की मद 59 के अन्तर्गत संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की सदस्यता के लिए समान प्रतिनिधित्व रखने या इसे बढ़ाने के प्रश्न पर और संयुक्त राष्ट्र महासभा के 55वें पूर्ण सत्र में सम्बद्ध मामलों पर 17 नवम्बर 2000 को, रूसी प्रतिनिधि ने कहा कि 'रूसी परिसंघ भारत को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता के लिए एक सुदृढ़ और वास्तविक उम्मीदवार मानता है और दोनों वर्गों में परिषद का विस्तार करने का निर्णय लिया जाना चाहिए।' अतः भारत ही एक ऐसा देश था जिसका उल्लेख किया गया है।

कोयला राज्यमंत्री श्री एन.टी शानमुधम 23-26 दिसम्बर, 2000 तक रूसी परिसंघ की यात्रा पर गए। उन्होंने रूस के ईंधन तथा ऊर्जा मंत्री एवं संघीय कोयला प्राधिकारियों से व्यापक चर्चा की। यह चर्चा भारत और रूसी परिसंघ के बीच कोयला क्षेत्र में सहयोग करने पर केन्द्रित रही।

व्यापारिक, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिक तथा सांस्कृतिक सहयोग से सम्बद्ध भारत-रूसी अन्तर सरकारी आयोग के 7वें सत्र के सिलसिले में वित्त मंत्री श्री यशवंत सिन्हा 15 जनवरी, 2001 को रूसी परिसंघ की यात्रा पर गए। इस यात्रा के दौरान उन्होंने रूसी-परिसंघ के प्रधानमंत्री श्री मिखाइल कास्यानोव से मुलाकात की। वित्त मंत्री ने भारत-रूस अन्तर सरकारी आयोग के 7वें सत्र की रूसी परिसंघ के उप प्रधान मंत्री श्री ल्या क्लेबानोव के साथ सह-अध्यक्षता की। भारत-रूस अन्तर सरकारी आयोग के सत्र ने भारत-रूस व्यापारिक तथा आर्थिक सहयोग के विस्तार और विविधिकरण के

तौर-तरीकों पर चर्चा की। भारत-रूस अन्तर सरकारी आयोग के 7वें सत्र के समापन पर प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर हुए।

रूसी परिसंघ के केन्द्रीय निर्वाचन आयोग के अध्यक्ष श्री अलेक्जेंडर वेशन्याकोव भारत के निर्वाचन आयोग के स्वर्ण जयन्ती समारोहों के सिलसिले में 17 से 21 जनवरी, 2001 तक भारत की यात्रा पर आए।

पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस मंत्री श्री राम नाईक के 10-11 फरवरी, 2001 को रूसी परिसंघ की यात्रा पर जाने की सम्भावना है। इस यात्रा के दौरान ओ एन जी सी - वी एल और मैसर्स रोजनेफ्ट के बीच सखालिन-I परियोजना में ओ एन जी सी - वी एल के निवेश से सम्बद्ध करार सम्पन्न होने की उम्मीद है।

रूसी परिसंघ के उपप्रधानमंत्री श्री ल्या क्लेबानोव के 14-15 फरवरी, 2001 को भारत की यात्रा पर आने की उम्मीद है।

योजना आयोग के सदस्य प्रो. दीना नाथ तिवारी ने अर्मेनिया के कृषि मंत्री के आमंत्रण पर 26 मई - 2 जून 2000 तक अर्मेनिया की यात्रा की।

अर्मेनिया के विदेश मंत्री श्री बरतन ओस्कानियान ने 4 और 5 दिसम्बर 2000 तक भारत की सरकारी यात्रा की। अपनी यात्रा के दौरान, अर्मेनियन मंत्री का प्रधानमंत्री ने स्वागत किया। उन्होंने विदेश मंत्री के साथ द्विपक्षीय मामलों और परस्पर हित के क्षेत्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों पर विचार विमर्श किया। अर्मेनिया के मंत्री ने सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री और स्वास्थ्य मंत्री से मुलाकात की तथा सी आई आई के सदस्यों के साथ पारस्परिक बातचीत का आदान-प्रदान किया। अर्मेनिया के मंत्री ने जम्मू और कश्मीर के प्रति भारत की स्थिति पर अपने देश का पूरा समर्थन व्यक्त किया। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भारत की उम्मीदवारी हेतु समर्थन भी दिया है। अर्मेनिया ने अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक अभिसमय पर भारत के प्रारूप का समर्थन किया है।

सचिव (पश्चिम) ने 4 और 5 अप्रैल 2000 को भारत - बेलारूस विदेश कार्यालय परामर्शों के दूसरे दौर के लिए मिस्क की यात्रा की। उन्होंने उपविदेश मंत्री श्री वर्लरी सदोखे के साथ द्विपक्षीय मसलों, परस्पर चिंता के क्षेत्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय विषयों पर

व्यापक विचार विमर्श किया। सचिव (पश्चिम) ने बेलारूस गणराज्य के उप प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री श्री उराल लेतीपेव से मुलाकात की।

बेलारूस गणराज्य की सुरक्षा परिषद के सचिव श्री विक्टर शिएमान ने 28 और 29 अप्रैल 2000 तक भारत की यात्रा की। उन्होंने प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार से मुलाकात की तथा भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार से भेंट की।

जैव-प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव की 14-17 जून 2000 तक मिस्क की यात्रा के दौरान जैव-प्रौद्योगिकी विभाग और बेलारूस राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के बीच जैव-प्रौद्योगिकी में सहयोग से सम्बद्ध एक प्रोटोकॉल सम्पन्न हुआ।

युवा मामलों तथा खेल मंत्री सुश्री उमा भारती के आमंत्रण पर बेलारूस गणराज्य के युवा मामलों की राज्य समिति (मंत्रालय) के अध्यक्ष श्री अलेक्जेंड्रा पोजनिक के नेतृत्व में एक तीन सदस्यीय शिष्टमंडल 19-21 जनवरी, 2001 तक भारत आया। उन्होंने युवा मामलों और खेल मंत्री के साथ विस्तृत चर्चा की। इस यात्रा के दौरान भारत और बेलारूस के बीच युवा मामलों तथा खेल से सम्बद्ध मामलों में सहयोग का एक करार सम्पन्न हुआ।

भारत-बेलारूस संयुक्त आयोग का दूसरा सत्र 20-22 फरवरी, 2001 तक नई दिल्ली में होने की उम्मीद है। भारत की ओर से वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री और बेलारूस के उद्योग मंत्री श्री आनातोली खारलेप इसकी सह-अध्यक्षता करेंगे।

भारत के उप-राष्ट्रपति ने 8 से 11 जून 2000 तक बुल्गारिया की सरकारी यात्रा की। उप राष्ट्रपति ने बुल्गारिया गणराज्य के राष्ट्रपति, श्री पीटर स्तोयानोव, बुल्गारिया की नेशनल असेम्बली के अध्यक्ष श्री मोर्दन सकोलोव, बुल्गारिया के प्रधानमंत्री श्री आइवन कोस्तोव और बुल्गारिया के उप प्रधानमंत्री और अर्थव्यवस्था मंत्री श्री पीटर जोतेव से भी मुलाकात की। इन मुलाकातों के दौरान, द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मसलों पर विचार-विमर्श किया गया। अपनी यात्रा के दौरान, बुल्गारिया ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भारत की उम्मीदवारी के लिए अपना समर्थन सार्वजनिक रूप से व्यक्त किया है। बुल्गारिया ने अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक अभिसमय पर भारत के प्रारूप का भी समर्थन किया है।

रक्षा उत्पादन राज्य मंत्री ने बुल्गारिया के रक्षा मंत्री के आमंत्रण पर 20 से 22 जुलाई 2000 तक बुल्गारिया की सरकारी यात्रा की। उन्होंने भारत-बुल्गारिया के रक्षा सहयोग से सम्बन्धित विभिन्न मसलों पर बुल्गारिया के रक्षा मंत्री के साथ व्यापक विचार विमर्श किया। रक्षा उत्पादन राज्य मंत्री ने बुल्गारिया के उप प्रधानमंत्री और अर्थ व्यवस्था मंत्री श्री पीटर जोतेव से भेंट की तथा कुछ रक्षा से सम्बद्ध उद्योगों को भी देखा।

बुल्गारिया के रक्षा मंत्री श्री बोयको नोएव ने 30 और 31 अक्टूबर 2000 तक भारत की सरकारी यात्रा की। उन्होंने भारत-बुल्गारिया रक्षा सहयोग पर रक्षा मंत्री के साथ व्यापक विचार-विमर्श किया। श्री नोएव ने भारत के राष्ट्रपति से मुलाकात की तथा उन्हें बुल्गारिया के राष्ट्रपति श्री पीटर स्तोयानोव का पत्र सौंपा। उन्होंने विदेश मंत्री से भी मुलाकात की। यात्रा के अंत में एक संयुक्त वक्तव्य जारी किया गया जिसमें बुल्गारिया ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भारत की उम्मीदवारी के लिए अपना समर्थन व्यक्त किया।

बुल्गारिया के कृषि और वानिकी मंत्री श्री वेन्टीस्लाव वारबानोव ने कृषि मंत्री के साथ भारत-बुल्गारिया संयुक्त आयोग के 13वें सत्र में सह-अध्यक्षता के लिए 6-12 नवम्बर 2000 तक भारत की यात्रा की। अपनी यात्रा के दौरान, श्री वारबानोव ने भारत के उप-राष्ट्रपति से मुलाकात की और वे विदेश राज्य मंत्री श्री अजित कुमार पांजा, खाद्य संस्करण उद्योग राज्य मंत्री तथा वाणिज्य और उद्योग राज्य मंत्री से भी मिले। यात्रा के दौरान भारत और बुल्गारिया के बीच विज्ञान और प्रौद्योगिकी में सहयोग से सम्बद्ध एक करार सम्पन्न किया गया।

बुल्गारिया गणराज्य के उप प्रधानमंत्री और आर्थिक मंत्री डॉ. पेटर जोतेव के मार्च 2001 के मध्य में भारत की राजकीय यात्रा पर आने की उम्मीद है।

क्रोएशिया गणराज्य के विदेश मंत्री श्री तोनीनो पिक्ला ने 11 सितम्बर 2000 को न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा के दौरान विदेश मंत्री से मुलाकात की।

क्रोएशिया के उप प्रधानमंत्री डॉ. गोरन ग्रैनिक ने विश्व ऊर्जा सभा की कार्यकारी परिषद की बैठक में भाग लेने के लिए 20-26 नवम्बर 2000 तक भारत की यात्रा की। डॉ. ग्रैनिक ने भारत के उप राष्ट्रपति, लोकसभा के अध्यक्ष और गृह मंत्री से भेंट की तथा विद्युत राज्य मंत्री और विदेश राज्य मंत्री श्री अजित कुमार पांजा के साथ बैठकें की।

चैक गणराज्य के चैम्बर ऑफ डिप्टीज के अध्यक्ष श्री वैकलव क्लास के आमंत्रण पर लोकसभा के अध्यक्ष के नेतृत्व में एक आठ सदस्यीय बहु-पक्षीय संसदीय शिष्टमंडल 30 जून से 4 जुलाई 2000 तक चैक गणराज्य गया। भारतीय संसदीय शिष्टमंडल ने चैक गणराज्य के प्रधानमंत्री श्री मिलोस जिमन; चैक गणराज्य के उप प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री श्री जैन कावन; और सीनेट की अध्यक्ष सुश्री लिबूस बनेसोवा से मुलाकात की। प्रधानमंत्री जैमन के साथ बैठक के दौरान, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भारत की उम्मीदवारी हेतु चैक गणराज्य के समर्थन के बारे में बताया।

चैक सेना के सेनाध्यक्ष ले. जनरल जिरी सिडेवी 16-21 जनवरी, 2001 तक भारत की यात्रा पर आए।

विदेश राज्य मंत्री श्री यू. वी. कृष्णम राजू 8-9 फरवरी, 2001 को चेक गणराज्य की सरकारी यात्रा पर गए। इस यात्रा के दौरान उन्होंने चेम्बर ऑफ डिप्टीज के अध्यक्ष (संसद के निचले सदन के अध्यक्ष) प्रो. वाक्लव क्लास और चेक गणराज्य के प्रधानमंत्री श्री मिलोस जेमन से मुलाकात की। विदेश राज्यमंत्री ने चेक गणराज्य के उप-प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री श्री जान कावन, चेक गणराज्य के रक्षा मंत्री श्री व्लादिमीर वेटची तथा चेक गणराज्य के व्यापार एवं उद्योग मंत्री श्री मिरोस्लाव ग्रेगर से द्विपक्षीय, क्षेत्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय मसलों पर व्यापक चर्चा की।

चैक गणराज्य के रक्षा मंत्री श्री व्लादिमीर वेटची के 11-14 फरवरी, 2001 तक भारत की यात्रा पर आने की उम्मीद है।

चेक गणराज्य के प्रधानमंत्री श्री मिलोस जिमन के 12-16 मार्च, 2001 तक भारत की यात्रा पर आने की उम्मीद है।

जार्जिया गणराज्य के विदेश मंत्री, डॉ. इराकली मेनागारीशविली 9-13 मई 2000 तक भारत की सरकारी यात्रा पर आए। जार्जिया के दिसम्बर 1991 में स्वतंत्र होने के बाद जार्जिया से पहली उच्च स्तर की यात्रा थी। जार्जिया के विदेश मंत्री ने भारत के विदेश मंत्री के साथ द्विपक्षीय मसलों और परस्पर हित के क्षेत्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मसलों पर विस्तृत विचार-विमर्श किया। डॉ. मेनागारीशविली ने भारत के उपराष्ट्रपति, लोक सभा के अध्यक्ष से मुलाकात की और वे मानव संसाधन विकास तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री से भी मिले। उनकी यात्रा के दौरान भारत और जार्जिया गणराज्य के बीच विदेश

कार्यालय परामर्श संबंधी एक प्रोटोकॉल सम्पन्न किया गया। डॉ. मेनागारीशविली ने आगरा की भी यात्रा की।

विदेश राज्य मंत्री श्री अजीत कुमार पांजा 5-6 फरवरी, 2001 तक हंगरी की राजकीय यात्रा पर गए। इस यात्रा के दौरान उन्होंने हंगरी गणराज्य के विदेश मंत्री डॉ. जानोस मारतोनी, हंगरी गणराज्य के संसद के अध्यक्ष श्री जानोस आदेर और हंगरी गणराज्य की संसद के विदेश मामलों की समिति के अध्यक्ष डॉ. इस्तवान सेंट-इवानी से मुलाकात की। विदेश राज्य मंत्री ने हंगरी गणराज्य के विदेश मंत्रालय के राजनीतिक स्टेट सेक्रेटरी श्री जोल्ट नेमेथ के साथ द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मसलों पर विस्तृत चर्चा की।

लिथुआनिया के राष्ट्रपति श्री वाल्दास अदाम्कुस के 19-23 फरवरी, 2001 तक भारत की राजकीय यात्रा पर जाने की उम्मीद है।

वाणिज्य और उद्योग मंत्री के आमंत्रण पर पौलैंड के उप प्रधानमंत्री और अर्थव्यवस्था मंत्री श्री जेतुस्ज स्टेनहॉफ ने 18 से 21 अप्रैल 2000 तक भारत की यात्रा की। श्री स्टेनहॉफ ने वाणिज्य और उद्योग मंत्री के साथ विस्तृत विचार-विमर्श किया तथा रक्षा मंत्री, खान और खनिज मंत्री, रक्षा उत्पादन राज्य मंत्री और ऊर्जा राज्य मंत्री से भी मुलाकात की। उन्होंने गुजरात की यात्रा की जहाँ उन्होंने राज्य के मुख्य मंत्री से भेंट की।

भारत के नियंत्रक और महा लेखापरीक्षक ने 10-13 मई 2000 तक पोलैंड की सरकारी यात्रा की। सार्वजनिक वित्त की लेखा-परीक्षा के क्षेत्र में कार्य पद्धति विज्ञान और सूचना के आदान-प्रदान के सुधार के उद्देश्य से नियंत्रक और महालेखापरीक्षा के कार्यालय और इसके पोलिश समकक्ष संगठन, पोलैंड गणराज्य के सुप्रीम चैम्बर ऑफ कंट्रोल के बीच सहयोग से सम्बद्ध एक समझौता ज्ञापन सम्पन्न किया गया।

विदेश मंत्री ने मंत्रिस्तरीय सम्मेलन 'लोकतंत्र के समुदाय की ओर' में भाग लेने के लिए 25-27 जून 2000 तक वारसा की यात्रा की। भारत, पौलैंड, चिली, चैक गणराज्य, दक्षिण कोरिया, माली और अमरीका के साथ-साथ सम्मेलन के सह संयोजकों में से एक था। यात्रा के दौरान विदेश मंत्री ने पौलैंड गणराज्य के राष्ट्रपति श्री अलैक्जेंडर क्वासनीवाकी, पौलैंड गणराज्य के प्रधानमंत्री श्री जर्जी बुजेक, पौलैंड गणराज्य के संसद के दोनों सदनों के अध्यक्षों और विदेश मंत्री श्री ब्रोनिस्ला जरमेक के साथ परस्पर

बातचीत की। विदेश मंत्री वारसा प्रवास के दौरान अमरीकी सेक्रेटरी ऑफ स्टेट मेडेलिन अलब्राइट और संयुक्त राष्ट्र महासचिव श्री कोफी अन्नान से भी मिले।

पर्यावरण और वन मंत्री ने जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र रूपरेखा अभिसमय के लिए अनौपचारिक उच्च स्तर के परामर्श के संबंध में 28-30 जून 2000 तक पौलेंड की यात्रा की।

अन्तरिक्ष विभाग के सचिव और भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन (ईसरो) के अध्यक्ष ने वारसा में अन्तरिक्ष अनुसंधान समिति (सी. ओ. एस. पी. ए. आर. 2000) की 33वीं बैठक में भाग लेने के लिए 18-20 जुलाई 2000 तक पौलेंड की यात्रा की।

रोमानिया के राष्ट्रीय रक्षा मंत्री श्री सोरिन फ्रुनजावरदे 9 से 15 मई 2000 तक भारत की सरकारी यात्रा पर आए। उन्होंने रक्षा मंत्री के साथ भारत-रोमानिया रक्षा सहयोग पर विस्तृत विचार-विमर्श किया। उन्होंने मुम्बई, गोवा और आगरा की भी यात्रा की।

रक्षा उत्पादन राज्य मंत्री ने रोमानिया के रक्षा मंत्री के आमंत्रण पर 17 से 19 जुलाई 2000 तक रोमानिया की सरकारी यात्रा की। रोमानिया के रक्षा मंत्री के साथ रक्षा सहयोग पर विस्तृत विचार-विमर्श के अलावा रक्षा उत्पादन राज्य मंत्री ने रोमानिया के उप प्रधानमंत्री श्री मिरसिया सिकूमारा से भेंट की तथा कुछ रक्षा से सम्बद्ध उद्योगों का दौरा किया।

भारत के उप राष्ट्रपति 13-16 जून 2000 तक स्लोवाक गणराज्य की सरकारी यात्रा पर गए। उप राष्ट्रपति ने स्लोवाक गणराज्य के राष्ट्रपति श्री रूडोल्फ स्क्स्टर, स्लोवाक गणराज्य के प्रधानमंत्री श्री मिकूलस जुरिन्दा; और स्लोवाक गणराज्य के राष्ट्रीय परिषद के अध्यक्ष श्री जोसफ मिगास से बातचीत की। अपनी इन बैठकों के दौरान स्लोवाक के नेताओं ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भारत की उम्मीदवारी हेतु अपना समर्थन व्यक्त किया।

भारत-उक्रेनियन विदेश कार्यालय परामर्श का दूसरा दौर 17 अप्रैल 2000 को नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ। भारतीय और उक्रेनियन शिष्टमंडलों का नेतृत्व सचिव (पश्चिम) और उक्रेन के उप विदेश मंत्री श्री ओ. आई. मेदानयाक ने किया। परामर्श के दौरान, द्विपक्षीय मसलों, परस्पर हित के क्षेत्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों को भी विस्तृत रूप

में शामिल किया गया। श्री मेदानयाक ने विदेश राज्य मंत्री श्री अजित कुमार पांजा से भेंट की।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के सचिव भारत-उक्रेनियन संयुक्त विज्ञान और प्रौद्योगिकी समिति की बैठक के भाग लेने के लिए 22-27 मई 2000 तक उक्रेन की सरकारी यात्रा पर गए। उनकी यात्रा के दौरान 2000-2003 तक की अवधि के लिए भारत और उक्रेन के बीच विज्ञान और प्रौद्योगिकी में सहयोग से सम्बद्ध कार्यक्रम पर हस्ताक्षर हुए।

युगोस्लाविया संघीय गणराज्य के विदेश मंत्री के विशेष दूत सुश्री मिलेना वलहोविक ने 16-19 अगस्त 2000 तक भारत की यात्रा की। उन्होंने अपर सचिव (यू. एन.) से बातचीत की तथा विदेश सचिव से मुलाकात की। उन्होंने विदेश मंत्री को संबोधित युगोस्लाव विदेश मंत्री का पत्र सौंपा।

भारत सरकार ने युगोस्लाविया के संघीय गणराज्य में राष्ट्रपति और संसदीय चुनाव के बाद 6 अक्टूबर, 2000 को एक वक्तव्य जारी किया। इस वक्तव्य में यह बताया गया है “कि सरकार का यह विचार है कि युगोस्लाविया संघीय गणराज्य में निर्वाचन संबंधी प्रक्रिया सफलतापूर्वक समाप्त हो जाने से अब शान्ति और स्थिरता वापस आ जानी चाहिए। यह भी आशा की जाती है कि गत वर्षों से इसकी जनता द्वारा सामना की जा रही कठिनाईयाँ अब शीघ्र ही समाप्त हो जाएगीं। भारत लोकतांत्रिक व्यवस्था और शांतिपूर्ण लोकतांत्रिक परिवर्तन का समर्थक है। युगोस्लाविया के साथ भारत के परम्परागत और ऐतिहासिक संबंधों का पुनः स्मरण करते हुए, हम नए नेतृत्व और युगोस्लाविया संघीय गणराज्य के लोगों की भलाई की कामना करते हैं और आशा करते हैं कि वह राष्ट्रों के समुदाय में अपना उचित स्थान प्राप्त करेंगे। इस अवसर पर सरकार निर्वाचित राष्ट्रपति वोजीस्लाव कोस्तूनिका को अपनी ओर से हार्दिक बधाई देती है। और युगोस्लाविया के लोगों के लिए अपनी मित्रता की पुनः पुष्टि करती है।”

बेलारूस, बोस्निया तथा हर्जगोविना, बुल्गारिया, क्रोएशिया, चेक गणराज्य, एस्तोनिया, हंगरी, मालदोवा, पोलैंड, रोमानिया, रूसी-परिसंघ, स्लोवेनिया, उक्रेन और युगोस्लाविया संघीय गणराज्य के नेताओं से सांत्वना/सहानुभूति के संदेश प्राप्त हुए। अर्मेनिया, चेक गणराज्य, हंगरी, पोलैंड, रोमानिया, रूसी परिसंघ और उक्रेन से राहत सहायता प्राप्त हुई।

पश्चिम यूरोप

पश्चिमी यूरोप के साथ हमारे संबंधों की दृष्टि से वर्ष 2000 को सफलताओं का वर्ष माना जा सकता है। अनेक घटनाओं ने इस तथ्य की पुष्टि की कि यूरोप के बड़े सहभागियों के साथ पारंपरिक रूप से हमारे घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण संबंधों को बढ़ावा मिला है। हालांकि हमारी ओर से राजनैतिक और आर्थिक दोनों स्तरों पर वार्ता और परामर्शों की प्रक्रिया के द्वारा हमारे संबंधों में नई जान डालने का प्रयास किया गया। यूरोपीय संघ द्वारा और अलग-अलग देशों द्वारा भारत जो एक स्थायी बहुवादी लोकतंत्र और 21वीं सदी की संभावित आर्थिक शक्ति है, के साथ संबंध बढ़ाने की इच्छा उजागर हुई।

28 जून को लिस्बन में पुर्तगाल की अध्यक्षता में हुई यूरोपीय संघ के प्रथम भारत-यूरोपीय संघ शिखर सम्मेलन में विचारों की यह समानता उजागर हुई। प्रधान मंत्री ने मंत्रिमंडल के चार सदस्यों के साथ भारतीय शिष्टमंडल का नेतृत्व किया। इस शिखर सम्मेलन से भारत और यूरोपीय संघ के बीच एक “सामरिक भागीदारी बनाने की प्रक्रिया की शुरुआत हुई। दोनों पक्ष राजनैतिक, आर्थिक और वाणिज्यिक क्षेत्रों में संबंधों को संवर्द्धित करने के लिए एक “कार्यसूची” पर सहमत हुए।

जहां तक राष्ट्रमंडल का संबंध है, राष्ट्रमंडल के महासचिव की भारत यात्रा और न्यूयार्क में राष्ट्रकुल उच्च स्तरीय समूह बैठक में विदेश मंत्री की भागीदारी से इस बात की पुष्टि हुई कि हम अभी भी राष्ट्रमंडल को कितना महत्व देते हैं।

द्विपक्षीय स्तर पर इस वर्ष हमारे राष्ट्रपति की फ्रांस यात्रा, प्रधान मंत्री की इटली और पुर्तगाल की यात्रा तथा विदेश मंत्री की यूनाइटेड किंगडम, स्विटजरलैंड और पुर्तगाल की यात्रा ने इन देशों के साथ हमारे संबंधों को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसी तरह भारत आने वालों की मंत्री-स्तरीय यात्राओं, विशेषकर यूनाइटेड किंगडम की विदेश राज्य सचिव राबिन कुक और विदेश एवं राष्ट्रकुल मामलों के राज्य मंत्री श्री पीटर हेन की यात्राओं, (फ्रांस के विदेश मंत्री की यात्रा जर्मनी के विदेश मंत्री की दो यात्राओं, इटली के विदेश मंत्री की यात्रा, नार्वे के विदेश मामलों के मंत्री की यात्रा और आयरलैंड के राष्ट्रपति के रूप में राज्याध्यक्ष। शासनाध्यक्ष के स्तर की सर्वप्रथम यात्रा से हमारे संबंधों को नया बल मिला। आधिकारिक स्तर की वार्ता, शिक्षाविदों, पत्रकारों, इत्यादि सहित अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचने के हमारे उत्तरोत्तर प्रयास से हमारे विचारों

को बेहतर ढंग से समझे जाने में मदद मिली जबकि फ्रांस, जर्मनी, यूनाइटेड किंगडम और यूरोपीय समुदाय के साथ हमारे संसदीय आदान-प्रदान से उन्हें हमारी प्राथमिकताओं और चिंताओं से अवगत कराने में सहायता मिली।

उच्च स्तरीय दौरो से प्राप्त हमारे संबंधों की घनिष्ठता की अभिव्यक्ति एक अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद से संबद्ध एक व्यापक अभिसमय के भारत के प्रस्ताव पर यूरोपीय संघ द्वारा व्यक्त किये गये समर्थन में हुई। अनेक देश संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता के दावे को स्वीकार करने के लिए सामने आये। फ्रांस ने कहा कि भारत का संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनना स्वाभाविक रूप से तय है और वह भारत की उम्मीदवारी का समर्थन करता है। यूनाइटेड किंगडम ने कहा कि भारत स्थायी सदस्यता के लिए स्वाभाविक दावेदार है। पुर्तगाल ने कहा कि उसे भारत की उम्मीदवारी के प्रति सहानुभूति है और भारत को उनका समर्थन मिलेगा। आइसलैंड ने भी भारत की उम्मीदवारी का समर्थन किया और कहा कि वह नार्दिक परिषद से इसके लिए समर्थन प्राप्त करने का प्रयास करेगा।

यूरोप ने विस्तार और उत्तरोत्तर एकीकरण की राह पर आगे बढ़ना जारी रखा। सदस्यता के लिए राजनैतिक और आर्थिक मानदण्डों के संबंध में आधिकारिक तौर पर स्वीकृत 13 उम्मीदवारों के साथ बातचीत की गयी है। साथ ही इस बात पर भी बहस हुई है कि क्या इन देशों को 2003 तक क्रमिक आधार पर स्वीकार किया जाए या 2008 से 2010 के बीच ये देश एक साथ ही प्रवेश करें। विस्तार की प्रक्रिया पूरी हो जाने पर यूरोपीय संघ की सीमा बेलारूस, काला सागर और इराक तक पहुंच जाएगी। इससे जनसंख्या में 50 प्रतिशत परन्तु सकल घरेलू उत्पाद में सिर्फ 6.7 प्रतिशत की वृद्धि होगी। तथापि यूरोपीय संघ के विस्तार के आरंभिक दौर में उन देशों के साथ हमारा व्यापार बढ़ा जो इसके सदस्य बने।

यूरोपीय संघ इस बात को महसूस करता है कि विस्तार के साथ ही इसकी संरचना और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में संशोधन किया जाना आवश्यक है ताकि ये प्रभावी तरीके से कार्य करता रहे। अन्तर-सरकारी सम्मेलन, जिसकी शुरुआत 2000 के आरंभ में इस मसले का समाधान करने के लिए की गयी थी, से दिसम्बर, 2000 तक इस कार्य को पूरा करने के लिए कहा गया है। विचार के लिए एक महत्वपूर्ण मसला यह है कि

क्या यूरोपीय संघ में प्रत्येक देश से एक कमिश्नर होना चाहिए या सभी सदस्य देशों के लिए समान अवधि के साथ कमिश्नरों की अधिकतम संख्या निर्धारित होनी चाहिए। अन्य मसला, जिसका समाधान किया जाना है, यह है कि क्या निर्णय लेने की वर्तमान प्रक्रिया के स्थान पर एक ऐसी प्रक्रिया लायी जानी चाहिए जिसमें मत की प्रधानता हो। यूरोपीय संघ की संरचना में सुधार के लिए जारी इन चर्चाओं के कारण बड़े मसलों पर भी चर्चा हुई। एक संघीय यूरोप और राज्यों की एक “पायनियर” अथवा “कोर” समूह जैसे अनेक प्रस्तावों पर विचार किया गया है।

यूरोपीय संघ ने एक साझी विदेश और सुरक्षा नीति बनाने की दिशा में भी प्रगति की है। इस संबंध में सबसे महत्वपूर्ण निर्णय वर्ष 2003 तक 50,000-60,000 लोगों का त्वरित कार्य बल बनाने का है जो मानवीय बचाव कार्य, शांति रक्षा और शांति निर्माण सहित विपदा प्रबंधन कार्यों में सैन्य बल का कार्य करेंगे। इससे यूरोपीय संघ को निर्णय लेने और जब पूरा नाटो इसमें शामिल न हो तो किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय संकट के कारण सैन्य कार्रवाई आरंभ करने और चलाने की स्वायत्त शक्ति प्राप्त हो जाएगी।

यूरोपीय संघ के साथ हमारे संबंध की प्रमुख बात 28 जून को लिस्बन में आयोजित प्रथम भारत-यूरोपीय संघ की बैठक थी। उस समय पुर्तगाल यूरोपीय संघ का अध्यक्ष था। प्रधान मंत्री ने भारतीय शिष्टमंडल का नेतृत्व किया जिसमें विदेश, वित्त, वाणिज्य एवं उद्योग तथा सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री शामिल थे। यूरोपीय संघ के शिष्टमंडल का नेतृत्व पुर्तगाल के प्रधान मंत्री ने किया और इसमें यूरोपीय समुदाय के अध्यक्ष तथा पुर्तगाल के विदेश, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री, आर्थिक मामलों के उप मंत्री, यूरोपीय परिषद के महासचिव और विदेश संबंध, व्यापार और अनुसंधान से संबद्ध यूरोपीय समुदाय के कमिश्नर शामिल थे।

लिस्बन संयुक्त घोषणा, जो शिखर सम्मेलन की समाप्ति पर पारित की गई, में यूरोपीय संघ के साथ हमारे संबंधों को बढ़ाने के लिए एक योजना का प्रावधान है। इस घोषणा में नयी सदी में एक सामरिक भागीदारी बनाये जाने की आवश्यकता सहित अन्य राजनैतिक और आर्थिक मामलों पर विचारों की समानता की पहचान की गयी। राजनैतिक, वाणिज्यिक और आर्थिक क्षेत्रों की पहलकदमियों को शामिल करने वाली एक “कार्य कार्यसूची” भी इस घोषणा का एक भाग है। यह घोषणा क्षेत्रीय और

अन्तर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा को आतंकवाद के कारण उत्पन्न खतरे के प्रति साझी चिंता को भी परिलक्षित करती है।

जहाँ तक आर्थिक क्षेत्र का प्रश्न है, इस घोषणा में बेहतर आर्थिक सहयोग संवर्द्धित करने के लिए दृढ़ निश्चय व्यक्त किया गया है। इसमें व्यापार को उत्तरोत्तर उदार बनाने, संरक्षणवादी प्रवृत्तियों का विरोध करने तथा एक खुले, न्यायोचित और भेदभाव रहित नियमों पर आधारित बहुपक्षीय व्यापार व्यवस्था के प्रति साझी वचनबद्धता व्यक्त की गयी है।

भारत और यूरोपीय संघ के बीच पर्याप्त संस्थागत क्रियाकलाप भी हुआ है। वरिष्ठ अधिकारियों की चौथी और पांचवीं बैठक क्रमशः मई और नवम्बर 2000 में आयोजित की गयी। भारत-यूरोपीय समुदाय नीति नियोजकों की तीसरे दौर की वार्ता 27-28 नवम्बर, 2000 तक नई दिल्ली में हुई। व्यापार, आर्थिक सहयोग और विकास सहयोग से संबद्ध भारत यूरोपीय संघ के उप-आयोगों की बैठक 16-17, नवम्बर, 2000 तक ब्रसेल्स में हुई। दसवें भारत-यूरोपीय संघ के संयुक्त आयोग की अनुशंसा पर गठित कृषि और समुद्री उत्पाद, कपड़ा, दूर-संचार, पर्यावरण और कौंसली मामलों से संबद्ध कार्यकारी दलों की प्रथम बैठकें नवम्बर, 2000 में हुईं। कौंसली मामलों से संबद्ध भारत-यूरोपीय संघ के संयुक्त कार्यकारी दल की प्रथम बैठक 29 नवम्बर, 2000 को नई दिल्ली में हुई।

शिष्टमंडल के अध्यक्ष श्री गेरार्ड कॉलिस के नेतृत्व में यूरोपीय संसद के एक दक्षिण एशियाई शिष्टमंडल ने 17-20 अप्रैल, 2000 तक भारत का दौरा किया। शिष्टमंडल ने लोकसभा के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष, विदेश, वाणिज्य, मानव संसाधन विकास, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पर्यावरण और वन मंत्रालयों की स्थायी समितियों के साथ क्रियाकलाप किया।

इस अवधि के दौरान भारत और यूरोपीय संघ के बीच आर्थिक सहयोग में भी उन्नति हुई। 8000 टन कपड़े की पूर्ण अपवादिक नम्यता को जारी करने का इसका निर्णय यूरोपीय समुदाय की संरक्षणवादी प्रवृत्तियों को दूर करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। चावल, इस्पात इत्यादि जैसी अन्य उत्पाद श्रेणियों में दोनों पक्षों के बीच विद्यमान मतभेदों पर चर्चा जारी है। लिस्बन शिखर सम्मेलन के दौरान नागर विमानन क्षेत्र में प्रौद्योगिक सहयोग के लिए एक परियोजना पर हस्ताक्षर किए गए।

कोंसली मसलों से संबद्ध भारत-यूरोपीय संघ जे. डब्ल्यू. जी. की दूसरी बैठक 24 जनवरी, 2001 को नई दिल्ली में हुई। इस बैठक में आरंभिक बैठक में उठाये गये मसलों पर व्यापक चर्चा की जाएगी।

यूरोपीय समुदाय के विदेश संबंध कमिशनर 25-29 जनवरी, 2001 तक भारत की सरकारी यात्रा पर आयेंगे। इस यात्रा के दौरान भारत-यूरोपीय संघ गोल मेज, जो वाणिज्य, उद्योग, शिक्षा और गैर-सरकारी संगठनों के प्रख्यात व्यक्तियों का एक मंच है, की शुरुआत की जाएगी। गोल मेज के सह अध्यक्ष इन्डिया इंटरनेशनल सेंटर के निदेशक श्री एन. एन. बोहरा और यूरोपीय आर्थिक और सामाजिक समिति के अध्यक्ष श्री गोके फ्रेरिक्स हैं। भारत-यूरोपीय संघ संयुक्त आयोग की बैठक 6-7 फरवरी, 2001 को नई दिल्ली में होगी।

आतंकवाद से संबद्ध भारत-यूरोपीय संघ संयुक्त कार्यकारी दल के गठन का निर्णय लिया गया है। इस कार्यकारी दल का उद्देश्य विशेषज्ञ स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद, मादक द्रव्यों के गैर-कानूनी व्यापार और शस्त्रों के व्यापार से जुड़े मसलों पर व्यापक विचार-विमर्श सुगम बनाना है। इस दल की पहली बैठक यूरोपीय संघ की स्वीडन की अध्यक्षता के दौरान 2001 के उत्तरार्द्ध में किया जाएगा।

यूरोपीय संघ का नाइस शिखर-सम्मेलन जिसकी बैठक 8-11 दिसम्बर, 2000 तक हुई, के दौरान यूरोपीय संघ में सुधार लाने और इसका विस्तार किये जाने की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति हुई। शिखर सम्मेलन में लिये गये निर्णय सापेक्ष बहुमत प्रक्रियाओं और यूरोपीय संसद में प्रतिनिधित्व से संबंधित थे। इनसे 2002 के अंत से नये सदस्यों के प्रवेश का मार्ग प्रशस्त हुआ है। यह भी सहमति हुई कि यूरोपीय संघ के विधिक पहलुओं पर चर्चा करने के लिए 2004 में एक अन्तर-सरकारी सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। इसके अतिरिक्त इस शिखर सम्मेलन में एक द्रुत कार्रवाई बल बनाये जाने का निर्णय लिया गया जो शान्ति रक्षा और स्थापना के लिए यूरोपीय संघ को स्वायत्त निर्णय लेने में समर्थ बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। 31 जनवरी 2001 को स्ट्रान्सबोर्ग में फ्रांस-जर्मनी शिखर सम्मेलन आयोजित किया जाएगा जिसमें यूरोपीय संघ के नाइस शिखर-सम्मेलन के बाद और अधिक सहयोग पर चर्चा की जाएगी। स्वीडन जिसने 1 जनवरी 2001 से यूरोपीय संघ के अध्यक्ष का पदभार संभाला है, ने संकेत दिया है कि

उसकी अध्यक्षता की अवधि में परिवर्धन, रोजगार और पर्यावरण उसकी मुख्य प्राथमिकता होगी।

राष्ट्रकुल उच्च स्तरीय समूह, वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक, और महिला मामलों से संबद्ध राष्ट्रकुल मंत्रियों के सम्मेलन की मेजबानी करने से सम्बद्ध चर्चाओं में सक्रिय भागीदारी निभाने में राष्ट्रकुल को दी गई भारत की वचनबद्धता दोहरायी गयी।

विदेश मंत्री ने 5 सितम्बर, 2000 को न्यूयार्क में आयोजित राष्ट्रकुल उच्च-स्तरीय समूह (एच. एल. जी) के शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारतीय शिष्टमंडल का नेतृत्व किया। एच. एल. जी ने बदलते हुए आर्थिक और वैश्विक परिवेश में राष्ट्रकुल की भूमिका की समीक्षा की तथा हरारे घोषणा और मिलब्रुक कार्रवाई कार्यक्रम में निहित सिद्धांतों का पालन करने की राष्ट्रकुल की वचनबद्धता दोहरायी। इसने इस बात पर भी सहमति व्यक्त की कि राष्ट्रकुल लोकतंत्र, मानव सम्मान, जाति गत दुर्भावना तथा भेद-भाव, अच्छा शासन तथा स्थायी विकास जैसे क्षेत्रों में कार्य करने के लिए समर्थ है।

भारत ने 17-19 अप्रैल, 2000 तक नई दिल्ली में आयोजित महिला और युवा मामलों से संबद्ध राष्ट्रकुल की छठी बैठक की मेजबानी की जिसमें “नई सहस्राब्दि में राष्ट्रकुल की कार्यसूची को आगे बढ़ाने” से संबंधित विषय पर विचार किया गया। इस बैठक की मेजबानी मानव संसाधन विकास मंत्री ने की। प्रधान मंत्री ने 17 अप्रैल को इस बैठक का उद्घाटन किया जिसमें मंत्री स्तर के 28 प्रतिनिधिमंडलों सहित कुछ 46 प्रतिनिधि मंडलों ने भाग लिया। राष्ट्रकुल महासचिव श्री डॉन मैककिनोन ने इस अवसर पर भारत की यात्रा की (16-18 अप्रैल) राष्ट्रकुल महासचिव का कार्यभार ग्रहण करने के पश्चात् यह किसी राष्ट्रकुल सदस्य देश की उनकी पहली यात्रा थी।

विदेश सचिव ने 25-26 जुलाई तक प्रीटोरिया में हुई राष्ट्रकुल उच्च-स्तरीय समूह के सदस्यों के वरिष्ठ अधिकारियों की पहली बैठक में भारतीय शिष्टमंडल का नेतृत्व किया। उन्होंने राष्ट्रकुल की राजनैतिक भूमिका पर एक दस्तावेज भी प्रस्तुत किया। वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक में राष्ट्रकुल की तात्कालिक समस्याओं और आने वाले वर्षों में इस संगठन का उद्देश्य निर्धारित किये जाने के लिए स्पष्ट और रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया। इस बात पर स्पष्ट सहमति हुई कि राष्ट्रकुल को अपनी मूल शक्तियों

पर बल देना चाहिए जो कि लोकतंत्र, अच्छे शासन, मानवाधिकारों और सतत् आर्थिक विकास के क्षेत्र में है।

सचिव (आर्थिक संबंध) ने 15 वें राष्ट्रकुल वरिष्ठ अधिकारी बैठक (18-20 अक्टूबर, अपिया) में भारतीय शिष्टमंडल का नेतृत्व किया। वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक से फिजी और पाकिस्तान में हाल की घटनाओं तथा अक्टूबर 2001 में ब्रिसबेन, आस्ट्रेलिया में होने वाली अगली राष्ट्रकुल शासनाध्यक्षों की बैठक पर राष्ट्रकुल द्वारा नये सिरे से ध्यान केन्द्रित करने का उपयुक्त अवसर मिला। वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक ने राष्ट्रकुल महासचिव से अनुरोध किया कि वे फिजी के लिए एक विशेष दूत नियुक्त किये जाने के लिए कार्रवाई करें।

हमारे राष्ट्रपति की 17-21 अप्रैल 2000 तक फ्रांस की राजकीय यात्रा इस वर्ष के

भारत और फ्रांस के बीच समान भागीदारी का संबंध विकसित हुआ है तथा सौहार्द और घनिष्ठता इसकी विशेषता है। यूनाइटेड किंगडम ने कहा है कि वे भारत को सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए स्वाभाविक दावेदार के रूप में देखते हैं। अनेक नई संयुक्त पहलकदमियाँ की गयी हैं। इनमें भारत-यूनाइटेड किंगडम गोलमेज की स्थापना, “भारत के लिबरल डेमोक्रेटिक फ्रेंड” की स्थापना तथा आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में भारतीय इतिहास और संस्कृति के एक प्रोफेसरशिप का सृजन करना शामिल है।

अगले दो वर्षों में व्यापार मात्रा 5 बिलियन अमरीकी डालर तक बढ़ाने के लिए दोनों पक्षों द्वारा किये गये संगठित प्रयासों के साथ ही हमारे संबंधों का आर्थिक स्वरूप और भी स्पष्ट हुआ है। इस नवीकृत वचनबद्धता के परिणाम स्वरूप जनवरी-जुलाई 2000 के दौरान पिछले वर्ष इसी अवधि की तुलना में द्विपक्षीय व्यापार में 33 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

यूनाइटेड किंगडम के फारेन सेक्रेटरी महामान्य रॉबिन कुक की 16-18 अप्रैल, 2000 की भारत यात्रा से दोनों देशों द्वारा इस संबंध को दिये गये महत्व को दोहराया गया। फारेन सेक्रेटरी ने राष्ट्रपति क्लिंटन के इस वक्तव्य के प्रति सहमति व्यक्त की कि आज के विश्व में युद्ध के द्वारा सीमाएं नहीं बनाई जा सकती। श्री कुक और विदेश मंत्री ने नई दिल्ली में 18 अप्रैल को संयुक्त रूप से भारत-यूनाइटेड किंगडम गोल मेज की कार्रवाई का उद्घाटन किया।

विदेश मंत्री ने ब्रिटिश विदेश मंत्री के आमंत्रण पर 24-27 मई 2000 तक और 15-16 नवम्बर, 2000 तक ब्रिटेन का दौरा किया। ब्रिटेन के नेताओं के साथ विदेश मंत्री की चर्चाओं से द्विपक्षीय संबंधों, यूरोप और एशिया की घटनाओं, और साथ ही अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद, संयुक्त राष्ट्र शांति रक्षा कार्रवाइयों इत्यादि जैसे बहुपक्षीय मसलों पर विचारों का गहन आदान-प्रदान संभव हुआ।

प्रधान मंत्री के प्रमुख सचिव (26 जुलाई), वाणिज्य और उद्योग मंत्री (18-21 मई), शहरी रोजगार, गरीबी उन्मूलन, युवा मामले और खेल मंत्री (27-30 मई), रसायन और उर्वरक मंत्री (29-30 मई), पर्यावरण एवं वन मंत्री (1-4 अक्टूबर), विदेश राज्य मंत्री (21-23 मई और 5 सितम्बर) की ब्रिटेन यात्रा और ब्रिटेन के लघु वाणिज्य एवं ई कामर्स मंत्री श्रीमति पैट्रीसिया हैविट (30 अक्टूबर - 4 नवम्बर), विदेश एवं

राष्ट्रकुल मामलों के राज्य मंत्री श्री पीटर हैन (18-21 नवम्बर) की भारत यात्रा से विभिन्न क्षेत्रों में चल रहे द्विपक्षीय सहयोग की समीक्षा करने और इसे सुदृढ़ करने का अवसर मिला।

मंत्रिस्तरीय वार्ता के अनुरूप विदेश सचिव तथा विदेश और राष्ट्रकुल मामलों के ब्रिटिश स्थायी अन्डर सेक्रेटरी सर जॉन केर ने विदेश कार्यालय परामर्श किया (17 अक्टूबर, नई दिल्ली)। इन चर्चाओं से दोनों पक्ष द्विपक्षीय संबंधों की स्थिति की समीक्षा करने और आपसी हित के क्षेत्रीय और बहुपक्षीय मसलों पर विचार-विनिमय करने में समर्थ हो सके।

लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी (एल. डी. पी.) के लगभग 80 प्रमुख सदस्यों ने लिबरल डेमोक्रेटिक फ्रेन्ड्स ऑफ इन्डिया (ए. डी. एफ. आई.) समूह की सदस्यता ग्रहण की जिसकी शुरुआत 19 सितम्बर को सुदृढ़ भारत-यू के संबंधों को बढ़ावा देने के लिए की गयी थी। श्री गेरेथ थॉमस (30 सितम्बर 8 अक्टूबर) के नेतृत्व में लेबर फ्रेन्ड्स ऑफ इन्डिया के (एल. एफ. आई. एन.) एक छह सदस्यीय शिष्टमंडल की भारत यात्रा से संसदीय आदान-प्रदान भी जारी रहा। सितम्बर 1999 में इस समूह की स्थापना के बाद एल. एफ. आई. एन. के संसद सदस्यों की यह दूसरी भारत यात्रा थी।

सरकार के प्रयासों के एक पूरक के रूप में भारत-यू. के. संबंधों की समीक्षा करने और इसे संवर्द्धित करने के तरीके निर्धारित करने के लिए भारत-यू के गोल मेज नामक एक गैर सरकारी मंच का गठन किया गया। श्री के. सी. पंत और लार्ड स्वराज पाल ने अब तक गोल मेज की दो बैठकों की सह अध्यक्षता की है। इसकी प्रथम बैठक (18-19 अप्रैल, नई दिल्ली) में गोल मेज ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी, शिक्षा, मीडिया, इत्यादि क्षेत्रों में क्रियाकलाप बढ़ाने के लिए नये विचार और अनुशासण प्रस्तुत की। गोल मेज की दूसरी बैठक (8-10 अक्टूबर, यू. के.) में चर्चा सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में सहयोग पर विशेष ध्यान देने पर केन्द्रित रही।

हमारे गृह मंत्री की ब्रिटेन यात्रा (20-24 जून) और ब्रिटिश गृह मंत्री श्री जैक स्ट्राब की भारत यात्रा (4-9 सितम्बर) से कौंसली मामलों और आतंकवाद का मुकाबला करने में द्विपक्षीय सहयोग पर चर्चा संभव हो सकी। इन यात्राओं के दौरान लिये गये निर्णय

करने के लिए एक संयुक्त कार्यकारी दल का गठन करेंगे। संयुक्त कार्यकारी दल की प्रथम बैठक जनवरी 2001 में नई दिल्ली में हुई।

ब्रिटेन की अपनी यात्रा के दौरान रक्षा मंत्री (14-17 जून) ने हमारे द्विपक्षीय रक्षा सहयोग के सभी पहलुओं पर श्री हून और व्यापार एवं उद्योग राज्य मंत्री श्री स्टीफन बायर्स के साथ चर्चा की। उन्होंने इन चर्चाओं को जारी रखने के लिए श्री हून को भारत आने का निमंत्रण दिया। भारत-यू के रक्षा परामर्शी समूह की पांचवीं बैठक (28 जुलाई - 1 अगस्त, लन्दन) के दौरान दोनों पक्षों ने संस्थागत स्तर के क्रियाकलाप, रक्षा उपकरणों की आपूर्ति इत्यादि तथा साथ ही इन्हें मजबूत बनाने के तौर तरीकों की समीक्षा की।

ब्रिटेन के रक्षा मंत्री महामान्य ज्यौफरी हून ने जून, 2000 में हमारे रक्षा मंत्री की ब्रिटेन की यात्रा पर अनुवर्ती कार्रवाई के रूप में 11-13 दिसम्बर, 2000 तक भारत की यात्रा की। रक्षा मंत्री, विदेश मंत्री और अन्य मंत्रियों के साथ श्री हून की चर्चा के दौरान दोनों पक्षों ने द्विपक्षीय सहयोग और संयुक्त राष्ट्र शांतिरक्षा कार्रवाइयों विशेषकर सिएरालियोन में, की समीक्षा की।

आतंकवाद और मादक द्रव्यों के गैर-कानूनी व्यापार से संबंधित भारत-ब्रिटेन संयुक्त कार्यकारी दल (जे. डब्ल्यू. सी.) की पहली बैठक 22 जनवरी, 2001 को नई दिल्ली में होगी। जे. डब्ल्यू. सी. का गठन दोनों देशों के गृह मंत्रियों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद और मादक द्रव्यों के गैर कानूनी व्यापार के प्रति अपनी साझी चिंताओं के विरुद्ध घनिष्ठ सहयोग करने के लिए लिये गये निर्णय के आलोक में किया गया है। भारत के विदेश मंत्रालय और गृह मंत्रालयों के अधिकारी तथा ब्रिटिश विदेश कार्यालय के अधिकारी इन चर्चाओं में भाग लेंगे। ब्रिटिश विदेश कार्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा निदेशक श्री विलियम एहरमैन और विदेश मंत्रालय के संयुक्त सचिव (डीसा) 23 जनवरी, 2001 को नई दिल्ली में होने वाली अप्रसार और निरस्त्रीकरण से संबंधित मसलों पर भारत-ब्रिटेन आधिकारिक स्तर की वार्ता के दूसरे दौर का नेतृत्व करेंगे।

ब्रिटेन के व्यापार और उद्योग मंत्री, संसद सदस्य महामान्य स्टीफन बायर्स ने 6-12 जनवरी, 2001 तक एक व्यापार शिष्टमंडल के साथ भारत का दौरा किया। बारह माह के भीतर बायर्स की भारत की दूसरी भारतीय यात्रा से इस बात की पुष्टि होती है कि ब्रिटेन विशेषकर व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्र में भारत के संबंधों को कितना महत्व देता

है। उन्होंने वाणिज्य और उद्योग मंत्री और केन्द्रीय वित्त, बिजली, संचार, विनिवेश मंत्रियों के साथ व्यापक चर्चा की। उन्होंने हैदराबाद में ब्रिटिश व्यापार कार्यालय का भी उद्घाटन किया।

ब्रिटेन की अंतर्राष्ट्रीय विकास मंत्री श्रीमती क्लेयर शोर्ट 15-19 जनवरी, 2001 तक भारत की यात्रा पर आ रही हैं जिसका उद्देश्य भारत में ब्रिटेन द्वारा चलायी जा रही सहायता कार्यक्रमों की समीक्षा करना है।

शिक्षा और रोजगार विभाग के राज्य मंत्री श्री बैरोनेस ब्लैकस्टोन 2-7 जनवरी, 2001 तक भारत की यात्रा पर आ रहे हैं। ब्रिटेन की रक्षा खरीद राज्य मंत्री बैरोनेस सिगोस रक्षा मंत्रालय के निमंत्रण पर 6-8 फरवरी, 2001 तक भारत की यात्रा पर आयेंगे।

पिछले वर्षों के दौरान जर्मनी के साथ हमारे संबंध सुदृढ़ और संवर्द्धित हुए हैं। संस्थागत क्रियाकलाप के लिए नये तंत्र यानि भारत-जर्मनी सामरिक वार्ता प्रक्रिया का निर्माण, दोनों देशों के बीच विकास सहयोग की बहाली तथा भारत में जर्मनी महोत्सव का उद्घाटन इस अवधि के दौरान संबंधों में हुई प्रमुख घटनाओं में से हैं।

इस वर्ष जर्मनी के उप-चांसलर और विदेश मंत्री श्री जोशुआ फिशर ने 17-18 मई 2000 तक और 29 सितम्बर-1 अक्टूबर, 2000 तक दो बार भारत का दौरा किया। दोनों अवसरों पर उन्होंने भारतीय नेताओं के साथ व्यापक चर्चा की। विदेश मंत्री फिशर की प्रथम यात्रा की प्रमुख बात “21वीं सदी में भारत-जर्मनी भागीदारी की कार्यसूची” स्वीकार किया जाना थी। यह एक आदर्श वक्तव्य है जिसमें बेहतर राजनैतिक आदान-प्रदान, एक सुरक्षा वार्ता प्रक्रिया, द्विपक्षीय व्यापार और निवेश को बढ़ाने, बेहतर सांस्कृतिक आदान-प्रदान तथा अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद, मादक द्रव्यों की तस्करी और संगठित अपराध का मुकाबला करने में द्विपक्षीय सहयोग के जरिए संबंधों को उन्नत करने के तौर-तरीकों का उल्लेख किया गया है। दूसरी यात्रा की प्रमुख बात 30 सितम्बर, 2000 को भारत में जर्मनी महोत्सव की शुरुआत थी।

इस अवधि के दौरान द्विपक्षीय संस्थागत तंत्र भी कार्य करता रहा है। अप्रैल 2000 और नवम्बर 2000 में सामरिक वार्ता के अन्तर्गत चर्चा के दो दौर हो चुके हैं। आतंकवाद से संबद्ध संयुक्त कार्यकारी दल की बैठक जून, 2000 में नई दिल्ली में हुई। भारत-जर्मन परामर्शी समूह, जो प्रसिद्ध व्यक्तियों का एक उच्च-स्तरीय समूह है और जिसका कार्य

भारत-जर्मनी संबंधों की जारी प्रवृत्तियों की देख-रेख करना और द्विपक्षीय संबंधों को प्रोन्नत करने के लिए नीतिगत उपायों को सुझाव देना है, की नवीं बैठक 9 और 10 सितम्बर, 2000 को म्यूनिख में हुई।

संसदीय और राज्य-स्तरीय विनिमय भी गहन रहा है। सोसियल डेमोक्रेटिक पार्टी (एस. डी. पी.) के संसदीय दल के उपाध्यक्ष श्री गेरनोट इरलर के नेतृत्व में एक चार सदस्यीय जर्मन शिष्टमंडल ने 13-15 जुलाई, 2000 तक भारत का दौरा किया। जर्मन बुडसटैग के क्रिस्चियन सोशल यूनियन (सी. एस. यू.) के संसदीय दल के उपाध्यक्ष श्री माइकल ग्लोस 1-3 सितम्बर, 2000 तक भारत की यात्रा पर आए। जुलाई 2000 में दिल्ली की मुख्य मंत्री के नेतृत्व में एक उच्च-स्तरीय वाणिज्यिक और सरकारी शिष्टमंडल जर्मनी गया।

अनेक वाणिज्यिक स्तर के विनिमयों और सरकारी स्तर पर केन्द्रित क्रियाकलाप के फलस्वरूप इस वर्ष आर्थिक संबंधों में भी प्रगति हुई। औद्योगिक और आर्थिक सहयोग से संबद्ध भारत-जर्मनी संयुक्त आयोग के 14वें सत्र में भाग लेने के लिए वित्त मंत्री ने 10-11 अप्रैल, 2000 तक जर्मनी का दौरा किया। यह निर्णय लिया गया कि दोनों पक्ष सूचना प्रौद्योगिकी पर एक संयुक्त कार्यकारी दल गठित करने की संभावना पर विचार करेंगे।

विदेश मंत्री बर्लिन में दूतावास के नए परिसर का उद्घाटन करने के लिए 17-19 जनवरी, 2001 तक बर्लिन की यात्रा पर आयेंगे। यात्रा के दौरान वे जर्मनी के विदेश मंत्री फिशर और जर्मनी के संसद सदस्यों के साथ भी विचार-विनिमय करेंगे। यह यात्रा पिछले अनेक वर्षों से भारत और जर्मनी के बीच चल रही घनिष्ठ वार्ता की एक कड़ी है। इस यात्रा और जर्मनी के रक्षा मंत्री रूडोल्फ चार्पिंग की आगामी भारत यात्रा (21-26 फरवरी, 2001) भारत और जर्मनी के बीच बढ़ते राजनैतिक और सामारिक भागीदारी का द्योतक है।

प्रधानमंत्री के प्रमुख सचिव सुरक्षा से संबद्ध 37वें म्यूनिख सम्मेलन में भाग लेने के लिए जर्मनी जा रहे हैं।

उच्च स्तर पर संसदीय आदान-प्रदान भी जारी रहा। जर्मन बुंडस्टैग के अध्यक्ष श्री

बोल्फगैंग थियर्स ने 10-15 दिसम्बर, 2000 तक भारत का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान उन्होंने उप-राष्ट्रपति, लोक सभा के अध्यक्ष, राज्य सभा के सभापति, विदेश मंत्री और विदेश मंत्रालय की स्थायी समिति के अध्यक्ष से मुलाकात की। भारत-जर्मनी संसदीय दल 18-28 फरवरी, 2001 तक भारत का दौरा करेगा।

स्पेन के युवराज फिलिप 15-19 फरवरी, 2001 तक होने वाली आई. ई. टी. एफ इन्डिया एक्सपो 2001 जिसमें स्पेन एक भागीदार देश है, में भाग लेने के लिए स्पेन के शिष्टमंडल का नेतृत्व करेंगे।

उल्लेखनीय है कि स्पेन के युवराज की यात्रा की सार्वजनिक घोषणा अभी नहीं की गयी है।

प्रधान मंत्री की इटली यात्रा (25-27 जून) से इटली के साथ हमारे संबंध मजबूत हुए। इटली के नेताओं के साथ प्रधान मंत्री की चर्चा के दौरान यह सहमति हुई कि भारत और इटली अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए बहुपक्षीय मंचों पर राजनैतिक वार्ता और सहयोग को तेज करेंगे। पर्यटन से संबंधित एक करार भी सपन्न किया गया।

हमारे वाणिज्य और उद्योग मंत्री तथा इटली के उद्योग और विदेश व्यापार मंत्री श्री एनरिको लेट्टा ने नई दिल्ली में आर्थिक सहयोग से संबद्ध भारत-इटली संयुक्त आयोग के 14वें सत्र की सह अध्यक्षता की (16-17 अक्टूबर)। इस बैठक के दौरान लिये गये एक निर्णय के अनुसरण में सूचना प्रौद्योगिकी पर कार्यकारी दल अपनी बैठक 2001 की पहली तिमाही में करेगा। लघु और मझोले उपक्रमों के निवेशों को सहायता पहुंचाने के लिए एक गारंटी निधि स्थापित करने से संबंधित एक समझौता संपन्न किया गया। यह सहमति भी हुई कि दोनों पक्ष 1996 में प्रवृत्त हुए दोहरे कराधान के परिहार से संबद्ध करार पर पुनः वार्ता करेंगे।

इटली के विदेश मंत्री श्री लम्बर्टो दीनी ने (11-13 नवम्बर) तक भारत की यात्रा की और आपसी हित के विभिन्न मामलों पर विचार-विनिमय किया। उन्होंने भारत-इटली स्पाइनल इंजुरी सेंटर का भी उद्घाटन किया। इटली के विदेश राज्य मंत्री ने नई दिल्ली में इटालियन सांस्कृतिक केन्द्र का शिलान्यास करने के लिए भारत का दौरा किया (30 मार्च- 2 अप्रैल)।

प्रधान मंत्री ने 26 जून, 2000 को वेटिकन में परम पावन पोप जॉन पॉल-II से मुलाकात की। इस मुलाकात के दौरान व्यापक चर्चा हुई।

इटली के साथ विदेश कार्यालय विचार-विमर्श 14 जनवरी को नई दिल्ली में हुआ। इन विचार-विमर्शों से द्विपक्षीय संबंधों का आकलन करने और आपसी लाभकारी संबंधों को उन्नत करने और संवर्धित करने के लिए नयी पहलकदमियों पर विचार करने का अवसर मिला। इन परामर्शों का अंतिम दौर रोम में मार्च 1999 में हुआ।

विदेश मंत्री ने 4 सितम्बर, 2000 को स्विटजरलैंड का दौरा किया। 1981 के बाद यह किसी भारतीय विदेश मंत्री की पहली स्विटजरलैंड यात्रा थी। विदेश मंत्री ने वहां के विदेश मंत्री श्री जोसफ डेस और अर्थव्यवस्था मंत्री श्री पास्कल कोउचेपिन के साथ विचार-विमर्श किया और उन्होंने द्विपक्षीय हित के मामलों, आपसी हित के बहुपक्षीय घटनाओं तथा द्विपक्षीय व्यापार और वाणिज्य को बढ़ावा देने की संभावनाओं पर चर्चा की।

7 नवम्बर को बर्न में हुई भारत-स्विटजरलैंड संयुक्त आयोग की 8वीं बैठक के दौरान द्विपक्षीय वाणिज्यिक सहयोग की समीक्षा की गयी। स्विटजरलैंड की अर्थव्यवस्था के संघीय पार्षद श्री पास्कल काउचेपिन ने एक बड़े वाणिज्यिक शिष्टमंडल के साथ 15-21 फरवरी तक भारत का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान दोहरे कराधान के परिहार से संबद्ध करार को संशोधित करने के लिए एक प्रोटोकॉल संपन्न किया गया और द्विपक्षीय निवेश संरक्षण एवं संवर्द्धन करार संपन्न किया गया। दोनों देशों के बीच पहला विदेश कार्यालय परामर्श 14 और 15 फरवरी, 2000 को बर्न में हुआ।

आयरलैंड की उप-प्रधान मंत्री श्रीमती मेरी हार्नी के नेतृत्व में सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र पर जोर देने वाले एक वाणिज्यिक शिष्टमंडल ने 5-15 अप्रैल, 2000 तक भारत का दौरा किया। इस दौरे की मुख्य बात 8 अप्रैल, 2000 को सूचना प्रौद्योगिकी से संबद्ध एक संयुक्त कार्यकारी दल की स्थापना किया जाना एवं 6 अप्रैल, 2000 को आयरिश साफ्टवेयर एसोसिएशन (आई. एस. ए.) और नेशनल एसोसिएशन ऑफ साफ्टवेयर सर्विस कंपनीज (एन. ए. एस. एस. सी. ओ. एम) के बीच एक समझौता ज्ञापन संपन्न किया जाना था।

भारत और आयरलैंड ने 4 नवम्बर को नई दिल्ली में दोहरे कराधान के परिहार से

संबद्ध एक अभिसमय पर हस्ताक्षर किये। 16 और 17 फरवरी, 2000 को डब्लिन में विदेश कार्यालय विचार-विमर्श हुआ।

बेल्जियम के विदेशी मामलों की मंत्री श्रीमती अनेमी नेत्स-यूटेबरोएक ने 10वें भारत वी. एल. ई. यू. संयुक्त आयोग की बैठक के संबंध में 8-12 जनवरी, 2001 तक भारत का दौरा किया। अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने विभिन्न द्विपक्षीय यूरोपीय संघ से संबंधित मामलों और क्षेत्रीय मुद्दों पर विदेश सचिव और सचिव (पश्चिम) के साथ मुलाकात की। इस यात्रा के दौरान भारत और बेल्जियम तथा लक्जमबर्ग के बीच द्विपक्षीय निवेश संवर्द्धन करार के अनुसमर्थन दस्तावेजों की अदला-बदली की गयी।

डेनमार्क के साथ विदेश कार्यालय परामर्श 14 दिसम्बर, 2000 को नई दिल्ली में हुआ। भारतीय शिष्टमंडल का नेतृत्व श्री आर. एस. काल्हा, सचिव (पश्चिम) ने किया और डेनमार्क पक्ष का नेतृत्व डेनमार्क के विदेश कार्यालय में सचिव श्रीमती मारग्रेट लोज ने किया। श्रीमती लोज ने विदेश मंत्री, विदेश सचिव और वित्त सचिव से भी मुलाकात की।

25 अप्रैल, 2000 को हेग में नीदरलैंड के साथ विदेश कार्यालय विचार-विमर्श हुआ। इन चर्चाओं से दोनों पक्षों को द्विपक्षीय संबंधों का आकलन करने और आपसी हित के मसलों पर विचार विनिमय करने का अवसर मिला।

नार्वे द्वारा भारत को दी जाने वाली विकास सहायता पर लगाया गया प्रतिबंध उठाया जाना (19 सितम्बर) हमारे द्विपक्षीय संबंधों के सामान्य होने का सूचक है। विदेश मामलों के स्टेट सेक्रेटरी श्री रेमन्ड जोहानसेन और श्री एरिक सोल्हेम ने भारत की यात्रा की (22 नवम्बर) तथा विदेश मंत्री एवं विदेश सचिव से मुलाकात की।

फिनलैंड के विदेश व्यापार मंत्री श्री किम्मो सासी की 20-26 सितम्बर की भारत यात्रा लगभग तीन वर्षों में फिनलैंड से पहली मंत्रिस्तरीय यात्रा थी। श्री सासी के साथ आये वाणिज्य शिष्टमंडल में सूचना प्रौद्योगिकी, संचार, जीव प्रौद्योगिकी, ऊर्जा तथा पर्यावरण क्षेत्रों के प्रतिनिधि शामिल थे। 6 सितम्बर को नई दिल्ली में विदेश कार्यालय विचार-विमर्श किया गया।

फिनलैंड के विदेश कार्यालय में मंत्री श्री जुक्का वल्ल्तसारी ने भारत की अपनी यात्रा के दौरान 16 जनवरी, 2001 को सचिव (पश्चिम) से मुलाकात की और आपसी हित के विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की।

भारत-आस्ट्रिया जे. ई. सी. का 7वां सत्र 18-19 दिसम्बर, 2000 तक नई दिल्ली में हुआ जिसमें द्विपक्षीय वाणिज्यिक संबंधों की समीक्षा की गयी। सत्र की सह अध्यक्षता वाणिज्य विभाग के अपर सचिव ने की।

यूनान के साथ विदेश कार्यालय विचार-विमर्श 28 और 29 सितम्बर, 2000 को एथेन्स में हुआ। यूनानी पक्ष ने इस अवसर का उपयोग संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भारत की उम्मीदवारी के प्रति अपना समर्थन दोहराने के लिए किया।

यूनान के विदेश मंत्री जार्ज पपान्द्रो ने 21-22 दिसम्बर, 2000 तक भारत की दो दिवसीय राजकीय यात्रा की। उन्होंने राष्ट्रपति जी, प्रधानमंत्री और विपक्ष के नेता से मुलाकात की। उन्होंने समान हित के द्विपक्षीय और अंतर्राष्ट्रीय मसलों पर विदेश मंत्री के साथ व्यापक वार्ता की।

यूनान के प्रधानमंत्री कांसटेन्टाइन सिमिटिस 4-8 फरवरी, 2001 तक भारत की यात्रा पर आने वाले हैं। एक दशक से अधिक की अवधि में यह पहली प्रधान मंत्री स्तरीय यात्रा है (अंतिम यात्रा 1986 में हुई थी जब यूनान के प्रधान मंत्री गणतंत्र दिवस समारोहों के मुख्य अतिथि थे) उनके साथ एक महत्वपूर्ण व्यवसाय शिष्टमंडल भी आया।

28 अक्टूबर - 3 नवम्बर, 2000 तक की आइसलैंड के राष्ट्रपति श्री ओलाफर ग्रिमसल की भारत की राजकीय यात्रा से भारत तथा आयरलैंड के संबंध और भी संबद्धित हुए। यह दोनों पक्ष से पहली राज्याध्यक्ष/शासनाध्यक्ष स्तर की यात्रा थी। श्री ग्रिमसन ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भारत की उम्मीदवारी का समर्थन किया। इस यात्रा के दौरान आइसलैंड के राष्ट्रपति ने दिल्ली में आइसलैंड फिल्म महोत्सव का उद्घाटन किया।

लक्जमबर्ग की उप-प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री श्रीमती लायडी पोल्लर ने 10वें भारत बी. एल. ई. यू. संयुक्त आयोग की बैठक के संबंध में 8-12 जनवरी, 2001 तक भारत का दौरा किया। उन्होंने विदेश मंत्री और दिल्ली की मुख्य मंत्री के साथ चर्चा की। इस यात्रा के दौरान भारत और लक्जमबर्ग के बीच वायु सेवा करार संपन्न किया गया।

भारत-साइप्रस संयुक्त आर्थिक आयोग की बैठक 20-21 नवम्बर, 2000 तक नई दिल्ली में हुई। इस अवसर पर द्विपक्षीय निवेश संवर्द्धन करार की भी पहल की गयी।

विदेश मंत्री ने 31 मार्च - 1 अप्रैल, 2000 तक पुर्तगाल का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान आर्थिक और औद्योगिक सहयोग के लिए एक करार संपन्न किया गया। नये करार के प्रावधानों के अंतर्गत द्विपक्षीय व्यापार और वाणिज्य को बढ़ावा देने के लिए दोनों देशों द्वारा एक संयुक्त आर्थिक आयोग गठित किया जाएगा।

भारत-यूरोपीय संघ शिखर सम्मेलन के अंत में 28-29 जून, 2000 की प्रधान मंत्री की पुर्तगाल की द्विपक्षीय यात्रा किसी भी भारतीय प्रधान मंत्री की पहली यात्रा थी। द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और बहुपक्षीय क्षेत्रों के विभिन्न मसलों पर द्विपक्षीय चर्चाएं आपसी समझबूझ और स्थिति की जानकारी के वातावरण में हुई। भारत की बढ़ती हुई अंतर्राष्ट्रीय शक्ति को पुर्तगाल की मान्यता एक संयुक्त प्रेस सम्मेलन में प्रधान मंत्री गुटरेस के इस वक्तव्य से स्पष्ट हुई कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भारत की उम्मीदवारी के प्रति पुर्तगाल को सहानुभूति है और यह कि भारत को उनका समर्थन प्राप्त होगा। इस यात्रा के दौरान निवेशों के संरक्षण और संवर्द्धन से संबंधित एक करार संपन्न किया गया।

आस्ट्रिया के साथ प्रथम विदेश कार्यालय विचार विमर्श 2-3 अक्टूबर तक विएना में हुआ। आस्ट्रियाई पक्ष ने दोहराया कि जापान और जर्मनी के साथ-साथ भारत संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए एक प्रमुख उम्मीदवार है।

स्वीडन के प्रधान मंत्री कार्यालय में स्टेट सेक्रेटरी श्री लार्स डेनियलसन ने 3-6 जुलाई, 2000 तक भारत का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान द्विपक्षीय निवेश संरक्षण और संवर्द्धन से संबंधित करार संपन्न किया गया।

स्वीडन के पर्यावरण मंत्री श्री जेल लारसन ने 30 अक्टूबर 2000 को भारत की यात्रा की। उन्होंने हमारे पर्यावरण मंत्री के साथ चर्चा की और दिल्ली में आयोजित एक गोल मेज सम्मेलन में पर्यावरणविदों से भी मुलाकात की।



8

अमरीका

संयुक्त राज्य अमरीका

इस वर्ष के दौरान अमरीका के साथ संबंधों को गहन करने और कार्य को विस्तारित करने की प्रक्रिया को नई गति और ताकत मिली है। दोनों पक्षों ने समानता और परस्पर सम्मान के आधार पर, अपेक्षाकृत एक घनिष्ठ और गुणात्मक रूप से नए संबंध बनाने की आधारशिला रखी और इन नए संबंधों पर अनुवर्ती कार्रवाई करने के लिए व्यापक संस्थागत संवाद की एक व्यापक संरचना की स्थापना की है। हाल के वर्षों में दोनों पक्षों के बीच बढ़ते हुए संवाद के परिणामस्वरूप एक नए संबंध की संकल्पना बनी। अनेक साझे मूल्यों, रुचियों और परस्पर लाभकारी सहयोग के अवसरों की मान्यता के आधार पर यह अनुमान लगाया गया है कि इक्कीसवीं सदी में विश्व में अपेक्षाकृत घनिष्ठ भारत-अमरीका संबंध महत्वपूर्ण और सकारात्मक भूमिका अदा कर सकते हैं।

अपने द्विपक्षीय संबंधों के इतिहास में पहली बार, दोनों पक्षों ने इसी वर्ष में सरकारी यात्राओं का आदान-प्रदान किया। अमरीकी राष्ट्रपति, महामहिम विलियम जे. क्लिंटन 21-25 मार्च 2000 तक भारत के दौरे पर आए और प्रधान मंत्री 13-17 सितम्बर, 2000 तक संयुक्त राज्य अमरीका की सरकारी यात्रा पर गए। प्रधान मंत्री और राष्ट्रपति क्लिंटन ने 21 मार्च को नई दिल्ली में भारत और अमरीका के बीच इक्कीसवीं सदी में नए संबंधों की संकल्पना को रेखांकित किया था। वे इन नए संबंधों का अनुपालन करने के लिए एक साधन के रूप में व्यापक संस्थागत संवाद की एक संरचना पर भी सहमत हुए। प्रधान मंत्री की यात्रा ने नए संबंध बनाने की गति बढ़ाने के लिए योगदान किया था। इन सरकारी यात्राओं के अलावा, दोनों पक्षों ने अपने संवाद को गहन किया और द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मसलों के विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग को विस्तारित किया।

राष्ट्रपति क्लिंटन 21-25 मार्च तक भारत की यात्रा पर आए। 22 वर्षों के अन्तराल के पश्चात् किसी अमरीकी राष्ट्रपति की भारत यात्रा हुई थी। पांच दिवसीय दौरा, जिसमें पांच शहरों की यात्रा शामिल थी उनके द्वारा किसी देश की अत्यधिक व्यापक यात्राओं में से एक थी। राष्ट्रपति क्लिंटन ने दिल्ली, आगरा, जयपुर, हैदराबाद और मुम्बई की यात्रा की थी।

दोनों पक्ष विगत की शंकाओं को दरकिनार करने तथा विश्व के दो सबसे बड़े प्रजातंत्रों के बीच अपेक्षाकृत अधिक घनिष्ठ और गुणात्मक रूप से नए संबंध बनाने के लिए द्विपक्षीय संबंधों में एक नई उपयोगी दिशा देने के लिए रूपरेखा पर सहमत हुए हैं। राष्ट्रपति क्लिंटन ने अपनी यात्रा के उद्देश्य को “ऐसी मैत्री को मजबूत करने जो वास्तव में संपूर्ण पृथ्वी के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण है” के रूप में वर्णित किया था।

यह संकल्पना वक्तव्य 21वीं सदी में भारत और अमरीका के बीच सीमाओं को रेखांकित करता है और सहभागिता के कार्यवृत्त को परिभाषित करता है। यह वक्तव्य दोनों देशों के बीच समानता, साझे मूल्यों और समान रुचियों पर जोर देता है। इसमें यह माना गया है कि लोकतंत्र के सिद्धांतों और व्यवहार के प्रति हमारी वचनबद्धता हमारे द्विपक्षीय संबंधों और परस्पर हित-चिन्ता के मसलों के संबंध में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हमारे सहयोगी प्रयासों की आधारशिला बन गई है। इसमें साझा विश्वास की अभिव्यक्ति है कि दोनों देशों के बीच संबंध अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति, समृद्धि और लोकतांत्रिक स्वतंत्रता का निर्माण करने में तथा एशिया में एवं उसके बाहर सामरिक स्थायित्व सुनिश्चित करने के लिए एक प्रमुख घटक हो सकते हैं। इसमें दोनों देशों की द्विपक्षीय सहयोग को प्रगाढ़ करने तथा उसे व्यापकता प्रदान करने की इच्छा को प्रतिपादित किया गया है।

संवाद संरचना में भारत के प्रधानमंत्री और अमरीकी राष्ट्रपति के बीच नियमित “शिखर सम्मेलनों” के आयोजन की व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त, इसमें विदेश मंत्री तथा अमरीकी विदेश मंत्री के बीच मंत्रिस्तरीय विदेश नीतिगत संवाद, एक मंत्रिस्तरीय सुरक्षा संवाद, विदेश सचिव और अमरीकी अन्डर सेक्रेटरी आफ स्टेट के बीच विदेश कार्यालय परामर्श और एशियाई सुरक्षा संवाद, द्विपक्षीय आर्थिक संवाद संबंध उच्च स्तरीय समन्वय समूह तथा मंत्रिस्तरीय भारत-अमरीका वित्तीय और आर्थिक फोरम, भारत-अमरीका वाणिज्यिक संवाद एवं व्यापार से संबद्ध भारत-अमरीकी कार्यदल, आतंकवाद प्रतिकार संबंधी संयुक्त कार्यदल, स्वच्छ ऊर्जा और पर्यावरण संबंधी संयुक्त कार्य दल, और भारत-अमरीका विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी फोरम भी शामिल हैं। सितम्बर में संयुक्त राज्य की प्रधान मंत्री की उत्तरवर्ती यात्रा के दौरान, दोनों पक्ष संयुक्त राष्ट्र शान्ति कार्रवाईयों से संबद्ध एक संस्थागत संवाद स्थापित करने और अफगानिस्तान से संबद्ध द्विपक्षीय संवाद की एक रुपरेखा स्थापित करने के लिए सहमत हुए।

इसके अतिरिक्त, राष्ट्रपति क्लिंटन की यात्रा के दौरान, भारत और अमरीका ने विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी फोरम के गठन संबंधी एक करार संपन्न किया तथा ऊर्जा और पर्यावरण में सहयोग पर एक संयुक्त वक्तव्य जारी किया। अनेक निजी क्षेत्रों में संयुक्त रूप से पहल भी गई थी।

प्रधान मंत्री अमरीकी राष्ट्रपति के निमंत्रण पर 13-17 सितम्बर तक वाशिंगटन की सरकारी यात्रा पर गए। प्रधान मंत्री को अमरीका की 106 वीं संयुक्त बैठक को एक मात्र विदेशी द्वारा सम्बोधित करने का अवसर देकर सम्मानित किया गया और प्रतिनिधि सदन और सीनेट द्वारा पारित एक संकल्प के माध्यम से स्वागत किया गया, जिसमें अपेक्षाकृत अधिक मजबूत भारत-अमरीकी संबंध बनाने की भी मांग की गई। प्रधानमंत्री ने राष्ट्रपति क्लिंटन के साथ एक सीमित तथा एक शिष्टमण्डल स्तर की बैठक की और राष्ट्रपति क्लिंटन और श्रीमती हिलैरी क्लिंटन द्वारा अपने सम्मान में दिए गए रात्रि भोज में भाग लिया। उन्होंने उप-राष्ट्रपति अलबर्ट गोर के साथ बातचीत की, जिन्होंने प्रधानमंत्री के सम्मान में स्टेट डिपार्टमेंट में एक भोज भी दिया।

अमरीकी कांग्रेस की एक संयुक्त बैठक को संबोधित करने के अतिरिक्त, उन्होंने स्पीकर, सदन के डेमोक्रेटिक नेतृत्व, सीनेट की विदेशी मामले समिति, सदन की अन्तर्राष्ट्रीय संबंध समिति, भारत और भारतीय-अमरीकी लोगों संबंधी कांग्रेस बैठक तथा

अन्य प्रमुख सीनेटरों और कांग्रेस सदस्यों के साथ भी पृथक-पृथक बैठकें की थी। उनके अन्य कार्यक्रमों में अमरीकी व्यावसायिक समुदाय और भारतीय समुदाय तथा प्रमुख विदेश नीतिगत थिंक टैंको और शिक्षाविदों के साथ क्रिया-कलाप और बैठकें शामिल हैं। प्रधान मंत्री और राष्ट्रपति क्लिंटन ने मिलकर वाशिंगटन स्थित भारत के राजदूतावास के सामने एक सार्वजनिक पार्क में गांधी स्मारक प्रतिमा का समर्पण किया था।

इस यात्रा के फलस्वरूप संयुक्त राज्य के साथ मैत्री और सहयोग के नए चरण को सुदृढ़ करने तथा दोनों पक्षों के बीच समझबूझ को गहन करने में सहायता मिली। दोनों पक्ष मानते हैं कि इस यात्रा से द्विपक्षीय संबंधों में उपरिमुखी गति बढ़ाने में सहायता मिली, जिसके परिणामस्वरूप मार्च 2000 के दृष्टिकोण वक्तव्य में विनिर्दिष्ट नए संबंधों को निर्मित करने की प्रक्रिया में योगदान मिला। द्विपक्षीय अवसरों पर बल देते हुए, दोनों पक्षों ने साझे मूल्यों, संपूरक शक्तियों और हितों तथा अवसरों की बढ़ती हुई समभिरूपता के आधार पर वृहत्तर अन्तर्राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में भी संबंधों को पहचाना है। राष्ट्रपति क्लिंटन ने दोहराया कि भारत-अमरीका संबंध निकट भविष्य में अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में महत्वपूर्ण घटकों में से एक होंगे। प्रधान मंत्री के राष्ट्रपति पद के दोनों उम्मीदवारों, अमरीकी कांग्रेस, व्यवसायी समुदाय, थिंक टैंकों और शिक्षाविदों, तथा भारतीय-अमरीकी समुदाय के साथ क्रिया-कलापों के फलस्वरूप उस व्यापक आधार वाले एवं द्विदलीय समर्थन के और मजबूत होने की आशा है जो भारत के साथ दृढ़तर संबंधों और नए प्रशासन के साथ भारत-अमरीका संबंधों में निरंतरता और गति बनाए रखने में योगदान के लिए विद्यमान है। दोनों राष्ट्रपति पद के उम्मीदवारों - उप-राष्ट्रपति गोर और गर्वनर जार्ज बुश ने प्रधान मंत्री के साथ अपनी-अपनी बातचीत में भारत के प्रति यही अमरीकी नीति बनाए रखने का आश्वासन दिया।

प्रधान मंत्री और राष्ट्रपति क्लिंटन के बीच बैठक के पश्चात एक संयुक्त वक्तव्य जारी किया था। इसमें प्रधान मंत्री और राष्ट्रपति क्लिंटन द्वारा मार्च में रेखांकित दृष्टिकोण पत्र की पुनःपुष्टि की गई है और संवाद संरचना क्रियान्वयन में की गई प्रगति पर संतोष व्यक्त किया गया है। इसमें दोनों देशों की संवाद और राजनैतिक और सुरक्षा मामलों, व्यापार तथा वाणिज्य, वित्त एवं निवेश, स्वास्थ्य, ऊर्जा और पर्यावरण, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी एवं आतंकवाद-प्रतिकार में सहयोग तेज करने की इच्छा को भी दोहराया गया है। इसके अतिरिक्त, दोनों पक्ष संस्थागत संवाद की मौजूदा संरचना में संयुक्त राष्ट्र शान्ति रक्षा और अफगानिस्तान को शामिल करने के लिए सहमत हुए हैं।

राष्ट्रपति क्लिंटन की यात्रा के पश्चात, दोनों पक्षों ने संवाद संरचना के सभी घटकों को तेजी से क्रियान्वित किया। विदेश मंत्री, श्री जसवंत सिंह 26 जून, 2000 को वारसा में मंत्रिस्तरीय विदेश नीतिगत संवाद के लिए अमरीकी सेक्रेटरी ऑफ स्टेट मेडलिन अलब्राइट से मिले, जहां दोनों कम्यूनिटी आफ डेमोक्रेसीज की प्रथम मंत्रिस्तरीय बैठक में भाग लेने गए थे, वे जुलाई में बैंकांक में ए आर एफ बैठक में और सितम्बर में न्यूयार्क में पुनः मिले। विदेश मंत्री और अमरीकी डिप्टी सेक्रेटरी ऑफ स्टेट स्ट्रोब टालबोट सुरक्षा और अप्रसार पर चल रहे संवाद के संदर्भ में ए एफ आर बैठक की समाप्ति पर जुलाई 2000 में मिले। विदेश सचिव और अमरीकी अंडर सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फार पालिटिकल अफेयर्स टॉम पिकरिंग ने विदेश कार्यालय परामर्श और एशियाई सुरक्षा संवाद के लिए 24-25 मई 2000 तक नई दिल्ली में तथा 31 अगस्त - 1 सितम्बर 2000 तक वाशिंगटन में मुलाकात की।

मंत्रिस्तरीय विदेश नीति संवाद और विदेश कार्यालय परामर्श से दोनों पक्षों के लिए द्विपक्षीय संबंधों तथा विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग में प्रगति की समीक्षा करने और परस्पर हित-चिन्ता के क्षेत्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मसलों पर विचारों के आदान-प्रदान का अवसर उपलब्ध हुआ है। एशियाई सुरक्षा संवाद से दोनों देशों के बीच संस्थागत संवाद का एक नया घटक, अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा मसलों पर, विशेष रूप से एशियाई संदर्भ में दोनों देशों के बीच बढ़ते हुए संवाद और सहयोग की इच्छा परिलक्षित होती है। प्रधान मंत्री की यात्रा के दौरान, दोनों पक्ष अफगानिस्तान में परस्पर हित चिन्ता के मसलों पर द्विपक्षीय संवाद की एक रूपरेखा स्थापित करने के लिए सहमत हुए। दोनों पक्षों ने सुरक्षा, अप्रसार और निःशस्त्रीकरण से संबद्ध चल रहे अपने संवाद का सकारात्मक मूल्यांकन किया है और इस क्षेत्र में मतभेदों को और कम करने के लिए संवाद को जारी रखने के लिए सहमत हुए हैं।

दोनों पक्षों ने अपने इस विश्वास की पुष्टि की कि दक्षिण एशिया में तनाव केवल दक्षिण एशियाई राष्ट्रों द्वारा शान्तिपूर्ण तरीकों के माध्यम से ही हल किया जा सकता है। दोनों पक्षों ने जारी हिंसा और खून खराबे अस्वीकार करने पर क्षेत्र की समस्याओं पर बल दिया। इस संदर्भ में, दोनों पक्ष इस बात पर भी सहमत हुए कि जम्मू और कश्मीर में जारी हिंसा और संवाद के बीच परस्पर विरोध है।

द्विपक्षीय आर्थिक संवाद से संबद्ध उच्च स्तरीय समन्वय दल ने 21-22 अगस्त 2000 तक दिल्ली में अपनी पहली बैठक संपन्न की। भारत-अमरीका वित्तीय और आर्थिक

फोरम का गठन अप्रैल 2000 में वित्तमंत्री की वाशिंगटन की यात्रा के दौरान किया था और सितम्बर, 2000 में प्रधान मंत्री की यात्रा के दौरान वाशिंगटन में इसने अपनी बैठक की। भारत-अमरीका वाणिज्यिक संवाद का गठन मार्च में राष्ट्रपति क्लिंटन की यात्रा के दौरान वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री और अमरीकी वाणिज्य मंत्री द्वारा किया गया और सितम्बर 2000 में वाशिंगटन में पुनः इसने अपनी बैठक की।

भारत और संयुक्त राज्य ने आतंकवाद - प्रतिकार संबंधी एक संयुक्त कार्यदल (जे. डब्ल्यू. जी.) के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद का मुकाबला करने में अपने सहयोग को संस्थानिक किया है। जे. डब्ल्यू. जी. की पहली बैठक 7-8 फरवरी 2000 तक संपन्न हुई। आतंकवाद प्रतिकार संबंधी संयुक्त कार्यदल की दूसरी बैठक 25-26 सितम्बर, 2000 तक नई दिल्ली में संपन्न हुई। दोनों पक्ष अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद से लड़ने के लिए दोनों देशों के बीच सहयोग बढ़ाने के लिए अनुभव बांटने, संगत सूचना का आदान-प्रदान, आतंकवाद-रोधी प्रशिक्षण और उपागमों तथा कार्रवाई समन्वयन के माध्यम सहित अनेक उपाय करने पर सहमत हुए। संयुक्त कार्य दल ने अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद संबंधी एक संयुक्त राष्ट्र व्यापक अभिसमय संबंधी भारत के प्रस्ताव के प्रति समर्थन भी व्यक्त किया और इस उद्देश्य की दिशा में कार्य करने के लिए सहमत हुआ। इस दल ने अपने अधिदेश में स्वापक-आतंकवाद और नशीली दवा के अवैध व्यापार को शामिल किए जाने का भी स्वागत किया। आतंकवाद और अन्तर्राष्ट्रीय अपराध का मुकाबला करने में विधि प्रवर्तन सहयोग तेज करने के प्रयासों के भाग के रूप में, दोनों पक्ष एक परस्पर विधि सहायता संधि संपन्न करने पर वार्ता कर रहे हैं। अब, अमरीका द्वारा दक्षिण एशिया में आतंकवाद और उसकी प्रकृति तथा भारत में सीमा-पार आतंकवाद की उत्पत्ति की समस्या को व्यापक मान्यता मिल रही है।

ऊर्जा और पर्यावरण संबंधी संयुक्त सलाहकार दल ने अपनी पहली बैठक 26-28 जुलाई, 2000 तक वाशिंगटन में संपन्न की। इस दल ने भारत में ऊर्जा क्षेत्र के विकास में भारत अमरीका वाणिज्यिक और सरकार से सरकार के बीच सहयोग संवर्धित करने के लिए द्विपक्षीय ऊर्जा परामर्श बहाल करने का फैसला किया। इस दल ने भारतीय ऊर्जा उद्योग में विशिष्ट प्रौद्योगिकी विकास परियोजनाओं को संवर्धित करने का भी फैसला किया है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी फोरम, जिससे दोनों देशों के वैज्ञानिक समुदायों के बीच संपर्क तथा सहयोगात्मक परियोजनाओं को सुविधाजनक बनाने की आशा है, का जुलाई

में पंजीयन हुआ था। दोनों पक्षों ने मातृक और बाल स्वास्थ्य संबंधी तथा एच आई वी/एड्स संबंधी सहयोग अनुसंधान पर ध्यान केन्द्रित करते हुए, स्वास्थ्य क्षेत्र में सहयोग पर 13 जून, 2000 को वाशिंगटन में दो संयुक्त वक्तव्य भी जारी किए थे।

प्रधान मंत्री की अमरीका यात्रा के दौरान, संयुक्त राष्ट्र शान्ति कार्यवाहियों संबंधी, सहयोग और संवाद को संस्थानिक करने के फैसले की वाशिंगटन में घोषणा के पश्चात, दोनों पक्षों ने 1-2 नवम्बर, 2000 तक नई दिल्ली में संयुक्त राष्ट्र शान्ति कार्यवाहियों संबंधी भारत-अमरीका संयुक्त कार्यदल की पहली बैठक संपन्न की। भारत संयुक्त राष्ट्र शान्ति प्रयासों के लिए एक प्रमुख योगदानकर्ता देश है। इस संयुक्त कार्यदल का उद्देश्य संयुक्त राष्ट्र शान्ति मसलों संबंधी समझबूझ को बढ़ाना तथा नीतिगत, कार्यात्मक और प्रचालनात्मक पहलुओं सहित संयुक्त राष्ट्र शान्ति को अधिक प्रभावी बनाने में योगदान करना है। एडमिरल, डेनिस ब्लेयर, अमरीकी प्रशान्त कमान के कमान प्रमुख सितम्बर 2000 में देश की अपनी दूसरी यात्रा पर भारत आए। नीति संबंधी प्रधान अंडर सेक्रेटरी रक्षा मंत्री जेम्स बोडनर नवम्बर, 2000 में भारत आए जो कि 1998 में भारत पर लगाए गए अमरीकी प्रतिबन्धों के लगाये जाने के बाद से दोनों पक्षों के बीच प्रथम उच्च स्तरीय गैर-सैनिक रक्षा संपर्क था।

संयुक्त राज्य ने कतिपय प्रतिबन्धों को क्रमिक रूप से शिथिल किया है, विशेषरूप से उन आर्थिक प्रतिबन्धों से संबद्ध, जो उसने मई 1998 में परमाणु परीक्षणों के पश्चात अपनी राष्ट्रीय विधि के तहत लगाए थे। ये प्रतिबन्ध भारत के लिए अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं द्वारा उधार संबंधी अमरीकी समर्थन, भारत के लिए अमरीकी सरकारी एजेंसियों द्वारा कुछ साख और साख गारन्टियों पर, अमरीकी युद्ध सामग्री सूची में वर्जित वस्तुओं के निर्यात और “दोहरे उपयोग” की वस्तुओं तथा प्रोद्योगिकीयों के निर्यात पर जारी रहेंगे। संयुक्त राज्य उन भारतीय संगठनों की एक इकाई सूची भी बनाए हुए है जो कठोरतर निर्यात नियंत्रणों के अध्वधीन हैं। अमरीका ने 200 संगठनों की मूल सूची से 53 भारतीय संगठनों को इस इकाई सूची से हटा दिया है।

सरकार इस बात का समर्थन करती है कि भारत के विरुद्ध सभी एक पक्षीय प्रतिबन्ध अनुचित और अनुपयुक्त हैं और उन्हें पूर्णतः उठा लेना चाहिए। अमरीकी कांग्रेस के कुछ प्रमुख सदस्यों ने व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से भारत के ऊपर लगे शेष प्रतिबन्धों में छूट देने के लिए अमरीकी राष्ट्रपति को लिखा है।

नवम्बर, 2000 में सम्पन्न अमरीकी राष्ट्रपति के चुनाव के बाद रिपब्लिकन पार्टी

के उम्मीदवार टेक्सास के गवर्नर जार्ज डब्ल्यू. बुश अमरीका के 43वें राष्ट्रपति बने। राष्ट्रपति जार्ज डब्ल्यू. बुश और उनके विदेश नीति के प्रमुख सलाहकारों ने भारत के साथ बातचीत और गहन करने तथा संबंधों को सुदृढ़ बनाये जाने की इच्छा व्यक्त की है। बुश प्रशासन मौजूदा प्रतिबन्धों की समीक्षा कर रहा है जिसमें भारत के विरुद्ध लगे शेष प्रतिबन्ध भी शामिल हैं। विदेश मंत्री कोलिन पोवेल ने विदेश संबंध से सम्बद्ध सीनेट की समिति के समक्ष पुष्टिकरण की सुनवाई के दौरान इस बात को सार्वजनिक रूप से कहा। अमरीकी प्रशासन ने 24 जनवरी को जम्मू तथा कश्मीर में अपनी ओर से कार्यवाही न करने की अवधि बढ़ाने की भारत की एकतरफा घोषणा का स्वागत किया है और उग्रवादी समूहों द्वारा हिंसा समाप्त करने को कहा है।

भारत से सम्बद्ध कांग्रेस बैठक के सह-अध्यक्ष तथा अमरीकी कांग्रेस के भारतीय-अमरीकी कांग्रेस जन जिम मैकडेरमोट के नेतृत्व में एक अमरीकी कांग्रेसी शिष्टमंडल 8 से 14 जनवरी, 2001 तक भारत की यात्रा पर आया। रिपब्लिकन पार्टी के वरिष्ठ अमरीकी सीनेटर श्री आर्लेन स्पेक्टर 3 से 6 जनवरी, 2001 तक भारत की यात्रा पर आए।

राष्ट्रपति बुश ने 26 जनवरी को भूकम्प पीड़ितों के परिवारों को सांत्वना संबंधी एक वक्तव्य जारी किया तथा बचाव और राहत सहायता की पेशकश की। हमारे प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति बुश की 30 जनवरी को दूरभाष पर बातचीत हुई। अमरीका ने बचाव, राहत तथा पुनर्वास प्रयासों में भी सहायता दी। अन्तर्राष्ट्रीय विकास की अमरीकी एजेंसी (यू एस ए आई डी) अमरीकी विदेश आपदा सहायता कार्यालय (ओ एफ डी ए) और अमरीकी रक्षा विभाग ने मिलकर भूकम्प के बाद तत्काल अवधि में 3.5 मिलियन अमरीकी डालर मूल्य की सहायता दी। अमरीकी विशेषज्ञों का एक दस सदस्यीय दल प्रभावित क्षेत्रों में राहत और पुनर्वास प्रयासों में सहायता करने के लिए नई दिल्ली में कार्यरत रहा।

कनाडा

मई 1998 में हमारे परमाणु परीक्षणों के प्रति कनाडा की अत्यधिक विपरीत प्रतिक्रिया के पश्चात, भारत और कनाडा के बीच राजनैतिक संबंध इस वर्ष के दौरान किंचित रूप से शिथिल रहे। तथापि, दोनों देशों के बीच कुछ उपयोगी क्रियाकलाप हुए हैं।

आतंकवाद से संबद्ध भारत-कनाडा संयुक्त कार्यदल की तीसरी बैठक 15-16 फरवरी 2000 तक नई दिल्ली में संपन्न हुई थी। इस बैठक के दौरान, दोनों पक्षों ने विभिन्न आतंकवादी संगठनों की गतिविधियों के बारे में सूचना और विचारों का आदान-प्रदान किया। आतंकवाद के विरुद्ध भारतीय मसौदा अभिसमय और जी-8 विचार-विमर्श सहित आतंकवाद प्रतिरोध के बहुपक्षीय पहलुओं पर चर्चा की थी। दोनों पक्षों ने कार्य दल को एक ऐसा उपयोगी तंत्र माना जो आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए प्रत्यर्पण संधि और परस्पर विधिक सहायता जैसे अन्य मौजूदा तंत्रों को मजबूत करेगा।

कनाडा के विदेश कार्यालय के अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा ब्यूरो के महानिदेशक, पाल माथेर के नेतृत्व में कनाडा का एक शिष्टमण्डल एक सुरक्षा संवाद के संबंध में 15-16 मार्च, 2000 तक भारत की यात्रा पर आया। प्रमुख परमाणु मसले पर, कनाडा के शिष्टमण्डल ने अपने इस दृष्टिकोण को दोहराया कि कनाडा एन. पी. टी और सी. टी. बी. टी. की महत्ता को अत्यधिक अहमियत देता है। भारतीय शिष्टमण्डल ने अपनी ओर से इस बात को दोहराया कि भारत सदैव पूर्ण परमाणु निरस्त्रीकरण का समर्थक रहा है और वह सी टी बी टी के मसले पर अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा अवधारणाओं द्वारा पूर्णरूप से निर्देशित होता रहेगा। उन्हें इस बात से भी अवगत कराया था कि भारत एन पी टी को एक मनमानी और भेदभावमूल के रूप में मानता है, जिसका उपयोग पी-5 द्वारा अपने परमाणु भण्डार को बढ़ाने के लिए इसके विपरीत अन्य देशों को दूर रखते हुए तथा इसके मौजूदा रूप में इसके विस्तार के बारे में अपनी आशंकाओं को व्यक्त किया।

पैट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री, श्री राम नाईक के नेतृत्व में एक 11 सदस्यीय शिष्टमण्डल 11-15 जून, 2000 तक कालगारी में आयोजित 16वीं विश्व पैट्रोलियम कांग्रेस में भाग लेने के लिए कनाडा गए। सम्मेलन की गतिविधियों के अतिरिक्त, मंत्री ने ओपेक के महासचिव डा. लुकमान के साथ एक बैठक की थी। उन्होंने अल्बर्टा के प्रिमियर श्री राल्फ क्लेन से मुलाकात भी की, जिन्हें उन्होंने 9-11 जनवरी, 2001 तक भारत में संपन्न होने वाले पैट्रो-टेक सम्मेलन तथा प्रदर्शनी में आने का निमंत्रण दिया।

कनिष्क दुर्घटना की पन्द्रह वर्ष के लम्बे समय की सतत जांच-पड़ताल के बाद, 27 अक्टूबर 2000 को रायल कनाडियन माउंटेड पुलिस (आर सी एम पी) ने इस मुकदमे के संबंध में वेंकुवर से रिपुदमन सिंह मलिक और अजायब सिंह बागड़ी को गिरफ्तार किया। एक तीसरा व्यक्ति, हरदयाल सिंह जोहाल, सुरें गुरुद्वारा के पूर्व प्रधान

को गिरफ्तार किया था किन्तु बिना अभियोग लगाए उसे 31 अक्टूबर को रिहा कर दिया। आर सी एम पी ने कहा कि और संदेहास्पद व्यक्तियों की गिरफ्तारी संभव है।

ब्रिटिश कोलम्बिया, कनाडा के प्रधानमंत्री श्री उज्जल दोसांज 18 दिसम्बर, 2000 से 4 जनवरी, 2001 तक 17 दिन की भारत की यात्रा पर आए। श्री दोसांज कनाडा में राजनीतिक जीवन में इस प्रकार का प्रतिष्ठित पद प्राप्त करने वाले “प्रथम पीढ़ी” के पहले भारतीय हैं। यह यात्रा विदेश मंत्री के आमंत्रण पर की गई।

इस यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री दोसांज ने प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्री, सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री तथा स्वास्थ्य मंत्री के अलावा विपक्ष की नेता से मुलाकात की। उन्होंने विभिन्न व्यवसाय तथा सांस्कृतिक निकायों के साथ क्रियाकलाप भी किया।

दिल्ली के अलावा प्रधानमंत्री ने पंजाब, हैदराबाद, बंगलौर और मुम्बई की भी यात्रा की जहां संबंधित राज्यों के प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने उनका हार्दिक अभिनन्दन किया। पंजाब, जहाँ उन्होंने सात दिन व्यतीत किए, में उन्होंने मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल के साथ पंजाब सरकार और ब्रिटिश कोलम्बिया की सरकार के बीच सहयोग से सम्बद्ध एक सामान्य करार पर हस्ताक्षर किए। इस यात्रा के संबंध में मीडिया ने पर्याप्त ध्यान दिया और रुचि दिखाई एवं इससे भारत और कनाडा के बीच द्विपक्षीय संबंधों में एक अतिरिक्त आयाम जुड़ गया।

लातिन अमरीका और केरिबियाई

लातिन अमरीकी तथा केरिबियाई क्षेत्र के देशों के साथ भारत के परम्परागत संबंध समस्या विहीन और सौहार्द्रपूर्ण रहे हैं। इस क्षेत्र के प्रति हमारी नीति का मुख्य बल मौजूदा संबंधों को प्रगाढ़ तथा विस्तारित करना और उन्हें अधिकाधिक आर्थिक सन्तुष्टि प्रदान करना रहा है। द्विपक्षीय और बहुपक्षीय दोनों स्तरों पर हमारे क्रिया-कलाप और सहयोग परस्पर रूप से लाभदायक रहे हैं। इस समय इस क्षेत्र में भारत के 13 आवासी राजनयिक मिशन और एक केन्द्र खुला हुआ है। सहप्रत्यायन द्वारा इस क्षेत्र के 20 देशों में से अधिकतर अन्य देश कवर किए गए हैं। इस क्षेत्र के बारह देशों के नई दिल्ली में अपने-अपने आवासी मिशन हैं।

हमारे द्विपक्षीय संबंधों का एक महत्वपूर्ण घटक विदेश कार्यालय स्तर का द्विपक्षीय परामर्श का तंत्र रहा है। इन वर्षों में हमने इस क्षेत्र के तेरह देशों के साथ इस विषय

पर समझौता ज्ञापन संपन्न किए हैं और कुछ के साथ विचाराधीन हैं। द्विपक्षीय संबंधों की नियमित समीक्षा के फलस्वरूप हमारे वार्ता भागीदारों की क्षमताओं और हित-चिन्ताओं की बेहतर समझबूझ बढ़ी है और जिसके परिणाम स्वरूप परस्पर हित के बहुपक्षीय मसलों पर समन्वय करने में सुधार हुआ है। अन्य सरकारी और तकनीकी स्तरीय यात्राओं ने विदेश कार्यालय स्तर के परामर्श के लाभों में वृद्धि की है। आर्थिक और व्यापारिक क्षेत्रों में हमारे संबंधों को प्रगाढ़ता प्रदान करते हुए निजी क्षेत्र स्तर पर क्रिया-कलापों में वृद्धि हुई है।

भारत सरकार के 'फोकस लेक प्रोग्राम' के अनुवर्ती कार्य के रूप में, लातिन अमरीकी और केरिबियाई क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भारतीय निर्यात संवर्धन परिषदों और व्यवसायी घरानों की सहभागिता तथा व्यापारिक शिष्टमण्डलों की इस क्षेत्र की यात्राओं के परिणाम-स्वरूप भारतीय वस्तुओं और प्रौद्योगिकीय समृद्धि संबंधी बहुमूल्य सूचना के प्रचार-प्रसार में सहायता मिली है। दूरी और भाषा के बन्धनों को पार करने के लिए संगठित प्रयास किए गए हैं। इस परिप्रेक्ष्य में, इस क्षेत्र का दूसरा महत्वपूर्ण घटक सार्वभौमिकीकरण करना रहा है जिसके परिणाम स्वरूप इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्थाओं के साथ सहयोग संवर्धन के रास्ते खुले हैं। हमने इस क्षेत्र के सात देशों के साथ व्यापारिक और आर्थिक करार सम्पन्न किए हैं तथा कुछ अन्य देशों के साथ परिषदें गठित की हैं। निजी क्षेत्रों में बढ़ती हुई समझबूझ के परिणामस्वरूप शीर्ष व्यापार तथा औद्योगिक निकायों के बीच कई समझौतों पर हस्ताक्षर भी हुए। तथापि, समीक्षाधीन वर्ष के दौरान समस्त क्षेत्र द्वारा अनुभव की जा रही आर्थिक कठिनाईयों के कारण भारत के साथ समग्र व्यापार में वास्तविक बढ़ोतरी बहुत कम रही और इस समय यह केवल 1.50 बिलियन अमरीकी डालर है।

लातिन अमरीकी क्षेत्र में भारत की सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत साख है। भारतीय दर्शन, योग और महात्मा गांधी तथा उनकी शिक्षाएं इस क्षेत्र के अनेक लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। लातिन अमरीका और केरिबियाई देशों की पांच सौ से भी अधिक संस्थाओं, विद्यालयों, पुस्तकालयों, सड़कों और चौराहों के नाम भारत तथा इसके नेताओं के नाम पर रखे गए हैं। हमारे राष्ट्रपिता के सम्मान में, उनकी आवक्षमूर्ति और प्रतिमाएं लातिन अमरीकी तथा केरिबियाई देशों में महत्वपूर्ण स्थानों पर प्रतिष्ठापित की गई हैं। संस्थागत स्तर पर लेक क्षेत्र में चौदह देशों के साथ हमारे सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम हुए हैं। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के सहयोग से भारतीय कलाकार और

शिक्षाविद इस क्षेत्र की यात्रा पर गए हैं। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा प्रदत्त छात्रवृत्तियों से इच्छुक छात्रों ने भारतीय शैक्षिक संस्थाओं में प्रवेश लिया है। सूरीनाम, ट्रिनिडाड एवं टोबैगो और गुयाना जैसे देशों में जहाँ भारतीय मूल के व्यक्तियों की पर्याप्त जनसंख्या है, भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र फल फूल रहे हैं। आईटेक कार्यक्रम के तहत अधिकारियों, विशेषज्ञों तथा तकनीकी कर्मियों के लिए भारत में प्रशिक्षण और अध्ययन दौरे अन्य प्रमुख तंत्र हैं जिससे हम लातिन अमरीकी तथा केरिबियाई देशों के साथ परस्पर लाभकारी संबंध बनाते हैं।

इस क्षेत्र में प्रजातंत्रीकरण और आर्थिक उदारीकरण की दिशा में लगातार प्रगति देखने को मिली है। आलोच्य वर्ष के दौरान मेक्सिको, सूरीनाम, वेनेजुएला, डोमिनिकन गणराज्य हैती और पेरू में राष्ट्रपति चुनाव संपन्न हुए हैं यद्यपि पेरू में चुनावी गड़बड़ी से फूजीमोरी सरकार गिर गई तथा अंतरिम सरकार बनी जो अगले वर्ष नए चुनाव कराएगी। इस वर्ष ट्रिनिडाड और टोबैगो (दिसम्बर) तथा गुयाना (मार्च) में भी संसदीय चुनाव हुए। इन देशों में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मसलों पर अखिल-अमरीकी दृष्टिकोण विकसित करने की ओर झुकाव भी दिखाई दे रहा है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए हमने क्षेत्रीय संगठनों के साथ संस्थागत संबंध स्थापित किए हैं। आर्गेनाइजेशन ऑफ अमरीकन स्टेट्स (ओ. ए. एस.), द एसोशिएशन ऑफ केरिबियन स्टेट्स (ए. सी. एस) और द एनडीन कम्यूनिटी में भारत को पर्यवेक्षक सदस्य का दर्जा प्राप्त है। जार्जटाउन (गयाना) में स्थित हमारे हाई कमिश्नर को केरिकाम में भारत के राजदूत का भी कार्यभार सौंपा गया है। हम नियमित रूप से इन संगठनों की बैठकों में सहभागिता कर रहे हैं। रियो ग्रुप के साथ संवाद प्रक्रिया भी स्थापित की गई है और हम मेरकोसूर के साथ भी संस्थागत संबंध स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं।

इस वर्ष बहुत सी उच्च स्तरीय यात्राओं का आदान-प्रदान हुआ तथा परस्पर हित के बहुत से क्षेत्रों में करार सम्पन्न किए गए।

वाणिज्य और उद्योग राज्य मंत्री श्री उमर अबदुल्ला 10-11 मई 2000 को अर्जेन्टाइना गए। अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने अर्जेन्टाइना के स्वास्थ्य मंत्री डा. हेक्टर लोम्बाडों, आर्थिक मंत्री श्री जोस लुइस मकीनिया, और वाणिज्य उद्योग और खान विभाग की सचिव सुश्री डेबोरा गियोरजी से मुलाकात की। राज्य मंत्री महोदय के साथ वार्ता में भारतीय उत्पादों विशेषकर दवाओं के लिए अर्जेन्टाइना के बाजार पहुंच की सुविधा विषय

शामिल था। उन्होंने एम ई आर सी ओ एस यू आर के साथ ढाँचागत करार द्वारा सहयोग को संस्थागत बनाने में भारतीय हितों पर भी चर्चा की।

विदेश राज्यमंत्री श्री अजित कुमार पांजा ने 28-30 अगस्त 2000 तक अर्जेन्टाइना की यात्रा की। अर्जेन्टाइना के विदेश मंत्री तथा स्वास्थ्य मंत्री के साथ अपनी वार्ताओं में विदेश राज्यमंत्री ने अर्जेन्टाइना के बाजारों में भारतीय दवा उत्पादों के प्रवेश की संभावना सहित बहुत से द्विपक्षीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय मसलों पर चर्चा की। इस यात्रा के दौरान अधिकारिक स्तरीय वार्ताएं भी हुईं। भारतीय पक्ष का नेतृत्व सचिव (पश्चिम) श्री आर एस काल्हा ने किया। यात्रा के दौरान दोनों देशों के विदेश सेवा संस्थाओं के बीच सहयोग करार सम्पन्न हुआ।

मानव संसाधन विकास मंत्री डा. मुरली मनोहर जोशी ने बारबाडोस की शिक्षा, युवा मामलों तथा संस्कृति मंत्री सुश्री मिया मोतली को भारत यात्रा का निमंत्रण दिया। सुश्री मोतली ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया। फरवरी 2001 में उनके भारत आने की संभावना है।

बारबाडोस के कृषि और ग्रामीण विकास मंत्री श्री एंथनी वुड के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमण्डल की आइटेक कार्यक्रम के अन्तर्गत अध्ययन के लिए जनवरी/फरवरी 2001 में भारत की यात्रा पर आने की आशा है।

वाणिज्य और उद्योग राज्यमंत्री श्री उमर अब्दुल्ला ने रियो डि जनेरो में विश्व आर्थिक मंच द्वारा आयोजित छठे एम. ई. आर. सी. ओ. एस. यू. आर. आर्थिक शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए 7-10 मई 2000 तक सी आई आई प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व किया। उन्होंने सम्मेलन के दौरान ब्राजील तथा कुछ अन्य दक्षिण अमरीकी देशों के नेताओं के साथ द्विपक्षीय बैठकें कीं।

ब्राजील के स्वास्थ्य मंत्री ने स्वास्थ्य और दवाओं के क्षेत्र में सहयोग घनिष्ठ बनाने हेतु 24-28 जुलाई 2000 तक वरिष्ठ अधिकारियों और दवा उद्योग प्रतिनिधियों के साथ भारत की यात्रा की। इस यात्रा के बाद भारतीय दवा उत्पादों की ब्राजील के बाजारों में पहुँच में नाटकीय ढंग से सुधार हुआ।

सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री प्रमोद महाजन ने भारत और ब्राजील के बीच सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग संवर्धन के लिए 6-11 नवम्बर 2000 तक ब्राजील की यात्रा की। अपनी यात्रा के द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री ने राष्ट्रपति श्री फर्नांडो हेनरिक कार्डोसो

से मुलाकात की तथा ब्राजीलिया में 8 तथा 9 नवम्बर 2000 को अपने आमंत्रणकर्ता ब्राजील के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री श्री रोनाल्डो मोता सारडेन वर्ग से ब्राजीलिया में वार्ता की। इस यात्रा के दौरान सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग करने के लिए भारत-ब्राजील कार्यदल गठन हेतु समझौता ज्ञापन सम्पन्न किया गया।

23 अक्टूबर 2000 को नई दिल्ली में भारत-ब्राजील वार्षिक विदेश कार्यालय स्तर परामर्शों का पांचवा दौर हुआ। सचिव (पश्चिम) श्री आर एस काल्हा, राजदूत श्री इवान कन्नाब्रावा, ब्राजीलियाई विदेश कार्यालय में राजनीतिक मामलों के अन्डर सैक्रेटरी जनरल ने बैठक की सह अध्यक्षता की। द्विपक्षीय, क्षेत्रीय तथा बहुपक्षीय मसलों के सभी पहलुओं पर चर्चा की गई। भारत और मंगोलिया ने बहुपक्षीय मंचों पर काफी समय से गहन सहयोग किया था तथा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के सुधार तथा विश्व व्यापार संगठन के कई मसलों पर उनकी एक सी स्थिति है।

अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में सहयोग मजबूत करने के लिए अंतरिक्ष विभाग के सचिव डा. के कस्तुरीरंगन ने एक तकनीकी समिति के साथ 11-16 मार्च 2000 तक ब्राजील की यात्रा की। इसके बाद ब्राजील अंतरिक्ष एजेंसी के महानिदेशक ने सात सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल के साथ 20-28 अगस्त 2000 को भारत की यात्रा की। दोनों पक्षों ने अंतरिक्ष के क्षेत्र में परस्पर सहयोग के लिए एक समझौता ज्ञापन को अंतिम रूप दिया। इस पर शीर्ष ही हस्ताक्षर होने की संभावना है।

सेंता कतारिना राज्य के गवर्नर श्री एसपरिडिआओ अमीन हेलोऊ फिलिहो ने दवाओं सूचना प्रौद्योगिकी तथा कृषि उद्योगों में सहयोग संवर्धन के लिए व्यापारिक एवं आधिकारिक प्रतिनिधिमण्डल के साथ 6-10 नवम्बर, 2000 तक भारत की यात्रा की।

भारतीय उद्योग मण्डल के प्रतिनिधिमण्डल ने नवम्बर 2000 को रियो डि जनेरो, साओ पाउलो तथा ब्राजीलिया की यात्रा की।

वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री श्री उमर अब्दुल्ला ने चिली में 11-13 मई 2000 तक भारतीय उद्योग मण्डल के प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व किया। उन्होंने आर्थिक एवं विदेश संबंध मंत्रालयों में बैठकें कीं। भारत और चिली के बीच मुक्त व्यापार करार के मुद्दे पर कुछ विस्तार से चर्चा की गई। वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री ने एस. ओ. एफ. ओ. एफ. ए. (औद्योगिक विकास संघ), दि सेंटियागो चेम्बर्स ऑफ कामर्स एण्ड दि नेशनल चेम्बर्स ऑफ कामर्स ऑफ चिली के साथ भी बैठक की।

वार्षिक विदेश कार्यालय परामर्श हेतु सचिव (पश्चिम) श्री आर एस काल्हा तथा संयुक्त सचिव (लैक) श्री अमिताव त्रिपाठी 11-12 अगस्त 2000 तक सेंटियागो गए। इस वार्ता में परस्पर हित के द्विपक्षीय, क्षेत्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय मसले शामिल थे।

भारत और चिली के बीच द्विपक्षीय निवेश संवर्धन एवं संरक्षण करार पर वार्ता का प्रथम दौर नई दिल्ली में 14-16 नवम्बर 2000 को हुआ।

विदेश मंत्री ने 6-9 अप्रैल 2000 तक कार्टेजिना में गुट निरपेक्ष आंदोलन देशों के विदेश मंत्रियों के 13वें मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व किया। इस यात्रा के दौरान उन्होंने कोलम्बिया के राष्ट्रपति श्री एन्ड्रेस पेस्ट्राना से भेंट की तथा कोलम्बिया के विदेश मंत्री श्री गुइलरमो फर्नान्डीज डि सोटो से द्विपक्षीय वार्ता की।

भारतीय उद्योग मण्डल के व्यापारिक प्रतिनिधिमण्डल ने 8-11 नवम्बर 2000 तक कोलम्बिया की यात्रा की। इस प्रतिनिधिमण्डल के लिए बोगोटा तथा मेडेलिन में 'भारत संगोष्ठियाँ' तथा व्यापार कार्य कलाप आयोजित किए गए। भारतीय उद्योग मण्डल तथा कोलम्बिया के उद्योग मण्डल ए. एन. डी. आई. के बीच सहयोग के लिए 9 नवम्बर 2000 को समझौता ज्ञापन सम्पन्न किया गया।

कोलम्बिया के राष्ट्रपति 4-7 मार्च 2001 तक भारत की राजकीय यात्रा पर आएंगे। उनकी इस यात्रा से कोलम्बिया के साथ हमारे द्विपक्षीय संबंधों को सुदृढ़ करने तथा आधार प्रदान करने में मदद मिलेगी।

विदेश मंत्री ने कोस्टारिका के विदेश मंत्री महामान्य श्री रोबर्टो रोजास लोपेज को अप्रैल-मई 2001 में भारत की राजकीय यात्रा के लिए आमंत्रित किया।

भारत के राष्ट्रपति ने डोमेनिकन गणराज्य के राष्ट्रपति को भारत की यात्रा के लिए आमंत्रित किया।

मानव संसाधन विकास, विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा सागर विकास मंत्री श्री मुरली मनोहर जोशी ने 10-14 अप्रैल 2000 तक हवाना में सम्पन्न प्रथम जी-77 दक्षिण शिखर सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व किया। अपनी यात्रा के दौरान मानव संसाधन विकास मंत्री ने राष्ट्रपति श्री फिदेल कास्त्रो से मुलाकात की तथा क्यूबा के अन्य गणमान्य व्यक्तियों से मुलाकात की। उन्होंने इण्डोनेशिया के राष्ट्रपति, बेलीज और कम्बोडिया के प्रधानमंत्री तथा भूटान, गुयाना, नेपाल, श्री लंका तथा वियतनाम के विदेश मंत्रियों के साथ सम्मेलन के दौरान मुलाकात की।

दक्षिण शिखर सम्मेलन से पूर्व हवाना में 9-10 मार्च 2000 को हुई सांसदों की कार्यशाला में पूर्व विदेश मंत्री श्री नारायण दत्त तिवारी के नेतृत्व में भारत के संसदीय प्रतिनिधिमण्डल ने भाग लिया।

जमैका के प्रधानमंत्री नवम्बर 2000 में भारत की यात्रा पर आने वाले थे परन्तु भारतीय पक्ष के अनुरोध पर उनकी यह यात्रा टाल दी गयी। यह अतिविशिष्ट यात्रा 25-29 मई, 2001 के लिए पुनः निर्धारित की गई है।

क्यूबा के विदेश व्यापार, केन्द्रीय बैंक तथा निवेश एवं आर्थिक सहयोग मंत्रालय के प्रतिनिधियों से युक्त प्रतिनिधिमण्डल ने भारत को क्यूबा के ऋण के प्रश्न पर विचार करने के लिए 4-7 जुलाई, 2000 तक भारत की यात्रा की।

क्यूबा के कृषि मंत्री जनरल यूलिसेज रोसालेस डेल टोरो 17-21 जुलाई, 2000 तक भारत की यात्रा पर आए। अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने शर्करा विभाग तथा विदेश मंत्रालय के संबंधित अधिकारियों से मुलाकात की।

क्यूबा के एशियाई मामलों के ब्यूरो के निदेशक एल्बर्टो वेलास्को सान जोस के नेतृत्व में विदेश कार्यालय का प्रतिनिधिमण्डल परामर्श हेतु 21-22 अगस्त 2000 को भारत आया।

20 जून 2000 को क्वेटो में भारत और इक्वेडोर के बीच विदेश कार्यालय परामर्श संबंधी समझौता ज्ञापन सम्पन्न किया गया।

27-28 नवम्बर 2000 को भारत-गुयाना संयुक्त आयोग का तीसरा सत्र हुआ। संयुक्त आयोग की बैठक में गुयाना के प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व गुयाना के विदेश मंत्री श्री क्लीमेंट जेम्स रोही ने किया। विदेश मंत्री ने भारतीय प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व किया। 28 नवम्बर 2000 को भारत और गुयाना ने भारत और गुयाना के विदेश सेवा संस्थानों के बीच विदेश कार्यालय स्तरीय परामर्श तथा सहयोग संबंधी दो समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए।

विदेश राज्य मंत्री श्री अजित कुमार पांजा ने 29-31 अक्टूबर 2000 तक मेक्सिको में जी-15 देशों की मंत्री स्तरीय बैठक में भारतीय प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व किया। बैठक में विदेश राज्य मंत्री ने राष्ट्रपति अर्नेस्टो जेडीलो तथा निर्वाचित राष्ट्रपति विसेन्टे फोक्स से मुलाकात की।

1 दिसम्बर 2000 को राष्ट्रपति विसेन्टे फोक्स के राज्यारोहण के समय विदेश राज्य मंत्री श्री यू. वी. कृष्णम राजू ने भारत का प्रतिनिधित्व किया। अपनी यात्रा के दौरान मंत्री जी ने मेक्सिको के नए राष्ट्रपति से मुलाकात की तथा हमारे राष्ट्रपति की ओर से उन्हें भारत भ्रमण का न्यौता दिया।

जेलिस्को राज्य के गवर्नर श्री अल्बर्टो कार्डेनास ने 5-10 सितम्बर 2000 तक आंध्र प्रदेश तथा कर्नाटक की यात्रा की। उनके साथ 15 सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल आया था। इस प्रतिनिधिमण्डल ने सूचना प्रौद्योगिकी कंपनियों तथा ग्रामीण विकास कार्यक्रमों को देखा। गवर्नर ने आंध्र प्रदेश के गवर्नर डॉ. सी रंगराजन से मुलाकात की तथा मुख्यमंत्री श्री चन्द्रबाबू नायडू से विस्तार से चर्चा की। उनकी यात्रा के दौरान सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग के बारे में कई समझौते ज्ञापन सम्पन्न किए गए।

साफ्टवेयर तकनीकी प्रशिक्षण के क्षेत्र में सहयोग की संभावना की तलाश में अगुआस्कालिएंटस राज्य का प्रतिनिधिमण्डल वहाँ के आर्थिक विकास मंत्री के नेतृत्व में 11-20 नवम्बर 2000 तक दिल्ली, हैदराबाद तथा चेन्नई की यात्रा पर आया।

भारतीय उद्योग मण्डल के उच्च स्तरीय व्यापारिक प्रतिनिधिमण्डल ने 28 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2000 तक मेक्सिको की यात्रा की। टेलीकाम संबंधी समझौता ज्ञापन की समीक्षा करने के लिए संयुक्त आयोग के टेलीकाम उप आयोग की मेक्सिको शहर में 25-30 जून 2000 को बैठक हुई। मेक्सिको की आप्रवासन सेवा के प्रमुख ने वीसा प्रक्रिया की पुनरीक्षा के लिए अप्रैल में भारत का दौरा किया इससे मेक्सिको में भारतीय भ्रमणकारियों, पर्यटकों तथा व्यापारियों दोनों के लिए वीसा व्यवस्था का सरलीकरण किया गया।

पनामा सरकार के आमंत्रण पर राजदूत श्री तारा सिंह ने वोकेशलन स्कूल 'सेंट्रो डि एजुकेशन बेसिका जनरल डि सलामानका डि कोलोन' को औद्योगिक उपस्कर दान देने के लिए कोलोन में 26 अप्रैल 2000 को समारोह में भाग लिया। यह उपस्कर भारत सरकार ने आइटेक कार्यक्रम के अन्तर्गत दान में दिया था।

पनामा तथा सहप्रत्यायन के देशों अलसल्वाडोर तथा निकारागुआ के साथ विदेश कार्यालय स्तरीय परामर्श संबंधी समझौता ज्ञापन सम्पन्न होने के अंतिम दौर में है। भारत तथा पनामा के बीच सांस्कृतिक तथा शैक्षिक सहयोग संबंधी करार भी संपन्न होने के अंतिम दौर में है। भारत और पनामा के बीच कृषि अनुसंधान तथा शिक्षा के क्षेत्र में

सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन का प्रारूप तैयार किया जा रहा है।

7-8 अगस्त 2000 को लीमा में भारत और पेरू के बीच प्रथम बार विदेश कार्यालय परामर्श हुआ। भारतीय प्रतिनिधिमण्डल में सचिव (पश्चिम) श्री आर एस काल्हा, तथा संयुक्त सचिव (लैक) श्री अमिताव त्रिपाठी शामिल थे। दोनों पक्षों ने प्रमुख द्विपक्षीय तथा अंतर्राष्ट्रीय मसलों, विशेष तौर पर आतंकवाद का सामना करने तथा संयुक्त राष्ट्र संघ में सुधार, पर उपयोगी विचारों का आदान प्रदान किया।

ट्रिनिडाड और टुबैगो के विदेश मंत्री के आमंत्रण पर विदेश कार्यालय स्तरीय परामर्श हेतु विदेश राज्य मंत्री श्री अजित कुमार पांजा 31 अगस्त से 3 सितम्बर 2000 तक ट्रिनिडाड एवं टुबैगो गए। यात्रा के दौरान विदेश राज्य मंत्री ने राष्ट्रपति श्री एन आर राबिंसन, प्रधानमंत्री श्री वसुदेव पांडेय तथा विदेश मंत्री श्री राल्फ माराज से भेंट की। ट्रिनिडाड और टुबैगो के पदाधिकारियों के साथ विदेश राज्यमंत्री की बैठक में हमारे समस्त द्विपक्षीय संबंधों की समीक्षा करने तथा सहयोग के नए क्षेत्रों, विशेषतौर पर ऊर्जा, लघु उद्योग तथा सूचना प्रौद्योगिकी की पहचान का मौका मिला। दोनों पक्षों ने दोनों देशों के बीच संयुक्त आयोग गठित करने के प्रस्ताव पर भी चर्चा की।

इंडियन आयल कार्पोरेशन के दो सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल ने 1-3 नवम्बर 2000 तक ट्रिनिडाड और टुबैगो की यात्रा की। इस यात्रा का प्रमुख प्रयोजन इंडियन आयल कार्पोरेशन तथा पेट्रोलियम कम्पनी ऑफ ट्रिनिडाड एण्ड टुबैगो लि. (पेट्रो ट्रिनि) तथा ट्रिनिडाड एण्ड टुबैगो नेशनल पेट्रोलियम मार्केटिंग कम्पनी लि. (एन. पी. एम. सी) के बीच तकनीकी सेवा करार पुनर्जीवित करना था। तकनीकी सेवा करार के नवीकरण के अतिरिक्त आई. ओ. सी प्रतिनिधिमण्डल ने ट्रिनिडाड और टुबैगो में ल्यूब आयल संयंत्र चलाने तथा पेट्रोलियम कार्मिकों को भारत में प्रशिक्षण देने, विशेष तौर पर साफ्टवेयर के विकास तथा ट्रिनिडाड और टुबैगो में कस्टोमाइज प्रशिक्षण, के लिए संयुक्त उद्यम स्थापित करने का प्रस्ताव रखा।

भारत और उरुग्वे के बीच मांटेवीडियो में 14-16 अगस्त 2000 को प्रथम बार विदेश कार्यालय स्तरीय परामर्श हुआ। सचिव (पश्चिम) श्री आर एस काल्हा ने भारतीय पक्ष का नेतृत्व किया। दोनों पक्षों ने व्यापार, सूचना प्रौद्योगिकी, संस्कृति, दीर्घावधिक व्यापार वीसा सुविधा तथा उरुग्वे में भारतीय दवा उत्पादों के प्रवेश जैसे क्षेत्रों में सहयोग पर चर्चा की। पर्यटन तथा फाइटोसेनिटेशन में सहयोग की संभावनाओं पर भी विचार किया गया।

सचिव (पश्चिमी) तथा राजदूत महोदय ने 16 अगस्त 2000 को विदेश मंत्री श्री डिडियर ओपरिति बादान से मुलाकात की। विदेश मंत्री ने भारत ओर मरकूसर के बीच संस्थागत सम्पर्क पर अगले वर्ष भारत के साथ वार्ता शुरु करने के मरकूसर के निर्णय के बारे में सूचित किया।

प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने जुलाई में वेनेज्यूएला में राष्ट्रपति श्री हुगो चावेज के पुनः राष्ट्रपति चुने जाने पर उन्हें बधाई संदेश भेजा। राष्ट्रपति श्री हुगो चावेज को तकनीकी खराबी के कारण मुम्बई में रुकना पड़ा (11-12 अगस्त, 2000)। 12 अगस्त 2000 को ओ. ए. जी. सी., रिलाइंस पेट्रोलियम, नागार्जुन फर्टिलाइजर्स, डायमंड एण्ड जेम डेवलेपमेंट कार्पोरेशन आदि के प्रतिनिधियों ने उनसे मुलाकात की। इस बैठक से दोनों देशों के बीच आर्थिक-वाणिज्यिक सम्पर्कों को गति देने में मदद मिली।

हाइड्रोकार्बन से संबद्ध भारत और वेनेज्यूएला कार्यदल की दूसरी बैठक भारत में अप्रैल 2000 में हुई। वेनेज्यूएला ने शिप से रिलाइंस पेट्रोलियम को 3 मिलियन बैरल हैवी क्रूड आयल भेज कर पिछले 20 वर्षों में पहली बार भारत को क्रूड आयल की आपूर्ति की।

राजस्थान में हैवी क्रूड आयल निकालने के लिए वेनेज्यूएला की तकनीक को उपयोग करने की सम्भाव्यता पर विचार करने के लिए इंडियन आयल कार्पोरेशन का एक प्रतिनिधिमण्डल वेनेज्यूएला गया। रिलायंस पेट्रोलियम का एक प्रतिनिधिमण्डल वेनेज्यूएला गया तथा लम्बे समय तक क्रूड आयल की खरीद के लिए वहाँ की राज्य तेल कम्पनी पी. डी. वी. एस. ए. के साथ वार्ता की।

दिसम्बर 2000 में वेनेज्यूएला की सबसे बड़ी तेल कम्पनी पी. डी. वी. एस. ए. ने तेल खनन और उत्पादन के लिए ओ. एन. जी. सी. को 6 ब्लाक देने का प्रस्ताव दिया। परियोजना में ओ. एन. जी. सी. का निवेश 50 मिलियन अमरीकी डालर का होगा। यह पहला मौका है जब वेनेज्यूएला ने किसी विदेशी कम्पनी को अन्तर्राष्ट्रीय टेण्डर प्रक्रिया के बाहर तेल के क्षेत्र में रियायत देने का प्रस्ताव रखा है।

प्राकृतिक आपदा के कारण, जिसने वेनेज्यूएला को झकझोर दिया, भारत द्वारा 20,000 अमरीकी डालर मूल्य की दवाएं वेनेज्यूएला के अधिकारियों को सौंपी गईं।

वेनेज्यूएला का 14 सदस्यीय साफ्टवेयर प्रतिनिधिमण्डल अक्टूबर, 2000 में भारत आया तथा इलैक्ट्रानिक्स एण्ड साफ्टवेयर एक्सपोर्ट प्रमोशन कार्डसिल के साथ समझौता ज्ञापन सम्पन्न किया।

उच्चायुक्त प्रोफेसर परिमल कुमार दास ने 26 जून, 2000 को एंटीगुआ और बारबूडा के गवर्नर जनरल को; अंगुइला के गवर्नर को 17 अप्रैल, 2000 को; सेंट किट्स और नेविस के गवर्नर जनरल को 25 जुलाई, 2000 को, तथा मोंटेसरात के गवर्नर को 21 नवम्बर, 2000 को अपने पद के प्रत्यय पत्र सौंपे।

वेनेज्यूएला में भारत के राजदूत श्री रंगराज विश्वनाथन ने 8 नवम्बर, 2000 को राष्ट्रपति श्री हूगो चावेज को अपने पद के प्रत्यय पत्र सौंपे।

27 अक्टूबर 2000 को श्री ओ. पी. गुप्ता ने डोमिनिकन गणराज्य के राष्ट्रपति को डोमिनियन गणराज्य में भारत के प्रथम राजदूत के रूप में अपने पद के प्रत्यय पत्र सौंपे।

श्री तारासिंह ने 29 मई, 2000 को निकारागुआ के राष्ट्रपति को अपने पद के प्रत्यय पत्र प्रस्तुत किए।

पनामा के राजदूत श्री एलेक्जेंडरो ए गारीडो ए ने 12 मई, 2000 को राष्ट्रपति को अपने पद के प्रत्यय पत्र प्रस्तुत किए।

सूरीनाम के भारत में प्रथम आवासी राजदूत श्री चास नेलसन मिजनल्स ने 15 मई 2000 को राष्ट्रपति को अपने पद के प्रत्यय पत्र प्रस्तुत किए।

पेरु के राजदूत श्री लुइस आर हर्नान्देज ने 3 अगस्त, 2000 को राष्ट्रपति अपने पद के प्रत्यय पत्र प्रस्तुत किए।

चिली के राजदूत श्री मैनुअल कार्देनास अग्यूरी ने 3 अगस्त, 2000 को राष्ट्रपति को अपने पद के प्रत्यय पत्र प्रस्तुत किए।



9

संयुक्त राष्ट्र संघ और अन्तर्राष्ट्रीय संगठन

महासभा सत्र

सहस्राब्दि शिखर सम्मेलन सभा (6-22 सितम्बर, 2000)

सहस्राब्दि शिखर सम्मेलन सभा 6-8 सितम्बर, 2000 के बीच न्यूयार्क में सम्पन्न हुआ। इस शिखर सम्मेलन में 150 राज्याध्यक्षों और/अथवा शासनाध्यक्षों ने भाग लिया जो इस अवसर पर एकत्रित राज्याध्यक्षों /अथवा शासनाध्यक्षों की सबसे अधिक संख्या थी। इस शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता नामीबिया और फिनलैंड के राष्ट्रपतियों द्वारा संयुक्त रूप से की गई। अधिकतर विकासशील देशों ने इस अवसर पर अपनी हित चिन्ता के मुख्य मसलों पर और इसके साथ-साथ संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के पुनर्गठन और सुधार की आवश्यकता के लिए जोर दिया। 155 से अधिक देशों ने सहस्राब्दि शिखर सम्मेलन और महासभा में अपने वक्तव्य में सुरक्षा परिषद के सुधार और पुनर्गठन की आवश्यकता के लिए विशेष उल्लेख किया। 70 से अधिक देशों ने सुरक्षा परिषद सदस्यता के स्थायी और गैर-स्थायी दोनों श्रेणियों के विस्तार के लिए अपनी सहायता देने का संकेत दिया है, और कई देशों ने वृहत् स्थायी श्रेणी में विकसित और विकासशील दोनों देशों में प्रतिनिधित्व के लिए समर्थन व्यक्त किया है।

भारत के दृष्टिकोण से, भारत के हितों को परिलक्षित करने हुए सहस्राब्दि शिखर सम्मेलन द्वारा पारित घोषणा में प्रभुसम्पन्नता के सिद्धान्तों, अहस्तक्षेप और सहिष्णुता के मूल्य का उल्लेख किया गया है। यह सुरक्षा परिषद के व्यापक सुधार की आवश्यकता को मान्यता देता है। यह नाभिकीय खतरों को समाप्त करने के तरीकों की पहचान करने

के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के लिए भी आह्वान करता है और अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय को संघर्ष करने तथा जन-विध्वंस के शस्त्रों के खतरो को समाप्त करने का आह्वान करता है। इस घोषणा में आगे स्पष्ट किया है कि अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद के विरुद्ध संयुक्त कार्यवाई करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय ने संकल्प लिया और यथा संभव सभी सम्बद्ध अन्तर्राष्ट्रीय अभिसमयों को स्वीकार किया।

प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय भारतीय शिष्टमंडल सहस्राब्दि शिखर सम्मेलन में गया जहां पर उन्होंने 8 सितम्बर 2000 को इस सम्मेलन को सम्बोधित किया। अपने इस वक्तव्य में प्रधानमंत्री ने अन्य बातों के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद के विरुद्ध संयुक्त विश्वव्यापी कार्यवाई करने और आतंकवाद के विरुद्ध व्यापक अभिसमय के शीघ्र समापन के लिए आह्वान किया। प्रधानमंत्री ने यह भी दोहराया कि किसी भी लक्ष्य के मानदण्ड के आधार पर सुरक्षा परिषद के विस्तार में स्थायी सदस्यता के लिए भारत का दावा स्वाभाविक है।

सहस्राब्दि शिखर सम्मेलन के दौरान, कई अन्तर्राष्ट्रीय अभिसमय सम्पन्न किए गए और उनका अनुसमर्थन किया गया। भारत की ओर से प्रधानमंत्री ने आतंकवाद वित्तपोषण के दमन के लिए अन्तर्राष्ट्रीय अभिसमय पर हस्ताक्षर किए।

प्रधानमंत्री के साथ विदेश मंत्री श्री जसवंत सिंह ने सहस्राब्दि शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए 5-13 सितम्बर, 2000 तक न्यूयार्क की यात्रा की। विदेश मंत्री ने 8 और 9 सितम्बर की गोल मेज बैठकों में भारत का प्रतिनिधित्व किया जो सहस्राब्दि शिखर सम्मेलन के अन्योन्य सत्रों के रूप में आयोजित की गई थी, जहां उन्होंने अन्य

बातों के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय में नाभिकीय मुक्त विश्व महसूस करने और आतंकवाद औषधियों और शस्त्रों का अवैध व्यापार की चुनौतियों का दृढ़ता से सामना करने की आवश्यकता पर बल दिया।

विदेश मंत्री श्री जसवन्त सिंह के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय भारतीय शिष्टमंडल ने 18-20 सितम्बर 2000 तक संयुक्त राष्ट्र महासभा (अर्थात् सहस्राब्दि सभा) के 55वें नियमित सत्र में भाग लिया। विदेश मंत्री ने 19 सितम्बर, 2000 को आम बहस में संयुक्त राष्ट्र महासभा को सम्बोधित किया, अन्य बातों के साथ-साथ नाभिकीय मुक्त विश्व के लिए अनुरोध किया तथा आतंकवाद, औषधियों और राज्यों के अवैध व्यापार से उठने वाली चुनौतियों को विशेषरूप से 'धार्मिक कट्टरपन और सैन्य साहस' से संबद्ध हो, का दृढ़ता से सामना करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय का आह्वान किया है। विदेश मंत्री ने यह भी बताया कि यद्यपि संयुक्त राष्ट्र की सदस्यता में पिछली सदी, इसकी सदस्यता 189 पर स्थिर थी, में विविधता आई है, सुरक्षा परिषद का वही बुनियादी ढांचा है जो 1945 के ओपनिवेशिक विश्व में था। तथापि सुरक्षा परिषद की कार्यवाहियों का प्रभाव विकासशील देशों द्वारा महसूस किया गया। उनका अपनी नीति निर्माण में भी थोड़ा प्रभाव था। इसमें आगे विदेश मंत्री ने यह भी बताया कि सार्वभौमिक सर्वसम्मति से यह पाया गया कि द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामों में सुरक्षा परिषद द्वारा की गई कार्यवाही का रूप पुराना था और यह वृहत् सदस्यता के तर्क पर परिलक्षित होना चाहिए, इसी संदर्भ में उन्होंने स्थायी सदस्यता का उतरदायित्व लेने के लिए भारत की इच्छा की पुनः पुष्टि की है।

भारत ने संयुक्त राष्ट्र सहस्राब्दि शिखर सम्मेलन और सभा की तैयारी प्रक्रिया में सक्रिय और रचनात्मक रूप से भाग लिया और यह सुनिश्चित किया कि इसके हितों का सम्बद्ध परिणामों में समायोजित कर लिया गया है। घोषणा के अनुसरण के लिए एक प्रक्रिया अलग से शुरू की गई है और भारत उसका सक्रिय भागीदार रहा है।

भारत "अफगानिस्तान में स्थिति और शान्ति और सुरक्षा पर उसके दुष्प्रभाव" से सम्बद्ध वार्षिक महासभा संकल्प, जो सह-प्रायोजित भी है, के बारे में पूरी तरह से जुड़ा रहा और इस संबंध में उससे काफी विचार-विमर्श भी हुआ। इस संकल्प में अन्य बातों के साथ-साथ संयुक्त राष्ट्र की उस प्रमुख भूमिका को दोहराया गया है जो उसे अफगानिस्तान समस्या के समाधान शत्रुतापूर्ण गतिविधियों को रोकने की मांग की गई

है, मुख्यतः तालिबान सेना में ऐसे गैर-अफगानी कार्मिकों की बड़ी संख्या का उल्लेख है जिन्हें धार्मिक क्षेत्रों से लिया गया है और अफगानी पक्षों को विदेशी सैन्य सहायता की कड़ी निन्दा की गई है। इसमें इस दृष्टिकोण को भी दोहराया गया है कि अफगानिस्तान में चल रहा संघर्ष क्षेत्र की शान्ति और स्थायित्व के लिए निरन्तर खतरा बनता जा रहा है। इस संकल्प में यह भी मांग की गई है कि तालिबान अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवादियों की भर्ती को रोके, आतंकवादियों के प्रशिक्षण शिविरों को बन्द करे और यह सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी कदम उठाए कि उनका क्षेत्र अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवादी गतिविधियों को चलाने के लिए उपयोग में नहीं लाया जाता है। इसमें तालिबान के नशीले पदार्थों से संबंधित सभी प्रकार की गैर-कानूनी गतिविधियों और गैर-कानूनी औषधों के उत्पादन और अवैध व्यापार पर रोक लगाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय प्रयासों का समर्थन करने की मांग भी की गई है। इस संकल्प को 80 देशों ने सहप्रायोजित किया (इससे पहले इतना अधिक कभी नहीं) जिससे तालिबान शासन के अलग-थलग पड़ जाने की स्थिति का पता चलता है।

संयुक्त राष्ट्र महासभा आपातकालीन विशेष सत्र (18-19 अक्टूबर, 2000)

अरब राज्य लीग के अनुरोध पर संयुक्त राष्ट्र महासभा का दसवां आपात विशेष सत्र 18 और 19 अक्टूबर, 2000 को बुलाया गया। इजरायल फिलिस्तीन के अलावा, कई पी 5 सदस्यों और दक्षिण अफ्रीका, जिन्होंने नाम की ओर से बोला, 54 देशों ने इस सम्मेलन को सम्बोधित किया। भारतीय वक्तव्य, श्री एम.एल.खुराना द्वारा दिया गया था जो भारतीय गैर-सरकारी शिष्टमंडल के भाग के रूप में न्यूयार्क में थे। इस वक्तव्य में इन बातों के साथ-साथ नियंत्रण का पालन करने, छेड़खानी से बचने, बल का प्रयोग करने अथवा हिंसा को प्रोत्साहन देने से बचने की मांग की और दोनों पक्षों के बीच सभी मसलों के उचित, व्यापक और चिरस्थायी निपटान के लिए वार्ता और शांतिपूर्ण बातचीत की आवश्यकता पर बल दिया। प्रभुसम्पन्नता की अपनी परम्परा और फिलिस्तीन कारण के लिए समर्थन को ध्यान में रखते हुए, हमने नाम वक्तव्य के साथ अपने आप को जोड़ा है। महासभा के 10 वें आपात विशेष सत्र में 'अधिकृत जेरूसलम और शेष अधिकृत फिलिस्तीन क्षेत्र में अवैध इजरायली कार्यवाहियों पर संकल्प 92 मतों से पारित किया गया इसमें, 6 मत विरोध में तथा 46 गैर हाजिर थे। इस संकल्प ने अन्य बातों

के साथ-साथ, 28 सितम्बर, 2000 को हुई हिंसा की निंदा की, मिस्त्र में शर्म-एल-शेख शिखर सम्मेलन में हुई समझबूझ के लिए समर्थन व्यक्त किया, हिंसा को तुरन्त समाप्त करने की मांग की और यह भी इजरायल, अधिकृत सत्ता, चौथे जेनेवा अभिसमय के अन्तर्गत इसके कानूनी दायित्वों का ईमानदारी से पालन करे और यह दोहराया कि अधिकृत फिलिस्तीन क्षेत्र में इजरायली समझौता अवैध था। उन्होंने तथ्य निर्णायक समिति से सम्बद्ध शर्म-एल-शेख तक पहुंची समझबूझ का कड़ा समर्थन किया और अविलम्ब इसकी स्थापना की मांग की।

सुरक्षा परिषद से सम्बंधित राजनीतिक मसले और गतिविधियाँ

भारत ने सिप्रा लियोन, बाल और सशस्त्र संघर्ष, महिला और शांति तथा सुरक्षा और मध्य-पूर्व में स्थिति समेत कई मसलों पर सुरक्षा परिषद की खुली बैठक में भाग लिया और उनका योगदान उल्लेखनीय था। महिला और शांति और सुरक्षा पर विदेश मंत्रालय से सम्बद्ध संसदीय स्थायी समिति की अध्यक्ष श्रीमती कृष्ण बोस द्वारा 24 अक्टूबर 2000 को एक वक्तव्य दिया गया।

अफगानिस्तान

अफगानिस्तान में हुई गतिविधियों पर हमारी गहन और सतत् चिंता को स्वीकार करने के विचार से, भारत ने रूस, यूरोपीय संघ, अमरीका इत्यादि जैसे देशों के साथ निकटता से कार्य किया है और तालिबान के विरुद्ध और प्रतिबन्ध बढ़ाने के लिए सुरक्षा परिषद में संकल्प को सह प्रायोजित किया। रूस और अमरीका द्वारा सामने रखे गए संकल्प को किर्गीजस्तान, ताजिकिस्तान और भारत द्वारा सहप्रायोजित किया गया था। इस संकल्प में तालिबान में आतंकवाद को सभी सहयता रोकने और सभी आतंकवादी प्रशिक्षण शिविरों को समाप्त करने के लिए कहा गया और तालिबान पर प्रतिबन्ध शस्त्रों की रोक समेत, और उप मंत्री या इसमें अधिक के रेंक के तालिबान के सभी वरिष्ठ अधिकारियों, तालिबान के नियंत्रण के अन्तर्गत सशस्त्र कार्मिकों के समकक्ष रेंक और तालिबान के वरिष्ठ सलाहकार और गणमान्य व्यक्तियों की यात्रा पर प्रतिबन्ध भी लगाया गया। इस संकल्प में उस्मा बिन लादेन और उनके साथ जुड़े व्यक्तियों तथा सत्ता की निधियों और अन्य वित्तीय परिसम्पत्तियों को भी रोक (फ्रीज) दिया गया।

भारत-अफगानिस्तान में स्थिति और शांति तथा सुरक्षा के लिए इसका तात्पर्य' पर वार्षिक महासभा संकल्प से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है और इस सम्बंध में व्यापक रूप से परामर्श करता रहा है, जिसे सह-प्रायोजित भी किया गया है। इस संकल्प में अन्य बातों के साथ-साथ, प्रमुख भूमिका को दोहराया कि संयुक्त राष्ट्र को अफगान समस्या का समाधान ढूंढना चाहिए, तालिबान बलो, जिन्हें धार्मिक स्कूलों इत्यादि से निकाला गया, की ओर से प्रमुखतः बड़ी संख्या में गैर-अफगान कार्मिकों के सन्दर्भ में सभी सशस्त्र वैमनस्य को समाप्त करने के लिए तालिबान से अपील की और अफगान पार्टियों को विदेशी सैन्य सहायता देने की कड़ी निंदा की। उन्होंने इस विचार को भी दोहराया कि अफगानिस्तान में निरन्तर हो रहे संघर्ष से क्षेत्र में शांति और स्थायित्व का जोखिम बढ़ा है। और इस संकल्प में यह भी मांग की गई कि तालिबान अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवादियों और उनके संगठनों को सुरक्षित स्वर्ग की सुविधा प्रदान करने से दूर रहे, आतंकवादियों की भर्ती को रोकें, आतंकवादी प्रशिक्षण शिविरों को बंद करे और यह सुनिश्चित करने के प्रभावी उपाय करे कि उनके क्षेत्र को अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवादी प्रक्रियाओं का प्रायोजन करने के लिए प्रयोग नहीं किया जाता है। उन्होंने तालिबान को अवैध औषध संबंधी सभी क्रियाकलापों को रोकने और अवैध औषधियों के निर्माण और अवैध व्यापार पर प्रतिबन्ध लगाने के अन्तर्राष्ट्रीय प्रयासों का समर्थन करने की अपील की। इस संकल्प को तालिबान शासन प्रणाली को पृथक् करने की सीमा दर्शाते हुए, 80 देशों (पहले से भी अधिक) द्वारा सह-प्रायोजित किया गया था।

अफगानिस्तान में यू एन एस जी के वैयक्तिक प्रतिनिधि फ्रान्सेस्क बेनड्रेल द्वारा भारत की यात्रा

अफगानिस्तान में यू एन एस जी के वैयक्तिक प्रतिनिधि वे फ्रान्सेस्क बेनड्रेल और अफगानिस्तान के संयुक्त राष्ट्र विशेष मिशन के अध्यक्ष ने 2-5 मई 2000 तक भारत की यात्रा की और विदेश मंत्री तथा विदेश सचिव के साथ बैठकें की भारत से परामर्श करते हुए, उन्होंने इस्लामाबाद, काबुल, दुशावे, अशगाबात ताराकंद और मास्को की अपनी यात्राओं का व्यापक संक्षेपण भी दिया। यह यात्रा महत्वपूर्ण मानी गई चूंकि इसके तुरन्त बाद उन्होंने कार्यभार संभाला और भारत की भूमिका और अफगानिस्तान में हितों की मान्यता परिलक्षित हुई।

फ्रान्सेस्क बेनड्रेल ने परामर्श के लिए 29 नवम्बर से 3 दिसम्बर तक दिल्ली की यात्रा

दोबारा की। उन्होंने अपर सचिव (संयुक्त राष्ट्र) से मुलाकात की और विदेश मंत्री विदेश सचिव और राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के सचिव से भी मुलाकात की। उन्होंने अफगानिस्तान की हाल की यात्रा विशेषरूप से संयुक्त राष्ट्र प्रायोजक वार्ता प्रक्रिया के सभी पक्षों द्वारा प्रतिबद्ध करार पर संक्षेपण किया।

गैर-स्थायी सदस्यों का चुनाव

10 अक्टूबर, 2000 को, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2001-2002 अवधि के लिए सुरक्षा परिषद के पांच नए गैर-स्थायी सदस्यों को निर्वाचित किया कोलम्बिया, आयरलैंड, मारीशस, नार्वे और सिंगापुर। ये देश अर्जेंटीना, कनाडा, मलेशिया, नामीबिया और नीदरलैंड की जगह निर्वाचित किए गए हैं, इन देशों का कार्यकाल 31 दिसम्बर 2000 को समाप्त हो गया है।

पश्चिम यूरोप और अन्य राज्यों से रिक्ति मतदान के चौथे दौर में केवल तभी भरी गई थी जबकि नार्वे ने इटली के 57 के स्थान पर अधिकतम 115 मत प्राप्त किए थे। अफ्रीका का स्थान भी चौथे मतदान के दौरान भरा गया था जब 113 मत प्राप्त हुए थे, जो अपेक्षित बहुलता प्राप्त करने से भी अधिक थे।

सुरक्षा परिषद के पांच अन्य गैर-स्थायी सुरक्षा परिषद के सदस्य जो 31 दिसम्बर, 2001 तक अगले वर्ष के लिए रहेंगे, हैं- बंगलादेश, जमैका, माली, ट्यूनिशिया और उक्रेन।

विवाचित हीरे

अफ्रीका में अवैध रूप से हीरों का व्यापार और विद्रोही आंदोलन में इसके वित्तपोषण के बीच संबंध अन्तर्राष्ट्रीय कार्यसूची में मुख्य कोड बन गया है। 5 जुलाई, 2000 को, सुरक्षा परिषद, चार्टर में अध्याय-VIII के अन्तर्गत कार्यरत बने 18 माह की अवधि के लिए विवाचित हीरों के व्यापार पर प्रतिबन्ध लगाते हुए एक संकल्प 1306 (2000) पारित किया और सभी राज्यों से ऐसे विवाचित हीरों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष आयात को निषेध करने के लिए ऐसे आवश्यक उपाय उठाने का आह्वान किया है। भारत ने इसका स्वागत किया और विवाचित हीरों पर प्रतिबन्ध का समर्थन किया।

तदन्तर 1 दिसम्बर को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 'विवाद को बढ़ाने में हीरों की

भूमिका' पर एक व्यापक संकल्प पारित किया था। यह संकल्प मतदान के बिना पारित किया गया था और 50 देशों से अधिक देशों द्वारा सह प्रायोजित किया गया जिसमें रूस, इजरायल और भारत शामिल हैं। एक देश के रूप में चिंता का विषय है कि हीरे का उद्योग अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है यह सुनिश्चित है कि ऐसे उपायों से हीरे के उचित व्यापार को प्रभाव नहीं पड़ता जो 1 मिलियन लोगों को रोजगार दे देता है न कि वास्तविक विकास चिंताओं से ध्यान परिवर्तित करता है। इससे भी अधिक इस संकल्प का प्रावधान है कि किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय प्रमाणन को मुख्यतः राष्ट्रीय प्रमाणन योजनाओं पर आधारित होना चाहिए।

संयुक्त राष्ट्र सदस्यता के लिए युगोस्लाविया संघीय गणराज्य का प्रवेश

सर्वसम्मति के निर्णय से 31 अक्टूबर को सुरक्षा परिषद ने महासभा को सिफारिश की कि युगोस्लाविया संघीय गणराज्य को संयुक्त राष्ट्र में सदस्यता के लिए प्रवेश दिया जाए। सुरक्षा परिषद ने युगोस्लाव राष्ट्रपति वोजीस्लाव कोस्तूनिका जिन्होंने अपने अनुरोध के पीछे प्रेरणा के रूप में अपने देश में हुए 'मूलभूत लोकतांत्रिक परिवर्तनों' का उल्लेख किया, द्वारा सदस्यता के लिए भेजे गए आवेदन पत्र के प्रत्युत्तर में कार्यवाई की। संयुक्त राष्ट्र में शामिल होने के अनुरोध करने वाले सभी राज्यों की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए, राष्ट्रपति कोस्तूनिका ने संयुक्त राष्ट्र चार्टर में समाविष्ट दायित्वों को स्वीकार करने और उन्हें पूरा करने की प्रतिज्ञा ली। तदन्तर 1 नवम्बर, 2000 को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने सुरक्षा परिषद के निर्णय को पृष्ठांकित करते हुए तथा युगोस्लाविया संघीय गणराज्य को संयुक्त राष्ट्र का सदस्य स्वीकार करते हुए सर्वसम्मति से एक संकल्प पारित किया। भारत ने महासभा के इस संकल्प को सह-प्रायोजित किया।

सुरक्षा परिषद का पुनर्गठन और सुधार

सुरक्षा परिषद के पुनर्गठन और सुधार पर विचार-विमर्श को अप्रैल, 2000 में कुछ बढ़ावा मिला, जब अमरीका ने 21 से अधिक सदस्यों से सुरक्षा परिषद का विस्तार करने के विचार पर अपनी तत्परता दिखाई तथा उनको हटाया जो इसमें पहले बाधा बने हुए थे, इसके अतिरिक्त पर्याप्त संख्या में देशों ने सहस्त्राब्दि शिखर सम्मेलन और महासभा में अपने वक्तव्यों द्वारा इस मामले में विचार विमर्श में सक्रियता दिखाते हुए सुरक्षा परिषद में सुधार और उसके पुनर्गठन, सुरक्षा परिषद सदस्यता के स्थायी और अस्थायी दोनों

श्रेणियों के विस्तार और बृहत् स्थायी श्रेणी में विकसित और विकासशील देशों का प्रतिनिधित्व के मांग की।

संयुक्त राष्ट्र महासभा के 16 और 17 नवम्बर, 2000 को सम्पन्न पूर्ण सत्र में “सुरक्षा परिषद की सदस्यता में समान प्रतिनिधित्व के प्रश्न और उसकी सदस्यता बढ़ाने” पर आगे विचार-विमर्श किया गया। इस वर्ष विचार-विमर्श में 108 देशों ने बोला, जो कि हाल के वर्षों में सबसे अधिक संख्या थी।

सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता के लिए भारत की उम्मीदवारी हेतु समर्थन

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भारत की उम्मीदवारी के समर्थन को बल मिला है। पी-5 में से (सुरक्षा परिषद के 5 स्थायी सदस्य), कई देशों ने सुरक्षा परिषद में स्थायी सीट के लिए भारत की उम्मीदवारी का समर्थन किया है और सकारात्मक संकेत दिए हैं। राष्ट्रपति श्री के. आर. नारायणन की अप्रैल 2000 में फ्रांस यात्रा के दौरान फ्रैंच राष्ट्रपति जेक्यूस चिराग ने 17 अप्रैल 2000 को अपने रात्रि भोज के भाषण में यह बताया कि “भारत को वास्तव में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य बनने के लिए निर्दिष्ट किया गया है। फ्रांस इसका समर्थन करता है और उसकी उम्मीदवारी के लिए समर्थन करेगा।” संयुक्त राष्ट्र महासभा के 16 नवम्बर 2000 को सम्पन्न पूर्ण सत्र में बहस के दौरान, रूसी प्रतिनिधि ने कहा कि रूसी परिसंघ सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सहायता के लिए भारत की उम्मीदवारी को समर्थ और उपयुक्त मानता है और दोनों श्रेणियों में परिषद के विस्तार करने का निर्णय लिया जाना चाहिए। यू. के. और अमरीका ने, भारत को वास्तविक प्रतियोगी स्वीकार करके, सकारात्मक संकेत दिए हैं। 7 अक्टूबर 2000 को अमरीका प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि “इसमें कोई शंका नहीं है कि सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भारत एक अत्यधिक समर्थ प्रतियोगी है। इसका आकार, विश्व में भूमिका, इसकी अर्थव्यवस्था, संयुक्त राष्ट्र में शांति स्थापना में इसका योगदान, इन सब विशिष्टताओं से भारत एक अत्यधिक संजीदा और समर्थ प्रतियोगी है। विदेश और राष्ट्रकुल कार्य के ब्रिटिश सेक्रेटरी ऑफ स्टेट रॉबिन कुक ने 15-18 अप्रैल 2000 की अपनी भारत यात्रा के दौरान यह संकेत दिया कि यू. के. भारत को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए वास्तविक प्रतियोगी के रूप में देखता है”।

सहस्राब्दि शिखर सम्मेलन और सहस्राब्दि महासभा के दौरान, कम्बोडिया, वियतनाम और भूटान ने भारत की उम्मीदवारी के लिए अपने समर्थन को दोहराया। द्विपक्षीय विचार-विमर्श के दौरान कई अन्य देशों में समर्थन के भी संकेत मिले हैं।

शांति स्थापना

वर्ष के दौरान भारत संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना प्रचालन में एक सबसे बड़े दल के अंशदाता के रूप में उभरा है। अधिकांश भारतीय दल (3000 से अधिक) सिएरा लियोन में संयुक्त राष्ट्र मिशन (यू. एन. ए. एम. एस. आई. एल.) में तैनात थे, जिनके दल का कमांडर भारत के मेजर जनरल बी. के. जेतली थे। अन्य भारतीय योगदान लेबनान में संयुक्त राष्ट्र मिशन बटालियन (यू. एन.आई.एफ. आई. एल.), कोंगो लोकतांत्रिक गणराज्य में संयुक्त राष्ट्र मिशन में सैन्य प्रेक्षक (एम. ओ. एन यू. सी.), यू. एन. जी. सी. आई. (इराक) इथोपिया और एरीजिया में संयुक्त राष्ट्र मिशन (यू. एन. एम. ई. ई.), इराक-कुवैत पर्यवेक्षण मिशन (यू. एन. आई. के. ओ. एम.) तथा बोस्निया और हर्जगोविना में संयुक्त राष्ट्र मिशन में पुलिस अधिकारियों (यू. एन. एम. आई. वी. एच.), कोस्वो (यू. एन. एम. आई. के.), पश्चिम सहारा (एम. आई. एन. यू. आर. एस. ओ.) और सिएरा लियोन (यू. एन. ए. एम. एस.आई. एल.) से था। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की रेपिड एक्शन फोर्स (आर. ए. एफ.) की दो कम्पनियाँ अप्रैल में कोस्वो में तैनात की गई थी।

यू. एन. ए. एम. एस. आई. एल.

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के 22 अक्टूबर, 1999 के संकल्प 1270 के अनुसरण में भारत ने सिएरा लियोन में संयुक्त राष्ट्र शान्ति स्थापना मिशन के प्रति दो इन्फैन्ट्री बटालियनों, विमानन यूनिटों और समर्थन घटकों का योगदान दिया। 1270 के संकल्प के अनुसरण के प्रारम्भ में मुख्य बागी दल रेबुलरानरी यूनाइटेड फ्रंट (आर यू एफ) ने जुलाई 1999 के रोम शांति करार के अन्तर्गत अपनी वचनबद्धता को पूरा नहीं किया और संयुक्त राष्ट्र शान्ति स्थापना बल के विरुद्ध वैमनस्य आरंभ हो गया। लगभग 2½ माह में 221 भारतीय शांति स्थापक और 11 सैन्य प्रेक्षक और आर. यू. एफ. द्वारा घिरे हुए थे। इस घेराबन्दी को हटाने में मेजर जनरल बी. के. जेतली के कमांड में भारतीय टुकड़ियों की भूमिका की संयुक्त राष्ट्र और विश्व मीडिया में सराहना की गई। इस आपरेशन में दुर्भाग्यवश एक भारतीय सैनिक को अपना जीवन गंवाना पड़ा।

यूनामसिल से भारतीय टुकड़ियों को चरणबद्ध रूप में हटाने के निर्णय के अनुसरण में 6 नवम्बर 2000 को आरंभ किए गए मिशन क्षेत्र के भीतर टोलियों के प्रवेश को रोका गया। नवम्बर माह के दौरान हेस्टिंग्स से आगे जाने के लिए दाऊ और केनेया से 506 कार्मिकों के प्रवेश को रोका गया। चरण-ए के अन्तर्गत 6 और 24 दिसम्बर के बीच 1404 टोलियों को भारत वापिस भेजा जाना निर्धारित किया गया। 300 टोलियों की पहली यात्री उड़ान 8 दिसम्बर को नई दिल्ली पहुंची, शेष 186 टोलियाँ चरण-ए के अन्तर्गत जनवरी के प्रथम सप्ताह में शुरू होगी, भारत वापिस लौटेंगी। यह आशा की जाती है कि सिएरा लियोन से भारतीय टोलियों के प्रवेश को पूरी तरह रोकने का काम वर्ष 2001 के फरवरी माह के मध्य तक पूरा हो जाएगा।

यू. एन. ए. एम. एस. आई. एल. से अपनी सेना हटा लेने के भारत के निर्णय के बाद 26 दिसम्बर, 2000 के प्रथम चरण के अन्तर्गत वापसी का कार्य पूरा हो गया। इस चरण में 1442 भारतीय सैनिक भारत लौटे। शेष 1621 सैनिक 26 जनवरी से 11 फरवरी, 2001 की अवधि के दौरान द्वितीय चरण में वापस आएंगे।

यूनीफिल (लेबनान)

लेबनान (यूनीफिल) में संयुक्त राष्ट्र अन्तरिम बल दक्षिण लेबनान पर इजरायल के कब्जे के बाद 1978 में स्थापित किया गया था। भारत ने नवम्बर 1998 में 619 रैंकों की इन्फैन्ट्री बटालियन जुटाई। वर्ष के दौरान भारत ने भारतीय बटालियन को सुदृढ़ करने के लिए 172 अतिरिक्त टोलियों का योगदान दिया। भारत ने यूनीफिल के डिप्टी फोर्स कमांडर के पद के लिए ब्रिगेडियर जी. अथमनाथन की सेवाएं भी उपलब्ध करायीं।

आर्मी स्टाफ के चीफ लेफ्टिनेंट जनरल आर. के. साहनी ने भारत की आपातकालीन स्थिति की पूर्ति करने और दक्षिण लेबनान के पूर्व इजरायली नियंत्रक क्षेत्र से इजरायली रक्षा बल को निकालने के पश्चात भूमि पर स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए 28 से 30 अगस्त, 2000 तक लेबनान की यात्रा की। यद्यपि इजरायली रक्षा बलों और हिजबुल्लाह दल के बीच छुट-पुट हिंसा की घटनाएं हुईं परन्तु भारतीय सैनिक सुरक्षित हैं और कुशल हैं।

नवम्बर, 1998 के बाद से भारत ने लेबनान में संयुक्त राष्ट्र मिशन को एक इन्फैन्ट्री बटालियन भेजी है, और प्रत्येक 6 माह में सैनिकों की अदला-बदली होती है। दिसम्बर

माह में 615 भारतीय सैनिकों की अदला-बदली हुई। इस समय यू. एन. आई. एफ. आई. एल. में 791 भारतीय सैनिक तैनात हैं।

यूनामिक (कोसोवो)

भारत ने कोसोवो (यूनामिक) में 300 असैनिक पुलिस अधिकारियों का योगदान दिया और संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना मिशन में रेपिड एक्शन फोर्स (के. रि. पु. ब.) की दो कम्पनियों जिसमें 240 कार्मिक शामिल हैं, को तैनात किया। इसके अलावा 30 भारतीय असैनिक कर्मचारी भी अनमिक के अन्तरिम सिविल प्रशासन में प्रतिनियुक्ति पर शामिल हुए हैं।

आर. ए. एफ. कार्मिकों और असैनिक पुलिस अधिकारियों से मिलने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के डी. जी. डॉ. टी. एन. मिश्रा के नेतृत्व में गृह मंत्रालय, विदेश मंत्रालय और के. रि. पु. बल से एक तीन सदस्यीय संयुक्त शिष्टमंडल ने 6 से 10 नवम्बर 2000 तक कोसोवो की यात्रा की। शिष्टमंडल ने कोसोवो में पालिका चुनावों और सरबिया में राष्ट्रपति चुनाव के पश्चात् स्थानीय स्थिति के मूल्यांकन करने के लिए यूनामिक प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ परस्पर बातचीत की।

भारत ने 300 असैनिक पुलिस अधिकारियों का योगदान दिया है और कोसोवो में संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन में त्वरित कार्यदल (सी. आर. पी. एफ) की दो कम्पनियाँ, जिनमें 240 कार्मिक हैं, तैनात किए हैं। महीने के दौरान 8 दिसम्बर को एक वर्ष की अवधि समाप्त कर लेने के बाद 85 सी. आई. पी. पी. ओ. एल. अधिकारी वापस लौटे और बदले में 60 सी. आई. वी. पी. ओ. एल. अधिकारी कोसोवो गए। संयुक्त राष्ट्र के दिशा-निर्देश के अनुसार 23/24 दिसम्बर को आर. ए. एम. से 160 कर्मिक भेजे गए। इससे पूर्व नवम्बर में गृह मंत्रालय, सी. आर. पी. एफ. तथा सी. आई. वी. पी. ओ. एल. अधिकारियों से मिलने के अतिरिक्त उसने यू. एन. एम. आई. के प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ भी बैठक की थीं। कोसोवो में भारतीय सेना का अनुशासन और अपने कार्य में अत्याधिक प्रतिष्ठा है।

यू. एन. एम. ई. ई. (इथोपिया और एरीट्रिया)

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने 31 जुलाई, 2000 को संकल्प 1312 पारित किया जो इथोपिया और एरीट्रिया (यू. एन. एम. ई. ई.) में संयुक्त राष्ट्र मिशन की स्थापना का

प्राधिकार देता है। सरकार ने अपना निर्णय शांति स्थापना मिशन में भाग लेने के लिए संयुक्त राष्ट्र को सूचित किया और कुछ सैन्य प्रेक्षकों के अलावा इन्फैंट्री बटालियन फोर्स रिजर्व कम्पनी और निर्माण इंजीनियरी कम्पनी की व्यवस्था भी करेगी।

यू. एन. एम. ई. ई. की तैनाती आपरेशन की तीन चरण की अवधारणा के अनुसार चल रही है। चरण-I के अन्तर्गत प्रत्येक राजधानी (अस्मारा और आदिस अबाबा) में सैन्य सम्पर्क कार्यालयों की स्थापना का कार्य पूरा हो चुका है। इथोपिया और एरीट्रिया में संयुक्त राष्ट्र मिशन की स्थापना के साथ शांति स्थापना आपरेशन की प्रत्यक्षा में सैन्य प्रेक्षकों और असैनिक सहायक स्टाफ की स्थापना का कार्य भी जारी है। अब तक भारत ने यू. एन. एम. ई. ई. में 5 सैन्य प्रेक्षकों और दो स्टाफ अधिकारियों का योगदान दिया है। सैनिकों के भीतर 4200 यू. एन. एम. ई. ई. (220 सैन्य प्रेक्षकों समेत) के शांति स्थापना बल की तैनाती, डच और डेनिश दलों के पहुंचने के साथ दिसम्बर माह के शुरू में होने की संभावना है।

सेना मुख्यालय के एस. डी. निदेशालय के अपर महानिदेशक मेजर जनरल जी.सी. नेगी के नेतृत्व में एक 6 सदस्यीय रेकी दल ने भारतीय सैनिकों की तैनाती से पहले क्षेत्र के सर्वेक्षण के लिए 2 से 9 दिसम्बर एरीट्रिया और इथोपिया की यात्रा की।

इथियोपिया और इरिट्रिया में संयुक्त राष्ट्र शान्ति मिशन में भाग लेने की भारत की वचनबद्धता के पश्चात् मेजर जनरल जी. एस. नेगी, अपर महा निदेशक, एस. डी. निदेशालय, सेना मुख्यालय के नेतृत्व में 6 सदस्य भारतीय रेकी दल ने भारतीय दलों की तैनाती से पूर्व क्षेत्र का सर्वेक्षण करने के लिए इरिट्रिया और इथियोपिया की यात्रा की। इस दल ने फरवरी, 2001 तक एक फोर्स रिजर्व कम्पनी और एक इंजीनियर कन्सट्रक्शन कम्पनी और जून, 2000 में एक भारतीय इन्फैंट्री बटालियन की तैनाती के लिए अपनी सिफारिश प्रस्तुत की है ताकि नीदरलैंड दल को बदला जा सके। भारत ने यू. एन. एम. ई. ई. में पहले ही 5 सेना पर्यवक्षक और 2 लाजिस्टिक स्टाफ अधिकारी भेज दिए हैं।

संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना केन्द्र (सी. यू. एन. पी.) संयुक्त राष्ट्र और अन्तर्राष्ट्रीय संगठन

संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना केन्द्र की स्थापना का औपचारिक रूप से उद्घाटन यूनाइटेड सर्विस इंस्टीट्यूशन ऑफ इण्डिया। (यू. एस. आई.) द्वारा 13-15 सितम्बर

2000 तक आयोजित शांति स्थापना संगोष्ठी के दौरान किया गया। प्रारम्भ में यू. एस. आई. के क्षेत्र के अन्तर्गत वर्ष में एक संगोष्ठी और दो प्रशिक्षण कैपसूल आयोजित करने पर विचार किया गया। इस केन्द्र का लक्ष्य भारत और मित्र विदेशी देशों के साथ व्यापक अनुसंधान और बौद्धिक आदान-प्रदान संवर्द्धन के लिए संयुक्त राष्ट्र से सम्बन्धित प्रशिक्षण आवश्यकताओं को आंशिक रूप से पूरा करना है।

ब्राह्मी रिपोर्ट

मार्च 2000 में, संयुक्त राष्ट्र महासचिव कोफी अन्नान ने संयुक्त राष्ट्र शांति और सुरक्षा क्रियाकलापों की पूरी समीक्षा करने और शांति स्थापना कार्रवाईयों के संचालन में संयुक्त राष्ट्र की सहायता के लिए विशिष्ट, ठोस और व्यवहारिक सिफारिशों का स्पष्ट सैट प्रस्तुत करने के लिए अल्जीरिया के पूर्व विदेश मंत्री लखदर ब्राह्मी की अध्यक्षता में एक पैनल स्थापित किया। पैनल की रिपोर्ट ब्राह्मी रिपोर्ट सहस्राब्दि शिखर-सम्मेलन को प्रस्तुत की गई और जो शान्ति स्थापना आपरेशनो से सम्बद्ध सुरक्षा परिषद और विशेष समिति दोनों पर विचार-विमर्श के आधार पर बनाई गई। ब्राह्मी पैनल में, अन्य बातों के साथ-साथ, यह सिफारिश की गई कि संयुक्त राष्ट्र को संघर्ष निवारण में शान्ति स्थापना कार्रवाईयों के भाग के रूप में बहुआयामी शान्ति निर्माण करने में और सक्रिय रूप से कार्य करना चाहिए ताकि संयुक्त राष्ट्र की सूचना एकत्रित करने और सामरिक विश्लेषण की क्षमता के साथ परिवर्ती सिविल प्रशासन में सहायता देने की क्षमता को मजबूत बनाया जाए। यह भी सुझाव दिया गया कि शांति स्थापना आपरेशन विभाग में मुख्यालय स्टाफ को मजबूत किया जाए।

शान्ति स्थापना कार्रवाईयों से सम्बद्ध विशेष समिति का असाधारण सत्र (सी-34)

5 सप्ताह के गहन और दीर्घकालिक विचार-विमर्श के पश्चात् शान्ति स्थापना कार्रवाईयों से सम्बद्ध विशेष समिति ने 5 दिसम्बर को ब्राह्मी रिपोर्ट की सिफारिशों पर शान्ति स्थापना कार्रवाईयों के पूरे मसले पर एक व्यापक रिपोर्ट पारित की।

भारतीय शिष्टमंडल ने गुट निरपेक्ष आंदोलन और सी-34 दोनों में एक सक्रिय भूमिका निभाई है जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि हमारी चिंता एक विकासशील देश के रूप में तथा और उससे भी महत्वपूर्ण सैनिकों का योगदान करने वाले देश के

रूप में पूर्णतः प्रतिबिम्बित हुई। हमारे दृष्टिकोण से एक स्मरणीय सफलता यह रही कि हमारी चिन्ता टी. सी. सी. के साथ परामर्श और परिषद के प्रति संक्षेपणों में भागीदारी के प्रति उस समय रही जब मिशन में परिवर्तन और अन्य मसलों का आदेश था जिनका तात्पर्य मिशनों में सेना का प्रयोग करने के लिए विचार किया जाना, अन्तिम निष्कर्ष में पूर्णतः प्रतिबिम्बित हुआ।

संयुक्त राष्ट्र शान्ति स्थापना कार्यवाहियों को सुधारने के उपायों के संबंध में सुरक्षा परिषद का विचार

13 नवम्बर को, सुरक्षा परिषद ने सर्वसम्मति से संकल्प 1327 पारित किया जिसमें संयुक्त राष्ट्र शान्ति स्थापना कार्यवाहियों को स्पष्ट, विश्वसनीय और प्राप्त करने योग्य आदेश देने के लिए उपायों की रूपरेखा तैयार की गई। इस संकल्प में ब्राह्मी रिपोर्ट की सिफारिशों पर ध्यान आकर्षित किया गया है और अन्य बातों के साथ-साथ शान्ति स्थापना प्रक्रिया के प्रमुख पहलुओं पर नियमित सैन्य संक्षेपणों के लिए आह्वान किया जिसमें कमांड की श्रृंखला, बल संरचना और जोखिम मूल्यांकन, मानवीय स्थिति के साथ-साथ टी. सी. सी. के साथ परामर्शों को सुदृढ़ किया गया। इस संकल्प में सुरक्षा परिषद की यह सुनिश्चित करने की वचनबद्धता को भी बल दिया गया कि शान्ति स्थापना कार्यवाहियों के प्रति प्रष्ठांकित कार्य भूमि की स्थिति के अनुसार उपयुक्त है, जिसमें सफलता की आशा, नागरिकों की सुरक्षा की संभाव्यता की आवश्यकता अथवा अन्य संभाव्यता के पहलु शामिल हैं, जिनमें कुछ दल हिंसा के माध्यम से शान्ति पाना चाहते हैं।" इस संकल्प में यह भी बताया है कि नियुक्ति के नियमों को उन परिस्थितियों का स्पष्ट उल्लेख करना चाहिए जिनमें सेना का प्रयोग किया जा सकता है। संयुक्त राष्ट्र के महासचिव को शान्ति स्थापना प्रक्रिया के सैन्य अवयव के लिए व्यापक प्रचालनीय मत को तैयार करने का कार्य सौंपा गया। संयुक्त राष्ट्र की क्षमता के कार्मिकों को तैनात करने में सुधार के लिए, इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सुरक्षा परिषद ने महासचिव को संभाव्य और वर्तमान टी. सी. सी. में परामर्श कार्य करने का काम सौंपा है।

यू. एन. पी. के. ओ. के लिए निर्गम सामरिक नीति से सम्बद्ध सुरक्षा परिषद वाद-विवाद

15 नवम्बर को, सुरक्षा परिषद ने इस मसले पर वाद-विवाद किया कि संयुक्त राष्ट्र शान्ति कार्यवाहियों को कब और कैसे समाप्त किया जाए। यह वाद-विवाद नीदरलैंड के

नेतृत्व में आयोजित किया गया जो नवम्बर माह में सुरक्षा परिषद की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस वाद-विवाद का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना था कि शान्ति स्थापना कार्यवाहियों केवल तभी समाप्त की जा सकती है जब शान्ति स्थापकों की निकासी के पश्चात् स्थायी शान्ति और विकास सुनिश्चित करने के लिए एक स्पष्ट और प्रभावी सामरिक नीति तैयार की जाए। इस वाद-विवाद में परिषद के सभी 15 सदस्यों समेत 34 से अधिक देशों ने भाग लिया। इस वाद-विवाद में मिशन के बंद होने और मिशन के परिवर्ती, संघर्ष निवारण की महत्ता के रूप में भी अद्योलिखित कारणों को समझने की आवश्यकता और शान्ति स्थापना से शान्ति निर्माण में सुव्यवस्थित को सुनिश्चित करने के मूल्य से सम्बद्ध सुरक्षा परिषद के निर्णय करने से सम्बन्धित गंभीर मसलों की व्यापक श्रृंखला शामिल थी। वाद-विवाद की मध्यस्थता में, हमने शान्ति स्थापना कार्यवाहियों के आदेश के बारे में व्यापक स्पष्टता और परिभाषा, सैनिकों का योगदान देने वाले देशों का निर्धारण करने में तटस्थता, निष्पक्षता इत्यादि जैसे सार्वभौमिक रूप से सहमत मानदण्डों का पालन करने, उनके आदेश और उत्तरदायित्वों के अनुसार किए गए शान्ति स्थापना बल के स्तरों की आवश्यकता शान्ति स्थापना कार्यवाहियों और मानवीय, आर्थिक सहायता प्रक्रिया के बीच भिन्नता की आवश्यकता टी. सी. सी. इत्यादि में परामर्श करने की आवश्यकता की मांग की है।

उपनिवेशवाद को समाप्त करना

उपनिवेशक देशों और लोगों (सी-24) को स्वतंत्रता प्रदान करने से सम्बद्ध घोषणा के क्रियान्वयन के सम्बद्ध में स्थिति में सम्बद्ध विशेष समिति के संस्थापन सदस्य के रूप में, भारत ने समिति के अन्तर्गत एक लाभप्रद और रचनात्मक भूमिका निभा रहा है। घोषणा की 40वीं वर्षगांठ दिसम्बर में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा मनाई गई थी। प्रशासनिक शक्तियों और समिति के बीच सम्बन्ध वर्षों से पर्याप्त रूप से पनप रहे हैं और जिसके परिणामस्वरूप प्रत्येक स्वयं शासी क्षेत्र के सम्बन्ध में प्रशासनिक शक्तियों के साथ परामर्श से कार्य का ठोस कार्यक्रम विकसित किया गया है। और महासभा ने 2001-2010 तक की अवधि को उपनिवेशवाद उन्मूलन के लिए द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय दशाब्दि के रूप में अधिदेशाधीन किया है। भारत ने मई में मार्शल द्वीप में सम्पन्न गैर-औपनिवेश पर संघीय संगोष्ठी में विशेष समिति के अधिकारिक शिष्टमंडल के सदस्य के रूप में भाग लिया।

आतंकवाद

संयुक्त राष्ट्र महासभा के 55वें सत्र में, संयुक्त राष्ट्र महासभा के लिए गए निर्णय के अनुसरण में छठी समिति के कार्यकारी दल, संयुक्त राष्ट्र में अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद से सम्बद्ध व्यापक अभिसमय के प्रारूप पर विस्तृत विचार-विमर्श के पहले दौरा 25 सितम्बर से 6 अक्टूबर 2000 तक सम्पन्न हुआ।

छठी समिति के कार्यकारी दल की 25 सितम्बर से 6 अक्टूबर 2000 तक अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद से सम्बद्ध व्यापक अभिसमय के प्रारूप के विचार-विमर्श के पहले दौर में अब तक की प्रगति में गंभीरता को परिलक्षित किया था जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय इस मसले तक पहुंचा है। कई देशों से जिसमें जी-8, यूरोपीय संघ के साथ-साथ एशियाई, अफ्रीकी और लातिन अमरीकी देश शामिल हैं, भारत की चिंता के कई मसलों पर प्राप्त पर्याप्त सहायता संतोषजनक थी। इसमें आतंकवाद की कार्रवाईयों से दूर रहने के लिए राज्य उत्तरदायित्व के मसले को सम्बोधित करने के अभिसमय के लिए आवश्यकता शामिल है जिसमें यह सुनिश्चित करना होगा कि उनके अपने अपने क्षेत्रों को आतंकवादी अधिष्ठापन और प्रशिक्षण शिविरों के लिए प्रयोग न किया जाए, इसके साथ-साथ मुकदमा चलाने या प्रत्यर्पित करने का उत्तरदायित्व राज्यों का होगा।

जिन मसलों में मतभेदों को दूर करने के लिए अधिक कार्य किए जाने हैं उनमें शामिल हैं, शरण, अभिसमय के क्षेत्र में सुरक्षा बलों के बहिकरण प्रत्यर्पण राजनीतिक अपवाद शर्त और आतंकवाद की परिभाषा।

अभिसमय प्रारूप पर विचार विमर्श अगले वर्ष के पूर्वाद्ध में किया जाएगा। भारत आतंकवाद से सम्बद्ध इस व्यापक अभिसमय के शीघ्र पारित करने के लिए सक्रिय रूप से कार्य करता रहेगा।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में चर्चा

7 दिसम्बर, 2000 को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् ने “अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद बनाए रखने में सुरक्षा परिषद् की भूमिका” नामक कार्य-सूची मद के अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के मुद्दे पर चर्चा की। यह चर्चा 19 अक्टूबर, 1999 को परिषद् द्वारा पारित संकल्प 1269 के अनुपालन में हुई थी जब सुरक्षा परिषद् ने पहली बार अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद के सामान्य मसले को अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा को खतरे के रूप में लिया।

चर्चा के बाद सुरक्षा परिषद ने एक अध्यक्षीय वक्तव्य पारित किया जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ विश्व के अनेक क्षेत्रों में आतंकवाद की गतिविधियों में वृद्धि पर गहरी चिन्ता व्यक्त की, ऐसे तथ्यों पर चाहे उनका उद्देश्य कुछ भी क्यों न हो, अपनी निन्दा को दोहराया, आतंकवादी-संघी अभिसमयों तक सार्वभौमिक पहुंच की मांग की और अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा को आतंकवादी खतरों का मुकाबला करने के लिए संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अन्तर्गत अपनी जिम्मेदारी के अनुसार आवश्यक उपाय करने के लिए सुरक्षा परिषद की तत्परता को दोहराया।

निरस्त्रीकरण और अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा

भेदभावपूर्ण रहित और सार्वभौमिक नाभिकीय निरस्त्रीकरण के प्रति भारत की वचनबद्धता इसकी नीति उद्घोषणाओं और राजनयिक पहल में परिलक्षित होती है। विभिन्न बहुपक्षीय और क्षेत्रीय मंचों में निरस्त्रीकरण और अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा से सम्बद्ध मसलों पर देश का मत भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा हितों तथा अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ घनिष्ठ क्रियाकलाप की भारत की परंपरा पर आधारित है।

मई 1998 के पश्चात् शुरू हुई द्विपक्षीय बातचीत की श्रृंखला इस वर्ष भी जारी है। नई सुरक्षा वार्ताएं चीन, जर्मनी और यू. के. के साथ भी शुरू की इन सबके परिणामस्वरूप भारत की सुरक्षा हित चिन्ताओं और इसके उत्तरदायी आचरण और नीतियों की बहुत सराहना की गई। अप्रसार और निरस्त्रीकरण पर अन्तर्राष्ट्रीय हित चिन्ताओं सहित भारत के राष्ट्रीय अनिवार्यताओं और सुरक्षा दायित्वों के सामंजस्य में भी निरन्तर प्रगति हुई है।

क्षेत्रीय स्तर पर, आसियान क्षेत्रीय मंच के अन्तर्गत विश्वास और सुरक्षा निर्माण प्रक्रिया और संरचना में भारत की भागीदारी को बहुत बल मिला है। भारत एशिया में पारस्परिक क्रिया और सुरक्षा निर्माण उपायों से सम्बद्ध सम्मेलन में चल रही समान प्रक्रियाओं में भी सक्रिय रूप से जुड़ा रहा।

निरस्त्रीकरण मसलों पर भारतीय परिदृश्य के बारे में उपयुक्त जानकारी देने के विचार से निरस्त्रीकरण के क्षेत्र में सक्रिय प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय और गैर-सरकारी संगठनों के साथ नियमित सम्पर्क बनाया हुआ है। संसद सभी को सभी गतिविधियों के बारे में नियमित रूप से सूचना जाती रही।

निरस्त्रीकरण पर सम्मेलन से सम्बद्ध भारत का एक नया स्थायी मिशन 16 सितम्बर को जेनेवा में स्थापित किया गया जिसमें श्री राकेश सूद ने प्रथम राजदूत/निरस्त्रीकरण से सम्बद्ध स्थायी प्रतिनिधि के रूप में कार्यभार संभाला, उन्होंने निरस्त्रीकरण संबंधी सम्मेलन के महासचिव श्री वी. पेट्रोवस्की को 19 सितम्बर को अपने प्रत्ययपत्र प्रस्तुत किए।

संयुक्त राष्ट्र महासभा

भारत 55वें संयुक्त राष्ट्र 'सहस्रवर्ष' महासभा की प्रथम समिति में निरस्त्रीकरण मसले पर सक्रिय भूमिका निभा रहा है। भारत एकमात्र नाभिकीय शस्त्र सम्पन्न राज्य है जो यह मानता है कि उसकी सुरक्षा नाभिकीय शस्त्र मुक्त विश्व में बढ़ेगी। सार्वभौमिक नाभिकीय निरस्त्रीकरण के प्रति इस वचनबद्धता के साथ वह एक ऐसे नाभिकीय शस्त्र अभिसमय पर बातचीत किये जाने के लिए निरन्तर दबाव डाल रहा है जिससे नाभिकीय हथियारों के विकास, उत्पादन, भंडारण, उपयोग और उपयोग की धमकी पर सदा के लिए रोक लग जाएगी और जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय जांच के अन्तर्गत तमाम विद्यमान हथियारों को नष्ट करने की व्यवस्था होगी।

भारत ने नाभिकीय शस्त्रों के प्रथम प्रयोग नहीं करने की अपनी नीति को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है। तथापि, नाभिकीय हथियारों के प्रथम प्रयोग की नीतियाँ कायम हैं और वस्तुतः इन्हें पुनः वैध ठहराया जा रहा है और इनकी पुष्टि की जा रही है। आवश्यकता है कि अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय नाभिकीय हथियारों को अवैध घोषित करने के लिए निर्णायक कदम उठाये। नाभिकीय हथियारों के प्रयोग पर प्रतिबंध से संबद्ध अभिसमय पर भारत के प्रसव में नाभिकीय हथियारों के प्रयोग पर प्रतिबंध लगाने के लिए एक बहुपक्षीय करार का आह्वान किया गया है जिससे वार्ता केन्द्र सकारात्मक वातावरण बनाने में सहायता मिलेगी और नाभिकीय हथियारों का उन्मूलन हो सकेगा। इसे 109 देशों के समर्थन से पारित किया गया।

1998 में भारत ने "नाभिकीय खतरे को कम करने" से संबंधित एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया था जिसमें नाभिकीय नीतियों की समीक्षा करने और बिना किसी उद्देश्य के और आकस्मिक रूप से नाभिकीय हथियारों का प्रयोग हो जाने के खतरे को कम करने के लिए शीघ्र और तत्काल कदम उठाये जाने का आह्वान किया गया है। यह प्रस्ताव,

जिसके लिए सह प्रायोजन और समर्थन बढ़ रहा है, 109 देशों द्वारा पक्ष में मतदान किये जाने के फलस्वरूप इस वर्ष पारित किया गया।

"अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा और निरस्त्रीकरण के संदर्भ में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की भूमिका" से संबंधित भारत के प्रस्ताव, जिसमें शस्त्र दौरे के गुणात्मक पहलुओं और एक प्रामाणिक तथा भेदभाव रहित प्रतिक्रिया की आवश्यकता उजागर की गयी है, को 97 देशों के समर्थन से स्वीकार कर लिया गया।

भारत प्रथम समिति के अनेक महत्वपूर्ण संकल्पों पर होने वाले विचार-विमर्शों में सक्रिय रूप से शामिल रहा है। इसने 1996 की अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय की परामर्शी विचार की वैधता की पुष्टि करने वाले मलेशियाई संकल्प को सहप्रायोजित किया जिसमें सभी नाभिकीय शस्त्र संपन्न देशों से नाभिकीय निरस्त्रीकरण की दिशा में कार्य करने का आह्वान किया गया है। इसने 1972 की एंटी बैलिस्टिक मिसाइल संधि, जिसे नेशनल मिसाइल डिफेंस सिस्टम बनाने की अमरीका की योजना से खतरा पैदा हो गया था, को बनाये रखने के लिए रूसी प्रस्ताव के पक्ष में मतदान भी किया।

निरस्त्रीकरण सम्मेलन

दो मसलों पर मतैक्य के अभाव में कोई कार्य-योजना स्वीकृत न होने के कारण निरस्त्रीकरण सम्मेलन 2000 के वार्षिक सत्र के दौरान कोई महत्वपूर्ण बातचीत नहीं हो सकी। बातचीत के ये विषय निरस्त्रीकरण और बाह्य अंतरिक्ष में शस्त्रों की होड पर प्रतिबंध थे। जिन क्षेत्रों में सर्वसम्मति थी वे थे विखंडणीय सामग्री नियंत्रण संधि (एफ. एम. सी. टी.), नकारात्मक सुरक्षा आश्वासन (एन. एस. ए.), मानव-रोधी बारूदी सुरंगों (ए. पी. एल.) के स्थानांतरण पर प्रतिबंध लगाये जाने से संबंधित विशेष समन्वयकों की पुनः नियुक्ति, निरस्त्रीकरण में पारदर्शिता (टी. आई. ए.) तथा निरस्त्रीकरण सम्मेलन से संबंधित प्रक्रियात्मक सुधार मसले इत्यादि। गुप 21 के अनेक अन्य देशों के साथ भारत निरस्त्रीकरण सम्मेलन के कार्यों और अपनी कार्य योजना पर सर्वसम्मति बनाने के प्रयासों में लगा रहा।

संयुक्त राष्ट्र निरस्त्रीकरण आयोग

संयुक्त राष्ट्र निरस्त्रीकरण आयोग, 2000 का महत्वपूर्ण सत्र 26 जून - 27 जुलाई, 2000 तक हुआ। इसमें दो नये मुद्दों पर बातचीत की गयी— 'नाभिकीय निरस्त्रीकरण प्राप्त

करने के तौर-तरीके और पारंपरिक हथियारों के क्षेत्र में व्यावहारिक विश्वासोत्पादक उपाय। त्रिवर्षीय विचार-विमर्श के प्रथम वर्ष में अपने-अपने कार्यकारी दलों में इन पर चर्चा की गयी। निरस्त्रीकरण पर निर्गुट आंदोलन कार्यकारी दल सहित इन महत्वपूर्ण विषयों पर गहन चर्चा की गयी। भारत ने इन चर्चाओं में सकारात्मक और रचनात्मक योगदान दिया।

अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा अभिकरण (आई. ए. ई. ए.)

आई. ए. ई. ए. का 44वें महा-सम्मेलन (जी. सी.) 18-22 सितम्बर, 2000 तक हुआ। भारतीय शिष्टमंडल का नेतृत्व परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष डॉ. आर. चिदंबरम ने किया। भारतीय शिष्टमंडल ने ग्रुप 77 के भीतर और बाहर समान विचार वाले शिष्टमंडलों के साथ मिलकर कार्य किया ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि नाभिकीय ऊर्जा के क्षेत्र में आई. ए. आई. ए. की गतिविधियाँ महा-सम्मेलन की अनुशंसाओं के अनुकूल हों। भारत ने भी बिना किसी भेदभाव के अभिकरण के सभी सदस्य राज्यों के लिए 'सुरक्षा' से संबंधित महा-सम्मेलन के प्रस्ताव पर एक संतुलित दृष्टिकोण बनाये रखने का भी प्रयास किया।

तकनीकी सहयोग के वित्त पोषण के मसले पर बड़े दाताओं ने आई. ए. ई. ए. की स्वैच्छिक तकनीकी सहयोग निधि में योगदान वर्तमान स्तर पर स्थगित करने की इच्छा जतायी जबकि जी-77 के विकासशील देशों ने इसमें उल्लेखनीय वृद्धि किये जाने की मांग की। सुरक्षा के लिए वित्त पोषण को "परिरक्षण" की धारणा के साथ जोड़ा गया क्योंकि विकासशील देशों ने एन. पी. टी. के तहत किये गये व्यापक सुरक्षा उपायों के कारण लागत में हुई अधिक वृद्धि से राहत की मांग की। लगभग 28 से अधिक वर्षों में सदस्य राज्यों को 4 खंड में बाँटकर क्रमिक आधार पर "परिरक्षण" को अंतिम रूप से समाप्त किया जाना स्वीकार किया गया।

जी-77 के साथ-साथ भारत ने सितम्बर 2000 के 44वें महा-सम्मेलन के लिए नाभिकीय प्रौद्योगिकी समीक्षा को कार्यसूची की एक मद के रूप में रखवाने में सफलता पायी।

रासायनिक शस्त्र अभिसमय (सी. डब्ल्यू. सी.)

29 अप्रैल, 2000 को रासायनिक शस्त्रों पर प्रतिबंध से संबद्ध संगठन (ओ. पी. सी.

डब्ल्यू.) ने अपनी स्थापना के तीन वर्ष पूरे किये। सी. डब्ल्यू. सी. के एक प्रारम्भिक पक्षकार राज्य के रूप में भारत अपने विभिन्न उत्तरदायित्वों को निभाता आ रहा है। इसमें अभिसमय में निहित सभी लक्ष्यों और समय-सीमाओं को पूरा करने के लिए प्रभावी उपाय किये हैं। इस अभिसमय के प्रवृत्त होने के बाद से ओ. पी. सी. डब्ल्यू. के तकनीकी सचिवालय ने इस अभिसमय के पक्षकार राज्यों की रासायनिक शस्त्र भंडारण सुविधाओं, उत्पादन की भूतपूर्व सुविधाओं तथा औद्योगिक संयंत्र स्थलों के 700 से अधिक निरीक्षण किये हैं। भारत में 40 से अधिक ऐसे निरीक्षण निर्बाध रूप से किये गये। कार्यकारी परिषद के गठन के समय से ही इसके एक सदस्य के रूप में भारत राज्य पक्षकारों द्वारा सी. डब्ल्यू. सी. की सभी वाध्यताओं के भेदभाव रहित क्रियान्वयन के पर्यवेक्षण के लिए परिषद द्वारा किये जा रहे विचार-विमर्श में सक्रिय भूमिका निभाता रहा है। जैसा कि सी. डब्ल्यू. सी. के अन्तर्गत अपेक्षित था, भारत ने 28 अगस्त, 2000 को रासायनिक शस्त्र अभिसमय अधिनियम की अधिसूचना के साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर इसके क्रियान्वयन के लिए अपनी प्रक्रियाएं पूरी कर ली जिससे राष्ट्रीय प्राधिकार को इस अभिसमय को क्रियान्वित करने के लिए वैधानिक शक्तियाँ प्राप्त हो गयीं।

भारत अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग से संबंधित अभिसमय के प्रमुख प्रावधानों के क्रियान्वयन में चिन्ता की बात मानता है और अन्य सदस्य राज्यों के साथ मिलकर इस पर ध्यान दे रहा है।

जैविक और जैव-विषय शस्त्र अभिसमय (बी. टी. डब्ल्यू. सी.)

भारत ने सहमत प्रादेश के आधार पर एक प्रोटोकॉल पर बातचीत करने के लिए 2000 में बी. टी. डब्ल्यू. सी. के राज्य पक्षकारों के तदर्थ समूह के कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लिया। भारतीय शिष्टमंडल ने एक प्रभावी प्रोटोकॉल, जिसमें एक भेदभाव रहित एवं पारदर्शी अनुपालन व्यवस्था बनाते हुए शान्तिपूर्ण प्रयोजनों के लिए जैव-प्रौद्योगिकी का अबाध आदान-प्रदान और अंतरण सहित सुरक्षा और विकास संबंधी बाध्यताओं का प्रावधान है, के जरिए बी. टी. डब्ल्यू. सी. को सुदृढ़ बनाये जाने का समर्थन करना जारी रखा।

बाह्य अन्तरिक्ष मामले

इस वर्ष के दौरान वैज्ञानिक और तकनीकी उप-समिति का 37वां सत्र विधिक

उप-समिति का 39वां सत्र और बाह्य अन्तरिक्ष के शान्तिपूर्ण उपयोग से संबद्ध संयुक्त राष्ट्र समिति (यू. एन. सी. ओ. पी. यू. ओ. एस.) का 43वां सत्र आयोजित किया गया। वैज्ञानिक और तकनीकी उप-समिति की बैठक में भारत ने अंतरिक्ष की समन्वित प्राकृतिक आपदा प्रबंधन प्रणाली को क्रियान्वित करने के लिए एक कामिक कार्य योजना का प्रस्ताव रखा। विधिक उप-समिति ने बाह्य अंतरिक्ष के उपयोग को नियंत्रित करने वाली संधियों, बाह्य अंतरिक्ष की परिभाषा और इसके सीमांकन, बाह्य अंतरिक्ष में नाभिकीय शक्ति स्रोतों का उपयोग तथा आरंभ करने वाले राज्य की संकल्पणा पर विचार-विमर्श किया। यू. एन. सी. ओ. पी. यू. ओ. एस. के 43वें सत्र में जो मुख्य अनुशांसा स्वीकार की गयी वह अंतरिक्ष की आपदा प्रबंधन प्रणाली की एक त्रिवर्षीय योजना से संबंधित थी।

अन्तर्राष्ट्रीय संगठित अपराध के विरुद्ध संयुक्त राष्ट्र अभिसमय

अन्तर्राष्ट्रीय संगठित अपराध के विरुद्ध अभिसमय के विस्तारण से संबद्ध तदर्थ समिति का 11वां सत्र 2-28 अक्टूबर, 2000 तक विएना में हुआ। इसके अन्तर्गत जिस आग्नेयास्त्र प्रोटोकॉल पर बातचीत की जा रही है उसमें 'आत्मनिर्णय', 'परिभाषा', 'क्षेत्र', 'अपराधीकरण' तथा 'आग्नेयास्त्रों' के निर्माण से संबंधित कुछ विवादास्पद प्रावधान हैं। तदर्थ समिति के अध्यक्ष ने प्रोटोकॉल बनाये जाने के लिए कार्यकारी दल बनाये और एक समझौता पैकेज का सुझाव दिया, भारतीय शिष्टमंडल ने आग्नेयास्त्र के क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय तौर-तरीकों में उपयुक्त पारदर्शिता और जवाबदेही लाने के उद्देश्य से आग्नेयास्त्र प्रोटोकॉल पर होने वाली बातचीत में सकारात्मक योगदान दिया। तथापि, किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचा जा सका। चूंकि आग्नेयास्त्र प्रोटोकॉल छोटे शस्त्रों और हल्के हथियारों से जुड़ा हुआ है, इसकी असफलता जुलाई, 2001 में होने वाली छोटे शस्त्रों और हल्के हथियारों के अवैध व्यापार से संबद्ध अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के सभी पहलुओं को प्रभावित कर सकती है। भारत इस सम्मेलन की तैयारी प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल रहा है।

निर्यात नियंत्रण

मई, 1998 के नाभिकीय परीक्षणों के पश्चात् भारत ने घोषणा की थी कि एक जिम्मेदार नाभिकीय राज्य के रूप में प्रसार रोकने की उसकी जिम्मेदारी है तथा जहां कहीं

आवश्यक हुआ वह उपकरण और प्रौद्योगिकी की निर्यात सूची को व्यापक बनाकर इसे और प्रभावी तथा समसामयिक बनाने सहित अपनी निर्यात नियंत्रण प्रणाली को और कठोर बनायेगा। एक अंतर मंत्रि-स्तरीय समीक्षा के द्वारा विधिवत ऐसा किया गया और इसकी अनुशांसाओं को 1 अप्रैल, 2000 को घोषित एक्जिम पॉलिसी के जरिए प्रभावी बनाया गया। पुरानी एस. एम. ई. टी. की सूची के स्थान पर एक विशेष रासायनिक, जैविक, भौतिक उपकरण एवं प्रौद्योगिकी (एस. सी. ओ. एम. ई. टी.) सूची लायी गयी।

अमरीकी विदेश विभाग के एक छः सदस्यीय शिष्टमंडल ने निर्यात लाइसेन्सिंग और प्रवर्तन के क्षेत्र में एक संयुक्त कार्यक्रम तैयार करने के लिए 7-10 अगस्त, 2000 को भारत का दौरा किया। 18-22 सितम्बर, 2000 तक मुम्बई में एक प्रवर्तन कार्यशाला आयोजित की गयी जिसमें जांच, मामले को आगे बढ़ाने और सजा पर बल दिया गया और जिसमें सीमा-शुल्क अधिकारियों, राष्ट्रीय सीमा-शुल्क अकादमी के अनुदेशकों (एन. ए. सी. ई. एन.) तथा कार्य करने वाले अधिकारियों को शामिल किया गया। दौरे के पश्चात् अमरीकी पक्ष भारत के निर्यात नियंत्रण की क्षमता को बेहतर ढंग से समझने लगा है। इसी तरह अक्टूबर, 2000 में एक भारतीय शिष्टमंडल ने अमरीका का दौरा किया। दिसम्बर, 2000 में एन. ए. सी. ई. एन. में एक प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य दोहरे प्रयोजन के रसायनों/वस्तुओं के अनधिकृत व्यापार के खतरों के प्रति जागरूकता पैदा और इसे समाप्त करने के उपाय करना था।

एम. टी. सी. आर. शिष्टमंडल के साथ विचार-विमर्श

फिनलैंड के राजदूत पेक्का ओजानेन के नेतृत्व में फ्रोस और कनाडा के प्रतिनिधियों वाले एक एम. टी. सी. आर. शिष्टमंडल ने बैलिस्टिक मिसाइल प्रसार के विरुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय आचार संहिता के एक प्रारूप के लिए एम. आर. सी. टी प्रस्तान प्रस्तुत करने के लिए दिसम्बर, 2000 में नई दिल्ली का दौरा किया। भारतीय शिष्टमंडल ने एम. टी. सी. आर. के उस अन्तर्निहित आधार द्वारा पैदा की गयी समस्याओं को स्पष्ट किया। जिसमें शान्तिपूर्ण अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के साथ बैलिस्टिक मिसाइल प्रसार को सम्मिलित किया गया है, दौरे पर आये शिष्टमंडल के समझ इस बात का खुलासा किया गया कि भारत अपने अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी कार्यक्रम के सभी पहलुओं का स्वदेशी विकास का प्रयास

इसके सामाजिक आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है। भारतीय शिष्टमंडल ने बैलिस्टिक मिसाइल प्रसार के मसले का समाधान करने के लिए एक खुले, बहुपक्षीय और भेदभाव रहित दृष्टिकोण की अपनी अधिमानता को स्पष्ट किया।

कतिपय पारंपरिक शस्त्रों (सी. सी. डब्ल्यू.) के उपयोग पर प्रतिबंध अथवा नियंत्रण से संबद्ध अभिसमय

सी. सी. डब्ल्यू.— संशोधित प्रोटोकॉल-II का दूसरा वार्षिक अधिवेशन, दिसम्बर, 2000 में जेनेवा में हुआ। भारतीय शिष्टमंडल ने बारूदी सुरंगों के स्थानांतरण पर स्थगन कायम रखते हुए भारत के स्थायी दृष्टिकोण पर बल देते हुए एक वक्तव्य जारी किया और इस बात की पुष्टि की कि भारत वर्तमान मानवीय संकट को इसके गैर-जिम्मेदार स्थानांतरण और अंधाधुंध प्रयोग का परिणाम मानता है। भारत अब वैसी बारूदी सुरंगों का निर्माण नहीं करता है जिनका पता नहीं लगाया जा सके और इसने संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रायोजित सुरंग हटाने और पुनर्वास से जुड़े कार्यक्रमों में व्यापक स्तर पर भागीदारी की है।

लघु हथियारों और हल्के शस्त्रों के गैर-कानूनी व्यापार से संबद्ध संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन

लघु हथियारों और हल्के शस्त्रों के गैर-कानूनी व्यापार से संबद्ध संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के लिए दूसरा प्रेपकॉम 8 जनवरी, 2001 को न्यूयार्क में हुआ। पूरे समाज पर लघु हथियारों के गैर-कानूनी व्यापार के विनाशपूर्ण प्रभाव को देखते हुए और संबध राज्य तथा गैर-राज्यों में ऐसे दुर्व्यापार के लिए समग्र पारदर्शिता के भाग के रूप में जिम्मेदारी निर्धारित करने और इसे बांटने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय नियमों के अभाव के कारण इस मसले में भारत का महत्वपूर्ण हित है।

आसियान क्षेत्रीय मंच (ए. आर. एफ.)

विश्वासोत्पादक उपायों से संबद्ध आसियान क्षेत्रीय मंच की अन्तर-सत्र समर्थन समूह की बैठक 3-7 अप्रैल, 2000 तक सिंगापुर में हुई। विदेश और रक्षा मंत्रालयों के अधिकारियों ने इसमें भाग लिया। इस बैठक के पूर्व अन्तराष्ट्रीय अपराध से संबद्ध विशेषज्ञ समूह की बैठक हुई। इस बैठक में उन तीन मसलों पर चर्चा हुई जिनकी पहचान पिछले वर्ष ए. आर. एफ. मंत्रियों द्वारा की गयी थी यानि नकल रोधी, छोटे हथियारों का अवैध

व्यापार और अवैध आप्रवासन। विश्वासोत्पादक उपायों से संबद्ध आई. एस. जी. की एक अन्य बैठक 1-7 नवम्बर, 2000 तक सिओल में हुई जिसके पूर्व अन्तर्राष्ट्रीय अपराध से संबद्ध विशेषज्ञ समूह की बैठक हुई थी।

आसियान क्षेत्रीय मंच की 7वीं बैठक 26-27 जुलाई, 2000 तक बैंकाक में हुई। विदेश मंत्री ने भारतीय शिष्टमंडल का नेतृत्व किया। इस बैठक में एशिया प्रशान्त क्षेत्र की सुरक्षा को प्रभावित करने वाले व्यापक मसलों पर चर्चा की गयी। कोरिया लोकतांत्रिक जन गणराज्य को मंच का सदस्य बना लिया गया। इस बैठक में इस बात पर सर्वसम्मति हुई कि अब विस्तार करने की बजाय मंच को सुदृढ़ करने के चरण में प्रवेश करना चाहिए। आर. एफ. के दौरान विदेश मंत्री ने अपने अनेक समकक्षों से भेंट की। उन्होंने गंगा मेकोंग सुवन्ना फुम (सुवर्णभूमि) सहयोग कार्यक्रम पर चर्चा करने के लिए भी एक बैठक की। भागीदारों (थाईलैंड, वियतनाम, लाओस, कंबोडिया, म्यामां और भारत) ने इस पहल का उत्साहपूर्वक समर्थन किया।

भारतीय तट रक्षक द्वारा विदेश मंत्रालय और रक्षा मंत्रालय के साथ मिलकर 18-20 अक्टूबर, 2000 तक मुम्बई में एक नकल-रोधी ए. आर. एफ. कार्यशाला आयोजित की गयी। अधिकतर ए. आर. एफ. देशों के शिष्टमंडलों ने भाग लिया जिसकी काफी प्रशंसा हुई।

गुट-निरपेक्ष आंदोलन

गुट-निरपेक्ष आंदोलन के विदेश मंत्रियों ने 8 और 9 अप्रैल, 2000 तक कार्टेगेना, कोलम्बिया में भेंट की। हम बैठक का विशेष महत्व है चूंकि यह सहस्रवर्षीय शिखर-सम्मेलन और संयुक्त राष्ट्र महासभा के सहस्रवर्षीय सभा में आरंभ हुई थी।

विदेश मंत्री श्री जसवंत सिंह ने एक उच्च स्तरीय शिष्टमंडल का नेतृत्व किया। विदेश मंत्री ने बैठक में अपने वक्तव्य में गुट निरपेक्ष आंदोलन की प्रासंगिकता और महत्ता को पुनः दोहराया और गुट निरपेक्ष आन्दोलन की आवश्यकता पर बल दिया जिसमें ऐसे किसी भी मसले से बचा जा सके जिससे आंदोलन को विभाजित या भंग किया जाए, और इसके साथ नाम सदस्यों को लोकतांत्रिक मानदण्डों को मानने के लिए अपने आपको वचनबद्ध करने की प्रेरणा देने पर भी बल दिया।

इस बैठक की महत्ता की गतिविधियों पर भारत के विचार में तालिबान की कड़ी निन्दा भी शामिल है। आतंकवाद पर विज्ञप्ति में अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद से सम्बद्ध व्यापक अभिसमय को पारित करने के लिए भारत के प्रस्ताव के लिए समर्थन को पुनः दोहराया नाम ने सबसे पहले न्यूयार्क में सितम्बर 1999 को सम्पन्न नाम विदेश मंत्रियों की बैठक में अपनी स्थिति को बनाए रखा, वैचारिक रूप से मानदीयता मध्यस्थता के अधिकार की अवधारणा को अस्वीकार किया। इस विज्ञप्ति में उन राज्यों में संवैधानिक वैधता के पुनरुद्धार की मांग की जिनकी सरकारें असंवैधानिक साधनों से सत्ता में आई और आगे सिफारिश की कि इस मसले को आंदोलन के द्वारा अपने अगले शिखर सम्मेलन में विचार किया जाए।

सामाजिक मानवाधिकार और मानवीय मामले

भारत ने संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग, मानवाधिकारों के संवर्धन और संरक्षण से सम्बद्ध इसके उपायोग की बैठकों, और आर्थिक तथा सामाजिक परिषद् तथा संयुक्त राष्ट्र महासभा में भी मानवाधिकार तथा उससे जुड़े प्रश्नों पर चर्चाओं में भाग लिया। इन मंचों पर भारत की भागीदारी का मार्ग-दर्शन इसके विशालतम लोकतान्त्रिक स्वरूप, विकसित हो रहे देश के रूप में इसकी हैसियत और विधि सम्मत शासन के प्रति इसकी वचनबद्धता, मानवाधिकारों के संवर्धन और संरक्षण और एक उन्मुक्त और पारदर्शी समाज ने किया। भारत ने सार्वभौम सिद्धांतों और मानवाधिकारों के उल्लंघन की पुनः पुष्टि की और लोगों के सहिष्णुता और बहुवाद की संस्कृति के बीच और अधिक समझबूझ बढ़ाने की माँग की भारत ने मानवाधिकारों पर वाद-विवदों को राजनीति से दूर रखने; और मानवाधिकारों के संवर्धन के अत्यन्त प्रभावी उपायों के रूप में सहयोग, वार्ता और राष्ट्रीय क्षमता निर्माण की मजबूत करने के लिए भी अनुरोध किया। मानवाधिकारों के क्षेत्र में मानक संस्थापना से संबद्ध गतिविधियों पर कड़ी नजर रखी गई।

भारत ने जेनेवा में 20 मार्च से 28 अप्रैल, 2000 तक मानवाधिकार आयोग के 56वें अधिवेशन में सक्रिय रूप से भाग लिया। भारतीय शिष्टमण्डल ने आयोग की चर्चाओं में महत्वपूर्ण मुद्दों पर सक्रिय रूप से शामिल होकर और स्थापित परिस्थितियों से बाहर निकल कर मतैक्य बनाकर महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस शिष्टमण्डल का मार्ग निर्देशन मानवाधिकारों की सार्वभौमिकता के प्रति भारत की वचनबद्धता और राजनीतिक रूप दिए

बिना उनके संवर्धन और संरक्षण तथा एक लोकतान्त्रिक और बहुवादी समाज के रूप में भारत की महत्ता से मार्ग-निर्देशित था। भारत ने राजनैतिकीकरण और संघर्ष को समाप्त करने की मांग करने की अपनी नीति जारी रखी।

भारत ने आयोग के 56वें अधिवेशन में 26 संकल्प सह-प्रायोजित किरन भारत ने 'मानवाधिकारों के संवर्धन और संरक्षण में अलग-अलग तत्वों के रूप में सहिष्णुता और बहुवाद' पर अपना द्विवार्षिक संकल्प रखा जो विकसित और विकासशील देशों से 60 सह-प्रायोजकों के साथ मतदान के बिना पारित हुआ। भारत ने जर्मनी के साथ संयुक्त रूप से "मानवाधिकारों से सम्बद्ध उच्च आयुक्त के कार्यालय की सलाहकारी सेवाएं और तकनीकी सहयोग" पर एक संकल्प रखा जिससे विकसित और विकासशील दोनों प्रकार के देशों से 50 सहप्रयोजकों का समर्थन प्राप्त हुआ और यह बिना मतदान के पारित हुआ। भारत ने 'लोकतन्त्र के संवर्धन और उसे मजबूत करने, मानवाधिकारों में अच्छे प्रबन्ध की भूमिका', 'मानवाधिकार और आतंकवाद' और 'अफगानिस्तान में मानवाधिकारों की स्थिति' पर संकल्पों के प्रायोजकों के साथ मिलकर भी कार्य किया। चयनात्मकता और बहुवाद के विरुद्ध रहने की स्थायी नीति के अनुसार भारत ने क्यूबा, ईरान और चेचान्या (रूसी परिसंघ) में मानवाधिकारों से सम्बंधित स्थिति पर देशन्तार विशिष्ट संकल्पों के विरुद्ध मतदान किया और सूडान, इराक, बोस्निया-हर्जोगोविना, क्रोशिया और युगोस्लाविया परिसंघीय गणराज्य से सम्बद्ध संकल्पों पर अनुपस्थित रहा।

कम्बोडिया, म्यामां, हेती और अफगानिस्तान में मानवाधिकारों की स्थिति पर महासभा की तीसरी समिति में मतदान के बिना संकल्प पारित किए गए। ईरान, इराक, सूडान और कोंगो के लोकतान्त्रिक गणराज्य से सम्बद्ध संकल्पों पर मतदान हुआ। भारत ने ईरान और सूडान से सम्बद्ध संकल्पों के विरुद्ध मत दिया। भारत इराक और कोंगो लोकतान्त्रिक गणराज्य से सम्बन्धित संकल्पों पर अनुपस्थित रहा। यह भारत की किसी देश विशिष्ट संकल्पों का समर्थन न करने की सिद्धांतगत नीति के अनुरूप था।

अरब लीग राज्यों के अनुरोध पर इजरायल के कब्जे वाली सत्ता द्वारा फिलीस्तीनी लोगों के मानवाधिकारों के गंभीर और व्यापक उल्लंघनों पर चर्चा करने के लिए 17 से 19 अक्टूबर, 2000 को जेनेवा में मानवाधिकार आयोग का पांचवा विशेष अधिवेशन बुलाया गया। विशेष अधिवेशन ने इस विषय पर एक संकल्प पारित किया। जिसके पक्ष में 19 ने और विरोध में 16 ने मत दिया और 17 अनुपस्थित रहे। भारत ने संकल्प के

पक्ष में मत दिया। 22 नवम्बर को न्यूयार्क में आर्थिक और सामाजिक परिषद् के पुनः शुरु हुए सत्र में एक निर्णय पारित किया जिसमें आयोग के विशेष अधिवेशन द्वारा भेजे गए उस संकल्प को शामिल किया गया, जिसके पक्ष में 21, विपक्ष में 19 मत थे और 11 अनुपस्थित थे। भारत ने परिषद् के निर्णय के पक्ष में मतदान किया।

भारत ने जेनेवा में 1 से 5 मई तक आयोजित जातिवाद, रंगभेद, दूसरे लोगों के प्रति घृणा और सम्बद्ध सहिष्णुता के विरुद्ध विश्व सम्मेलन के लिए पहली तैयारी समिति बैठक में सक्रियता से भाग लिया। भारत ने रंगभेद आधार पर भेदभाव को औचित्यपूर्ण ठहराने वाले सभी सिद्धान्तों को स्पष्ट रूप से अस्वीकार किए जाने की मांग की और अपनी स्वतंत्रता के बाद से ही रंगभेद के विरुद्ध संघर्ष में अपनी प्रमुख भूमिका का उल्लेख किया। भारत ने रंगभेद के आर्थिक आधारों की ओर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता पर भी बल दिया और यथावश्यक कानूनों को मजबूत बनाने पर ध्यान केन्द्रित करते हुए सम्मेलन के आशापूर्ण दृष्टिकोण और समाज के परिवर्तनशील व्यवहारों में शिक्षा और सूचना की भूमिका का समर्थन किया।

भारत सरकार के आमन्त्रण पर, महिलाओं के विरुद्ध हिंसा पर संयुक्त राष्ट्र की विशेष रिपोर्टर सुश्री राधिका कुमारस्वामी अपने अधिदेश के भीतर आने वाले मामलों, विशेषकर महिलाओं के अवैध व्यापार पर चर्चा करने के लिए 4-13 नवम्बर, 2000 तक भारत यात्रा पर आईं। यह त्रि-राष्ट्रीय दौरे का एक हिस्सा था जिसमें नेपाल और बंगलादेश शामिल हैं। दिल्ली, मुम्बई और कलकत्ता की अपनी यात्राओं के दौरान कुमारस्वामी सरकार, राष्ट्रीय महिला आयोग, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, गैर-सरकारी संगठनों के अधिकारियों और महिला संगठनों के प्रतिनिधियों से मिलीं। वे महिलाओं के लिए बनाई गई जेलों और बचाव शरण-स्थलों को देखने भी गईं। सुश्री कुमारस्वामी ने इस बात पर सन्तोष व्यक्त किया कि भारत के पास इस समस्या से सुलटने के लिए फ्रेमवर्क है। परन्तु उनका यह विचार था कि इसके क्रियान्वयन के लिए और भी कुछ किए जाने की आवश्यकता है।

आर्थिक और सामाजिक परिषद् के मई अधिवेशन में भारत संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग में पुनः निर्वाचित हुआ। अनेक प्रमुख भारतीयों ने मानवाधिकार तंत्र व्यवस्थाओं और संधि निकायों में महत्वपूर्ण सदस्यों के रूप में निरन्तर अपनी विशिष्ट सेवाएं दीं।

इनमें श्री सोली जे. सोराबजी (मानवाधिकार के संवर्धन और संरक्षण से सम्बद्ध आयोग के विशेषज्ञ सदस्य), श्री कपिल सिबल (स्वेच्छ अवरोधन से सम्बद्ध मानवाधिकार कार्य दल संबंधी आयोग के अध्यक्ष-रिपोर्टर), श्री पी.एन. भगवती (मानवाधिकार समिति के उपाध्यक्ष एवं मानवाधिकार क्षेत्र में तकनीकी सहयोग बढ़ाने के लिए एशिया - प्रशान्त क्षेत्र के क्षेत्रीय सलाहकार), श्री आदि हुसैन (विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार से सम्बद्ध विशेष रिपोर्टर) और श्री अर्जुन सेन गुप्ता (विकास के अधिकार से संबंधित स्वतंत्र विशेषज्ञ) शामिल हैं। समीक्षाधीन वर्ष में श्री आर.वी. पिल्ले रंग भेद समाप्ति संबंधी समिति के सदस्य के रूप में चुने गए और श्री भिजूर कोठारी को 'पर्याप्त आवास के अधिकार के लिए बनाए गए अधिदेश के लिए विशेष रिपोर्टर के रूप में नियुक्त किया गया।

“21वीं शताब्दी में महिला 2000 : लिंग समानता, विकास और शान्ति ” पर महा सभा का 23वां विशेष अधिवेशन जून, 2000 में न्यूयार्क में हुआ। भारतीय प्रतिनिधि मण्डल की अध्यक्षता मानव संसाधन विकास मंत्री श्री मुरली मनोहर जोशी ने की और इसमें संसद सदस्य, नागरिक समाज के सदस्य और वरिष्ठ अधिकारी शामिल थे। भारत इस अधिवेशन में तैयारी समिति ब्यूरो के उपाध्यक्षों में से एक था और इसने “कार्यवाही के लिए बीजिंग प्लेटफार्म पर और कार्यवाही तथा पहलकदमियां” संबंधी निर्णायक कार्यदल की अध्यक्षता और अत्यन्त विवादग्रस्त एक सहमत निष्कर्ष पर पहुंचाने में भारत की भूमिका की व्यापक सराहना हुई थी।

1995 में कोपनहेगन में विश्व समान शिखर सम्मेलन में सहमत कार्यवाही घोषणा और कार्यक्रम के कार्यान्वयन की समीक्षा करने के लिए 26 से 30 जून तक जेनेवा में “ सामाजिक विकास और उसके बाद के लिए विश्व शिखर-सम्मेलन सार्वभौमिक रूप ले रहे विश्व में सभी के लिए सामाजिक विकास हासिल करना” नामक संयुक्त राष्ट्र महासभा का एक विशेष अधिवेशन हुआ था। भारतीय शिष्टमण्डल का नेतृत्व योजना आयोग के उपाध्यक्ष श्री के.सी.पन्त ने किया था और इसमें तीन संसद सदस्य शामिल थे। विशेष अधिवेशन ने एक घोषणा और एक अन्तिम दस्तावेज पारित किया जिसमें 1995 के शिखर-सम्मेलन में दिए गए वचनों को क्रियान्वित करने के लिए आगामी कार्यवाहियों और पहलकदमियों का उल्लेख है। भारतीय शिष्टमण्डल ने इन दोनों

दस्तावेजों पर हुई चर्चाओं में सक्रिय भाग लिया जो भारतीय दृष्टिकोण से सन्तोषजनक थे।

10 वर्ष की आयु से अधिक के बच्चों पर शिखर सम्मेलन की तैयारी समिति का पहला महत्वपूर्ण सम्मेलन 30 मई से 2 जून, 2000 तक न्यूयार्क में हुआ। भारत ने एक ऐसे संक्षिप्त, स्पष्ट और आशावादी दस्तावेज के अपनाए जाने की आवश्यकता पर बल दिया जिससे 2001 में आयोजित की जाने वाली महासभा के विशेष सत्र के निष्कर्ष के रूप में बच्चों के लिए मानवीय वित्तीय और प्रौद्योगिकीय संसाधनों के संचालन में सहायता प्रदान करे। भारत ने आतंकवाद और बच्चों पर उसके नापाक सम्पर्कों और विपरीत प्रभावों से सम्बद्ध समस्याओं पर बल दिया।

लोकतान्त्रिक समुदाय

विदेश मंत्री श्री जसवन्त सिंह ने 25-27 जनवरी, 2000 तक वारसा में आयोजित “लोकतान्त्रिक समुदाय की ओर” नामक मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में भारतीय शिष्टमण्डल का नेतृत्व किया। भारत ने आयोजक समूह के 8 सदस्यों में से एक सदस्य के नाते बैठक में हुई चर्चाओं और घोषणा तथा अन्तिम विज्ञप्ति को अन्तिम रूप देने में अग्रणी भूमिका अपनाई। दोनों दस्तावेजों में भारत की प्रमुख चिन्ताएं परिलक्षित हैं। घोषणा में सदस्यों के बीच सहयोग की आवश्यकता और विषयेतर द्विपक्षीय मुद्दों से बचे जाने पर बल दिया है। इसमें जातीय और धार्मिक घृणा, हिंसा और अतिवाद के अन्य रूपों को नामजूर किया गया है; लोकतंत्र को राज्य समर्थित सीमापार आतंकवाद के अन्य रूपों से मिलने वाली सक्रामक चुनौतियों को शामिल किया गया है। श्री सिंह ने ‘बेहतर प्रथाओं की हिस्सेदारी’ पर मंत्री स्तरीय पैल - II की अध्यक्षता भी की।

संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायुक्त की भारत यात्रा

संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायुक्त सुश्री खदाका आंगाता ने नेपाल और भूटान सहित दक्षिण एशियाई देशों की यात्राओं के दौरान 4 - 5 मई को भारत की दो दिन की सद्भावना यात्रा की। वे सरकार, यात्रा देशों, भारत में संयुक्त राष्ट्र की एम्बेसियों और शरणार्थियों के प्रतिनिधियों से मिलीं। भारतीय वार्ताकारों के साथ हुई बातचीत के प्रमुख विषयों में शरणार्थियों के साथ व्यवहार में भारत के रिकार्ड और भारत में संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायुक्त के स्थानीय कार्यालय की स्थिति शामिल है। सुश्री ओगारा ने अन्य

देशों से आए शरणार्थियों के स्वागत सत्कार में भारत की ऐतिहासिक भूमिका पर सन्तोष व्यक्त किया।

अक्टूबर, 2000 में भारत ने संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायुक्त के कार्यालय की कार्यकारी समिति के 51वें अधिवेशन में भाग लिया और विकासशील देशों से सम्बद्ध मसलों पर प्रकाश डाला। कार्यकारी समिति के वार्षिक सार - यू एन एच सी आर के 50 वर्ष - प्रतिक्रिया से समाधान तक’ पर भारत के वक्तव्य में विश्व भर में व्यापक दयनीय निर्धनता और अभाव के कष्ट को दूर करना, विकासशील देशों की क्षमताओं को बढ़ाना, मानवीय सहायता और दीर्घावधिक विकास के बीच सम्पर्क; और धर्मान्धता तथा घृणा से सम्बद्ध ताकतों का मुकाबला जैसे मुद्दों को किसी भी प्रकार की उपचारी नीति के लिए निर्णायक मामलों के रूप में निर्धारित किया गया।

पर्यावरण और स्थायी विकास संबंधी मसले

संयुक्त राष्ट्र स्थायी विकास आयोग का आठवां अधिवेशन 24 अप्रैल से 5 मई, 2000 तक न्यूयार्क में हुआ और इसमें स्थायी विकास के संबंध में कृषि, भू-संसाधनों, व्यापारिक और वित्तीय संसाधनों से संबंधित मसलों पर चर्चा हुई। पर्यावरण और वन मंत्री श्री टी आर. बालू के नेतृत्व में एक भारतीय शिष्टमण्डल ने विकासशील देशों में खाद्य सुरक्षा के लिए और उपयुक्त प्रौद्योगिकियों का उपयोग करते हुए गरीबी दूर करने सहित कृषि में स्थायी विकास की भूमिका की आवश्यकता पर बल दिया। भारत ने एक मुक्त, भेद-भाव रहित और समान बहु-पक्षीय व्यापार प्रणाली और अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संरचना के सुधार की आवश्यकता का उल्लेख किया ताकि निर्णय लेने वाली प्रक्रियाओं में विकासशील देशों की और भागीदारी का सुनिश्चय किया जा सके। श्री बालू ने स्थायी विकास की उपलब्धि की दिशा में विकासशील - देशों की प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण और नए और अतिरिक्त वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराने के लिए 1992 में रियो द जनेरियो में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण और विकास सम्मेलन में व्यक्त जिम्मेदारियों को विकसित देशों द्वारा पूरा न किए जाने की ओर भी ध्यान आकर्षित किया।

55वीं महासभा में, भारत ने 54वीं महासभा की दूसरी बैठक की तरह निरन्तर सक्रिय भूमिका निभाई जिसने मैक्रो अर्थ-व्यवस्था, पर्यावरण और विकास संबंधी अनेक मुद्दों की जांच की और पर्यावरण विषय के अंतर्गत अत्यन्त महत्वपूर्ण समाधान “संयुक्त राष्ट्र

पर्यावरण और विकास सम्मेलन के निष्कर्षों के क्रियान्वयन में कार्यक्रमों की 10 वर्षीय समीक्षा में यह निर्णय किया गया कि 10 वर्षीय समीक्षा समिति की बैठक शिखर-स्तरीय बैठक होगी। जिसे विश्व स्थायी विकास शिखर सम्मेलन कहा जाएगा। इसकी मेजबानी 2002 में दक्षिण अफ्रीका द्वारा की जाएगी और इसके बाद इण्डोनेशिया में मई, 2002 में मंत्री स्तर पर अन्तिम महत्वपूर्ण तैयारी अधिवेशन का आयोजन किया जाएगा।

जलवायु परिवर्तन पर द हेग सम्मेलन

जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र रूप रेखा अभिसमय के पक्षकारों के सम्मेलन का छठा अधिवेशन 13 से 25 नवम्बर तक द हेग में सम्पन्न हुआ। पक्षकारों द्वारा क्योटो प्रोटोकॉल के मैकेनिज्म और अन्य सम्बद्ध मामलों को क्रियान्वित करने की रूप-रेखाओं पर किसी सहमति पर न पहुँच पाने के कारण इस सम्मेलन के अध्यक्ष, नीदरलैंड के पर्यावरण और स्पेटियल योजना मंत्री श्री जॉन प्रोन्क ने सम्मेलन को स्थगित कर दिया और अब यह सम्मेलन मई, 2001 में होगा। असहमति प्रमुखतः विकसित देशों द्वारा स्थानीय कार्यवाही में भूमि के उपयोग में परिवर्तन तथा वन क्षेत्र और सफाई विकास मैकेनिज्म से संबंधित क्रिया-कलापों को शामिल करने के इर्द-गिर्द रही। भारत 77 के समूह का समन्वयक और प्रवक्ता और चीन क्योटो, प्रोटोकॉल का प्रवक्ता बना रहा।

संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक परिषद (ई. सी. ओ. एस. ओ. सी.) ने संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के भीतर संयुक्त राष्ट्र वन मंच (यू. एन. एफ. एफ.) की स्थापना पर विचार किया। यह सहमति हुई कि यू. एन. एफ. एफ. में सार्वभौमिक सदस्यता होगी और यह ई. सी. ओ. एस. ओ. सी. का सहायक निकाय होगा जो कार्यरत आयोगों के नियमों और प्रक्रियाओं के अन्तर्गत कार्य करेगा। इस तरह से यह अन्तर-सरकारी प्रक्रिया जिसमें भारत सहयोगी है, की रूप-रेखा के भीतर कार्य करेगा।

श्री बाबू लाल मराण्डी, पर्यावरण और वन मंत्री ने 23 मई, 2000 को नैरोबी में जैव-प्रौद्योगिकी विविधता से सम्बद्ध पत्रकारों के सम्मेलन की 5वीं बैठक की मंत्री स्तरीय गोल मेज वार्ता में और 24 मई, 2000 को एक विशेष हस्ताक्षर कार्यक्रम, जिसका आयोजन जैव सुरक्षा संबंधी काटाजेना प्रोटोकॉल पर पत्रकारों द्वारा हस्ताक्षर करने के लिए किया गया था, में भाग लिया। इस बैठक में विषय-वस्तुओं के व्यापक प्रतिबिम्बों को समाहित करते हुए 31 निर्णय लिए गए। 68 देशों ने प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किए जो

जीवित परिशोधित जीवों के सीमा-पार संचालन का विनियमित करेंगे। श्री मराण्डी ने एक वक्तव्य दिया जिसमें उन्होंने पर्यावरण के उद्देश्य के लिए भारत की वचनबद्धता का उल्लेख किया तथा घोषणा की कि भारत सरकार निकट भविष्य में जैव सुरक्षा प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर करेगी।

भारत ने यह सुनिश्चित करते हुए कि आनुवंशिकी प्रयोग प्रौद्योगिकियों संबंधी वैज्ञानिक, तकनीकी और प्रौद्योगिकी सलाह संबंधी सहायक निकाय की सिफारिशें अन्तिम निर्णयों में शामिल की गई हैं, कृषि जैव-विविधता संबंधी कार्यदल में उल्लेखनीय योगदान दिया। समान रूप से लाभों को विभाजन सुनिश्चित करने के लिए सुलभ और लाभ विभाजन के संबंध में उपभोक्ता और प्राप्तकर्ता देशों में कानूनी उपाय करने के लिए भारत की हित-चिन्ताओं का व्यापक मान्यता प्राप्त हुई। भारत ने अन्वेषण विकास में देश के मूल जैव संसाधनों और सम्बद्ध पारम्परिक ज्ञान के पेटेंट लागू करने में अनिवार्य प्रकटन के लिए सिफारिशें करने में भी सफलता हासिल की।

भारत ने 10 से 20 अप्रैल, 2000 तक नैरोबी में वाइल्ड फौना और फ्लोरा (सी आई टी ई एस) के जोखिम में पड़ी वन्य जातियों के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से सम्बद्ध अभिसमय के पक्षकारों के 11 वें सम्मेलन (सी ओ पी) में भाग लिया। सरकारी शिष्टमण्डल के आंतरिक भारत से एक गैर सरकारी संगठन ने भी सम्मेलन में भाग लिया। भारत ने केन्या के साथ मिलकर 'हाथियों' पर एक संकल्प पेश किया और हाथी दांत के व्यापार पर लगे प्रतिबंध पक्षकारों के आगामी सम्मेलन तक 2 और वर्ष के लिए प्रतिबंध को बढ़ाने में सफलता प्राप्त की। भारतीय शिष्टमण्डल द्वारा 'भालुओं' को परिशिष्ट-I तक लाने का संकल्प भारी बहुमत से पारित हुआ। एशियाई क्षेत्र से स्थायी समिति में पाकिस्तान के स्थान पर भारत का एक नए वैकल्पिक सदस्य के रूप में निर्वाचन हुआ।

श्री एस.एस. चट्टोपाध्याय, सचिव, शहरी रोजगार और गरीबी उन्मूलन ने 8-12 मई, 2000 तक नैरोबी में हैबीटैट एजेण्डा की पूर्ण समीक्षा और क्रियान्वयन के लिए महासभा के विशेष अधिवेशन की तैयारी समिति के पहले तात्त्विक सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व किया। 10 मई, 2000 को "सिक्यूरिटी ऑफ टेन्थोर" से सम्बद्ध तात्त्विक अधिवेशन के लिए वे प्रमुख वक्ता थे। उन्होंने प्रभावी रूप से यू. एन.

सी एच एफ एस को भारत में परियोजनाओं में यू एन सी एस एस को भारत के वार्षिक अंशदान 1,00,000 अमरीकी डालर के बराबर अंशदान देने के लिए राजी किया। यू एन सी एच एस भारत की निम्न लागत वाली आवास प्रौद्योगिकी में और अफ्रीकी देशों में इसकी बढ़ती हुई लोकप्रियता के प्रति अत्यन्त इच्छुक था।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यू एन ई पी) की नव गठित संस्था सार्वभौम मंत्रिस्तरीय पर्यावरण मंच ने अपनी पहली बैठक 29-31 मई, 2000 तक माल्मो, स्वीडन में यू एन ई पी की गवर्निंग काउंसिल के छठे, विशेष अधिवेशन के रूप में आयोजित की। यह बैठक 28 जुलाई, 1999 के संयुक्त राष्ट्र महासभा संकल्प 53/242 के अनुसरण में हुई थी ताकि पर्यावरण मंत्री महत्वपूर्ण और उभरते हुए पर्यावरणीय मुद्दों की समीक्षा कर सकें और भावी कार्यक्रम तैयार कर सकें। भारतीय प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व पर्यावरण और वन मंत्री श्री टी आर बालू ने किया।

एशिया और प्रशान्त में पर्यावरण और विकास मंत्रिस्तरीय सम्मेलन, 2000, 31 अगस्त से 5 सितम्बर, 2000 तक कितक्यूशू, जापान में हुआ। भारतीय प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व पर्यावरण और वन मंत्री श्री टी आर बालू ने किया। सम्मेलन में साफ पर्यावरण के लिए पर्यावरणीय ठोस विकास, 2001-2005 और कितक्यूशू पहलकदमी के लिए क्षेत्रीय कार्यक्रम पारित हुआ।

13 से 16 दिसम्बर, 2000 तक हैदराबाद में 18 देशों के सांसदों ने पर्यावरण और विकास से सम्बद्ध आठवें एशिय प्रशान्त सांसद सम्मेलन में भाग लिया। सम्मेलन में बातचीत पर्यावरण और विकास के विषयों के संबंध में नैतिक जागरूकता और सार्वजनिक शिक्षा के मुद्दों पर केन्द्रित रही। भारतीय प्रतिनिधिमण्डल ने यह सुनिश्चित करने में सफलता पाई कि विकासशील देशों के दृष्टिकोणों को प्रमुखता दी जाए और हैदराबाद घोषणा में शामिल किया जाए।

विकास मुद्दे

संयुक्त राष्ट्र सहस्राब्दि घोषणा ने, जो 6 से 8 सितम्बर तक न्यूयार्क में आयोजित राज्याध्यक्षों और शसनाध्यक्षों के सहस्राब्दि शिखर-सम्मेलन के अन्त में पारित हुई थी, ने यह माना कि मुख्य चुनौती यह सुनिश्चित करना है कि सार्वभौमिकीकरण विश्व के

सभी लोगों के लिए एक लाभदायक ताकत बने। इस घोषणा में यह कहा गया है कि यद्यपि सार्वभौमिकीकरण में अपार अवसर हैं परन्तु इसके लाभ बहुत ही असमान रूप से बंटे हुए हैं और लागत असमान रूप से विभाजित है। इसमें यह भी स्वीकार किया गया है कि विकासशील देशों और ऐसे देशों, जिनकी अर्थव्यवस्थाएं संक्रमण काल में हैं, के सामने सार्वभौमिकीकरण की प्रमुख चुनौती के जवाब में विशेष कठिनाइयां हैं। अपनी समस्त विविधताओं में सामूहिक मानवीयता के आधार पर संतुलित भविष्य बनाने के लिए विस्तृत और ठोस प्रयासों के माध्यम से ही सार्वभौमिकीकरण का पूरी तरह से सम्पूर्ण और औचित्यपूर्ण बनाया जा सकता है। इन प्रयासों में सार्वभौमिक स्तर पर ऐसी नीतियां और उपाय शामिल किए जाने चाहिए जो विकासशील देशों और संक्रमणकालीन अर्थव्यवस्थाओं की आवश्यकताओं के अनुरूप हों और उनकी प्रभावी भागीदारी के साथ बनाई और क्रियान्वित की जाएं।

77 के समूह का पहला शिखर-सम्मेलन (दक्षिण शिखर सम्मेलन) हवाना में 10-14 अप्रैल, 2000 तक हुआ। गहन रूप से हुई बातचीत के फलस्वरूप घोषणा और कार्यवाही कार्यक्रम के अतिरिक्त शिखर सम्मेलन ने राज्य और शासनाध्यक्षों के बीच अन्योन्य कार्यवाही अधिवेशन के परिणाम के रूप में “अन्य घोषणाएं” भी पारित कीं। भारतीय प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व मानव संसाधन विकास मंत्री श्री मुरली मनोहर जोशी ने किया। भारत ने दक्षिण शिखर - सम्मेलन की घोषणा और कार्यवाही कार्यक्रम को अन्तरिम रूप देने लिए तैयारी प्रक्रिया में सक्रिय हिस्सा लिया। घोषणा और कार्यवाही कार्यक्रम दोनों में लोकतन्त्र का उल्लेख है, पहले में लोकतन्त्र को बढ़ावा देने और विधि सम्मत शासन व्यवस्था को मजबूत बनाने के प्रति वचनबद्धता पर जोर दिया गया है।

बृहत आर्थिक कार्य मंदों के अन्तर्गत महा सभा की दूसरी समिति ने “विकास के लिए वित्त-पोषण पर मूल तैयारी प्रक्रिया और उच्च स्तरीय अन्तर्राष्ट्रीय अन्तर-सरकारी कार्यक्रम के लिए तैयारियों” से सम्बद्ध विकास के लिए वित्त-पोषण की तैयारी समिति के संकल्प का समर्थन करते हुए 2002 की प्रथम तिमाही तक प्रस्तावित कार्यक्रम को स्थगित करने का निर्णय किया। 1999 में भारत कार्यदल का सह-अध्यक्ष रहा है और प्रक्रिया का व्यवहार्य और यथार्थपूर्ण बनाने की आवश्यकता पर निरन्तर जोर देता रहा है।

विकास के लिए वित्त-पोषण पर उच्च-स्तरीय अन्तर-सरकारी कार्यक्रम की तैयारी समिति का पहला तात्त्विक अधिवेशन 30 मई से 2 जून, 2000 तक न्यूयार्क में हुआ इसने एक वृहत संकल्प पारित किया जिसमें एक प्रायोगिक प्रारंभिक कार्य-सूची शामिल है। भारत कार्य सूची में विकासशील देशों की समस्याओं के स्पष्ट उल्लेख को शामिल कराने में सफल रहा। 55वीं महासभा ने निर्णय लिया कि यह कार्यक्रम 2002 की प्रथम तिमाही में होगा।

“सार्वभौमिकीकरण और अन्तर-निर्भरता के संदर्भ में विकास संवर्धन में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका” पर संयुक्त राष्ट्र महासभा के 55वें अधिवेशन द्वारा पारित संकल्प में अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय से प्रगति, स्थिरता समानता बढ़ाने के उद्देश्य से अन्तर्राष्ट्रीय विकास सहयोग बढ़ाने और संरचनात्मक और वृहत आर्थिक सुधार, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश, संवर्धित अधिकारिक विकास सहायता, क्षमता निर्माण और ज्ञान तथा प्रौद्योगिकी दूसरों को उपलब्ध कराने सहित उपयुक्त उपायों के माध्यम से विश्व व्यवस्था को सार्वभौमिक रूप देने में विकासशील देशों की भागीदारी की मांग की गई है। सभी प्रकार, “निर्धनता के उन्मूलन लिए प्रथम संयुक्त राष्ट्र दशक का कार्यान्वयन” से संबंधित महासभा संकल्प में सभी देशों से अत्यन्त गरीबी में रह रहे लोगों में से आधे लोगों की 2015 तक गरीबी दूर करने के लिए सहस्राब्दि, शिखर सम्मेलन घोषणा में निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए समयबद्ध कार्यक्रम तैयार करने और उन्हें क्रियान्वित करने की मांग की गई है और इस संदर्भ में विकासशील देशों को उपयुक्त अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति उपलब्ध करा कर गरीबी को दूर करने के उनके कार्यों में अन्तर्राष्ट्रीय सहयता को मजबूत करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। इन दोनों संकल्पों का भारत ने सक्रिय समर्थन किया था।

संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक परिषद् का पहला तात्त्विक अधिवेशन 5 जुलाई से 1 अगस्त, 2000 तक न्यूयार्क में हुआ था। उच्च स्तरीय खण्ड “ 21वीं शताब्दी में विकास और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग : ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका” कि सार पर हुई चर्चाओं के अन्त में एक मंत्री स्तरीय घोषणा जारी की गई। अनेक वक्ताओं ने सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग में भारत के अनुभव की प्रशंसा की। भारत ने इन चर्चाओं के लिए क्षेत्रीय एशियाई बैठक का आयोजन भी किया।

एशिया और प्रशान्त के लिए आर्थिक और सामाजिक परिषद् (एस्केप) का 56वां वार्षिक अधिवेशन, 1-7 जून, 2000

एस्केप का 56वां वार्षिक अधिवेशन 1-7 जून, 2000 तक बैंकाक में हुआ। इसमें 19 देशों के मंत्रियों ने भाग लिया। भारतीय प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व वाणिज्य और उद्योग राज्य मंत्री ने किया। इस वर्ष के अधिवेशन का मूल विषय “21वीं शताब्दी में सार्वभौमिकीकरण और साझीदारी के माध्यम से विकास: विकासशील देशों और निष्पक्ष तथा न्यायोचित आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार प्रणाली में प्रवेश कर रही अर्थव्यवस्थाओं के समेकन के लिए एशिया प्रशान्त संदर्श” पर आयोग ने भारत द्वारा रखे गए और 8 देशों द्वारा सह-प्रायोजित अन्तरिक्ष प्रौद्योगिकी अनुप्रयोगों पर संकल्प पारित किया।

सूचना प्रौद्योगिकी पर क्षेत्रीय गोल मेज सम्मेलन

एस्केप सचिवालय के साथ मिलकर भारत ने 21 - 22 जून, 2000 को नई दिल्ली में सूचना प्रौद्योगिकी पर एक क्षेत्रीय गोल मेज सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन का उद्घाटन भारत के सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री प्रमोद महाजन ने किया और संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और समाज परिषद् के अध्यक्ष ने इसमें भाग लिया। इस बैठक में कुल मिलाकर एस्केप के 27 सदस्य देशों ने भाग लिया। सम्मेलन में अंकीय युग में तत्परता के अर्थ में क्षेत्र में देशों के समक्ष आ रही समस्याओं और मसलों पर चर्चा हुई और इन मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाई गई। बैठक के अन्त में पारित घोषणा ने आर्थिक और समान परिषद् के उच्च-स्तरीय खण्ड में चर्चाओं के लिए एक महत्वपूर्ण जानकारी के रूप में काम किया।

अन्तर्राष्ट्रीय अपराध निवारण केन्द्र (सी आई सी पी)

अपराध निवारण और अपराधियों के साथ व्यवहार पर 10वीं संयुक्त राष्ट्र कांग्रेस 10-17 अप्रैल, 2000 तक वियना में हुई। दक्षिण अफ्रीका के न्याय मंत्री श्री मॅनुअल पैनल्स को इस कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया। कोलम्बिया के उप-राष्ट्रपति श्री गस्तावो बेल लेमस को कांग्रेस के उच्च-स्तरीय खण्ड का अध्यक्ष चुना गया। भारत के केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के निदेश डा. राघवन समिति-I के अध्यक्ष चुने गए। इस कांग्रेस का प्रमुख परिणाम उच्च स्तरीय खण्ड द्वारा पारित दस्तावेज “अपराध और न्याय पर वियना घोषणा: 21वीं शताब्दी की चुनौतियों का मुकाबला,” पर भारत की पहल पर दस्तावेज में

आतंकवाद के उल्लेख को शामिल किया गया जिसमें आतंकवाद से विरुद्ध संघर्ष से संबंधित अन्तर्राष्ट्रीय दस्तावेजों में सार्वभौमिक दृढ़ता लाने के लिए अपने अधिकतम प्रयास करने के लिए सदस्य राज्यों की प्रतिबद्धता शामिल है।

संक्रमणकालीन संगठित अपराध के विरुद्ध व्यापक अभिसमय के विस्तार से सम्बद्ध, तदर्थ समिति ने इस वर्ष के दौरान मसौदा अभिसमय और उसके तीन सम्बद्ध प्रोटोकोलों पर कार्य जारी रखा। तदर्थ समिति ने 2-28 अक्टूबर तक अपने 11वें अधिवेशन का आयोजन किया। समिति ने अभिसमय और व्यक्तियों के अवैध व्यापार और प्रवासियों के अवैध व्यापार से सम्बद्ध प्रोटोकोलों के पाठों को अन्तिम रूप दिया गया और पारित करने की सिफारिश कोर समिति आग्नेयास्त्रों के प्रोटोकोल के पाठ पर सहमत नहीं हुई थी। 12 से 15 दिसम्बर तक पालेमों में हुए राजनयिक सम्मेलन में अभिसमय और सहमत दोनों प्रोटोकोलों पर हस्ताक्षर करने के लिए सदस्य राज्यों को अवसर प्रदान किया। आग्नेयास्त्रों से सम्बद्ध पाठ पर बातचीत फरवरी, 2001 में पुनः शुरू हुई।

अन्तर्राष्ट्रीय अपराध न्यायालय

अन्तर्राष्ट्रीय अपराध न्यायालय के प्रारंभिक कमीशन (प्रेपकाम) की बैठक 27 नवम्बर से 3 दिसम्बर, 2000 तक हुई। अब आई. सी. सी. के संविधान पर 137 देशों ने हस्ताक्षर कर दिए हैं जबकि 27 ने इसका अनुसमर्थन कर दिया है। न्यायालय की औपचारिक स्थापना के लिए 60 और अनुसमर्थनों की आवश्यकता है। प्रेपकाम ने अनेक अनिवार्य आन्तरिक व्यवस्था और प्रशासनिक मामलों, जिनमें वित्तीय विनियमन, बजट, न्यायालय और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् के बीच सम्बन्ध व्यवस्था तथा न्यायालय और नीदरलैंड के बीच, जहां कि न्यायालय होगा, मुख्यालय करारों को अर्धशासित करने वाले सिद्धान्त भी शामिल हैं, पर विचार-किया। इनके अतिरिक्त “आक्रमण अपराध” मद पर भी कुछ चर्चा हुई जिसकी परिभाषा पर अभी बातचीत चल रही है। प्रेपकाम का आगामी सत्र फरवरी के आरंभ में होगा। न्यायालय, जो कि एक स्थायी न्यायिक निकाय होगा, के पास जांच करने और ऐसे व्यक्तियों से सम्बन्ध जन-संहार, युद्ध अपराध और मानवता के विरुद्ध अपराध जैसे अत्यन्त गंभीर अपराध करते हों।

एच आई वी/एड्स

भारत ने 2001 में संयुक्त राष्ट्र का विशेष अधिवेशन जो पूरी तरह से एच आई

वी/एड्स को समर्पित है, बुलाने के लिए औपचारिक बातचीत में भाग लिया। भारत यह सुनिश्चित कर पाया था कि औषधियों और इलाज तक पहुंच, सह-संक्रमण, निर्धनता, एच आई वी/एड्स के सामाजिक और आर्थिक दुष्प्रभाव और बीमारी से सम्बद्ध कलंक जैसी चिन्ताओं को महा सभा द्वारा पारित संकल्प में भलीभांति प्रतिलिखित किया गया है।

जी-77 के संरक्षण में भारत सतत् रूप से राहत से विकास तथा प्राकृतिक विपदाओं पर मानवीय सहायता में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग से सम्बद्ध संकल्प का मार्ग - निर्देशन करता रहा। इस संकल्प में मानवीय सहायता के मार्ग-दर्शी सिद्धांतों की पुनः पुष्टि हो, मानवीय सहायता के प्रति तटस्थता, मानवता और निष्पक्षता के सिद्धांतों के महत्व को मान्यता प्राप्त हो। इस बात पर बल दिया गया है कि प्राकृतिक विपदाओं के क्षेत्र में मानवीय सहायता मार्गदर्शी सिद्धांतों के अनुसार और उचित सम्मान के साथ उपलब्ध कराई जानी चाहिए और इसमें समयोचित और पर्याप्त प्राकृतिक विपदा सहायता सुनिश्चित करने के लिए नई व्यवस्था की मांग की गई है। भारत ‘मानवीय हस्तक्षेप’ की संकल्पना के विरोध में निरन्तर अपनी आवाज उठाता रहा है और मानवीय सहायता के मार्ग-दर्शी सिद्धांतों के पूर्ण सम्मान की आवश्यकता को दोहराया है। एक जुटता की भावना के भीतर भारत ने इस कार्य सूची मद के भीतर अनेक संकल्प सह-प्रायोजित भी किए।

प्रशासनिक, बजट संबंधी और वित्तिय मुद्दे

संयुक्त राष्ट्र महा सभा के 55वें अधिवेशन की पांचवी समिति में वार्ता नियमित बजट के लिए मूल्यांकन के मान-दण्डों की पद्धति पर केन्द्रित थी जिसमें अमरीका अपने बकाया के निपटान के लिए पूर्वशर्त के रूप में सीमा को 25 प्रतिशत से कम करके 22 प्रतिशत करना चाहता था। 55वें अधिवेशन में यह कार्यसूची के मदों में सबसे अधिक जटिल और कठोर मद थी। बातचीत नियमित अधिवेशन के अन्त तक जारी रही और नियमित मानदण्ड और शान्ति कार्य मान-दण्ड दोनों के लिए पद्धति पर करार पर अन्तिम सहमति 24 दिसम्बर को ही हो पाई। पद्धति के सहमत संशोधन के अनुरूप भारत 2001, 2002 और 2003 वर्ष के लिए नियमित बजट के लिए क्रमशः 0.343, 0.344 और 0.341 पर मूल्यांकित किया जाएगा। भारत दोनों मान-दण्डों पर चर्चाओं में सक्रिय था और बातचीत में भारत की रचनात्मक भूमिका की 55वीं महा सभा के अध्यक्ष, पांचवी समिति के अध्यक्ष और विकासशील तथा विकसित दोनों प्रकार के देशों के प्रमुख प्रतिनिधि

मण्डलों ने बहुत सराहना की। भारी संख्या में सैनिक भेजने वाले देश के रूप में शान्ति कार्यों में भाग लेने वाले सदस्य राज्यों को समय पर प्रतिपूर्ति की इच्छा के साथ भारत ने प्रतिपूर्ति का मामला संयुक्त राष्ट्र में निरन्तर उठाया। वर्ष के दौरान भारत ने शान्ति कार्यों में भाग लेने के लिए संयुक्त राष्ट्र से 12.07 मिलियन डालर भुगतान प्राप्त किया। अक्टूबर, 2000 की स्थिति के अनुसार भारत को संयुक्त राष्ट्र से 84 मिलियन डालर की राशि लेनी थी।

संयुक्त राष्ट्र प्रणाली/संयुक्त राष्ट्र कोष की प्रचालनात्मक गतिविधियाँ और कार्यक्रम

संयुक्त राष्ट्र महा सभा के 55वें अधिवेशन की दूसरी समिति ने सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों के विशेष संदर्भ में विकास और सार्वभौमिकीकरण तथा अन्तर-निर्भरता से सम्बद्ध संयुक्त राष्ट्र, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास के लिए प्रचालनात्मक गतिविधियों पर चर्चा की भारत ने संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के विकास के लिए प्रचालन संबंधी गतिविधियों के लिए अपनी वचनबद्धता का उल्लेख किया और संयुक्त राष्ट्र के विकास संबंधी अधिदेश पर बल दिया। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के मुद्दे पर भारत व्यापार संबंधी बौद्धिक सम्पदा सेवाओं की समीक्षा और विकासशील देशों को प्रौद्योगिकियों का हस्तान्तरण बढ़ाने की आवश्यकता पर बल डाला। सार्वभौमिकीकरण और अन्तर-निर्भरता के मुद्दे पर भारत ने इस बात की आवश्यकता का उल्लेख किया कि सार्वभौमिकीकरण के लाभ सभी को सुनिश्चित किए जाएं। भारत ने सार्वभौमिकीकरण के सभी तत्वों पर विचार करने की आवश्यकता पर भी बल दिया और इसे केवल वित्तीय प्रवाह के और अधिक समेकन की प्रक्रिया में न देखने का अनुरोध किया।

भारत ने संयुक्त राष्ट्र कोष और कार्यक्रमों के कार्य में निरन्तर महत्वपूर्ण और रचनात्मक भूमिका निभाई। यू. एन. डी. पी./ यू. एन. एफ. पी. ए. और यूनीसेफ के कार्यकारी बोर्डों के सदस्य के रूप में भारत ने सुनिश्चित किया कि ये संगठन स्थायी मानवीय विकास के लिए, विशेषकर गरीबी उन्मूलन महिलाओं के उद्धार और बेहतर लाभकारी स्वास्थ्य सेवाओं का सुनिश्चय और बच्चों की आवश्यकताओं पर विदेशीन परियोजनाओं के माध्यम से अपनी-अपनी राष्ट्रीय विकास योजनाओं और प्राथमिकताओं के अनुसरण में विकासशील देशों को उनके प्रयासों में सहायता करने के लिए ये संगठन अपने प्रमुख अधिदेश पर ध्यान देते रहेंगे। भारत ने यह देखा कि परिणामोन्मुख वार्षिक रिपोर्टें संयुक्त

राष्ट्र कोषों के कार्यक्रमों में शर्तें लागू करने वाले तत्व न बनें और राष्ट्र स्तर पर चलाए जा रहे कार्यक्रमों के मूल सिद्धांतों से न हटें।

भारत के योजना आयोग के सभी कार्यकारी बोर्डों की संयुक्त बैठक में भारत-संयुक्त राष्ट्र विकास सहायता रूप रेखा पेश की गई जिसे दो प्रमुख क्षेत्रों अर्थात् लिंग समर्थन और विकेन्द्रीकरण के संकल्पनात्मक अभिविन्यास और निर्धारण के लिए बहुत प्रशंसा मिली। भारत ने सितम्बर, 2000 में न्यूयार्क में यू.एन.डी.पी. द्वारा आयोजित उसकी भावी भूमिका और कोष पर विचार करने के लिए यू.एन.डी.पी. की पहली मंत्री स्तरीय बैठक में सक्रिय भाग लिया।

प्रचालनात्मक एजेंसियों से भारत आने वाले प्रमुख व्यक्तियों में डा. नाफिस सादिक, कार्यकारी निदेशक, यू.एन.डी.पी. शामिल हैं जो सितम्बर, 2000 में भारत यात्रा पर आए। भारत ने संयुक्त राष्ट्र कोष और कार्यक्रमों में अपना योगदान जारी रखा और यू.एन.डी.पी. के लिए भारत की स्थिति विकासशील देशों में सबसे ऊपर और यू. एन. एफ. पी. ए., यूनीसेफ वार्षिक खाद्य कार्यक्रम में पांचवीं थी। इस वर्ष यूनीसेफ ने (सुश्री मारिया रोजविरया केजीक्षरस) और यू. एन. डी. एफ. पी. ए. ने (श्री फ्रैंकाइस फराइ) तथा आवासीय प्रतिनिधि नामित किए।

यूनीसेफ कार्यकारी बोर्ड का वार्षिक अधिवेशन 22 से 26 मई, 2000 तक न्यूयार्क में हुआ। इस अधिवेशन का विशेष महत्व था क्योंकि इसके कार्यों को बच्चों से सम्बद्ध विश्व शिखर - सम्मेलन से संबंधित तैयारी समिति में शामिल किया जाना था। भारत ने पोलियो के टीकों की अबाध और तुरन्त आपूर्ति; अन्य संक्रमण बीमारियों के लिए टीकाकरण पर सतत् ध्यान किशोरावस्था पर ध्यान दिए जाने की आवश्यकता; और कुपोषण का सामना करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय कार्यवाही पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता और उपयुक्त मात्रा में साफ पेय जल और उचित सफाई प्रदान करने की आवश्यकता पर बल दिया।

विशिष्ट एजेंसियां

अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन

अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के अन्तर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन का 88वां अधिवेशन जेनेवा में हुआ जिसमें भारतीय शिष्टमण्डल का नेतृत्व संघ के श्रम मंत्री श्री सत्यनारायण

डालिया ने किया। भारत को मानव संसाधन, पशिक्षण और विकास से सम्बद्ध समिति की अध्यक्षता के लिए मनोनीत किया गया था। डा. एल. मिश्रा, सचिव (श्रम) ने इस समिति की अध्यक्षता की। इस सम्मेलन में कार्य पर मूल सिद्धांतों और अधिकारों पर अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की घोषणा के अनुसरण में प्रथम सार्वभौम रिपोर्ट पर चर्चा सहित महत्वपूर्ण सामाजिक और श्रम संबंधी प्रश्नों पर चर्चा हुई।

अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के अधिशासी बोर्ड की समिति ने जांच आयोग की सिफारिशों के संबंध में म्यामां के अनुपालन पालन करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के संविधान के अनुच्छेद 33 के अन्तर्गत उपायों पर चर्चा और समिति द्वारा प्रस्तावित संकल्प पारित हुआ जिसके पक्ष में 257, विरोध में 41 मत पड़े और 31 अनुपस्थित रहे। समिति द्वारा प्रस्तावित संकल्प पर आसियान देशों के संशोधन स्वीकृत नहीं हुए। चयन समिति और परिपूर्ण बैठक के दौरान भारत के हस्तक्षेप म्यामां के समर्थन में थे। अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के अधिशासी बोर्ड ने अपनी नवम्बर की बैठक में संकल्प का समर्थन किया और इस तरह से यह उपाय 30 नवम्बर, 2000 से लागू हुए।

विश्व बौद्धिक सम्पदा संगठन (डब्ल्यू आई पी ओ)

भारत पेरिस यूनियन एक्सीक्यूटिव समिति के सदस्य के नाते डब्ल्यू आई पी ओ की महत्वपूर्ण समन्वय समिति का सदस्य था। भारतीय विशेषज्ञों ने डब्ल्यू आई पी ओ की सूचना प्रौद्योगिकी, पेटेन्ट्स लॉ, ट्रेडमार्क लॉ औद्योगिक डिजाइन और भौगोलिक संकेतों तथा कापीराइट और अन्य अधिकारों से सम्बद्ध स्थायी समितियों में सक्रिय भाग लिया और इन क्षेत्रों में बौद्धिक सम्पदा संरक्षण के लिए अन्तर्राष्ट्रीय मानदण्डों और दायित्वों को तैयार करने के लिए हुई चर्चाओं में प्रभावी रूप से योगदान दिया।

यूनेस्को

भारत ने मई और अक्टूबर, 2000 में यूनेस्को के अधिशासी बोर्ड के 159वें और 160 वें अधिवेशन में सक्रिय भाग लिया। इन अधिवेशनों में भारतीय प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व अधिशासी बोर्ड के सदस्य श्री मुचकुन्द दुबे ने किया। भारतीय प्रतिनिधि मण्डल ने यूनेस्को की मध्यावधि नीति 2001-07 और आगामी द्विवार्षिक कार्यक्रम 2001-02 दोनों के लिए कार्यक्रम प्राथमिकताओं को बनाने में अत्यन्त सक्रिय भूमिका निभाई। भारत ने वर्ष भर में आयोजित सभी यूनेस्को बैठकों में सक्रिय हिस्सा लिया और अन्तर सरकारी

समुद्र-विज्ञान आयोग की कार्यकारी परिषद् के लिए चुना गया। भारतीय स्थल में दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे को वर्ल्ड हैरिटेज सूची में शामिल किया गया जिससे सूची में भारतीय स्थलों की संख्या 22 हो गई है। पहली बार नीलगिरि बायोस्फीयर रिजर्व के लिस भारतीय प्रस्ताव को मैन खण्ड बायोस्फीयर इण्टरनेशनल कोआर्डिनेटिंग काउन्सिल के 16 वें अधिवेशन के दौरान यूनेस्को के बायोस्फीयर रिजर्व के वर्ल्ड नेटवर्क में शामिल किया गया। भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर में जैव-प्रौद्योगिकी में यूनेस्को पीठ की स्थापना पर एक करार भी सम्पन्न हुआ।

यूनिडो

वर्ष के दौरान यूनिडो की निम्नलिखित बैठकें हुई : औद्योगिक विकास बोर्ड (22वां अधिवेशन - 29 मई से 22 जून, 2000), कार्यक्रम और बजट समिति (16वां अधिवेशन - 4 से 8 सितम्बर, 2000) और औद्योगिक विकास बोर्ड (23वां अधिवेशन - 13 से 17 नवम्बर, 2000)। यूनिडो की बैठकों में प्रमुख ध्यान यूनिडो की वित्तीय कठिनाइयों पर और तकनीकी सहयोग क्रियाकलापों को बनाए रखने और उनके क्रियान्वयन को और अधिक प्रभावी बनाने पर केन्द्रित रहा। दाता देशों ने अपना समर्थन जारी रखा क्योंकि प्रशासन के और वित्तीय सुधार करने के लिए यूनिडो के महा निदेशक की पहल के बाद भी मौजूदा स्तर और संसाधन उपलब्ध नहीं कर सका था। यूनिडो के महा निदेशक श्री कार्लोस मागारीनोस जो नवम्बर में भारत आए थे, ने भारत के योगदान की प्रशंसा की और यूनिडो के दिल्ली स्थित कार्यालय का दर्जा बढ़ाकर उसे क्षेत्रीय केन्द्र कर दिया गया।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू एच ओ)

भारतीय शिष्टमण्डल ने विश्व स्वास्थ्य असेम्बली की चर्चाओं (मई, 2000) में सक्रिय भूमिका निभाई जिसमें तम्बाकू नियंत्रण पर फ्रेमवर्क अभिसमय पर चर्चा के लिए एक अन्तर-सरकारी वार्ता निकाय की शुरुआत करने; मलेरिया कार्यक्रम से पीछे हटने; संशोधित औषध नीति; एच आई वी/एड्स और खाद्य सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण मसलों पर चर्चा हुई। संक्रमण बीमारियों के बढ़ने पर चिन्ता व्यक्त करते हुए भारतीय शिष्टमण्डल ने स्वास्थ्य कार्यक्रमों और केन्द्रित क्रियान्वयन को सरल बनाने के लिए संसाधनों की उपयुक्त वचनबद्धता और प्रेषण प्रणाली में सुधार किए जाने की मांग और “ प्रमुख स्वास्थ्य प्रणाली चुनौतियों पर चर्चा ” विषय पर मंत्रिस्तरीय मेज वार्ता के दौरान भारतीय

पक्ष ने कहा कि एक ही आदर्श को सभी देशों पर लागू नहीं किया जा सकता है और इसके लिए निजी और सरकार की विवेकपूर्ण मिश्रित पहलकदमियों की आवश्यकता है। तम्बाकू नियंत्रण पर विश्व स्वास्थ्य संगठन फ्रेमवर्क अभिसमय पर अन्तर-सरकारी वार्ता निकाय का पहला अधिवेशन अक्टूबर, 2000 में जेनेवा में हुआ। भारत वार्ता निकाय की उप-पीठों में एक चुना गया।

खाद्य और कृषि संगठन के महानिदेशक की भारत यात्रा

खाद्य और कृषि संगठन के महा निदेशक डाक्टर जेकस दिओफ भारत सरकार के साथ चर्चा के लिए और देश में खाद्य और कृषि संगठन के क्रिया-कलापों की समीक्षा करने के लिए 11-12 सितम्बर, 2000 तक भारत यात्रा पर आए।

चुनाव और नियुक्तियां

3 मई को न्यूयार्क में परिषद् के पुनः शुरु संगठनात्मक अधिवेशन के दौरान संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और समाज परिषद् के सहायक निकायों के चुनावों में भारत 3 वर्ष की अवधि (2001-2003) के लिए मानवाधिकार आयोग में पुनः निर्वाचित हुआ। इसी चुनाव में भारत स्थायी विकास आयोग, सांख्यिकीय आयोग, अपराध निवारक और आपराधिक न्याय आयोग और विश्व खाद्य कार्यक्रम के अधिशासी निकाय में भी निर्विरोध निर्वाचित हुआ। 23-24 नवम्बर, 2000 को लन्दन में आयोजित परिषद् के 18 वें अधिवेशन में भारत को अन्तर्राष्ट्रीय शर्करा संगठन परिषद् का अध्यक्ष चुना गया।

जातीय भेदभाव के सभी रूपों को समाप्त करने से संबंधित अभिसमय के पक्षकार राज्यों की बैठक में भारतीय उम्मीदवार श्री आर. वी. पिल्लै को जातीय भेदभाव के सभी रूपों को समाप्त करने के संबंधित समिति के लिए चुना गया। महा सभा में श्री सी. आर. गरेखान को अंशदान समिति के लिए चुना गया।

राष्ट्रमण्डल

राष्ट्रमण्डल के विशालतम सदस्य भारत का प्रतिनिधित्व सचिवालय और संगठनों के सभी महत्वपूर्ण नियंत्रण निकायों में है। यह चौथा सबसे बड़ा अंशदाता, राष्ट्रमण्डल के अन्य देशों को उपलब्ध कराई गई विशेषज्ञ सहायता का प्रमुख केन्द्र और राष्ट्रमण्डल प्रशिक्षणार्थियों के लिए प्रमुख स्थान है। भारत ने सदैव साथी विकासशील देशों के साथ

और उनकी आकांक्षाओं के साथ संयुक्त राष्ट्र में एकजुटता दिखाई है। इस एकजुटता को ठोस अर्थ प्रदान करते हुए भारत ने संयुक्त राष्ट्र में राष्ट्रमण्डल के छोटे राज्यों के संयुक्त कार्यालय में अपना अंशदान 15,000 अमरीकी डालर के बढ़ाकर 75,000 अमरीकी डालर प्रति वर्ष कर दिया। लाभ पाने वाले देशों ने इस उदारता की सराहना की।

अन्तर्राष्ट्रीय विधि एवं घटनाएं

इस वर्ष की एक महत्वपूर्ण घटना में, मंत्रालय के विधि एवं संधि प्रभाग ने, अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में पाकिस्तान के विरुद्ध 10 अगस्त, 1999 की हवाई घटना से सम्बद्ध मामले को उठाया और उसके क्षेत्राधिकार की प्राथमिक आपत्तियों पर विजय हासिल की। पाकिस्तान ने 10 अगस्त, 1999 को उसके नौ सेना के जहाज को मार गिराने के विरुद्ध भारत से मुआवजा लेने के लिए 21 सितम्बर 1999 को अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में एक शिकायत दर्ज की। भारत ने न्यायालय के कानून से सम्बद्ध अनुच्छेद 36(2) के तहत 15 सितम्बर, 1974 को दर्ज भारत घोषणा के अनुरूप 2 नवम्बर, 1999 को न्यायालय में अपनी प्रारम्भिक आपत्तियाँ पेश कीं जिसमें यह कहा गया कि भारत और पाकिस्तान, जो राष्ट्रकुल के सदस्य देश हैं, के बीच विवाद और संयुक्त राष्ट्र चार्टर जैसी बहुपक्षीय संधियाँ, उनके क्षेत्राधिकार से बाहर हैं।

भारत द्वारा उठाई गई प्रारम्भिक आपत्तियों के विरुद्ध पाकिस्तान के अभ्यावेदन पेश करने के पश्चात् अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय ने 3-6 अप्रैल, 2000 तक 'द हेग' में इस मामले की मौखिक सुनवाई की। 21 जून, 2000 को न्यायालय ने क्षेत्राधिकार से सम्बद्ध अपना फैसला सुनाया, जिसमें न्यायालय ने दो के मुकाबले 14 मतों से पाकिस्तान के आवेदन को अस्वीकार कर दिया और यह पाया कि भारत के विरुद्ध पाकिस्तान के दावे का निर्णय करना उसके क्षेत्राधिकार में नहीं है। न्यायालय ने पाकिस्तान के विरुद्ध भारत के "राष्ट्रकुल के आरक्षित अधिकारों" की वैधता के उपयोग को जायज ठहराया।

इस सम्बन्ध में, भारत के महान्यायवादी की अध्यक्षता में विशेषज्ञों तथा अधिवक्ताओं का एक दल भारत से गया। संयुक्त सचिव (एल. एन्ड. टी.) ने इस मामले में सह-एजेन्ट तथा परामर्शदाता/अधिवक्ता की भूमिका निभाई।

वर्ष 2000 के महाधिवेशन के संबंध में छठी समिति ने कार्यसूची की अनेक मदों पर विचार किया जिनमें राज्यों और उनकी परिसंपत्तियों के क्षेत्राधिकार से जुड़ी उन्मुक्तियों से संबद्ध अभिसमय; अन्तर्राष्ट्रीय विधि के शिक्षण अध्ययन, प्रसार और व्यापक समझबूझ में सहायता देने से संबद्ध संयुक्त राष्ट्र कार्यक्रम; अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार कानून से संबद्ध संयुक्त राष्ट्र आयोग (अनसिटराल) के तैतीसवें सत्र के कार्यों पर रिपोर्ट; अन्तर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय की स्थापना; संयुक्त राष्ट्र चार्टर और इस संगठन को सुदृढ़ बनाने के संबंध में विशेष समिति की रिपोर्ट; अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद को मिटाने के उपाय और संयुक्त राष्ट्र प्रशासनिक न्यायाधिकरण के विधान की समीक्षा शामिल थी।

भारत द्वारा प्रस्तावित आतंकवाद से संबद्ध अभिसमय इस सत्र की प्रमुख बात थी। छठी समिति के एक कार्यकारी समूह ने इस मसौदे (दस्तावेज ए/वी 6/55/1) पर विचार किया। मसौदे के अनुसार यदि कोई व्यक्ति कानूनन और जान-बूझकर ऐसा कार्य करता है जिससे किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाए अथवा वह गंभीर रूप से घायल हो जाए अथवा जिससे किसी राज्य अथवा सरकार की सम्पत्तियों, सार्वजनिक परिवहन प्रणाली अथवा बुनियादी ढांचे को भारी नुकसान पहुंचे और जिसका उद्देश्य सरकार अथवा किसी अन्तर्राष्ट्रीय संगठन को कोई कार्य करने अथवा कोई कार्य न करने के लिए बाध्य करना है, तो इसे अपराध किया गया माना जाएगा। मसौदे के अनुसार उस व्यक्ति का कोई सहयोगी और साथ ही ऐसा कोई व्यक्ति भी अपराधी माना जाएगा जो ऐसा करने के लिए अन्य लोगों को संगठित करता है, निदेश देता है अथवा उकसाता है। इस अभिसमय में ऐसे कृत्यों को इसे गंभीर अपराध के रूप में राज्यों द्वारा कानूनों के अन्तर्गत दंडनीय बनाने तथा आरोपित व्यक्तियों को या तो प्रत्यर्पित करने या उन पर मुकदमा चलाने का प्रावधान है। इस मसौदा अभिसमय में जांच तथा मुकदमा चलाने में आपसी विधिक सहायता प्रदान करने का भी प्रावधान है। राज्यों से यह भी अपेक्षा की गयी है वे यह सुनिश्चित करें कि उनके भूक्षेत्रों का उपयोग आतंकवादियों के अड्डों एवं प्रशिक्षण केन्द्रों के रूप में नहीं किया जाए और वे अपने-अपने भूक्षेत्रों में आतंकवाद के किसी भी कृत्य की तैयारी और इसके वित्तपोषण को रोकने और दबाने के लिए आवश्यक उपाय करें।

यूरोपीय संघ तथा समान विचार वाले राज्यों (बुल्गारिया, साइप्रस, चेक गणराज्य, इस्टोनिया, हंगरी, लात्विया लिथुआनिया, नार्वे, माल्टा, पोलैंड, रोमानिया, स्लोवाकिया और तुर्की) की ओर से फ्रांस ने सामान्यतः भारतीय पहल का समर्थन किया। इस्लामिक

देशों के संगठन की ओर से मलेशिया ने भी अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद से संबद्ध व्यापक अभिसमय के मसौदा के प्रति अपना समर्थन व्यक्त किया, हालांकि इसने आतंकवाद की परिभाषा से संबद्ध अपना स्वयं का प्रस्ताव प्रस्तुत किया। अभी तक की गयी प्रगति संतोषजनक है परन्तु नाभिकीय आतंकवाद के दमन से संबद्ध प्रारूप अभिसमय से जुड़े लंबित मसलों के साथ-साथ फरवरी और अक्टूबर, 2001 में होने वाली कार्यकारी दल की बैठक में विशिष्ट अनुच्छेदों से संबंधित अनेक प्रस्तावों पर अभी विचार किया जाना है।

अन्तर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय की स्थापना से सम्बद्ध संयुक्त राष्ट्र तैयारी आयोग न्यायालय की शीघ्र स्थापना के लिए लगातार कार्य कर रहा है। फिलहाल ये, आक्रमण के अपराध, न्यायालय के वित्तीय नियम एवं विनियम, न्यायालय तथा संयुक्त राष्ट्र के बीच सम्बन्ध करार तथा विशेषाधिकारों और उन्मुक्तियों की परिभाषा के प्रश्न पर विचार कर रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय की रोम संविधि जिसे 17 जुलाई 1998 को पारित किया गया था, इसके पक्ष में 120 मत थे 7 विपक्ष में थे जबकि 20 ने इसके मतदान में भाग नहीं लिया, यह अब तक लागू नहीं हुई है। केवल 14 देशों (बेल्जियम, बेलीज, कनाडा, फिजी, फ्रांस, घाना, थाईलैंड, इटली, नार्वे, सान मारिनो, सेनेगल, ताजिकिस्तान, त्रिनिडाड एवं टोबागो तथा वेनेजुएला) ने संविधि का अनुसमर्थन किया है। रोम संविधि के लागू करने के लिए 60 अनुसमर्थन अपेक्षित हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय श्रम आयोग के 52वें सत्र में उसका कार्य राज्यों के दायित्व से सम्बद्ध विषय के अन्तर्गत राज्यों के दायित्व के प्रकरण और रोकथाम से सम्बद्ध उप-प्रकरणों के द्वितीय तथा अन्तिम पाठन को पूरा करने का रहा। डॉ. पी. एस. राव, विदेश मंत्रालय के विधिक सलाहकार रोकथाम से सम्बद्ध विषय के संवक्ता थे। जिन अन्य विषयों पर काम चल रहा है वे हैं: बहुपक्षीय संधियों का आरक्षण, राज्यों के उत्तराधिकार से सम्बद्ध राष्ट्रीयता और राज्यों के एकपक्षीय कार्य। भारतीय शिष्टमंडल में छठी समिति द्वारा पेश अन्तर्राष्ट्रीय श्रम समिति की सिफारिशों के सम्बन्ध में इन सभी विषयों पर अपने वक्तव्य दिए।

भारतीय शिष्टमंडल ने अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद, चार्टर समिति, अन्तर्राष्ट्रीय नियम आयोग, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार नियम से सम्बद्ध संयुक्त राष्ट्र आयोग, और संयुक्त राष्ट्र प्रशासनिक न्यायाधिकरण की संविधि का पुनरीक्षण के विषयों के सम्बन्ध में छठी समिति

में संगत मदों पर वक्तव्य दिए। हमारे शिष्टमंडल ने महासभा में समुद्र के नियमों से सम्बद्ध मदों, संयुक्त राष्ट्र और एशियाई अफ्रीकी विधिक परामर्शी समिति के बीच सहयोग और अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय की रिपोर्ट पर भी वक्तव्य दिए।

यू. एन. सी. आई. टी. आर. ए. एल. ने प्राप्य वित्त पोषण तथा इलैक्ट्रॉनिक हस्ताक्षर से सम्बद्ध प्रारूप पाठ पर भी विशिष्ट प्रगति कर ली है और वर्ष 2001 में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में प्राप्य कार्य से सम्बद्ध प्रारूप अभिसमय पर कार्य शीघ्र समाप्त करने की आशा है। आयोग ने “निजी रूप से वित्त पोषित आधारभूत परियोजनाओं से सम्बद्ध विधायी संदर्शिका” की तैयारी से सम्बद्ध मसलों पर भी चर्चा की। विधायी सिफारिशों की समेकित सूची पर विचार करने के पश्चात् यह निश्चय किया गया कि विधायी संदर्शिका के तहत आदर्श नियम अथवा आदर्श विधायी उपबंधों के प्रश्नों पर आयोग द्वारा उसे 2001 के 34वें सत्र में विचार किया जाएगा।

संयुक्त राष्ट्र प्रशासनिक न्यायाधिकरण की संविधि के कुछ संशोधन निम्नलिखित प्रभाव से पारित हुए:-

यह अपेक्षा कि न्यायाधिकरण के सदस्यों में अपेक्षित शैक्षिक योग्यता तथा अनुभव हो, जिसमें उनकी विधिक योग्यताएं और उपयुक्त अनुभव भी शामिल हैं, एक बार पुनर्नियुक्ति की संभावना के साथ न्यायाधिकरण के सदस्यों के कार्यकाल को तीन वर्ष से चार वर्ष तक बढ़ाना, संविधि में नियम के विशिष्ट प्रश्नों को विचारार्थ सात सदस्यीय न्यायाधिकरण के समक्ष रखना न कि तीन सदस्यों के पैनल के समक्ष। यह संशोधन 1 जनवरी, 2001 से प्रवृत्त होंगे।

मंत्रालय ने विभिन्न मंचों पर संयुक्त राष्ट्र की नियम बनाने से सम्बद्ध गतिविधियों: वियना, अस्ट्रिया में 27-31 मार्च, 2000 को बाह्य अंतरिक्ष के शान्तिपूर्ण उपयोग से सम्बद्ध संयुक्त राष्ट्र उप-समिति के 39वें सत्र; और पेरिस, फ्रांस में 2-7 जुलाई 2000 को हुई अन्डर वाटर क्लचरल हेरीटेज के संरक्षण के लिए प्रारूप अभिसमय पर

विचार-विमर्श के लिए सरकारी विशेषज्ञों की तीसरी बैठक और भूमि, वायु और समुद्र द्वारा प्रवासियों की तस्करी के विरुद्ध प्रारूप प्रोटोकॉल पर अन्तर्राष्ट्रीय समझौता 9-13 अक्टूबर, 2000 तक वियना, अस्ट्रिया में आयोजित देश से बाहर संगठित अपराधों के विरुद्ध संयुक्त राष्ट्र अभिसमय को पूरा करने और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार नियमों और उसके कार्यकारी दलों से सम्बद्ध आयोग में भाग लिया।

वर्ष 2000 के लिए एशियाई अफ्रीकी विधिक परामर्शी समाप्ति (ए. ए. एल. सी. सी.) का वार्षिक सम्मेलन काहिरा में 19-23 फरवरी 2000 तक हुआ। इसमें चीन के श्री तांग चेंगयूआन के द्वितीय और अंतिम कार्यकाल की समणित के पश्चात् मिस्त्र के राजदूत डॉ. वाफिक जेड कामिल को तीन वर्ष की अवधि के लिए महासचिव चुना गया। इसमें अन्तर्राष्ट्रीय विधि के अनेक विषयों को शामिल किया गया: अन्तर्राष्ट्रीय विधि आयोग के 51वें अधिवेशन में इसके कार्यों पर रिपोर्ट; शरणार्थियों की स्थिति और उनके साथ किया जाने वाला व्यवहार; प्रवासी कामगारों के लिए कानूनी संरक्षण; राष्ट्रीय विधान का राज्यक्षेत्रातीत प्रवर्तन; किसी तीसरे पक्ष के विरुद्ध लगाये गये प्रतिबंध; राज्यों और उनकी परिसंपत्तियों के क्षेत्राधिकार से संबंधित उन्मुक्तियाँ, संयुक्त राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय विधि दशक; अन्तर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय की स्थापना से संबद्ध संयुक्त राष्ट्र पूर्णाधिकारी सम्मेलन की अनुवर्ती कार्रवाई; आई. सी. सी. की तैयारी आयोग के कार्य; संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण एवं विकास सम्मेलन; अनुवर्ती कार्रवाई; व्यापारिक कानून मामले।

इस वर्ष भारत ने अनेक बहुपक्षीय/द्विपक्षीय करारों/व्यवस्थाओं पर हस्ताक्षर किये और इनका अनुसमर्थन किया। इस वर्ष भारत द्वारा विदेशों के साथ की गयी संधियों/व्यवस्थाओं की सूची परिशिष्ट IX पर है। भारत की ओर से संधियाँ/व्यवस्थाएं करने के लिए वर्ष 2000 के दौरान पूर्ण शक्तियों के दस्तावेजों की एक सूची परिशिष्ट X पर तथा अनुसमर्थन दस्तावेजों की एक सूची परिशिष्ट XI पर है।



आर्थिक प्रभाग

विश्व अर्थव्यवस्था, जिसमें वर्ष 1999 में संतुलित वृद्धि दर्ज हुई थी, ने वर्ष 2000 के पूर्वार्द्ध में तीव्र वृद्धि दर्ज होना जारी रखा। वर्ष 2000 में विश्व उत्पादन दर 4 प्रतिशत अधिक हुई जबकि विश्व व्यापार 12.5 प्रतिशत की दर से बढ़ा जो 1965 से अब तक उच्चतम दर है। विश्व आर्थिक तथा वित्तीय स्थिति में सुधार में योगदान देने वाले कारकों में पूर्वी एशियाई क्षेत्र का आर्थिक सुधार, ज्ञान आधारित उद्योगों का तीव्र विकास तथा विश्व व्यापार प्रवृत्तियों में सुधार थे। तथापि, वर्ष के अन्त में यह देखा गया कि प्रधान अर्थव्यवस्थाओं द्वारा दर्ज की गई वृद्धि में कुछ कमी आई।

जबकि विश्व अर्थव्यवस्था की तात्कालिक सम्भावनाओं में सुधार आया है, सार्वभौमिक आर्थिक विकास के समेकन तथा सार्वभौमिकीकरण के लाभों का अधिक न्यायोचित और संतुलित वितरण का सुनिश्चय करना चुनौती बने हुए हैं। स्थायी सार्वभौमिक आर्थिक वृद्धि विकास तथा गरीबी में कमी के लिए आवश्यक हैं।

वर्ष 1998 तथा 1999 में विश्व के कुछ भागों में देखी गई मंदी की प्रवृत्तियों के प्रमुख कारणों में कमी नहीं आई। नई प्रकार की चूकों से विकासशील देशों के जोखिम बढ़े हैं। तेल आयातक देश विशेष तौर पर तेल की कीमतों में लगातार वृद्धि से प्रभावित हुए। विश्व आर्थिक निष्पादन तथा विश्व बाजारों की स्थिरता पर तेल की कीमतों में वृद्धि की अनिश्चितता छाई रही।

विश्व भर में सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों की प्रबल सम्भावना और आश्वासन

भी सार्वभौमिकीकरण से जुड़ी अनिश्चितताओं के पहलू तथा उसके प्रभाव विशेष तौर पर विकासशील देशों के बाजारों पर जो बाहरी प्रभावों से प्रभावित रहे, को दूर नहीं कर सकी। सार्वभौमिक वित्तीय तथा व्यापार प्रणाली की अन्तरनिर्भरता ने विकसित एवं विकासशील देशों के बीच तकनीकी तथा आर्थिक दूरी को पाटने के लिए संवर्धित आर्थिक सहयोग और वार्ता की आवश्यकता को कम करके आंका।

विश्व की तीन प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में समष्टि अर्थशास्त्र संबंधी असंतुलन देखा गया, ऐसा यूरोपीय मौद्रिक प्राधिकरणों द्वारा यूरो के मूल्य में हस्तक्षेप के रूप में देखा गया। तकनीकी स्टॉक मूल्यों में तेजी से लगातार स्टॉक बाजार उतार-चढ़ाव की आशंका का कारण रही। उपभोक्ता वस्तुओं के मूल्यों में कमी तथा तेल के आयात के बढ़ते हुए बिलों से विकासशील देशों का ओ डी ए प्रवाह और अधिक कम हुआ तथा अल्प विकसित देशों के लिए दीर्घकालिक पूंजीगत प्रवाह संकुचित हुए। इन प्रवृत्तियों से आर्थिक और सामाजिक ढांचे में महत्वपूर्ण निवेश आवश्यकताओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली की विसंगतियां, विशेष तौर पर विकसित अर्थव्यवस्था बाजारों में विकासशील देशों की बाजार पहुंच के रूप में, और अधिक कमजोर बनाने के कारक रहे। 'पश्च सिष्टल' परिदृश्य ने विशेष तौर पर विश्व व्यापार संगठन प्रक्रिया में विश्वास जगाने की आवश्यकता को उजागर किया। यह भी देखा गया कि व्यापार वार्ताओं में श्रम और पर्यावरण संबंधी मानकों को थोपने के प्रयास वास्तव में शनैः शनैः संरक्षणवाद के प्रच्छन्न रूप थे। विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों के विरुद्ध भण्डारण

रोधी कार्वाइयों में वृद्धि हुई है। विकसित देशों में कृषिगत उत्पादों को घोर संरक्षण तथा सहायता दी गई इससे विकासशील देशों के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले बहुसंख्य गरीब व्यक्तियों को अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से मिलने वाले लाभ के रास्ते बन्द हुए। विश्व व्यापार संगठन के प्रावधानों के अन्तर्गत विकासशील देशों के लिए देय विशेष एवं विभेदक व्यवहार वास्तविक तौर पर उन्हें मिलने चाहिए। विकसित देशों को विशेष तौर पर उस समय वस्तुओं और सेवाओं की बाजार पहुंच तथा वास्तविक व्यक्तियों के मुक्त आवागमन पर रोक नहीं लगानी चाहिए जब विकासशील देशों को अपनी अर्थव्यवस्थाओं को खोलने तथा अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में प्रतियोगिता करने के लिए कहा जा रहा हो। भारतीय अर्थव्यवस्था में समष्टि संबंधी मौलिक तत्व मजबूत बने रहे। तेल मूल्यों में वृद्धि के बावजूद मुद्रा स्फीति की दर संतुलित रही। भारत का विदेशी मुद्रा भण्डार अब तक का सबसे अधिक रहा। लक्ष्य से अधिक निर्यात किया गया और चालू लेखा में कमी वहन योग्य सीमा में रही जबकि राजकोषीय घाटा पिछले दो वर्षों के मुकाबले कम रहा। बहुत से क्षेत्रों में सुधार कार्य जारी रहा। राजकोषीय वर्ष के प्रथम सात महीनों में सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर 6.4% रही। राजकोषीय घाटे के स्तर को कम रख कर, निर्यात की वृद्धि की गति को बनाए रखकर तथा आर्थिक सुधार प्रक्रिया को तेज करने से आर्थिक वृद्धि दर को सुधारने में मदद मिली। वित्तीय वर्ष के प्रथम सात महीनों में औद्योगिक उत्पादन का सामान्य सूचकांक 5.7 प्रतिशत बढ़ा, जबकि पिछले वर्ष के आंकड़ों के मुकाबले नवम्बर मास में प्रत्यक्ष कर उगाही में 57.08 प्रतिशत की प्रभावशाली वृद्धि हुई। वित्तीय वर्ष के प्रथम सात महीनों में भारतीय निर्यात पिछले वर्ष के 20.76 बिलियन अमरीकी डालर के मुकाबले 20.51 प्रतिशत बढ़ कर 25.01 बिलियन अमरीकी डालर का हुआ। भारत का व्यापार घाटा अनुमानतः 5.26 बिलियन अमरीकी डालर का रहा जो पिछले वर्ष की इसी अवधि के 5.80 बिलियन अमरीकी डालर के मुकाबले कम रहा। अप्रैल-अक्टूबर अवधि में तेल आयात अनुमानतः 9.73 बिलियन अमरीकी डालर का हुआ जो अप्रैल-अक्टूबर 1999 के 5.27 बिलियन अमरीकी डालर से 85 प्रतिशत अधिक था।

वर्ष के दौरान अन्य देशों के साथ भारत के व्यापारिक तथा आर्थिक संबंध लगातार तेजी से बढ़ते रहे। विदेश मंत्रालय तथा विदेश स्थित भारतीय मिशनों में व्यापारिक तथा औद्योगिक घरानों को विदेशी व्यापार तथा विदेशों में भारतीय निवेश संवर्धन में भाग लिया

तथा सहायता प्रदान की। यूरोपीय संघ भारत का प्रमुख व्यापारिक भागीदार बना रहा। अन्य प्रमुख व्यापारिक भागीदारों में अमरीका, जापान, चीन, संयुक्त अरब अमीरात तथा रूस रहे। भारत द्वारा निर्यात की गई प्रमुख वस्तुओं में कृषिगत तथा उसके सहायक उत्पाद, समुद्री उत्पाद, लौह अयस्क, चमड़े की वस्तुएं, हीरे और जवाहरात, औषधि और दवाएं, रसायन तथा उससे संबंधित उत्पाद, इंजीनियरी वस्तुएं, इलैक्ट्रानिक वस्तुएं तथा वस्त्र शामिल हैं।

टेकसास आधारित अमरीकी कम्पनी राइस टेक इंक द्वारा सितम्बर 2000 में अमरीकी पेटेंट कानून में कुछ वस्तुओं के लिए अपने दावों को वापस लेना, जिन्हें बासमती चावल की तरह अमरीका में उगाए गए चावल की नई किस्म का बाजार बनाने के लिए प्राप्त किया था, भारतीय अनाज निर्यातकों के लिए हर्ष की घटना रही। भारत सरकार ने अमरीकी पेटेंट तथा ट्रेड मार्क आफिस में पेटेंट का विरोध किया तथा नई किस्म के चावल को बासमती चावल नाम देने के समर्थन में राइस टेक के दावों में से चार को वापस लेने से भारत के बासमती चावल के निर्यात में बाधा पहुंचाने के लिए राइस टेक के पेटेंट के प्रयोग की संभावना कम हुई है।

भारत के निर्यात बाजार में हीरा एक सबसे बड़ी मद है और भारत विश्व में कटे हुए तथा पालिश किए हुए हीरों का सबसे बड़ा निर्यातक देश है। भारत का हीरों का निर्यात 30 वर्षों के अंतराल में 1200 गुना बढ़कर 1999 में 6.2 बिलियन अमरीकी डालर तक पहुंच गया। भारत विश्व की खदानों से निकाले गए करीब 70 प्रतिशत खुरदरे हीरों को प्रसंस्कृत करता है तथा विश्व के हीरों के बाजार में कुल कीमत में 50 प्रतिशत का योगदान देता है।

भारत ने दवाई उद्योग में अत्यधिक उन्नति की है तथा दवा का अब प्रमुख निर्यातक देश बन गया है। भारतीय दवाओं ने विश्व के विकसित एवं विकासशील देशों में बाजारों में सिक्का जमाया है। भारतीय दवाओं की निर्यात की वृद्धि दर हाल के वर्षों में काफी प्रभावशाली रही। पिछले तीन वित्तीय वर्षों में वार्षिक निर्यात 5000 करोड़ रुपए से अधिक का हुआ तथा इसमें वृद्धि की और अधिक संभावनाएं हैं। फिर भी भारतीय दवा निर्यातकों को बहुत से देशों में कुछ समस्याओं, जैसे भारतीय दवाओं के पंजीकरण तथा गैर शुल्क प्रतिबन्ध जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऐसी समस्याओं तथा उनके उपचारात्मक उपायों पर विचार करने के लिए अगस्त 2000 में सचिव (आर्थिक संबंध

) की अध्यक्षता में मंत्रालय में एक बैठक हुई। इस बैठक में स्वास्थ्य, वाणिज्य तथा उद्योग, और रसायन एवं उर्वरक मंत्रालयों तथा व्यापारिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस बैठक में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों के सुझाव एवं टिप्पणियां अनुवर्ती कार्रवाई के लिए विदेश स्थित भारतीय मिशनो को परिचालित की गई।

भारत को विशेष रूप से यूरोपीय संघ के देशों में वस्त्र, दवाओं तथा लौह एवं इस्पात जैसे क्षेत्रों में जहां भारतीय निर्यात प्रतियोगी हैं, भण्डारण रोधी शुल्कों तथा समतोलन शुल्कों जैसे व्यापार रक्षक उपायों का सामना करना पड़ा। भारत यूरोपीय संघ के देशों की भण्डारण रोधी कार्रवाइयों का अत्यधिक शिकार रहे देशों में से एक है। बाद में अमरीका के लिए इस्पात निर्यात में भी भारत को ऐसी ही समस्याओं का सामना करना पड़ा। अमरीकी इस्पात निर्माता कम्पनियों के दबाव में अमरीकी सरकार ने भारत के कुछ इस्पात उत्पादों पर नवम्बर 2000 में भण्डारण रोधी तथा समतोलक शुल्क लगाया। भारतीय पक्ष द्वारा शुल्क वापस लेने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। 1997 से अपवादात्मक ढील देने से यूरोपीय संघ द्वारा इंकार करने से (किसी एक श्रेणी का कोटा किसी दूसरी श्रेणी में देते हुए) भारत को यूरोपीय संघ के देशों में अपने वस्त्र निर्माण में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इस संबंध में भारत सरकार के लगातार प्रयासों से यूरोपीय संघ ने सितम्बर 2000 में 3500 टन की अपवादात्मक ढील देकर यूरोपीय संघ को भारतीय वस्त्र निर्यात 300 करोड़ रुपए तक पहुंचाने में मदद की।

निर्यात संवर्धन के लिए की गई कार्रवाइयों में देश तथा विदेशों में बहुत से व्यापार मेलों, प्रदर्शनियों तथा संगोष्ठियों का आयोजन करना शामिल है। भारतीय व्यापार संवर्धन संगठन ने नवम्बर 2000 में नई दिल्ली में अपना वार्षिक भारत अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेला आयोजित किया। इस प्रदर्शनी में उद्योग, आधारभूत, तकनीकी, दूर संचार, सेवाओं, मानव संसाधन, कृषि तथा कृषि तकनीकी, टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुएं, खाद्य और खाद्य पदार्थ, स्वास्थ्य, वस्त्र, उपहार की वस्तुएं, तथा रसोई के उपकरण जैसे विविध क्षेत्रों की वस्तुएं रखी गईं। विदेशों की 300 कम्पनियों सहित 5000 से अधिक कम्पनियों ने इस मेले में भाग लिया। भारत अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेला 2000 के साथ साथ एशिया- प्रशान्त सहस्राब्दि मेला भी आयोजित किया गया। इसे संयुक्त राष्ट्र संघ, एस्केप, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय तथा भारतीय व्यापार संवर्धन संगठन ने संयुक्त रूप से आयोजित किया। भारतीय व्यापार संवर्धन संगठन द्वारा आयोजित अन्य व्यापार मेलों में अन्तर्राष्ट्रीय चमड़ा

मेला जनवरी/फरवरी 2000 में चेन्नई में, मार्च 2000 में कलकत्ता में, मार्च 2000 में दिल्ली में खाद्य मेला तथा अक्टूबर 2000 में दिल्ली में वस्त्र मेला शामिल हैं।

भारत में आयोजित अन्य व्यापार संवर्धन मेलों में नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा फरवरी 2000 में नई दिल्ली में आयोजित विश्व पुस्तक मेला 2000 प्लास्टिइंडिया फाउण्डेशन द्वारा फरवरी 2000 में आयोजित प्लास्टिइंडिया 2000, फरवरी 2000 में कलकत्ता में जूट मैन्युफैक्चरर्स डेवलेपमेंट काउंसिल द्वारा जूट इंडिया 2000, टेलकाम प्रोजेक्ट्स इंडिया प्रा. लि. द्वारा सितम्बर 2000 में नई दिल्ली में मेटल एण्ड मेटलार्जी, 2000, भारतीय वाणिज्य उद्योग मंडल द्वारा सितम्बर 2000 में नई दिल्ली में एशिया पैसिफिक एक्सपो 2000 आई टी ई इंडिया प्रा. लि. द्वारा अक्टूबर 2000 में नई दिल्ली में दिल्ली इंटरनेशनल ज्वैलरी एण्ड वाच एक्जीबीशन तथा भारतीय उद्योग मण्डल द्वारा अक्टूबर 2000 में नई दिल्ली में भारतीय रेल उपकरण प्रदर्शनी शामिल हैं।

भारतीय कम्पनियों और उद्यमियों ने मार्च 2000 में पनामा में आयोजित एक्सपोलोमर 2000, अगस्त 2000 में लंदन में आयोजित हेरोड्स इंडियन फूड मिलेनियम प्रोमोशन 2000, बुखारेस्ट में आयोजित बुखारेस्ट इंटरनेशनल कंज्यूमर, गुडस फेयर हिबको 2000, अक्टूबर 2000 में हनोई में आयोजित वियतनाम इंटरनेशनल ट्रेड फेयर तथा जून-अक्टूबर 2000 में हेनोवर जर्मनी में आयोजित एक्सपो 2000 विश्व प्रदर्शनी जैसे बहुत से व्यापार संवर्धन मेलों में भाग लिया। विदेश स्थित भारतीय मिशन भारत में होने वाले व्यापार संवर्धन मेलों में विदेशी उद्यमियों की भागीदारी तथा विदेशों में होने वाले मेलों में भारतीय व्यापारियों की भागीदारी सुनिश्चित करने का हर संभव प्रयत्न करते हैं। मिशनो ने स्वयं भी भारतीय निर्यात बढ़ाने के लिए बहुत से व्यापार मेलों/प्रदर्शनियों का आयोजन किया।

मार्च 2000 में अमरीकी राष्ट्रपति की भारत की एवं सितम्बर 2000 में प्रधान मंत्री की अमरीका की ऐतिहासिक यात्राओं से भारत और अमरीका के बीच आर्थिक और वाणिज्यिक संबंधों को मजबूत एवं संवर्धित करने में बड़ी मदद मिली। रिपोर्ट की अवधि में भारत तथा अन्य देशों के बीच आर्थिक और व्यापारिक प्रतिनिधिमंडलों की सरकारी तथा गैर सरकारी दोनों प्रकार की कई यात्राएं हुईं। भारत आने वाले प्रमुख सरकारी व्यापारिक प्रतिनिधिमंडलों में जापान सरकार के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं उद्योग मंत्रालय के प्रतिनिधिमंडल की यात्रा थी जिसने विदेश मंत्रालय - एम ई ई वार्ता के चौथे दौर में भाग लेने के लिए मार्च 2000 में नई दिल्ली की यात्रा की थी। वार्ता के इस दौर में

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जिसमें भारत की बढ़ती हुई शक्ति को व्यापक तौर पर स्वीकार किया गया है, संबंधित भारत-जापान सहयोग की महत्ता तथा परस्पर लाभों को उजागर किया गया।

अन्य देशों के साथ भारत के वाणिज्यिक संबंधों के क्षेत्र में महत्वपूर्ण घटना भारत-श्रीलंका मुक्त व्यापार करार है जिस पर 28 दिसम्बर, 1998 में हस्ताक्षर किए गए थे तथा यह 1 मार्च 2000 से प्रभावी हुआ था। आशा है कि इस करार से संबंधित द्विपक्षीय व्यापार और निवेश के द्वारा भारत और श्रीलंका के बीच आर्थिक और वाणिज्यिक संबंध प्रगाढ़ बनाने तथा उन्हें विकसित करने में मदद मिलेगी।

मंत्रालय ने विदेशों में भारतीय निवेश का समर्थन करने तथा उनके संवर्धन की नीति को जारी रखा। भारत सरकार विदेशों के निवेश प्रस्तावों को अनुमोदित करने की प्रक्रिया को उत्तरोत्तर सरल बना रही है। जिन स्थानों पर निवेश किया गया उनमें इंजीनियरी एवं निर्माण, साफ्टवेयर, दूर संचार, रसायन तथा दवाएं, लौह तथा इस्पात तथा परामर्श के क्षेत्रों में अमरीका, यू के, संयुक्त अरब अमीरात, सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैण्ड, श्रीलंका, तथा मारीशस प्रमुख देश हैं। मंत्रालय ने भारत के विदेशों में निवेशों के प्रसार एवं संवर्धन की संभावनाओं का पता लगाने के लिए अन्य सरकारी निकायों, व्यापारिक घरानों तथा विदेश स्थित मिशनों के साथ मिलकर कार्य किया।

मंत्रालय ने अन्य देशों में पैट्रोलियम खनन के ओ एन जी सी विदेश लि. के प्रस्तावों का सक्रिय समर्थन किया। हाल के वर्षों में ओ एन जी सी विदेश लि. ने अपनी गतिविधियां बढ़ाई हैं। इसने वियतनाम में पहले से ही अपनी उपस्थिति दर्ज की है तथा खोज कार्यों के लिए कुछ अन्य देशों के साथ सहयोग करने पर विचार किया जा रहा है।

भारत-जापान ऊर्जा सहयोग पर विचारों के आदान-प्रदान हेतु जापान सरकार के साथ विचार मंच की स्थापना ऊर्जा क्षेत्र में अन्य देशों के साथ भारत के, सहयोग की दिशा में एक महत्वपूर्ण घटना है। मार्च 2000 में नई दिल्ली में भारत-जापान ऊर्जा वार्ता का प्रथम दौर सम्पन्न हुआ। विद्युत, पैट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस, खान एवं धातु, गैर पारम्परिक ऊर्जा स्रोत, पर्यावरण और वन तथा विदेश मंत्रालय एवं योजना आयोग के प्रतिनिधियों ने भारत की ओर से भाग लिया जबकि जापान की ओर से वहां के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं उद्योग मंत्रालय तथा नई दिल्ली स्थित जापान के राजदूतावास

ने भाग लिया। वार्ता में सूचना का आदान प्रदान करने तथा एक दूसरे की ऊर्जा नीति तथा भावी सहयोग की दिशा में परस्पर समझबूझ के संवर्धन पर जोर दिया गया।

गैर पारम्परिक स्रोतों से ऊर्जा के विकास में भारत के प्रयत्नों से सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं तथा इस क्षेत्र में विदेशों से सहयोग भी विकसित हो रहा है। हाल ही में गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोत मंत्रालय ने अपने निर्यात में वृद्धि करने के लिए भारत में तैयार वायु ऊर्जा टर्बाइनों को पड़ोसी देशों तथा अन्य विकासशील देशों में प्रदर्शित करने की योजना शुरू की है। विदेश मंत्रालय ने यह योजना कुछ देशों में परिचालित की है इनमें से बहुत से देशों से इस प्रस्ताव के सकारात्मक उत्तर मिले हैं।

कोलम्बो योजना तथा तकनीकी सहयोग कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत तथा अन्य विकासशील देशों के बीच प्रशिक्षुओं का आदान-प्रदान किया जाना जारी रखा। इन कार्यक्रमों के अन्तर्गत भारत सरकार द्वारा नामित व्यक्तियों ने थाईलैण्ड और इण्डोनेशिया जैसे देशों में स्वास्थ्य और औषधि इंजीनियरी, दूर संचार, वित्त प्रबंधन, सिंचाई, मत्स्य पालन, आवास तथा निर्यात संवर्धन के क्षेत्रों में प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया।

निर्यात तथा विदेशी निवेश संवर्धन के मामलों में मंत्रालय ने विभिन्न सरकारी तथा अन्य निकायों के साथ घनिष्ठ क्रिया-कलाप करना जारी रखा। मंत्रालय ने ओ सी सी आई, आई टी पी ओ, इर्कान लि., वेप्कोस तथा ओ एन जी सी विदेश लि. में प्रतिनिधित्व किया। मंत्रालय ने अन्य देशों के साथ भारत के आर्थिक और वाणिज्यिक संबंधों को प्रगाढ़ बनाने के लिए गैर सरकारी संगठनों के प्रयत्नों को बढ़ावा दिया तथा उनका समर्थन किया। महिलाओं तथा बच्चों के सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान से जुड़े एक राष्ट्रीय स्तर के गैर सरकारी संगठन आल इंडिया वीमेंस कांफ्रेंस, नई दिल्ली द्वारा फरवरी 2001 में नई दिल्ली में आयोजित किए जाने वाले एशिया-प्रशान्त क्षेत्रीय माइक्रो क्रेडिट शिखर सम्मेलन को मंत्रालय ने अपना समर्थन प्रदान किया।

भारत द्वारा मई 1998 में किए गए नाभिकीय परीक्षणों के बाद भारत पर लगाए गए कुछ आर्थिक प्रतिबंधों को कुछ देशों ने धीरे धीरे उठा लिया है। भारत सरकार का सदैव यह मानना है कि भारत के विरुद्ध लगाए गए एकपक्षीय प्रतिबंध अनुचित एवं हानिकार हैं जो व्यापार, प्रौद्योगिकी तथा पूंजी के मुक्त प्रवाह में बाधा पहुंचाते हैं तथा परस्पर लाभकारी आर्थिक क्रिया-कलापों पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं।

अमरीका ने अधिकांश प्रतिबंधों को उठा लिया है। अमरीकी निर्यात नियंत्रण के लिए 1998 में निश्चित की गई भारत की 200 से अधिक कंपनियों की सूची में से 52 कंपनियों से इस समय प्रतिबंध उठा लिया गया है। स्वीडन, जर्मनी, नार्वे, डेनमार्क तथा नीदरलैंड ने भारत के साथ विकासगत सहयोग पुनः शुरू किया है।

बहुपक्षीय आर्थिक संबंध

भारत ने विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों और बहुपक्षीय तथा क्षेत्रीय समूहों में सक्रिय भूमिका अदा करना जारी रखा। भारत ने विश्व व्यापार संगठन सहित, विभिन्न बहुपक्षीय मंचों पर, महत्वपूर्ण आर्थिक मसलों, विशेष रूप से विकासशील देशों के संदर्भ में ध्यान केन्द्रित करना जारी रखा। विकसित और विकासशील देशों के बीच व्यापार, निवेश, प्रौद्योगिकी प्रवाहों और सहायता से संबद्ध मसलों पर सतत क्रिया-कलाप की आवश्यकता पर बल दिया गया। भारत ने इस बात पर जोर दिया कि विकासशील देशों को अपनी मूलभूत और सामान्य आर्थिक हित-चिन्ताओं के संरक्षण के लिए साझी रणनीतियां विकसित करनी चाहिए।

इस वर्ष के दौरान एक ऐसा गहन बहुपक्षीय संवाद देखा गया जिसके फलस्वरूप विकास की समस्याओं और विकासशील देशों को अपनी आर्थिक हित-चिन्ताओं को सार्वभौमिक कार्यवृत्त में सबसे ऊपर लाने के संकल्प को उजागर करने में सहायता मिली। इस बात को मान्यता दी गई कि प्रौद्योगिकी और व्यापार प्रतिस्पर्द्धा आर्थिक विकास के प्रमुख निर्धारक होंगे और ज्ञान पर आधारित उद्योगों और उद्यमशीलता में भावी अर्थशास्त्र मजबूत होगा। विश्व सूचना समाज में विकासशील देशों की पूर्ण भागीदारी एक तात्कालिक आवश्यकता है यदि विकासशील देशों की जनता को भू-मण्डलीकरण से लाभ प्राप्त करने हैं। अतः भारत ने इस बात पर बल दिया है कि उत्तर से दक्षिण की ओर प्रौद्योगिकी प्रवाहों के सभी पहलू विकसित और विकासशील देशों के बीच संवाद के लिए मूल तत्व होंगे। इसके अतिरिक्त, उत्तर और दक्षिण के बीच दीर्घावधिक सामाजिक और आर्थिक विकास के तत्वों तथा इन उद्देश्यों को हासिल करने के सहभागी तौर-तरीकों के बीच एक आम समझबूझ प्राप्त करनी होगी। विकास पर एक सार्वभौमिक समाभिरूपता प्राप्त करनी होगी।

अप्रैल, 2000 में, हवाना के क्यूबा में संपन्न दक्षिण शिखर सम्मेलन में, पहली बार,

विकासशील देशों ने शिखर सम्मेलन स्तर पर, तात्कालिक विकास समस्याओं का समाधान ढूंढने और जी-77 के बीच एक गतिशील समन्वय प्रक्रिया आरम्भ करने के संबंध में बैठक हुई। इस शिखर सम्मेलन में चार व्यापक विषयों पर चर्चा हुई: विश्व अर्थव्यवस्था का भू-मण्डलीकरण, उत्तर-दक्षिण संबंध, दक्षिण-दक्षिण सहयोग, और ज्ञान तथा प्रौद्योगिकी। इनमें से प्रत्येक विषय के अन्तर्गत संयुक्त जी-77 प्रयास की वैधता पुनः पुष्टि की गई थी और उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट किया था। भारत ने हवाना में संपन्न चर्चाओं में एक सक्रिय तथा अग्रणी भूमिका निभाई और विकासशील देशों की मुख्य हित-चिन्ताओं का उल्लेख करने और सभी बहुपक्षीय संस्थाओं तथा नीति-निर्माण प्रक्रियाओं में विकास मसलों को केन्द्र बिन्दु बनाने के संदर्भ में दक्षिण-दक्षिण और उत्तर-दक्षिण के भीतर, की जाने वाली अपेक्षित कार्यवाई की पहचान करने में शिखर सम्मेलन की सहायता की।

यह देखा गया कि उत्तर और दक्षिण के बीच इस बारे में सर्वानुमति नहीं थी कि भू-मण्डलीकरण का लोगों पर कैसा प्रभाव होता है या इस का संचालन कैसे किया जाना चाहिए। भारत ने माना कि संभवतः, भू-मण्डलीकरण में निहित ऊर्जा विकासशील देशों के लिए समृद्धि का मार्ग प्रशस्त कर सकती है यदि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, वित्तीय तथा आर्थिक व्यवस्थाएं भी मात्र समृद्धिशीली को अधिकाधिक सम्पदा का संचय करने में सहायता करने की अपेक्षा, मानव कल्याण का संवर्धन करने और सांस्कृतिक विविधता संरक्षित करने के लिए निर्दिष्ट हों। गरीबी कम करने में अन्तर्राष्ट्रीय समर्थक वातावरण विकासशील देशों के निर्यातों को प्रदत्त बाजार प्रवेश की सीमा तक, ऋण कटौती और वर्धमान विकास सहायता का क्षेत्र, प्रौद्योगिकी की उपलब्धता, और विश्व व्यापार व्यवस्था और अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं की संरचना प्रमुख घटक होगा।

जबकि यह स्वीकार किया गया कि एक गतिशील बाजार अर्थव्यवस्था दीर्घकालिक सतत विकास का इंजन बन सकता है, बाजार शक्तियों को अधिकतम कल्याण और सामाजिक विपत्ति परिहार से निर्देशित होना चाहिए। आर्थिक समृद्धि विकास की आवश्यकताओं, पर्यावरण का सम्मान, और शिक्षा में निवेश और सभी के लिए स्वास्थ्य के अनुरूप होना चाहिए। भारत ने उन कार्यवाईयों के पक्ष में अपने विचार व्यक्त किए जो भू-मण्डलीकरण के लाभों को समयबद्ध गरीबी उन्मूलन की शुरुआत करने में यथासम्भव धारा प्रवाही बनाएं। गरीबी उन्मूलन को 21वीं सदी में केन्द्रीय चुनौती के रूप

में परिभाषित किया गया। मानवाधिकार हासिल करने के लिए मानव विकास आवश्यक होगा और इस प्रकार के मानव विकास को अपेक्षाकृत अधिक कठोर अन्तर्राष्ट्रीय कार्रवाई के माध्यम से सार्वभौमिक स्तर पर प्राप्त किया जाना होगा। विकास के अधिकार और गरीबी उन्मूलन के अधिकार को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता और व्यापार, निवेश, प्रौद्योगिकी और सहायता को इन अधिकारों के लिए प्रमुखता के रूप में कार्य करना होगा।

“समूह-15 (जी-15) के संस्थापक सदस्य के रूप में 1989 में बेलग्रेड में संपन्न गुट निरपेक्ष शिखर सम्मेलन के समय इसके गठन से ही, भारत ने जी-15 के विचार-विमर्श, परियोजनाओं और गतिविधियों में एक सक्रिय भूमिका अदा करना जारी रखा।

दसवां जी-15 शिखर सम्मेलन 13-20 जून, 2000 तक काहिरा में संपन्न हुआ था। माननीय उप-राष्ट्रपति श्री कृष्ण कान्त के नेतृत्व में उच्च-स्तरीय भारतीय शिष्टमण्डल (जिसमें वाणिज्य और उद्योग मंत्री माननीय श्री मुरासोली मारन शामिल थे,) गया था। शिखर सम्मेलन की बैठकों में विभिन्न मसलों और दक्षिण के देशों, 21वीं सदी में विश्व घटनाक्रम और दक्षिण की संभावनाएं, भू-मण्डलीकरण का प्रभाव, गरीबी और बाहरी ऋण का उन्मूलन, बहुपक्षीय व्यापार व्यवस्था को मजबूत बनाना ताकि यह अधिक न्यायसंगत बन सके; उत्तर-दक्षिण संवाद, अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संरचना का नवीकरण, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, दक्षिण-दक्षिण सहयोग, तथा शान्ति निरस्त्रीकरण तथा विकास अहम महत्व के विषयों पर ध्यान केन्द्रित किया गया। इस शिखर सम्मेलन में दक्षिण के देशों के लिए अंकटाड - घोषणा और कार्रवाई योजना (फरवरी, 2000, बैकाक) और जी-77 दक्षिण शिखर सम्मेलन घोषणा और कार्रवाई योजना (अप्रैल 2000, हवाना) के तहत यथा प्रस्तावित महत्व के मसलों पर शीघ्र कार्रवाई करने की सिफारिश की गई। अपनी बैठकों में, उप-राष्ट्रपति और वाणिज्य मंत्री ने प्रमुख मसलों अर्थात् किसी नए डब्ल्यू टी ओ दौर के किसी अनुमोदन का सत्यनिष्ठापूर्वक इंकार, डब्ल्यू टी ओ के तहत विकासशील देशों की विशेष और विभेदक आवश्यकताओं पर ध्यान सुनिश्चित करने, कठिन और प्रभावी जी-15 परियोजनाओं पर दोबारा ध्यान केन्द्रित करने, अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संरचना का नवीकरण इत्यादि पर भारत की हित-चिन्ताओं को स्पष्ट किया। कई सदस्य देशों द्वारा इनका अनुमोदन किया गया तथा इन्हें शिखर सम्मेलन की समाप्ति पर जारी संयुक्त विज्ञप्ति में शामिल किया गया।

जी-15 विदेश मंत्रियों ने दसवें जी-15 शिखर सम्मेलन में लिए गए निर्णयों के क्रियान्वयन की समीक्षा करने और मई 2001 में जकार्ता, इण्डोनेशिया में संपन्न होने वाले ग्यारहवें शिखर सम्मेलन की तैयारी के लिए 30-31 अक्टूबर 2000 तक मेक्सिको शहर में बैठक की। माननीय विदेश राज्य मंत्री श्री अजित कुमार पांजा के नेतृत्व में उच्च-स्तरीय भारतीय शिष्टमण्डल ने इसमें भाग लिया। इस बैठक में गरीबी उन्मूलन, व्यापार और निवेश, पर्यावरणीय मसलों, सूचना और संचार प्रौद्योगिकीयों, लघु और मध्यम उद्यमों के लिए प्रोत्साहन, अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संरचना और मानव संसाधन विकास के सुधार सहित व्यापक मसलों पर विचार किया गया। भारतीय शिष्टमण्डल ने कार्यवृत्त के अहम मसलों पर, विशेषरूप से गरीबी उन्मूलन और मानव संसाधन विकास में सहयोग, जिस पर बोलने वाले श्री अजित कुमार पांजा, माननीय विदेश राज्य मंत्री प्रमुख वक्ता थे, पर चर्चाओं को व्यवस्थित करने में सक्रिय भूमिका अदा की। इस बैठक में कार्यवृत्त संबंधी प्रमुख मसलों पर एक सर्वानुमत वक्तव्य पारित किया गया। बैठक के अन्त में जारी वक्तव्य में भारत की व्यापार, बाहरी ऋण, गरीबी उन्मूलन, पर्यावरणीय मसले; मानव संसाधन सहयोग इत्यादि संबंधी हित-चिन्ताएं पूर्णरूप से परिलक्षित हुईं।

सौर ऊर्जा प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों की जी-15 की एक बैठक दिसम्बर 2000 में नई दिल्ली में संपन्न हुई।

प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने मिश्र के राष्ट्रपति को लिखा था, मिश्र जी - 15 का अध्यक्ष है, कि जी-8 और जी-15 द्वारा संयुक्त कार्रवाई विकासशील और विकसित देशों के बीच 'हितों की समानता' से उत्पन्न होती है और इसके फलस्वरूप सार्वभौमिक आर्थिक कार्यवृत्त के प्राथमिकता मसलों पर अन्तर्राष्ट्रीय परामर्श प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा।

भारत विकसित और विकासशील देशों के बीच नियमित परामर्श जारी रखे जाने के पक्ष में है। वाणिज्य और उद्योग मंत्री, श्री मुरासोली मारन ने जी-15 विदेश मंत्रियों की बैठक में अपने भाषण के दौरान, जून 2000 में काहिरा में संपन्न दसवें जी-15 शिखर सम्मेलन में कहा कि हमें अन्तर्राष्ट्रीय निकायों के साथ वार्ता करने से पूर्व जी-15 और जी-8 के बीच एक गहन संवाद करना है। इस प्रकार के संवाद के स्तर और विषय वस्तु को उन्नत करने के लिए व्यापार तथा जी-15 और जी-8 के विदेश मंत्रियों के बीच बैठकें संपन्न करना उपयोगी होगा। जी-15 सदस्य देशों ने इस सुझाव का व्यापक स्वागत किया।

भारत जुलाई 2000 में संपन्न जी-8 ओकिनावा शिखर सम्मेलन के उस निर्णय का स्वागत करता है जिसमें भू-मण्डलीकरण द्वारा पेश आई चुनौतियों का विकासशील देशों को उनका सामना करने में सहायता देगा। भू-मण्डलीकरण और सूचना प्रौद्योगिकी के लाभों से विकासशील देशों में समाज का बड़ा भाग अछूता रह गया है। अतः 'डिजिटल डिवाइड' को पाटने के प्रयास संबंधी ओकिनावा शिखर सम्मेलन में प्रस्तुत संकल्प उत्साहवर्धक था। इन चुनौतियों का सामना करने तथा हमारे समक्ष ढेर सारी समस्याओं : गरीबी उन्मूलन, ऋण कटौती, जन स्वास्थ्य का समाधान करने के लिए और एतद्वारा दीर्घावधिक विकास सुनिश्चित करने के लिए विकसित तथा विकासशील देशों द्वारा किए जाने वाले सहभागिता की एक सच्ची भावना से संयुक्त कदम अपेक्षित होंगे। विकासशील देशों में समृद्धि संवर्धित करने और गरीबी कम करने में व्यापार की महत्ता को देखते हुए विकासशील देशों की जायज हित-चिन्ताओं का समाधान करने के लिए बहुपक्षीय व्यापार व्यवस्था को मजबूत करने संबंधी आवश्यकता को ओकिनावा शिखर सम्मेलन द्वारा मान्यता देना एक सकारात्मक संकेत था।

भारत के आर्थिक सहयोग और विकास संबंधी संगठन (ओ. ई. सी. डी.) के साथ संबंध गत वर्षों से पर्याप्त रूप से प्रगाढ़ हुए हैं। ओ. ई. सी. डी. भारत जैसी उदीयमान अर्थव्यवस्थाओं को महत्वपूर्ण आर्थिक और व्यापारिक मसलों पर संवाद में शामिल कर रहा है। भारत गैर-सदस्य देशों के साथ ओ. ई. सी. डी. विशेष संवाद में और लघु तथा मध्यम उद्यम, कराधान, सार्वभौमिक, जैव-विविधता, कृषि इत्यादि से संबद्ध कई ओ. ई. सी. डी. आयोजनों में सहभागिता करता है।

भारत सभी जी-77 पहलों और काराकस कार्रवाई योजना (1981) और सान जोस कार्रवाई योजना (1997) में निर्दिष्ट अधिकतर दक्षिण-दक्षिण आर्थिक सहयोग संवर्धित करने के निमित्त प्रयासों में सक्रिय भाग लेता है। भारत का मानना है कि विश्व अर्थव्यवस्था के भू-मण्डलीकरण से संबद्ध हाल का घटनाक्रम और अनेक विकासशील देशों में जारी वित्तीय संकट केवल जी-77 आर्थिक सहयोग गतिविधियों को तेज करने संबंधी तर्काधार को ही मजबूत करता है। भारत जी-77 के उन उपायों का समर्थन करता है जो विकासशील देशों की सामान्य हित-चिन्ता के मसलों का समाधान करना चाहते हैं, यथा विश्व अर्थव्यवस्था के भू-मण्डलीकरण, अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संरचना में सुधारों के संदर्भ में, अथवा विश्व व्यापार संगठन जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों में विकासशील देशों

के हितों की भागीदारी करने के संबंध निकटता से क्रिया-कलाप करने और उन अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं जो व्यापार और निवेश संबंधी वातावरण पर प्रभाव डालती हैं, के संबंध में हों।

डा. मुरली मनोहर जोशी, माननीय मानव संसाधन विकास और विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्री के नेतृत्व में 11-14 अप्रैल 2000 तक हवाना में संपन्न 'समूह-77 (जी-77) दक्षिण शिखर सम्मेलन में भारतीय शिष्टमण्डल ने भाग लिया। इस शिखर सम्मेलन में चार व्यापक विषयों पर विचार विमर्श हुए: भू-मण्डलीकरण, ज्ञान और प्रौद्योगिकी, दक्षिण-दक्षिण सहयोग, तथा उत्तर-दक्षिण संबंध। इस शिखर सम्मेलन में विकासशील देशों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, नियम आधारित बहुपक्षीय व्यापार व्यवस्था जिसे और अधिक निष्पक्ष और न्याय संगत बनाने के लिए और मजबूत करने संबंधी आवश्यकता पर बल दिया और विकासशील देशों से संबंधित उरूग्वे दौर करारों के क्रियान्वयन मसलों का पूर्ण समाधान करने के लिए औद्योगिक राष्ट्रों का आह्वान किया। अन्य बातों के साथ-साथ, इसमें विकासशील देशों की वस्तुओं और सेवाओं के लिए औद्योगिक राष्ट्रों में संवर्धित बाजार प्रवेश की मांग की गई और श्रम मानकों और पर्यावरण की आड़ के तहत सभी संरक्षणात्मक प्रतिबन्धों का विरोध किया गया। जबकि इस शिखर सम्मेलन में औद्योगिक देशों की प्रौद्योगिकी और संसाधनों की वरीयता पहुँच, प्राप्त करने की विकासशील देशों की महत्ता पर बल देने के साथ-साथ, इस बात पर भी बल दिया गया कि विकासशील देशों को अपने स्वयं के ज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा मानव संसाधनों की क्षमता का संयुक्त रूप से उपयोग करना चाहिए। इस शिखर सम्मेलन में विकासशील देशों की उनसे संबंधित हित-चिन्ता के मसलों पर अन्तर्राष्ट्रीय मंचों में सामान्य दृष्टिकोण बनाने की महत्ता को भी रेखांकित किया गया। यह सहमति हुई कि उत्तर-दक्षिण संवाद को यह सुनिश्चित करने के लिए नवीकृत किया जाना चाहिए ताकि विकास मसले इस संवाद के केन्द्र बन जाएं। इस संदर्भ में, शिखर सम्मेलन विचार-विमर्श में विकासशील देशों के लिए सरकारी विकास सहायता (ओ. डी. ए.) की वृद्धि की महत्ता, ऋण का पुनः सूचीकरण, एक नई अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संरचना संबंधी आवश्यकता, और एक ऐसी बहुपक्षीय व्यापार व्यवस्था जो विकास आवश्यकताओं को ध्यान में रखती है, का उल्लेख किया गया।

भारत ने हवाना में संपन्न चर्चाओं में सक्रिय तथा अग्रणी भूमिका निभाई। यह

विकासशील देशों की मुख्य हित-चिन्ताओं का उल्लेख करने और सभी बहुपक्षीय संस्थाओं और नीति निर्माण प्रक्रियाओं में विकास मसलों पर ध्यान केन्द्रित करने के संदर्भ में दक्षिण-दक्षिण और उत्तर-दक्षिण के भीतर की जाने वाली अपेक्षित कार्रवाई का पता लगाने के लिए इस शिखर सम्मेलन की सहायता करने में भी सहायक थी। इसमें भाग लेने वाले शिष्ट मण्डलों ने दक्षिण-दक्षिण सहयोग के इस दृष्टिकोण का अनुमोदन किया। शिखर सम्मेलन में अन्तिम रूप दिए दस्तावेजों, अर्थात् हवाना कार्रवाई कार्यक्रम और हवाना घोषणा, में ये प्राथमिकताएं परिलक्षित होती हैं।

संयुक्त राष्ट्र महासभा बैठक के समय 15 सितम्बर, 2000 को न्यूयार्क में 24वीं जी-77 वार्षिक मंत्रिस्तरीय बैठक संपन्न हुई। विदेश मंत्री के नेतृत्व में भारतीय शिष्टमण्डल ने इसमें भाग लिया। इस बैठक में अप्रैल 2000 में हवाना में संपन्न दक्षिण शिखर सम्मेलन के निर्णयों और हवाना कार्रवाई कार्यक्रम के शीघ्र और प्रभावी क्रियान्वयन और दक्षिण शिखर सम्मेलन के अन्य निर्णयों के प्रति जी-77 की प्रतिबद्धता को दोहराया गया। बैठक में, भारत ने दक्षिण शिखर सम्मेलन के निर्णयों को क्रियान्वित करने के लिए जी-77 की ओर से एकता और दृढ़निश्चय संबंधी आवश्यकता और यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर बल दिया कि सार्वभौमिक कार्यवृत्त में विकास के अधिकार और गरीबी उन्मूलन के अधिकार को नजरअन्दाज नहीं किया जाए। इस संदर्भ में, भारत ने ओकिनावा जी-8 शिखर सम्मेलन, जून 2000 में जेनेवा में संयुक्त राष्ट्र विशेष सत्र में और विश्व व्यापार संगठन में चल रही चर्चा के परिपेक्ष्य में आर्थिक, सामाजिक और व्यापारिक मसलों को उठाया।

ई सी डी सी (विकासशील देशों के बीच आर्थिक सहयोग) और टी सी डी सी (विकासशील देशों के बीच तकनीकी सहयोग) को दक्षिण-दक्षिण तकनीकी सहयोग संबंधी एक लागत प्रभावी औपचारिकता के रूप में तथा सामूहिक स्वावलंबन प्राप्त करने के एक साधन के रूप में सक्रिय रूप से अनुपालन किया गया।

भारत ने इस आवश्यकता पर सतत् रूप से बल दिया कि दक्षिण केन्द्र (जेनेवा आस्थानिक शैक्षिक निकाय जिसमें जी-77/नाम के 46 सदस्य हैं।) के मौजूदा संसाधनों के अधिकतम उपयोग को ध्यान में रखते हुए अपनी कार्यविधियों की पुनः जांच की जानी चाहिए।

भारत आई ओ आर - ए आर सी (क्षेत्रीय सहयोग संबंधी हिन्द महासागर रीम

संगठन) का एक सक्रिय भागीदार है। यह “आई ओ आर - ए आर सी बिजनेस सेन्टर”, “आई ओ आर - ए आर सी चेयर”, “ट्रेड प्रमोशन प्रोग्राम” और “इन्वेस्टमेंट फेसीलिटेशन एण्ड प्रमोशन” सहित आई ओ आर - ए आर सी के तहत चार परियोजनाओं में भाग ले रहा है। भारत अन्य सदस्य देशों द्वारा समन्वित की जा रही परियोजनाओं में भी सक्रिय रूप से भागीदार है।

आई ओ आर - ए जी (हिन्द महासागर रीम का अशैक्षिक समूह) और आई ओ आर - बी एफ (हिन्द महासागर रीम व्यवसाय फोरम) की बैठकें जुलाई, 2000 में मापुतो में संपन्न हुई थी। इन बैठकों में भारत और अन्य आई ओ आर देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। बैठकों में आई ओ आर परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की गई और लाभदायक चर्चाएं हुई थी जिन्होंने आई ओ आर - ए आर सी के कार्य कार्यक्रमों में परियोजनाओं पर विचार, निर्माण और क्रियान्वयन में उपयोगी सामग्री उपलब्ध करायी।

विदेश मंत्रालय ने कृषि संबंधी (ए ओ ए) विश्व व्यापार करार से संबद्ध अधिदेशित वार्ताओं के संबंध में सरकार के प्रस्तावों को अन्तिम रूप देने संबंधी जारी अन्तर-मंत्रालयी परामर्श में सक्रिय कार्रवाई की। इसने यह सुनिश्चित करने के लिए वाणिज्य मंत्रालय और कृषि मंत्रालय के निकट सहयोग से कार्य किया कि भारत के प्रस्तावों में हमारे किसानों के हितों का संरक्षण करने संबंधी राष्ट्र स्तरीय हित-चिन्ताएं परिलक्षित हों और हमारी खाद्य सुरक्षा को प्रभावशाली ढंग से संरक्षित करें।

विभिन्न बहुपक्षीय बैठकों में, भारत ने इस बात पर बल दिया कि मौजूदा विश्व व्यापार संगठन करारों में असमानताओं, असंतुलन और विसंगतियों को दूर किया जाए और ये असंतुलन विगत पांच वर्षों में इनके क्रियान्वयन के दौरान नाटकीय ढंग से प्रकाश में आए थे। विकासशील देशों पर भारी बाध्यताएं थोपी गई थीं और उनके उत्पादों के लिए बाजार प्रवेश अभी भी एक मरीचिका बना हुआ है। विकासशील देशों की वस्तुओं को विकसित बाजारों से अलग रखने, स्वास्थ्य और सुरक्षा मानकों जैसे गैर-तटकर प्रतिबन्धों से तटकर प्रतिबन्धों को प्रस्थापित करने के लिए नई प्रणालियां खोजी गई थी। अतः यह अनिवार्य था कि उरुग्वे दौर करारों के क्रियान्वयन के मसलों का सबसे पहले समाधान हो और मुख्य असंतुलनों को हटाया जाए। प्रमुख श्रम मानकों का सख्ती से पालन और विकासशील देशों के उत्पादों की बाजार पहुंच सीमित करने और वर्जित करने

के लिए पर्यावरणीय खिड़की का विस्तार करने संबंधी दबाव भी बहुपक्षीय व्यापार व्यवस्था के लिए अच्छे शकुन नहीं हैं। डब्ल्यू टी ओ और ब्रेटन वुडस संस्थाओं के बीच “सामंजस्य” को मजबूत करने संबंधी उपाय हित-चिन्ता संबंधी समान कारण थे। भारत ने इस बात पर बल दिया कि जी-15 जैसे समूह डब्ल्यू टी ओ कार्यवृत्त के शीर्ष पर विकासशील देशों की हित-चिन्ताओं पर दबाव डालने में एक प्रमुख जवाबदेही है।

आसियान के साथ भारत की संवाद भागीदारी को व्यापार और निवेश, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, पर्यटन मानव संसाधन विकास, और परिवहन तथा ढांचागत जैसे विभिन्न क्षेत्रों में भारत-आसियान क्रिया-कलाप के सशक्त ढांचे द्वारा और अधिक मजबूत किया गया। इस प्रकार के संपर्कों के आगामी वर्षों में गहन होने की आशा है।

भारत ने आसियान के एक पूर्ण संवाद भागीदार के रूप में अपने दर्जे से 28 और 29 जुलाई 2000 तक बैंकाक में संपन्न 33वीं आसियान पश्च-मंत्रिस्तरीय सम्मेलनों (पी एम सी) में भाग लिया। भारतीय प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व विदेश मंत्री ने किया। पी एम सी बैठकों में अपने संबोधनों में, विदेश मंत्री ने मुद्रा प्रवाहों को विनियमित करने के लिए शीघ्र कार्रवाई करने की आवश्यकता पर बल दिया, जिसकी मात्रा वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा से कई गुना अधिक है। ‘डिजिटल डिवाइड’ पर टिप्पणी करते हुए, विदेश मंत्री ने कहा कि सरकारों के दृष्टिकोण सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग आर्थिक विकास के एक औजार के रूप में तथा इंटरनेट का उपयोग जन कल्याण के लिए किया जाना होना चाहिए। विदेश मंत्री ने मीकांग रिवर बेसिन में ढांचागत और अन्य विकास परियोजनाओं में भारत की भागीदारी की वचनबद्धता को सूचित किया। विदेश मंत्री ने प्रस्ताव और सहमत परियोजनाओं पर वास्तविक सुपुर्दगी की महत्ता पर भी बल दिया। इसके अतिरिक्त, विदेश मंत्री ने अपने अनेक समकक्षों के साथ लाभदायक द्विपक्षीय बैठकें संपन्न की थीं।

उन्नत सामग्रियों के क्षेत्र में आसियान-भारत सहयोग के एक भाग के रूप में, उच्च ऊर्जा दुर्लभ भू-चुम्बकों पर एक संयुक्त आसियान-भारत कार्यशाला 23-25 अगस्त, 2000 तक कुआलालम्पुर में संपन्न हुई थी, जो कि इस प्रकार के चुम्बकों पर आसियान-भारत सहयोगी परियोजना की सफल पराकाष्ठा का प्रतिनिधित्व करती है। भारत और आसियान के वैज्ञानिकों के अलावा, भारत और आसियान के अनेक उद्यमियों और उद्योगपतियों ने कार्यशालाओं में भाग लिया। भारत और आसियान के वैज्ञानिकों के

बीच घनिष्ठ संपर्क बढ़ाने के अतिरिक्त इस परियोजना से इस प्रकार के संयुक्त सामग्री मैगनेटों के निर्माण तथा अनुप्रयोग से संबंधित प्रौद्योगिकी की बेहतर समझ-बूझ हुई और इससे भारतीय मैगनेट उद्योग के अग्रसर होने की सम्भावना है।

मानव संसाधन विकास पर एक संयुक्त आसियान-भारत कार्यशाला नई दिल्ली में 16 और 17 अक्टूबर, 2000 को हुई। इस कार्यशाला का उद्देश्य मार्च 2000 में हुई आसियान-भारत संयुक्त सहयोग समिति की बैठक में स्वीकृत मानव संसाधन विकास क्षेत्र में भारतीय और ‘आसियान’ क्षमताओं तथा पूरकताओं पर संयुक्त अध्ययन की सिफारिशों के क्रियान्वयन के लिए वास्तविक उपायों का पता लगाना था। कार्यशाला में प्रत्यायन तथा गुणता प्रबंधन, सूचना प्रौद्योगिकी तथा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों की पहचान की, इन क्षेत्रों पर जोर दिया जाता है।

मलेशिया के माननीय विदेश मंत्री महामान्य दातो सेरी सईद हमीद अल्बार ने 9 अक्टूबर 2000 को नई दिल्ली में आसियान-भारत के सुप्रसिद्ध व्यक्तियों के भाषण श्रृंखला के कार्यक्रम के अन्तर्गत “भारत-आसियान भागीदारी: चुनौतियां एवं अवसर” विषय पर एक भाषण दिया जो भारत-आसियान भागीदारी की वास्तविकता और संभावनाओं के विषय में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से ही प्रस्तुत किया गया था।

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और अनुप्रयोग से सम्बद्ध आसियान की उप समिति (एस सी ओ एस ए) ने अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में दो क्षेत्रों में आसियान-भारत सहयोग के पहलू पर सकारात्मक दृष्टि से विचार किया :

- (क) क्षमता निर्माण, जिसमें प्रशिक्षण, औपचारिक शिक्षा, कार्य में संलग्नता तथा वैज्ञानिकों का आदान-प्रदान; और
- (ख) वनों की आग को मॉनीटर करने तथा नौसैनिक तथा तटीय प्रबन्धन जैसे पर्यावरणीय प्रबंधन के लिए आई आर एस का प्रयोग

जुलाई 1998 में मनीला में हुए आसियान पश्च-मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में, भारत ने आसियान देशों से 100 अभ्यर्थियों को सूचना प्रौद्योगिकी में प्रशिक्षण देने की पेशकश की थी। तदनुसार निम्नलिखित आसियान देशों द्वारा छः माह के प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए 94 अभ्यर्थियों को नामित किया गया था: ब्रूनी दारुसलाम, कम्बोडिया, इंडोनेशिया, लाओ लोकतांत्रिक जन गणराज्य, मलेशिया, म्यामां, फिलीपीन्स, सिंगापुर, थाइलैन्ड तथा

वियतनाम। पूर्णतया भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित यह प्रशिक्षण कार्यक्रम सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक नामी निजी क्षेत्र की कम्पनी 'एन. यू. टी.' द्वारा विदेश मंत्रालय के माध्यम से चलाया गया।

9 से 13 नवम्बर, 2000 तक वियन्तियाने (लाओ लोकतांत्रिक जन गणराज्य) में हुई मेकोंग - गंगा सहयोग (एम जी सी) उपक्रमण की प्रथम मंत्रिस्तरीय बैठक के भारतीय शिष्टमण्डल का नेतृत्व विदेश मंत्री ने किया। 'एम जी सी' भारत और पांच आसियान देशों - कम्बोडिया, थाईलैण्ड, वियतनाम, लाओ लोकतांत्रिक जन गणराज्य और म्यामां द्वारा पर्यटन, संस्कृति, शिक्षा और साथ ही परिवहन एवं संचार में सहयोग की पहल है। मंत्रियों ने 'एम जी सी' को औपचारिक रूप से आरम्भ किया, जिसके विषय में जुलाई 2000 में आसियान पूर्व मंत्री स्तरीय समिति की बैठक के समय भारत कम्बोडिया, वियतनाम, थाईलैण्ड, म्यामां तथा लाओ लोकतांत्रिक जन गणराज्य के विदेश मंत्रियों की बैठक में घोषणा कर दी गई। बैठक में 'वियन्तियाने घोषणा' को पारित किया गया जिसमें सहयोग के उपरोक्त क्षेत्र शामिल थे। एम जी सी की मंत्रिस्तरीय वार्षिक बैठक होगी जिसमें सहमत परियोजनाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा होगी।

वियन्तियाने घोषणा द्वारा पर्यटन में सहयोग पर ध्यान दिया गया जिसमें एम जी सी देशों में प्रसिद्ध सांस्कृतिक, धार्मिक तथा पर्यटन की दृष्टि से अनुकूल स्थानों के लिए पैकेज-टूर के संवर्द्धन के अतिरिक्त, यात्रा तथा पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए एम जी सी देशों के बीच संयुक्त मार्केटिंग के लिए सामरिक अध्ययन, पर्यटन प्रशिक्षण संस्थानों के बीच नेटवर्क की स्थापना, और बहु-रूपात्मक संचार एवं परिवहन सम्पर्कों का विस्तार शामिल है। घोषणा के अन्तर्गत संस्कृति के तहत एम जी सी देशों के नृत्य, गायन एवं मंचन में संयुक्त अनुसंधान का संवर्द्धन, पत्रकारों, लेखकों, तथा साहित्यिक विशेषज्ञों, मंचीय कला इत्यादि के लिए बैठकें आयोजित करने के साथ ही एम जी सी देशों में दाय, स्थानों, इमारतों और पुरानी हस्तलिपियों का संरक्षण आता है। इसके अतिरिक्त, घोषणा में एम जी सी देशों ने अपनी हस्तकला और पारम्परिक वस्त्रों के लिए निर्यात बाजार का विस्तार करने के लिए सामान्य रूप से प्रयत्न करने का संकल्प किया। शिक्षा के क्षेत्र में घोषणा के अन्तर्गत शामिल कार्यक्रमों में, मान्यता प्राप्त प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन संस्थानों के बीच छात्रों तथा संकायों के आदान-प्रदान का संवर्द्धन, विशिष्ट विषयों में होनहार छात्रों के लिए एम जी सी छात्रवृत्तियां, और साथ ही एम जी सी विश्वविद्यालयों

के बीच नेटवर्किंग तथा वलयन प्रबंधों की स्थापना विशेषकर, समाज विज्ञान, मानवशास्त्र, इंजीनियरिंग तथा अध्ययन क्षेत्र शामिल हैं। परिवहन और संचार के क्षेत्रों में, घोषणा में उल्लिखित सहयोग के कार्यकलापों में इस क्षेत्र में परिवहन नेटवर्क को विकसित करने के प्रयास करना शामिल है विशेषरूप से पूर्व-पश्चिम कारीडोर परियोजना तथा ट्रांस एशिया राजमार्ग, इस क्षेत्र में हवाई सेवाओं और सम्पर्कों में सहयोग में वृद्धि, तथा सूचना प्रौद्योगिकी की आधारभूत संरचना और नेटवर्क के विकास में सहयोग।

भारत, बंगाल की खाड़ी के साथ के देशों के एक उप क्षेत्रीय आर्थिक दल के गठन को बी आई एम एस टी - ई सी को क्षेत्रीय सहयोग के लिए एक महत्वपूर्ण पहल मानता है। वर्ष 1997 में निर्मित बी आई एम एस टी - ई सी भारत की पूर्व-उन्मुख नीति का एक महत्वपूर्ण घटक है। बी आई एम एस टी-ई सी एक ऐसा मंच भी है जहां सदस्य देश पारम्परिक सभ्यता के सम्पर्कों को पुर्नजीवित करने के लिए मिलकर कार्य करेंगे जिसे इतिहास के औपनिवेशिक काल में उपेक्षित रखा गया था। भारत ने समूहन सार विषय-सूची देने के लिए बी आई एम एस टी-ई सी में सक्रिय रूप से भाग लिया और इसे इन देशों के लिए लाभकारी बनाया। इस प्रकार भारत बी आई एम एस टी - ई सी के अन्तर्गत सहयोग के लिए निर्दिष्ट क्षेत्रों अर्थात् व्यापार और निवेश, ऊर्जा, परिवहन तथा संचार, पर्यटन, प्रौद्योगिकी इत्यादि में मिलकर कार्य करने के तरीकों के लिए नियमित रूप से बैठकें करके महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा।

बी आई एम एस टी - ई सी देशों के व्यापार मंत्रियों की 27 अप्रैल 2000 को नई दिल्ली में बैठक हुई। बी आई एम एस टी - ई सी क्षेत्र में व्यापक आर्थिक सहयोग के लिए सुविकसित परिवहन एवं संचार सुविधाओं के महत्व को ध्यान में रखते हुए, मंत्रियों ने सहमत परियोजनाओं का शीघ्र क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के लिए ससंजक और सुसमन्वित दृष्टिकोण अपनाने को कहा। भारत ने परिवहन एवं संचार के क्षेत्र में प्रमुख देश की भूमिका का कार्य चुना। बैठक में यह भी महसूस किया गया कि विकासशील देशों के लिए बौद्धिक सम्पत्ति का अधिकार मुख्य चिन्ता का विषय है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में इलैक्ट्रानिक कामर्स (ई-कामर्स) के बढ़ते हुए महत्व को भी ध्यान में रखते हुए, बैठक में यह महसूस किया गया कि इस क्षेत्र में घट रहे घटनाक्रम के बारे में सदस्य देशों को अवगत रहने की आवश्यकता है। इस बात पर सहमति हुई कि भारत ई-कामर्स में सम्भव पहलकदमियों के लिए एक मुख्य बिन्दु होगा जिसमें ई - बी आई एम एस

टी - ई सी को शुरू करना भी शामिल है। मंत्रियों ने बी आई एम एस टी - ई सी में मुक्त व्यापार क्षेत्र के अपने-अपने साझे दृष्टिकोण को कार्यान्वित करने के लिए एक सुस्पष्ट कार्रवाई कार्यक्रम के महत्व पर बल दिया।

बी आई एम एस टी - ई सी की तीसरी मंत्रिस्तरीय बैठक 6 जुलाई, 2000 को नई दिल्ली में हुई। इस बैठक में भारत ने बंगलादेश से बी आई एम एस टी - ई सी की अध्यक्षता ग्रहण की। मंत्रियों ने यह नोट किया कि वित्तीय संकट के पश्चात वसूली पथ पर सार्वभौम अर्थव्यवस्था के साथ सरकारी एवं निजी क्षेत्र दोनों के स्तरों पर सदस्य देशों के बीच आर्थिक, वाणिज्यिक और तकनीकी सहयोग संवर्धित करके बी आई एम एस टी-ई सी को तेज करने का यह उपयुक्त समय है। यह महसूस किया गया कि सहयोग की ठोस पहलकदमियों के अलावा बी आई एम एस टी - ई सी को ऐसे सहयोग के सौफ्टवेयर पहलुओं पर केन्द्रित होना चाहिए; पहले उपाय के रूप में सदस्य देशों को विशेषकर परिवहन और संचार तथा पर्यटन के क्षेत्रों में नियमों और विनियमों को संकलित करने के प्रयास शीघ्र शुरू करने चाहिए; संकलन के इस कार्य को शुरू करने की भारत की पेशकश का स्वागत किया गया। मंत्रियों ने शीघ्र तथा प्रभावी कार्यान्वयन के लिए प्रत्येक क्षेत्र और उप क्षेत्र की कार्य योजनाओं की निगरानी पर जोर दिया। पर्यटन क्षेत्र के महत्व को देखते हुए बैठक में सदस्य देशों ने यह अनुरोध किया कि वे अपने प्रयासों को दो गुना करें। भारत ने व्यापार तथा निवेश आदान-प्रदानों को सुविधाजनक बनाने और ई-कामर्स को प्रोत्साहन देने के लिए बी आई एम एस टी - ई सी इंटरनेट पोर्टल की स्थापना की अपनी पेशकश दोहरायी। ऊर्जा के क्षेत्र में यह निर्णय लिया गया कि ऐसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाया जाए जो ऊर्जा से सम्बद्ध सूचना डाटा, प्रौद्योगिकी और विशेषज्ञता कर ऊर्जा विकास कार्यक्रमों में सहयोग के लिए भागीदार हैं। उन्होंने आतंकवाद द्वारा शान्ति स्थायित्व और आर्थिक विकास के लिए पेश आई चुनौती को स्वीकार किया।

बी. आई. एम. एस. टी. - ई. सी. “प्रौद्योगिकी से सम्बद्ध विशेषज्ञ दल” की बैठक 18-19 दिसम्बर, 2000 को नई दिल्ली में सम्पन्न हुई। बी आई एम एस टी - ई सी देशों अर्थात् बंगलादेश, भारत, म्यांमा, श्रीलंका और थाईलैंड ने बैठक में भाग लिया। बैठक का उद्घाटन विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री बच्ची सिंह रावत ने किया।

इस बैठक में प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग से सम्बद्ध एक सहमत वक्तव्य पारित किया गया तथा इस क्षेत्र में सहयोग के लिए 2001-2005 की अवधि की कार्य योजना

पर सहमति हुई। सदस्य देशों ने बी आई एम एस टी - ई सी क्षेत्र की प्रौद्योगिकीय क्षमताओं को बढ़ाने की आवश्यकता को स्वीकार किया ताकि गुणवत्ता उत्पादन के जरिए वाणिज्यिक लाभ के लिए अनुसंधान और विकास तथा उद्योग के बीच क्रियाकलाप संवर्धित किया जा सके। इस बैठक में प्रौद्योगिकी तीव्रता उद्यमों के विकास को सुविधाजनक बनाने तथा नयी एवं उपयुक्त प्रौद्योगिकियों के विकास के लिए नवीनतम परिवर्तनों को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता के साथ-साथ बी. आई एम एस टी - ई सी क्षेत्र के भीतर ‘डिजिटल डिवाइड’ से छुटकारा पाने के लिए संगठित प्रयास करने की महत्ता को स्वीकार किया गया। इस बैठक में क्षेत्रीय परियोजनाएं और सहयोगी कार्यक्रमों अर्थात् भण्डारण तथा संरक्षण सहित कृषीय-खाद्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी, भूमि तथा जल प्रबंधन, कृषीय प्रौद्योगिकी, और कृषि-औजार जीव प्रौद्योगिकी, खाद्य प्रौद्योगिकी, भूमि और जल प्रबंधन, आयुर्विज्ञान तथा उपकरण, जड़ी-बूटी औषधियाँ, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी, समुद्र विज्ञान, विपदा न्यूनीकरण और प्रबंधन, पर्यावरणोन्मुखी प्रौद्योगिकियाँ आदि तैयार करने के लिए कई प्राथमिक क्षेत्र तय किए गए।

भारतीय उद्योग मंडल को जी-15 व्यापार प्रदर्शनी, जो जून, 2000 में काहिरा में सम्पन्न हुई, में भारतीय उद्योग की भागीदारी का समन्वय करने का कार्य सौंपा गया।

ऐसोचेम ने बंगलादेश, भारत, म्यांमा, श्रीलंका, थाईलैंड - आर्थिक सहयोग (बी आई एम एस टी - ई सी) के वाणिज्यिक क्रियाकलापों के लिए नोडल अभिकरण के रूप में कार्य किया। बी आई एम एस टी - ई सी व्यवसाय फोरम की विशेष बैठक जून, 2000 और इसके आर्थिक फोरम की बैठक जुलाई, 2000 में सम्पन्न हुई।

तकनीकी सहयोग

तकनीकी सहयोग प्रभाग एशिया, अफ्रीका, लातिन अमरीका, पूर्वी यूरोप, मध्य एशिया, खाड़ी और प्रशान्त दीपसमूह के 144 विकासशील देशों को भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग (आईटेक) और विशेष राष्ट्रमंडल अफ्रीकी सहायता योजना (स्काप) के अन्तर्गत तकनीकी सहायता की पेशकश करता है। इस प्रतिवेदन के प्रयोजनार्थ, आईटेक के संदर्भ में स्काप भी शामिल होगा (जिसके अन्तर्गत केवल सिविल प्रशिक्षण दिया जाता है)। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत शामिल विभिन्न क्षेत्रों में पशुपालन, लेखा परीक्षा तथा लेखा, बैंकिंग और वित्त, राजनय, दवाईयाँ और औषधियाँ, शैक्षिक

योजना एवं प्रशासन, अंग्रेजी भाषा, उद्यमशीलता, खाद्य प्रसंस्करण, मानव संसाधन योजना, सूचना प्रौद्योगिकी, पत्रकारिता और जन संचार, एक सार्वभौम अर्थव्यवस्था में श्रम प्रशासन और रोजगार संबंध, मानवशक्ति योजना, मौसम-विज्ञान, प्रबंधन, समुद्र विज्ञान, पैकेजिंग, दूर संवेदी, संसदीय अध्ययन, ग्रामीण विकास, लघु उद्योग, गन्ना उत्पादन प्रौद्योगिकी, मानकीकरण, सांख्यिकीय, लघु व्यवसाय विकास, दूर संचार, वस्त्र प्रौद्योगिकी और वन्य जीव प्रबंधन शामिल हैं।

इस कार्यक्रम ने भारत के लिए सद्भावना अर्जित की और इसने स्वदेशी प्रौद्योगिकीय कौशल तथा क्षमताओं को हासिल करने की भारत की छवि को बेहतर बनाया है। विकासशील देशों से आईटेक के अन्तर्गत इन वर्षों में मांग में बढ़ोतरी हुई है। पिछले वर्ष के 36 करोड़ रुपये की तुलना में वर्ष 2000-2001 के लिए बजट आवंटन को बढ़ाकर 42.5 करोड़ रुपये किया गया है।

निम्नलिखित चार श्रेणियों के अन्तर्गत आईटेक सहायता दी जाती है:-

- क) प्रशिक्षण (सिविल और सैन्य दोनों),
- ख) परियोजनाएँ और परियोजनाओं से सम्बद्ध सहायता जैसे उपकरणों की आपूर्ति, परामर्शी सेवाएं और व्यवहार्यता अध्ययन,
- ग) विशेषज्ञों की प्रतिनियुक्ति,
- घ) वरिष्ठ अधिकारियों/निर्णयकर्त्ताओं की भारत की अध्ययन यात्राएँ।

सिविल प्रशिक्षण के अन्तर्गत शिक्षा-शुल्क, रहन-सहन भत्ते, अध्ययन दौरे, आक्समिक चिकित्सा सहायता से संबंधित खर्च तथा वापसी अन्तर्राष्ट्रीय वायुयान भाड़ा विदेश मंत्रालय द्वारा वहन किया जाता है।

वर्ष 2000-2001 के दौरान (अप्रैल-नवम्बर) चालू वर्ष के लिए निर्दिष्ट 2178 स्थानों में से 788 स्थानों का विभिन्न देशों ने लाभ उठाया। विभिन्न पाठ्यक्रमों को चलाने वाले प्रशिक्षण संस्थानों का ब्यौरा अनुबंध-I पर है। निर्धारित स्थानों के बारे में देशवार स्थिति अनुबंध-II पर है।

आलोच्य वर्ष के दौरान विशेष राष्ट्रमंडल तथा अफ्रीकी सहायता योजना (स्काप) के अन्तर्गत 308 स्थानों का उपयोग किया गया। निर्दिष्ट स्थानों के बारे में देशवार स्थिति

अनुबंध-III पर है।

सैन्य प्रशिक्षण के अन्तर्गत मित्र देशों के मनोनीति व्यक्तियों को रक्षा सेवाओं के सभी तीन स्कन्धों में पाठ्यक्रम दिया जाता है जिसमें राष्ट्रीय रक्षा कालेज, नई दिल्ली और रक्षा सेवा स्टाफ कालेज, वेलिंगटन भी शामिल हैं। इस प्रशिक्षण में रक्षा और सामरिक अध्ययन, रक्षा प्रबंध, तोपखाना, इलैक्ट्रानिकी, मेकेनिकल, समुद्री एवं वैमानिक इंजीनियरी, समुद्र रोधी युद्धकला, जल-विज्ञान, संभारतंत्रीय तथा प्रबंधन एवं गुणात्मक आश्वासन सेवाएं जैसे क्षेत्र शामिल हैं।

आईटेक-I श्रेणी के उम्मीदवारों के लिए सैन्य प्रशिक्षण सहित अन्तर्राष्ट्रीय विमान किराए का खर्च विदेश मंत्रालय द्वारा वहन किया जाता है। आईटेक-II श्रेणी के उम्मीदवारों के संबंध में व्यय आंशिक रूप से आईटेक के अन्तर्गत और आंशिक (अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा) रूप से भागीदार देश के साथ वहन किया जाता है। वर्ष 2000-2001 के दौरान आईटेक और स्व-वित्त योजना के अन्तर्गत दीर्घावधिक एवं अल्पावधिक सैन्य प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के लिए 247 स्थानों की पेशकश की गई। अब तक 192 स्थानों का उपयोग किया गया है। स्व-वित्त पोषण योजना के तहत 206 सीटें आवंटित थीं और 51 सीटों का उपयोग किया गया। परस्पर आदान-प्रदान आधार पर अमरीका, यू. के., फ्रांस और बंगलादेश को कुछ स्थानों की पेशकश की गई। आईटेक सैन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम के लाभयोगी देशों की सूची अनुबंध - IV से VII पर है।

परियोजनाओं के अन्तर्गत सेनेगल में उद्यमशीलता और तकनीकी विकास केन्द्र पूरा हो गया है और इसे जून, 2000 में एक समारोह में हमारे राजदूत ने सेनेगल की सरकार को सौंप दिया है। इस अवसर पर संयुक्त सचिव (टी सी) ने डकर की यात्रा की। इस परियोजना की लागत 13 करोड़ रुपये थी।

नामीबिया में कुल 3.40 करोड़ रुपये की लागत से विन्डहोक से लगभग 800 किलोमीटर दूर प्लास्टिक प्रौद्योगिकी प्रदर्शन एवं साझी सुविधा केन्द्र स्थापित किया गया है। इसका कार्यान्वयक अधिकरण राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम है।

अध्ययन यात्रा कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न देशों से वरिष्ठ निर्णयकर्त्ताओं को विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए भारत आमंत्रित किया जाता है और उनके हित के क्षेत्रों जैसे लघु उद्योगों, कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, विदेश व्यापार आदि के क्षेत्रों में भारत

की क्षमताओं की जानकारी दी जाती है। श्री एन. टी लॉग के नेतृत्व में वियतनाम नेशनल जेम्स कारपोरेशन का एक चार सदस्यीय शिष्टमंडल 15-25 अप्रैल, 2000 तक भारत की यात्रा पर आया और उसने हिन्दुस्तान जिक लिमिटेड, उदयपुर, डायमंड एण्ड जेम्स डिवलपमेंट कारपोरेशन, मुम्बई तथा खान विभाग के साथ बैठकें की। इस शिष्टमंडल ने एम. ई. सी. एल. कार्यशाला एवं जेमस्टोन एण्ड ज्वैलरी प्रोडक्शन सेंटर, जयपुर का भी दौरा किया। जुलाई में कीनिया के प्रबंध संस्थान का एक पांच सदस्यीय शिष्टमंडल बंगलौर, अहमदाबाद और लखनऊ स्थित भारतीय प्रबंध संस्थान के अध्ययन दौरे पर आया। दिल्ली स्थित आल इण्डिया मेनेजमेंट एसोसियेशन, गाजियाबाद स्थित इंस्टीच्यूट ऑफ मेनेजमेंट टेक्नोलाजी एवं नई दिल्ली स्थित सेंटर फार पालिसी रिसर्च में प्रतिनिधियों की बैठकों का आयोजन किया गया। अगस्त के महीने में श्री एफ. एच. माईकल (राजदूत) के नेतृत्व में इथोपिया विदेश कार्यालय का तीन सदस्यीय शिष्टमंडल अपनी नीति योजना, प्रशिक्षण और अन्य व्यवस्थाओं की पुनर्रचना करने संबंधी अध्ययन करने के लिए भारत की यात्रा पर आया। उन्होंने डीन (एफ. एस. आई), सचिव (ई. आर.), संयुक्त सचिव (पी. पी. एण्ड. आर.), संयुक्त सचिव (ई. डी. एण्ड एम. ई. आर.) संयुक्त सचिव (अफ्रीका), संयुक्त सचिव (प्रशासन) और संघ लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष एवं अन्य सरकारी विभागों के साथ विस्तृत विचार-विमर्श किया। शिष्टमंडल ने अपनी इस यात्रा के दौरान जो विभिन्न उपयोगी मुलाकातें की उनसे वह पूर्णतः सन्तुष्ट था। अक्टूबर के महीने में गयाना का तीन सदस्यीय क्षेत्रीय आयुक्तों का शिष्टमंडल भारत की यात्रा पर आया। उनकी इस अध्ययन यात्रा के दौरान शिष्टमंडल ने लघु उद्योग, कृषि आधारित एककों, एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम को देखने के लिए हैदराबाद की यात्रा की। उन्होंने डा. बी. सुधाकर राव, एन आई आर डी तथा ए पी डी डी सी, लालापेट के प्रबंध निदेशक डा. बी. पी. आचार्य से विचार-विमर्श किया। उन्होंने मछली इकाई, मशीनरी निर्माण तथा चावल मिलों को देखने के लिए कलकत्ता तथा फरीदाबाद की भी यात्रा की।

अप्रैल में एकीकृत पैस्ट प्रबंधन के क्षेत्र में एक विशेषज्ञ को छः माह के लिए सेशेल्स सरकार के पास प्रतिनियुक्ति पर भेजा गया।

मई में वायु सेना मुख्यालय के स्कवेडन लीडर डी. सी. सिकोरिया को पैराट्रूपर प्रशिक्षण दल के प्रतिनियुक्ति के सिलसिले में जाम्बिया सरकार की आवश्यकता तथा जरूरतों का आकलन करने के लिए सात दिन के लिए लुसाका भेजा गया।

नवम्बर में नई दिल्ली के राष्ट्रीय बाल भवन की उप निदेशक श्रीमती अमृता शाह को एक वर्ष के लिए पोर्ट लुई में बाल भवन के निदेशक के रूप में मारीशस भेजा गया तथा नौ सेना मुख्यालय के ले. कमाण्डर एच. सुब्रामणियम को समुद्री इंजीनियरी विशेषज्ञ के रूप में सेशेल्स भेजा गया।

आपदा राहत के लिए सहायता योजना के अन्तर्गत दवाईयों, खाद्य सामग्री, टेन्ट, कम्बल आदि के रूप में विभिन्न देशों के प्राकृतिक आपदा पीड़ितों को मानवीय सहायता दी गई है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 5 लाख रुपये मूल्य की दवाईयाँ लेबनान और 16.5 लाख रुपये मूल्य की दवाईयाँ मेडागास्कर को हैजा की महामारी के पीड़ितों के लिए भेजी गईं। एक करोड़ रुपये मूल्य का 81 मैट्रिक टन दूध का पाउडर इथोपिया को भेजा गया। तूफान पीड़ितों के लिए बेलिज सरकार को 5000 अमरीकी डालर की नकद सहायता दी गई। मानवीय सहायता के रूप में 36.5 लाख रुपये मूल्य का 30 टन दूध का पाउडर आपदा राहत के रूप में इन्डोनेशिया को भेजा गया।

तकनीकी सहायोग प्रभाग ने आईटेक पर एक 44 मिनट का वृत्त-चित्र तैयार किया है। सी एफ टी वी कर्मीदल ने इन देशों में आरम्भ हुई परियोजनाओं से संबंधित सूचना एकत्र करने के लिए वियतनाम, मालदीव, श्रीलंका, नेपाल, भूटान और सेनेगल की यात्रा की। यह फिल्म अशोक होटल के कन्वेनशन हॉल में 16 अगस्त, 2000 को दिखाई गई। श्री एस. टी. देवरे, सचिव (ई. आर.) ने इस अवसर पर एक स्वागत समारोह की मेजबानी की। आमंत्रित व्यक्तियों में आईटेक सहायता प्राप्त करने वाले राजनयिक मिशनों के सदस्य, मीडिया कार्मिक, संसद सदस्य, मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी और दिल्ली स्थित प्रशिक्षण संस्थानों के प्रमुख शामिल थे। घाना स्थित हमारे राजदूतावास ने आईटेक दिवस पर इस फिल्म को भी दिखाया।



व्यापार और पूँजीनिवेश संवर्धन

केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों ने वर्ष के दौरान विदेशी निवेश प्रवाहों विशेष रूप से भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफ. डी. आई.) प्रवाह को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से कई पहल और उपाय किए हैं। प्रमुख दबाव के क्षेत्रों में शामिल हैं अवसंरचनात्मक विकास, विशेषतः ऊर्जा, विद्युत, दूर संचार और सूचना प्रौद्योगिकी। निवेश प्रौद्योगिकी संवर्धन प्रभाग का कार्य, विशेष रूप से विदेश स्थित भारतीय मिशनों और केन्द्रों के माध्यम से देश में विदेशी निवेश आकर्षित करते हुए प्रभावी निवेश संवर्धन और प्रचार प्रयासों का सक्रिय रूप से निष्पादन करना है। कभी-कभी, मिशनों की वाणिज्यिक शाखाएं विदेशी निवेशकों के लिए संपर्क का प्रथम बिन्दु होते हैं। अतः यह अनिवार्य है कि मिशनों को अर्थव्यवस्था, उदारीकृत नीतियों तथा क्रिया विधियों, विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्ध परियोजना और अवसरों, केन्द्र सरकार तथा विभिन्न राज्य सरकारों इत्यादि द्वारा प्रस्तुत प्रोत्साहनों के बारे में अद्यतन सूचना प्रदान करने के रूप में उनके प्रयासों को पूर्ण सहायक समर्थन दिया जाए। निवेशकों द्वारा अपने प्रस्तावों के अनुमोदन के संबंध में विलम्ब के मामले में उनके हस्तक्षेप के प्रयास अथवा परियोजनाओं के क्रियान्वयन में सामने आई अन्य कठिनाईयों के संबंध में मिशनों से भी संपर्क किया जाता है। इन सभी और संबद्ध मामलों में मंत्रालय के निवेश तकनीकी संवर्धन (आई टी पी) प्रभाग ने मिशनों तथा संबद्ध मंत्रालयों/राज्य सरकारों अथवा अन्य अधिकरणों, जैसा भी मामला हो, के बीच संपर्क और समन्वय के एक नोडल बिन्दु के रूप में एक प्रभावी संचार चैनल के रूप में कार्य किया है।

नीति

मंत्रालय, जब कभी अपेक्षित हो, विश्व स्तर पर निवेश सम्मानों के आधार पर और विदेश नीतिगत उद्देश्यों और हमारी आर्थिक नीतियों के बीच तालमेल बनाए रखने की आवश्यकता के आधार पर नीति निर्माण संबंधी सामग्री प्रदान करता है। भारत की निवेश नीतियों के बारे में अथवा किन्हीं नई नीतियों के विकास के लिए सामग्री के रूप में उपयोग के लिए अन्य देशों में पालन किए गए सफल माडल नीतियों के बारे में या यदि राष्ट्रीय हित में ऐसा आवश्यक समझा जाता हो, तो किसी मौजूदा नीति की समीक्षा करने के लिए विदेशी निवेशक जानकारीयों पर मिशनो से नियमित फीडबैक प्राप्त किए गए।

मंत्रालय ने मंत्रालयों और राज्य सरकारों के सहयोग से विदेशी निवेश संवर्धन बोर्ड (एफ आई पी वी) और विदेशी निवेश कार्यान्वयन प्राधिकरण (एफ. आई. आई. ए.) की बैठकों में भी सक्रिय रूप से भाग लिया। एफ आई पी वी में, मंत्रालय का प्रतिनिधित्व सचिव (ई. आर.) ने किया और प्रवासियों से आने वाले निवेशों पर विशेष ध्यान दिया गया। एफ. आई. आई. ए. में, निवेश को तेज करने के लिए संबद्ध मंत्रालयों और राज्य सरकारों के साथ विशिष्ट नीतिगत उपाय किए गए।

संवर्धनात्मक प्रयास और पहल

मंत्रालय ने एक ओर मिशनों तथा दूसरी ओर केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारों के विभिन्न आर्थिक मंत्रालयों के साथ समन्वय करते हुए विभिन्न निवेश नीतियों और सरकार

की घोषणाओं को समुचित रूप से प्रस्तुत करने के प्रति अनेक प्रकार से पहल की। प्रमुख नीतिगत निर्णयों और नए अवसरों का उल्लेख करते हुए सभी मिशनों को उन्हें घटनाक्रम से अवगत कराने के लिए साप्ताहिक आर्थिक समाचार बुलेटिन भेजे गए। ई-मेल द्वारा साप्ताहिक आर्थिक समाचार बुलेटिन भेजने से शीघ्र और लागत प्रभावी संप्रेषण सुनिश्चित हुआ। मिशनों को निवेश संवर्धक संगोष्ठियाँ और कार्यशालाएं आयोजित करने के अलावा निवेश समर्थन सेवाएं प्रदान करने, जिसके लिए उपयुक्त प्रचार सामग्री, भाषण विषयों इत्यादि को नियमित रूप से भेजा गया, के लिए भी प्रोत्साहित किया गया। हमारे कई मिशनों ने पहचाने गए लक्षित देशों में इस प्रकार की संगोष्ठियाँ आयोजित की। मंत्रालय ने नीतियों, क्रिया-विधियों और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उपलब्ध अवसरों का उल्लेख करने के विशेष प्रयास भी किए।

मिशनों ने भावी निवेशकों, स्थानीय सरकारी अधिकारियों और स्थानीय वाणिज्य मण्डलों या उत्पाद संगठनों के साथ उपयुक्त बैठकों की व्यवस्था करते हुए राज्य सरकारों द्वारा प्रायोजित शिष्टमण्डलों सहित जाने वाले भारतीय शिष्ट मण्डलों को भी समर्थन दिया।

मंत्रालय ने मिशनों द्वारा प्रदत्त सूचना के आधार पर, आने वाले विदेशी निवेशक शिष्टमण्डलों, समूहों की संबंधित सरकारी विभागों, शीर्ष वाणिज्य मण्डलों, राज्य सरकारों इत्यादि के साथ उपयुक्त बैठकों में भी सहायता की। मंत्रालय ने अनेक द्विपक्षीय या अन्य बैठकों/सम्मेलनों जिनमें विदेशी निवेशक समूह शामिल थे, में भी भाग लिया। आई टी सी डिवीजन फ्रेंच जर्मनी, स्पेनिश भाषाओं में ब्रोशर प्रकशित करने की प्रक्रिया में है।

प्रौद्योगिकी, पहलु और अन्य मसले

संयुक्त सचिव (आई टी पी) विदेश मंत्रालय के सूचना प्रौद्योगिकी कार्य दल के एक सदस्य थे जिसका कार्य विदेश मंत्रालय में सूचना प्रौद्योगिकी के क्रियान्वयन से संबंधित मसले जैसे कि सभी अनुभागों के लिए कम्प्यूटरों का प्रावधान, अनुभाग में सूचना के डाटा बेसों का विकास, अनुभाग के भीतर नेटवर्क, प्रभाग स्तर पर नेटवर्किंग, नेटवर्किंग और डाटा बेसों के लिए साफ्टवेयर अनुप्रयोग, इंटरनेट और ई-मेल सुविधाएं, संयुक्त सचिव और उससे ऊपर के अधिकारियों के निवास पर कम्प्यूटर और इंटरनेट सुविधाएं, मिशनों का कम्प्यूटरीकरण जन सेवाएं वेबसाईट, प्रशिक्षण इत्यादि प्रदान करना है। सूचना

प्रौद्योगिकी कार्यबल ने प्रशासनिक सुधार और जन शिकायत विभाग द्वारा समन्वयित उच्च अधिकार प्राप्त समिति जो कि एक अन्तर मंत्रालयी निकाय है, द्वारा अनुमोदित ई-गवर्नेंस संबंधी न्यूनतम कार्यवृत्त के क्रियान्वयन का कार्य भी किया। आई.टी.पी. प्रभाग ने साइबर अपराध जैसे संभावित अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव वाले विभिन्न प्रौद्योगिकी से संबंधित मसलों का अतिरिक्त कार्य किया। आई टी पी प्रभाग ने अन्य प्रभागों के लिए उच्च प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग से संबंधित जैसे कि अन्तर्राष्ट्रीय पाईपलाईन के माध्यम से ऊर्जा अन्तरण की स्थापना के संबंध में अन्य देशों के साथ वार्ताओं के लिए सामग्री प्रदान की। आई टी पी प्रभाग पर्यटन के संवर्धन संबंधी मामले में विदेश मंत्रालय में नोडल प्रभाग था जो विदेश स्थित भारतीय मिशनों तथा पर्यटन विभाग और पर्यटन संवर्धन में लगी हुई भारत स्थित अन्य एजेंसियों के बीच एक सेतु के रूप में कार्य किया। अनेक भारतीय मिशनों ने भारतीय खाद्य उत्सव और अन्य पर्यटन संवर्धन समारोहों का आयोजन किया। इसने भारत सरकार के विदेश स्थित पर्यटन कार्यालयों के साथ निकट संपर्क बनाए रखा।

करार

मंत्रालय ने द्विपक्षीय निवेश संवर्धन और संरक्षण करारों (बी आई पी पी ए) और दोहरे कराधान परिहार करारों (डी. टी. ए. ए.) को तैयार करने संबंधी उन वार्ताओं में भाग लिया जो अनेक देशों में संपन्न हुई थी। इस वर्ष के दौरान, पुर्तगाल, स्वीडन और थाईलैण्ड के साथ द्विपक्षीय निवेश संवर्धन और संरक्षण करार (बी. आई. पी. पी. ए.) संपन्न किए गए। बहरीन, यू ए ई और लाओ गणराज्य के साथ द्विपक्षीय निवेश संवर्धन और संरक्षण करार संपन्न करने संबंधी वार्ताएं पूर्ण हुई। डी टी ए ए के संबंध में, आयरलैण्ड के साथ एक करार संपन्न हुआ था और मैक्सिको के साथ संपन्न करने संबंधी वार्ताएं पूरी हो गई थी। पुर्तगाल के साथ इस वर्ष डी टी ए ए प्रभावी हुआ था।

मंत्रालय ने अन्य देशों के साथ द्विपक्षीय नागर विमानन मामलों से संबंधित वार्ताओं में भी भाग लिया। मंत्रालय ने यथा अपेक्षित विधिक सामग्री प्रदान की और संबंधित नागर विमानन संपर्कों संबंधी आवश्यकता के आधार पर विशेष रूप से विदेश नीति विषय पर की जा रही पहलों के अनुसार विकसित करने के लिए अपने पड़ोसी क्षेत्र के संबंध में सलाह भी प्रदान की। बहरीन और अल्जीरिया के साथ वायुसेवा करार (ए एस ए) संपन्न हुआ था। साईप्रस और मेडागास्कर के साथ ए एस ए संपन्न कराने संबंधी वार्ताएं पूर्ण

हो गई थी। सीरिया, कुवैत, मलेशिया, खाड़ी देशों (यू ए ई, कतर, ओमान और बहरीन) तथा रूस के साथ समझौते ज्ञापन संपन्न हुए। सीरिया, कुवैत, मलेशिया, खाड़ी देशों, (संयुक्त अरब अमीरात, कतर, ओमान और बाहरीन) तथा रूस के साथ समझौता ज्ञापन संपन्न किए गए।

इण्डियाचेम-2000 के सफलतापूर्वक शुरुआत होने के बाद सितम्बर, 2002 में इण्डियाचेम-2000 आयोजित करने की योजना है। इण्डियाचेम एक भारतीय उद्योग मेला है जिसे भारतीय रसायन उद्योग को संवर्धित करने तथा उसके प्रदर्शन की सम्भावना के लिए नई दिल्ली में आयोजित किया जाता है। विदेशों में इण्डियाचेम के संवर्धन के लिए विदेश मंत्रालय की ओर से आई टी पी प्रभाग ने एक नोडल बिन्दु के रूप में कार्य किया।

साइप्रस और लक्जमबर्ग के साथ वायु सेवा करार सम्पन्न हुआ। रूसी परिसंघ और

हांगकांग के साथ नागर विमानन मामलों से सम्बद्ध समझौता ज्ञापन सम्पन्न हुआ। आयरलैंड के साथ दोहरे कराधान के परिहार से सम्बद्ध करार सम्पन्न हुआ।

भारतीय खाद्य निगम (एफ सी आई) के पास उपलब्ध गोहूँ की विदेशों को बिक्री के लिए उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय को सहायता देने के लिए विदेश मंत्रालय का आई टी पी प्रभाग नोडल बिन्दु के रूप में कार्य करता है।

आई टी पी प्रभाग विशेष रूप से निवेश संवर्धन के लिए एक वेबसाईट तैयार करने जा रहा है। यह वेबसाईट निवेश के लिए प्रमुख क्षेत्रों में आर्थिक नीति परिवर्तनों, विशिष्ट निवेश अवसरों, विदेशी निवेशकों को उपलब्ध परियोजनाओं तथा प्रोत्साहनों की जानकारी देने के उद्देश्य से तैयार किया जा रहा है।



नीति नियोजन और अनुसंधान

नीति नियोजन और अनुसन्धान प्रभाग राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद् सचिवालय (एन. एस. सी. एस.) जिसे पहले संयुक्त आसूचना समिति (जे. आई. सी.) के नाम से जाना जाता था, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू. जी. सी.) और उसकी सहयोगी संस्थाओं और विभिन्न विश्वविद्यालयों में स्थित क्षेत्रीय अध्ययन केन्द्रों और विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में अनुसन्धान के क्षेत्र में विशेष कार्य कर रही संस्थाओं के साथ कार्य करने के लिए एक प्रमुख केन्द्र है।

प्रभाग ने सम्मेलनों, संगोष्ठियों के आयोजन, अनुसंधान कागजातों को तैयार करने, विद्वानों का आदान-प्रदान करने के लिए देश के विभिन्न भागों में स्थित विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं/विचारकों को वित्तीय सहायता और भारत के विदेश संबंधों तथा सुरक्षा से सम्बद्ध मुद्दों पर ट्रेक-II कार्यक्रमों को समर्थन दिया। नीति-नियोजन प्रभाग द्वारा अंशतः वित्त-पोषित संगोष्ठियों/सम्मेलनों/बैठकों, जिनका आयोजन संस्थाओं/गैर-सरकारी संगठनों ने किया था, की सूची अनुबन्ध पर दी गई है।

इन संगोष्ठियों/सम्मेलनों और अनुसन्धान परियोजनाओं के विषयों में नई शताब्दी में भारतीय विदेश और सुरक्षा नीतियाँ, नई सहस्राब्दि में इजरायल, ईरान, जापान और रूस, संयुक्त राष्ट्र जैसे देशों के साथ भारत के द्विपक्षीय संबंध, नाभिकीय हथियारों की समाप्ति, आणविक ऊर्जा का शान्ति के लिए उपयोग, मानव सुरक्षा और छोटे शस्त्रों पर कटौती, दक्षिण और पूर्वी एशियाई देशों के साथ विपणन सहयोग, चुने हुए विकासशील देशों में आर्थिक सुधारों का प्रभाव, हिन्द महासागर और भारतीय मूल के लोगों का

सार्वभौमिक संगठन शामिल थे। भारतीय विद्वान विशेषज्ञों, को भी आस्ट्रिया, भूटान, कजाकस्तान, मलेशिया, मंगोलिया और इण्डोनेशिया में होने वाले संगोष्ठियों, कार्यशालाओं और सम्मेलनों में भाग लेने के लिए सहायता प्रदान की गई।

अनुसन्धान और विश्लेषणों में मंत्रालय की क्षमताओं को और मजबूत करने के लिए प्रभाग ने पिछले वर्ष विदेश मंत्रालय की संसदीय स्थायी समिति द्वारा की गई सिफारिश के अनुसार अनुसन्धान काडर को पुनः सक्रिय करने के लिए एक विस्तृत प्रस्ताव तैयार किया था। तथापि, नौकरशाही का आकार सही करने, योजना-भिन्न व्यय को कम करने और नए पदों पर निरन्तर रोक की वर्तमान नीति के कारण प्रस्ताव पर आगे कार्यवाही नहीं हुई। इस पर भी, ऐतिहासिक प्रभाग की भूमिका की सतत् संगतता को ध्यान में रखते हुए यह सिफारिश की गई थी कि प्रभाग को पुनः सक्रिय बनाया जाए और संयुक्त सचिव (पी. पी. एण्ड. आर) के सम्पूर्ण पर्यवेक्षण में निदेशक इसके अध्यक्ष होंगे।

भारत के माननीय राष्ट्रपति ने 1 सितम्बर, 2000 को इण्डियन काउन्सिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स (आई. सी. डब्ल्यू. ए) अध्यादेश, 2000 (2000 का सं. 3) प्रख्यापित किया। शैक्षिक/अनुसन्धान संस्थाओं के कार्यों को देख रहे विदेश मंत्रालय के प्रमुख प्रभाग के रूप में यह प्रभाग आई. सी. डब्ल्यू. ए. अध्यादेश, 2000 (2000 का सं. 3) के प्रख्यापन का मार्ग प्रशस्त करते हुए कार्यवाही से सक्रिय रूप से सम्बद्ध था। अध्यादेश के अन्तर्गत गठित नई निगमित परिषद् ने 2 सितम्बर, 2000 को आई. सी. डब्ल्यू. ए.

परिसर (सप्पु हाउस) का कार्यभार संभाला और परिसर की मरम्मत/सुसज्जा, पुस्तकालय के पुनरोद्धार सभागार की बहाली और आई. सी. डब्ल्यू. ए. के सामान्य क्रिया-कलापों के पुनः शुरु करने के लिए तुरन्त एक आपात योजना आरंभ की। केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग (सी. पी. डब्ल्यू. डी.) की सहायता से परिसर की बाहरी भाग, प्रशासनिक खण्ड और पुस्तकालय की मरम्मत का कार्य पूरा हो गया है और उस पर रंग-रोगन हो गया है। समिति कक्ष का पूरी तरह से नवीनीकरण हो गया है और उसे कार्ययोग्य बना दिया गया है। सभागार पर कार्य चल रहा है। सामने का बगीचा और मार्ग ठीक कर दिया गया है, जगह जगह पर बाउण्ड्री की दीवारें खड़ी कर दी गई हैं और लोहे की ग्रिलें लगा दी गई हैं। आशा है कि मार्च, 2001 के अन्त तक आई. सी. डब्ल्यू. ए. पूरी तरह से कार्य करने लग जाएगा।

इण्डियन काउन्सिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स विधेयक, 2000, जिसे 27.11.2000 को लोक सभा में रखा गया था, लोक सभा ने उसे 18 दिसम्बर, 2000 को पारित कर दिया था। आई. सी. डब्ल्यू. ए. विधेयक 2000 को 21.12.2000 को राज्य सभा में विचारार्थ रखा गया था। तथापि, इससे पूर्व कि उस विधेयक पर विचार हो सके, राज्य सभा स्थगित हो गई। इसके परिणामस्वरूप संविधान के अनुच्छेद 123(2) के अनुसार आई. सी. डब्ल्यू. ए. अध्यादेश, 2000 (2000 का 3) तारीख (20.11.2000) से 6 माह की अवधि बीत जाने पर 1 जनवरी, 2001 को व्यपगत हो गया। सरकारी कार्यवाही की निरन्तरता को बनाए रखने के उद्देश्य से राष्ट्रीय महत्व के संस्थान के रूप में आई. सी. डब्ल्यू. ए. की स्थिति को बनाए रखना आवश्यक हो गया था। अतः आई. सी. डब्ल्यू. ए. अध्यादेश, 2001 (2001 का नं. 1) 5 जनवरी, 2001 को 1 सितम्बर, 2000 से भूतलक्षी प्रभाव के साथ प्रख्यापित किया गया।

प्रभाग का अनुसन्धान अनुभाग मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट का सम्पादन और उसका प्रकाशन कार्य करता रहा। रिपोर्ट ने राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में, जिनमें अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के विभिन्न पहलुओं पर सरकार के दृष्टिकोण शामिल हैं, विश्व के अन्य देशों के साथ भारत के सम्बन्धों के सार-संग्रह के रूप में कार्य किया।

प्रभाग ने, जब कभी भी अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों पर किसी विशिष्ट सूचना अथवा दस्तावेजों की आवश्यकता पड़ी, क्षेत्रीय प्रभागों और विदेश स्थित भारतीय मिशनों को

हर संभव सहायता प्रदान की। अनुसन्धान अनुभाग ने विदेशी प्रकाशनों में भारत की अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं के रेखांकन की जांच की। गलत चित्रण के मामलों में सम्बद्ध सरकार और प्रकाशकों के साथ विदेश स्थित भारतीय मिशनों के माध्यम से आवश्यक उपचारी उपाय करने के लिए कार्रवाई की गई। प्रभाग ने विदेशी प्रकाशनों के उन मानचित्रों की भी देश में आयात करने से पूर्व जाँच की जिनमें भारत की बाहरी सीमाओं का चित्रण है और ऐसे मामलों से सम्बद्ध मामलों को अपने विचार भेजे। इसने भारतीय सर्वेक्षण विभाग और रक्षा मंत्रालय के साथ विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी एजेंसियों को उनके सरकारी कार्य में प्रयोग के लिए मान-चित्रों की आपूर्ति का कार्य समन्वित किया। अनुसन्धान अनुभाग ने मंत्रालय के अभिलेखों तक पहुंच के लिए अनुसन्धानकर्ताओं के अनुरोधों की पूर्ति की।

प्रभाग ने भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार से सम्बद्ध मामलों को भी देखा। संयुक्त सचिव (पी. पी. एण्ड.आर.) राष्ट्रीय अभिलेखागार के अभिलेखागार सलाहकार बोर्ड की सभी बैठकों में सदस्य के रूप में हिस्सा लेते हैं।

मंत्रालय का पुस्तकालय जो इस प्रभाग के पूर्ण नियन्त्रण में कार्य करता है, के पास आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी उपकरण और बेहतर संसाधन सामग्री है और एक लाख से अधिक पुस्तकें और बड़ी संख्या में मानचित्र, माइक्रोफिल्म और सरकारी दस्तावेज हैं। पुस्तकालय में 600 आवधिक पत्र-पत्रिकाएं आती हैं और उनका रख-रखाव किया जाता है। पुस्तकालय में इन-हाउस कम्प्यूटर-प्रणालियाँ हैं जिनमें 15 टर्मिनल्स/कम्प्यूटर हैं जिनमें से आधे कम्प्यूटर आंकड़ों के रखने और हिन्दी में जानकारी लेने में सहायता प्रदान करते हैं। पुस्तकालय में विदेशी मामलों और नवीनतम मामलों पर सी डी-रोम कार्य केन्द्र और सी डी रोम डाटा बेस है। पुस्तकालय में सी डी राइटर, रंगीन स्केनर (ओ. सी. आर. क्षमता तथा चित्रों के भण्डारण तथा वापस लेने की सुविधा सहित), माइक्रो फिल्म/फिश रीडर प्रिंटर, सादा कागज फोटोकॉपीयर, बी. टी. आर. और रंगीन मॉनीटर तथा डेस्क टॉप प्रकाशन करने वाले साफ्टवेयर हैं। इससे प्रभाग के प्रकाशन और दस्तावेजों को बेहतर ढंग से प्रस्तुत करने में सहायता मिली है। पुस्तकालय में इण्टरनेट और ई. मेल सुविधाएं हैं। ये सुविधाएं पुस्तकालय में आने वाले लोगों को उपलब्ध कराई जा रही हैं जिनमें अनुसन्धानकर्ता और भूतपूर्व विदेश सेवा अधिकारी शामिल हैं। समेकित पुस्तकालय

साफ्टवेयर के पैकेज का उपयोग करके दस्तावेज/ग्रन्थ सूची सेवा तथा अन्य पुस्तकालय कार्यों और सेवाओं का कम्प्यूटरीकरण किया जा रहा है। 1986 के बाद से पुस्तकालय में आई सभी पुस्तकों, मान चित्रों, दस्तावेजों और चुने हुए आवधिक लेखों से सम्बद्ध

13

विदेश प्रचार प्रभाग

भारत द्वारा प्रमुख शक्तियों, पारम्परिक सहभागियों तथा अन्य अंतर्वादी में सक्रिय रूप से अनुबद्ध रहने तथा सिआर लिओने में संयुक्त राष्ट्र द्वारा शान्ति कायम करने के प्रयासों और फिजी में हुई घटनाओं से प्रस्तुत चुनौतियों की पुनरीक्षित प्रतिक्रिया के फलस्वरूप विदेश नीति के प्रबंधन के लिए विदेश प्रचार प्रभाग विदेश नीति और अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा संबंधी मामलों में भारत के सापेक्ष परिप्रेक्ष्य को व्यक्त तथा स्पष्ट करने का साधन था। इसके साथ ही, विदेश प्रचार प्रभाग ने हमारी विदेश नीति की प्राथमिकताओं के अनुरूप कई वृत्त-चित्र बनाने, वेबसाइट को अद्यतन रखने, विदेश स्थित भारत के पुस्तकालयों के लिए पुस्तकें देने, मासिक इन्डिया पर्सपेक्टिव तथा शान्ति कायम करने जैसी महत्वपूर्ण घटनाओं और मामलों से सम्बद्ध सामयिक रिपोर्टों के प्रकाशन, अन्तर्राष्ट्रीय तथा घरेलू मीडिया की मॉनीटरिंग और राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति प्रधानमंत्री, विदेश मंत्री तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों की यात्रा के लिए मीडिया से सम्बद्ध कार्यों का प्रबंधन किया।

विदेश प्रचार प्रभाग ने मीडिया के लिए विशेष सूचनाएँ एकत्र करने के अतिरिक्त भारतीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया के लिए दैनिक ब्रीफिंग आयोजित करके 166 से अधिक प्रैस विज्ञप्तियों का प्रकाशन किया। स्वभाविक है कि सूचनाओं के समय पर प्रसारण के लिए समय की पाबन्दी और सक्रिय रूचि बनी रही, विशेषतौर पर उच्च स्तर की यात्राओं में। राष्ट्रपति श्री के. आर. नारायणन की चीन यात्रा, प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की संयुक्त राज्य अमरीका, वियतनाम और इंडोनेशिया की यात्रा और साथ ही, प्रथम भारत-यूरोपीय संघ शिखर सम्मेलन ने विश्व प्रैस का ध्यान अपनी ओर

खींचा। अमरीका और रूस के राष्ट्रपति, जापान, यूनान, मारीशस तथा नेपाल और श्रीलंका जैसे पड़ोसियों के प्रधानमंत्रियों तथा चीन की नैशनल पीपुल्स कांग्रेस के अध्यक्ष की भारत यात्रा बड़ी संख्या में की गई यात्राओं से कुछ एक थीं जो सक्रिय राजनयिक गतिविधियों अवधि को प्रमाणित करती हैं। सीमापार आतंकवाद को दुष्प्रेरित करने के लगातार समर्थन के प्रतिरोध के रूप में भारत के जम्मू और कश्मीर राज्य में शान्ति और सामान्य स्थिति बहाल करने की वचनबद्धता को व्यापक रूप से समर्थन और अनुमोदन मिला है।

प्रवक्ता के कार्यालय से सूचना के प्रसारण में मंत्रालय की वेबसाइट ने एक उपयोगी माध्यम का कार्य किया। वेबसाइट को विदेश नीति, निरस्त्रीकरण तथा अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा से सम्बद्ध मसले, अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद, विशिष्ट व्यक्तियों के भाषण और साक्षात्कार, सरकारी प्रवक्ता के वक्तव्य, प्रैस विज्ञप्तियों, ब्रिफिंग्स के रिकार्ड, भारत द्वारा सम्पन्न द्विपक्षीय संधियों तथा करारों, अन्य राजनीतिक तथा आर्थिक गतिविधियों, संसद के प्रश्नों और उत्तरों इत्यादि से सम्बद्ध सभी गतिविधियों को कवर करके नियमित आधार पर अद्यतन रखा गया। राज्याध्यक्षों और शासनाध्यक्षों की प्रमुख यात्राओं, विदेश सेवा संस्थान तथा जम्मू एवं कश्मीर में नवम्बर, 2000 में प्रधान मंत्री द्वारा किए जा रहे कार्यों पर अलग से उपखण्ड बनाए गए। वेबसाइट का उपयोग करने वाले भारतीय तथा विदेशी दोनों (एक माह में लगभग 2 मिलियन क्लिकिंग) में व्यापक रूप से इसकी सराहना की और इसे प्रतिष्ठित अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्सियों से स्वीकृति मिली। वेबसाइट को भारत से सम्बद्ध

सूचना के लिए सी. एन. एन., बी. बी. सी., द इकोनोमिस्ट, इत्यादि जैसे कुछ महत्वपूर्ण संगठनों से भी हाइपर लिंक किया गया। वेब के लिए सबसे अच्छी बेवसाइट की गाइड 'द बी. बी. सी. वेब गाइड' ने इस साइट को एक उच्च स्तरीय साइट बताया। विदेश मंत्रालय की वेबसाइट को भारत की साइट अप्रेजल सोल्यूशन्स प्रोवाइडर डब्ल्यू डब्ल्यू बेस्ट इन्डियन साइट्स डॉट कॉम द्वारा 50 टॉप भारतीय साइटों में स्थान दिया। विदेश स्थित अधिकतर मिशनों ने प्रतिपुष्टि तथा पुनः प्राप्ति भंडारण के लिए ई-मेल - आधारित मीडिया रिपोर्टिंग प्रणाली अपनाई। भारत की विदेश नीति पर व्यापक पुरातन सामग्री को संदर्भ तथा आसानी से प्राप्ति के लिए वेबसाइट में डाल दिया।

विदेश मंत्रालय भारत में वृत्त-चित्र का निर्माण करने वाला सबसे बड़ा निर्माता है। ये फिल्में भारत से सम्बद्ध सामयिक तथा स्थानिक विषयों पर विश्व समुदाय का ध्यान आकर्षित करने के साथ ही दीर्घावधि छवि कायम करने के दोहरे उद्देश्य से बनाई गई। इस कार्य का अन्तिम उद्देश्य भारत को समृद्ध सभ्यता की विरासत वाले एक मजबूत, उन्नत लोकतान्त्रिक देश के रूप में प्रस्तुत करना था।

इस वर्ष के दौरान भारत की विदेश नीति के लक्ष्यों में अन्तर्ग्रथन के विषयों पर विभिन्न प्रकार के वृत्त-चित्र बनाए गए। इन फिल्मों के विषयों का चयन विदेशी दर्शकों को ध्यान में रखते हुए उनके बीच देश की सकारात्मक छवि सुनिश्चित करने के उद्देश्य से ध्यानपूर्वक किया जाता है। इनमें भारतीय लोकतंत्र, मारीशस, नेपाल, दक्षिण अफ्रीका, मध्य एशिया तथा दक्षिण पूर्वी एशिया के साथ बढ़ रहे सम्बन्ध, भारतीय डायसपोरा को फैलाना; भारत को नौसेना के क्षेत्र में शक्ति के रूप में उभारना शामिल है।

अगस्त 2000 में नई दिल्ली में "रिफ्लेक्शन्स" नामक शीर्षक से विदेश मंत्रालय द्वारा निर्मित लघु फिल्मों का एक फेस्टिवल आयोजित किया गया। विदेश मंत्रालय द्वारा निर्मित वृत्त-चित्रों को विदेश स्थित भारतीय मिशनों और साथ ही भारत में विदेशी टेलीविजन नेटवर्क पर दिखाया गया। 15 विभिन्न देशों में भारतीय कथा-चित्र महोत्सव उन संबंधित देशों में भारतीय दूतावासों, जिनमें आबूधावी, अल्जीरिया, बर्लिन, ब्रुसेल्स, बुडापेस्ट, हांगकांग, मैड्रिड, मास्को, पोर्ट लुई, रबात, आदिस अबाबा, राजशाही तेल अबीब, वियनशियाने और जान्जीबार शामिल हैं, के सहयोग से आयोजित किए गए। शिकागो और मिंग्स में राजकपूर के चलचित्र दिखाए गए। अदूर गोपालकृष्णन के

चलचित्र का आयोजन भी मैड्रिड और ब्रुसेल्स में हुआ। ढाका में ऋषिकेश मुखर्जी की विशेष फिल्में दिखाई गईं।

मंत्रालय के पास चलचित्रों के वर्तमान संग्रह में पुरानी श्रेष्ठ फिल्मों और हाल ही की पुरस्कृत फिल्मों की खरीद करके और वृद्धि की गई। बर्लिन के फिल्म महोत्सव में फिल्म पोस्टर और फिल्मों के फोटो लगाकर एक प्रदर्शनी आयोजित की गई। एम. एफ. हुसैन की फिल्म "गज गामिनी" का प्रदर्शन दिल्ली स्थित विदेशी राजनयिकों और विदेशी मीडिया के चुनिंदा दर्शकों के लिए आयोजित किया गया।

विदेश स्थित मिशनों और केन्द्रों में दृश्य-श्रव्य पुस्तकालयों और उपहार-स्वरूप देने के उद्देश्य से दृश्य-श्रव्य सामग्री भेजी गई जिसमें भारत के विषय में विभिन्न प्रकार के 'सी. डी. रोम' और भारतीय संगीत एवं फिल्मों के आडियो/वीडियो सी. डी. थे। चीन में भारत के राजदूतावास के सहयोग से फोटो प्रदर्शनी आयोजित की गई।

मंत्रालय ने डी. वी. डी. प्लेयर, फिल्म तथा स्लाइट प्रोजेक्टर्स, डिश एन्टिना, सी. डी. प्लेयर्स, टी. वी. तथा विडियो कैसेट प्लेयर्स, पब्लिक एड्रेस सिस्टम, कम्प्यूटर्स इत्यादि जैसे प्रचार से सम्बद्ध उपकरणों का अधिग्रहण करके विदेश स्थित मिशनों में सूचना आधारसंरचना को मजबूत करने का प्रयत्न किया।

विदेशी टी. वी. नेटवर्क द्वारा प्रस्तावित वृत्त-चित्रों को स्वीकृत करने के लिए मंत्रालय एक नोडल प्वाइंट है। इस वर्ष के दौरान 322 प्रस्ताव प्राप्त हुए जिनमें से 90% को शीघ्र अनुमोदित कर दिया गया।

सुपरिचय के लिए की जा रही यात्राओं के चालू कार्यक्रम के अन्तर्गत इन्डोनेशिया, ब्रूनई, हांग कांग, मिस्र, ईरान, रूस, यूनाइटेड किंगडम, मारीशस, मोरक्को, टर्की, अर्जेंटीना, चीन, नेपाल, स्पेन, पुर्तगाल, कीनिया, वियतनाम, तंजानिया, बंगलादेश, मंगोलिया, हंगरी, नाइजीरिया, सिंगापुर, फ्रांस, संयुक्त राज्य अमरीका, मालदीव, जर्मनी, उजबेकिस्तान, थाईलैंड, जापान, नामीबिया, आईसलैंड तथा सऊदी अरब सहित विभिन्न देशों से 95 विरिष्ट पत्रकारों को भारत में आमंत्रित किया गया। इन यात्राओं से विदेशी मीडिया में भारत की तुलनात्मक छवि उभरी और विदेशों में हमारे देश की प्रतिष्ठा बढ़ी। इस वर्ष के दौरान भारत की यात्रा पर आने वाले विदेशी मीडिया को भी सुविधाएँ प्रदान

की गई। शासनाध्यक्षों एवं राज्याध्यक्षों के साथ यात्रा पर आए मीडिया शिष्टमंडलों को सम्पूर्ण आधारभूत सहायता तथा अन्य सहायता प्रदान की गई। इनमें नार्वे, रूस, सिंगापुर, नाइजीरिया, इंडोनेशिया, कम्बोडिया, मोरक्को, संयुक्त राज्य अमरीका, मालदीव, आस्ट्रेलिया, टर्की उजबेकिस्तान, नेपाल, जार्जिया, जापान और आइसलैंड के दल शामिल हैं। फ्रांस, जर्मन, यू. के., चीन, थाईलैंड, ओमान, दक्षिण कोरिया तथा नामीबिया से अति महत्वपूर्ण व्यक्तियों की यात्राएँ हुईं। विदेशों से यात्रा पर आए राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री के लिए मीडिया से संबंधित इस इन्तजाम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुए।

300 से अधिक विदेशी आवासी संवाददाताओं को प्रत्यायन तथा अन्य सुविधाएँ प्रदान की गईं।

इस वर्ष के दौरान मंत्रालय द्वारा कई प्रकाशन निकाले गए जिनमें “फारेन अफेयर्स

रिकार्ड” तथा सभी प्रैस विज्ञप्तियाँ, करारों, भाषणों तथा महत्वपूर्ण राजनयिक गतिविधियों का संकलन शामिल है। विदेश स्थित भारत के मिशनों और केन्द्रों के माध्यम से वितरण के लिए मंत्रालय की मासिक पत्रिका “इन्डिया पर्सपेक्टिव” को दस विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित किया गया। इस वर्ष के दौरान प्रधान मंत्री तथा विदेश मंत्री द्वारा विदेश नीति पर दिए गए वक्तव्यों (मई 1998-2000) का एक संग्रह, मार्च 2000 में अमरीका के राष्ट्रपति की भारत यात्रा पर एक पुस्तक, संयुक्त राष्ट्र शान्ति कायम रखने से सम्बद्ध कार्यों पर नई दिल्ली में आयोजित संगोष्ठी के प्रस्तुतीकरण के संकलन जैसे कुछ अन्य प्रकाशन निकाले गए। कुछ अन्य प्रकाशन प्रोडक्शन के विभिन्न स्तरों पर हैं, जिनमें भारत-यूरोपियन संघ शिखर सम्मेलन की पुस्तक, प्रधानमंत्री की संयुक्त राज्य अमरीका की यात्रा और रूसी राष्ट्रपति की भारत यात्रा शामिल है।



1. राज्याध्यक्षों/शासनाध्यक्षों/उपराष्ट्रपतियों/युवराजों की भारत की राजकीय यात्रा

यात्रा

श्री गो चुक टोंग, सिंगापुर के प्रधानमंत्री
 श्री ओ ओबासन्जो, नाइजीरिया के राष्ट्रपति
 श्री अब्दुर्रहमान वाहिद, इंडोनेशियन के राष्ट्रपति
 श्री सामदेश हुन सेन, कम्बोडिया के प्रधानमंत्री
 श्री अब्दुर्रहमानी युसूफी, मोरक्को के प्रधानमंत्री
 श्री विलियम जे क्लिंटन, अमरीका के राष्ट्रपति
 श्री बुलेन्ट इसीविट, तुर्की के प्रधानमंत्री
 श्री इस्लाम ए. करिमोव, उजबेकिस्तान के राष्ट्रपति
 श्री जी.पी. कोईराला, नेपाल के प्रधानमंत्री
 श्री मौमून अब्दुल गयूम, मालदीव के राष्ट्रपति
 श्री योशीरो मोरी, जापान के प्रधानमंत्री
 श्री ब्लादीमीर वी. पुतिन, रूसी परिसंघ के राष्ट्रपति
 श्री ओलाफुर रैगनर ग्रिमसन, आइसलैंड के राष्ट्रपति
 श्री जनरल माउंग आई, उपाध्यक्ष, एस. पी. डी. सी, म्यामां

तारीख

7-21 जनवरी 2000
 24-28 जनवरी 2000
 8-9 फरवरी 2000
 17-19 फरवरी 2000
 21-25 फरवरी 2000
 19-25 मार्च 2000
 30 मार्च से 2 अप्रैल 2000
 1-3 मई, 2000
 31 जुलाई-6 अगस्त 2000
 21 अगस्त से 25 अगस्त 2000
 22-26 अगस्त, 2000
 2-5 अक्टूबर 2000
 28 अक्टूबर से 3 नवम्बर 2000
 14 से 21 नवम्बर 2000

2. राज्याध्यक्षों/शासनाध्यक्षों/उप-राष्ट्रपति/युवराजों द्वारा की गई सरकारी यात्राएँ

श्री जॉन हावर्ड, आस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री

10-11 जुलाई, 2000

श्री ताहा यासीन रामधन इराक के उप-राष्ट्रपति

27 नवम्बर से 1 दिसम्बर 2000

3. राज्याध्यक्षों/शासनाध्यक्षों/उप-राष्ट्रपतियों/प्रथम महिलाओं द्वारा की गई निजी यात्राएँ

नीदरलैंड की क्वीन बीटीक्स

15 जनवरी से 2 फरवरी, 2000

श्री ए. वी. चेत्तियार, मारीशस के उपराष्ट्रपति

12-26 जनवरी, 2000

श्री महेन्द्र चौधरी फिजी के प्रधानमंत्री

16-28 अगस्त, 2000

श्रीमती सारा नजरवाएवा कजाकस्तान के राष्ट्रपति की पत्नी

25-28 अगस्त, 2000

श्रीमती जगन्नाथ मारीशस के प्रधानमंत्री की पत्नी

15 नवम्बर से 1 दिसम्बर, 2000

4. राज्याध्यक्षों/शासनाध्यक्षों/उप-राष्ट्रपतियों/राजकुमारों द्वारा मार्गस्थ यात्रा/विराम

श्री तारिक अजीज, इराक के उप प्रधानमंत्री

5-6 फरवरी, 2000

श्रीमती शेख हसीना, बंगलादेश की प्रधानमंत्री

1 फरवरी, 2000

स्पेन की महारानी

9 फरवरी, 2000

श्री यासर अराफात, फिलीस्तीन के राष्ट्रपति

18-19 अगस्त, 2000

श्री अब्दुस समद आजाद, बंगलादेश के विदेश मंत्री

30 अगस्त, 2000

श्रीमती शेख हसीना, बंगलादेश की प्रधानमंत्री

3 सितम्बर, 2000

श्रीमती शेख हसीना, बंगलादेश की प्रधानमंत्री

20 अक्टूबर, 2000

राजकुलमान्या राजकुमारी एनी, शाही राजकुमारी, यू. के.

20-21 नवम्बर, 2000

महामान्य श्री.एम.मुरालीव, किर्गिजस्तान के प्रधानमंत्री

15 नवम्बर, 2000 और 22 नवम्बर, 2000

5. विदेश मंत्रियों या इसके समकक्षों और अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा की गई सरकारी यात्राएं

श्री नुट वालबेक नार्वे के विदेश मंत्री

7-17 जनवरी, 2000

डा. विक्टर क्रिस्टेनको, रूस के उप प्रधानमंत्री

14-17 जनवरी, 2000

श्री एम एल कादिरगमर, श्री लंका के विदेश मंत्री

29 जनवरी - 2 फरवरी, 2000

श्री हर्बर्ट वेडरिन, फ्रांस के विदेश मंत्री

17-19 फरवरी, 2000

श्री फातुल्ला जमील, मालदीव के विदेश मंत्री	3-8 मार्च, 2000
सुश्री मेडलिन अल्ब्राइट अमरीकी सेक्रेटरी ऑफ स्टेट	19-22, 24-25 मार्च, 2000
श्री एलेक्जेंडर डाउनर, आस्ट्रेलिया के विदेश मंत्री	21-24 मार्च, 2000
श्री बोरिस ओ शिमोर्दोव, तुर्कमेनिस्तान के विदेश मंत्री	2-6 अप्रैल, 2000
आदरणीय माननीय श्री रोबिन कुक, सेक्रेटरी ऑफ स्टेट, यू. के.	15-18 अप्रैल, 2000
श्री लियोनपो जिग्मे वाई थिनले, भूटान के विदेश मंत्री	17-27 अप्रैल, 2000
श्री चक्र प्रसाद बस्तोला, नेपाल, के विदेश मंत्री	7-10 मई, 2000
श्री आई मेनागारीश विली, जार्जिया के विदेश मंत्री	9-13 मई, 2000
श्री जोशका फिशर, जर्मनी के उप-चांसलर और विदेश मंत्री	17-18 मई, 2000
श्री अब्दुल रहमान मोहम्मद शालगम, लीबिया के विदेश मंत्री	6-8 जुलाई, 2000
श्री सूरिन पिटसुवान, थाईलैंड के विदेश मंत्री	8-10 जुलाई, 2000
श्री तांग जियासुआन, चीन के विदेश मंत्री	21-22 जुलाई, 2000
श्री ली जोंग, बिन कोरिया के विदेश कार्य और व्यापार मंत्री	30-31 जुलाई, 2000
श्री युसुफ बिन अलावी बिन अब्दुल्लाह, ओमान के विदेश मंत्री	16-19 जुलाई, 2000
डा. थिपो बेन गुरिराब, नामीबिया के विदेश मंत्री और संयुक्त राष्ट्र महासभा के अध्यक्ष	17-19 अगस्त, 2000
डा. जोशका फिशर, जर्मनी के उप चांसलर और विदेश मंत्री	28 सितम्बर से 1 अक्टूबर 2000
श्री दातुक सेरी सईद हमीद अलबार, मलेशिया के विदेश मंत्री	8-11 अक्टूबर, 2000
श्री इदीज कोलावोले, एन्टोइने के विदेश मंत्री	24-26 अक्टूबर, 2000
श्री क्लीमेंट जेम्स रोही, गयाना के विदेश मंत्री	26-29 नवम्बर, 2000
श्री वर्तन ओस्कानियन, अर्मेनिया के विदेश मंत्री	3-5 दिसम्बर, 2000
श्री हबीब बेन याहिया, ट्यूनीशिया के विदेश मंत्री	7-9 दिसम्बर, 2000
श्री जी. ए. पापान्द्रेयू, यूनान के विदेश मंत्री	20-22 दिसम्बर, 2000

6. विदेश मंत्रियों या समकक्षों और अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा की गई निजी यात्राएँ

श्री लैम्बर्टो दिनी, इटली के विदेश मंत्री	11-13 नवम्बर, 2000
श्री अवदस समद आजाद, बंगलादेश के विदेश मंत्री	9-14 दिसम्बर, 2000 (9-11 दिसम्बर कलकत्ता में)
श्री एल. कादिरगमर, श्रीलंका के विदेश मंत्री	14-17 दिसम्बर, 2000

श्री एल. कादिरगमर, श्रीलंका के विदेश मंत्री
श्री जी. ए. पपेन्दु यूनान के विदेश मंत्री

18-30 दिसम्बर, 2000 (शिमला, बंगलौर और पुट्टपर्थी)
16-18 दिसम्बर, 2000 (जयपुर और कलकत्ता)

वर्तमान वित्तीय वर्ष में आयोजित किए गए सम्मेलनों की सूची

- | | |
|---|---------------------|
| 1. बी आई एम एस टी - ई सी की तीसरी मंत्रिस्तरीय बैठक | 3-6 जुलाई, 2000 |
| 2. आसियान-भारत संयुक्त मानव संसाधन विकास कार्यशाला | 16-17 अक्टूबर, 2000 |

इनके अतिरिक्त निम्नलिखित सम्मेलनों के आयोजनों में भी सहायता प्रदान की गई

- | | |
|---|--------------------|
| 1. भारत-यू. के. गोल मेज | 18-19 अप्रैल, 2000 |
| 2. हज 1421 (एच) संबंधी अखिल भारतीय वार्षिक सम्मेलन | 22 अगस्त, 2000 |
| 3. रूसी राष्ट्रपति महामान्य श्री वी. वी. पुतिन की भारत की राजकीय यात्रा के दौरान उन्हें डाक्ट्रेट की उपाधि प्रदान करने के लिए दीक्षांत समारोह | 3 अक्टूबर, 2000 |
| 4. हैदराबाद में पर्यावरण और विकास से संबद्ध एशियाई प्रशांत देशों के सांसदों का आठवां सम्मेलन | 13-16 नवम्बर, 2000 |
| 5. विश्व ऊर्जा परिषद-भारतीय सदस्य समिति | 22-23 नवम्बर, 2000 |

अति/महत्वपूर्ण व्यक्तियों की विदेश यात्राओं का विवरण

भारत के राष्ट्रपति

- | | | |
|------------------------------|---|-----------------------|
| 1. फ्रांस की राजकीय यात्रा | : | 16 से 21 अप्रैल, 2000 |
| 2. चीन की राजकीय यात्रा | : | 28 मई से 3 जून, 2000 |
| 3. सिंगापुर की राजकीय यात्रा | : | 9-13 नवम्बर, 2000 |

भारत के उप-राष्ट्रपति

- | | | |
|--|---|-------------------|
| 1. पूर्वी यूरोप की यात्रा (बल्गारिया, स्लोवाकिया और मिस्र) | : | 8 से 21 जून, 2000 |
| 2. श्रीलंका | : | 15 अक्टूबर, 2000 |

भारत के प्रधानमंत्री

- | | | |
|---------------------|---|------------------------|
| 1. मारीशस | : | 10 से 13 मार्च, 2000 |
| 2. इटली और पुर्तगाल | : | 25 जून से 30 जून, 2000 |
| 3. अमरीका और जर्मनी | : | 7 से 19 सितम्बर |



पासपोर्ट, वीजा तथा कोंसली सेवाएँ

विदेश मंत्रालय के साथ जन-साधारण का संपर्क भारतीय राष्ट्रियों के लिए पासपोर्टों, विदेशी राष्ट्रियों के लिए वीजा और विदेश में रह रहे भारतीय राष्ट्रियों को कोंसली सेवाएं प्रदान करने के द्वारा होता है। वर्तमान दौर में उतरोत्तर बढ़ रही विदेश यात्रा, रोजगार, विहार और अध्ययन इत्यादि के लिए बार-बार सीमा पार आने-जाने के वर्तमान युग में पासपोर्ट जारी किया जाना, किसी व्यक्ति के विश्व नागरिक बनने के लिए पूर्वापेक्षा है। अपनी गतिविधियों के जरिए कोंसली, पासपोर्ट और वीजा (सी. पी. वी.) प्रभाग भारतीय मानव-शक्ति, सुविज्ञता और प्रौद्योगिकी भारत से बाहर भेजने में प्रत्यक्ष रूप से सहायता करता है।

पासपोर्ट सेवाएँ

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान केन्द्रीय पासपोर्ट संगठन ने पासपोर्ट आवेदकों की आशाओं को पूरा करने और पासपोर्ट कार्यालयों की कार्यप्रणाली के आधुनिकीकरण के दोनों उद्देश्यों को ध्यान में रखकर कार्य किया। 28 पासपोर्ट कार्यालयों में प्रभावी, द्रुत और पारदर्शी सेवा प्रदान करने के लिए किये गये विभिन्न उपायों के जरिए नागरिक चार्टर के अन्तर्गत सरकार की वचनबद्धताओं को पूरा करने के प्रयास जारी रहे। इस वर्ष तिरुपति, विजयवाड़ा, सिलीगुड़ी, पांडिचेरी और कलकत्ता स्थित विदेश मंत्रालय के शाखा कार्यालय में पांच नये पासपोर्ट संग्रहण केन्द्र खोले गये। पासपोर्ट आवेदकों की सुविधा के लिए पासपोर्ट आवेदनों की छपाई, वितरण और सांकेतिक मूल्य पर इसकी बिक्री के लिए अतिरिक्त केन्द्र खोले गये।

पासपोर्ट कार्यालय बंगलौर, चण्डीगढ़, भोपाल, लखनऊ और चेन्नई ने अपने वेबसाइटों की शुरूआत की जिस पर पासपोर्ट वीजा और पी आई ओ कार्ड से संबंधित सभी नियम और विनियम दिये गये हैं और इन पर उस विशेष पासपोर्ट कार्यालय में जमा किये गये आवेदनों की स्थिति की जानकारी उपलब्ध रहती है।

1-3 जुलाई, 2000 तक बंगलौर में पासपोर्ट अधिकारियों का वार्षिक सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें प्रणाली को और उपयोगी तथा प्रभावी बनाने के लिए प्रक्रियाओं में सुधार लाने और इन्हें संवर्द्धित करने पर बल दिया गया। जन साधारण की शिकायतों को दूर करने पर विशेष बल दिया गया और अधिकतर पासपोर्ट कार्यालयों में आवधिक “पासपोर्ट अदालतें” लगायी जाती रहीं।

नागरिक चार्टर की वचनबद्धताओं के अनुरूप पासपोर्ट जारी करने तथा शीघ्र और प्रभावी तरीके से विविध सेवाएं प्रदान करने के उद्देश्य से विभिन्न प्रक्रियाओं को सरल और कारगर बनाने के लिए अनेक उपायों की पहल की गयी। बिना बारी के पासपोर्ट जारी करने के लिए जो ‘तत्काल’ योजना आरंभ की गयी थी, वह अत्यन्त सफल रही है। इससे यह प्रणाली जनता की मांग पर शीघ्र कार्रवाई करने में समर्थ हुई है और सरकार को पर्याप्त अतिरिक्त राजस्व भी प्राप्त हुआ है।

पासपोर्ट आवेदन पत्र भरने में किसी निरक्षर पासपोर्ट आवेदक को सहायता दिए जाने की वास्तविक आवश्यकता को स्वीकार किया गया है। कुछ पासपोर्ट कार्यालयों में सुविधा काउन्टर खोलने के लिए भूतपूर्व सैनिकों के संगठनों से संपर्क किया गया है जहाँ वे अल्प

शुल्क के भुगतान पर आवेदकों को सहायता प्रदान करेंगे। पासपोर्ट कार्यालय जालंधर, त्रिचिरापल्ली, बंगलौर और नई दिल्ली में ऐसे काउन्टरों ने पहले ही कार्य करना आरंभ कर दिया है।

पासपोर्ट पुस्तिका (1983) को पूर्णतः संशोधित करके अद्यतन बनाया गया है और इसे छपाई के लिए भेजा गया है।

अवयस्कों, अकेली अथवा बिन-ब्याही माताओं, अधिकारियों, जिन पर कर्तव्य निर्वहन के दौरान किये गये कार्यों के लिए आपराधिक मुकदमा चल रहा है, विदेशों में शरण लेने वालों इत्यादि के लिए पासपोर्ट जारी करने के नियमों को संशोधित किया गया है ताकि इन मामलों में पासपोर्ट जारी किये जाने को सुगम और कारगर बनाया जा सके।

अधिकतर पासपोर्ट कार्यालयों में जनता के लिए काउन्टरों की संख्या बढ़ाकर, वातानुकूलन को संवर्द्धित करके, वाटर कूलर्स लगाकर, कुर्सियाँ इत्यादि लगाकर आवेदकों/आगंतुकों के लिए सुविधाएँ बढ़ाने के ठोस उपाय किये गये।

अभी 28 में से 20 पासपोर्ट कार्यालयों का कम्प्यूटरीकरण कर दिया गया है। ये हैं— अहमदाबाद, बंगलौर, बरेली, भोपाल, कलकत्ता, चंडीगढ़, चेन्नई, कोचीन, दिल्ली, हैदराबाद, जयपुर, जालन्धर, कोजीकोड, लखनऊ, मुम्बई, पणजी, पुणे, त्रिचिरापल्ली तिरुअनन्तपुरम, विशाखापत्तनम। वर्ष 2001 के अंत तक बाकी बचे 8 पासपोर्ट कार्यालयों का कम्प्यूटरीकरण कर दिया जाएगा।

सभी कम्प्यूटरीकृत कार्यालयों में ई-मेल की सुविधा उपलब्ध है। पुणे और भोपाल जहाँ साफ्टवेयर उन्नयन का कार्य चल रहा है, को छोड़कर सभी कम्प्यूटरीकृत पासपोर्ट कार्यालयों में टेलीफोन से पूछताछ की सुविधा उपलब्ध है। बंगलौर, चेन्नई, चंडीगढ़, भोपाल और लखनऊ में वेबसाइटें भी शुरू की गयी हैं। एक व्यापक कम्प्यूटरीकृत नेटवर्क और संयोजन तथा साथ ही एक केन्द्रीय कार्रवाई कक्ष बनाये जाने के प्रस्ताव को क्रियान्वित किया जा रहा है।

भारत सरकार का प्रयास रहा है कि पासपोर्ट कार्यालय सरकारी स्वामित्व के भवनों में हों। अभी पांच स्थानों (मुम्बई, कोचीन, कोजीकोड, अहमदाबाद और हैदराबाद) में पासपोर्ट कार्यालय भवन विदेश मंत्रालय के स्वामित्व में, पांच स्थानों पर केन्द्र सरकार/राज्य सरकार के स्वामित्व में और 18 स्थानों पर किराये के भवनों में हैं। पासपोर्ट

कार्यालय अहमदाबाद को इस वर्ष विदेश मंत्रालय के स्वामित्व वाले नये भवन में स्थानांतरित कर दिया गया। विदेश मंत्रालय ने देश के विभिन्न शहरों में भूखण्डों/बनी-बनायी संपत्तियों का अधिग्रहण किया है और छः स्थानों — बंगलौर, कलकत्ता, कोचीन (आवासीय परिसर), पटना (कार्यालय परिसर), पणजी तथा कोजीकोड (आवासीय परिसर) में निर्माण कार्य प्रगति पर है। लखनऊ, जयपुर, तिरुअनन्तपुरम, चंडीगढ़ त्रिचिरापल्ली और जम्मू में पासपोर्ट कार्यालयों के लिए भूखण्ड की खरीद अथवा भवनों के निर्माण का कार्य चल रहा है। चेन्नई में एक कार्यालय परिसर में स्थान की खरीद की गयी है और कुछ महीनों के भीतर इसका कब्जा ले लिया जाएगा। मुम्बई में अतिरिक्त कार्यालय स्थान किराये पर लिया गया है ताकि भीड़-भाड़ कम की जा सके और जनता के लिए सुविधाएँ बढ़ायी जा सकें।

आर्थिक उदारीकरण के समग्र वातावरण और भारतीयों की बढ़ती हुई विदेश यात्रा के कारण इस वर्ष पासपोर्ट प्रदान किये जाने तथा नवीकरण, नाम परिवर्तन, अतिरिक्त पुस्तिकाएं, अवयस्कों के लिए नये पासपोर्ट इत्यादि जैसी विविध सेवाओं के लिए आवेदकों की संख्या काफी रही। कुल 22,43,033 पासपोर्ट जारी किये गये और 2,57,654 विविध सेवाएँ प्रदान की गयीं (31 दिसम्बर, 2000 तक)। वर्ष 2000 के दौरान पासपोर्ट कार्यालयों के राजस्व और व्यय सहित जारी किये गये पासपोर्टों/प्रदान की गयी सेवाओं की प्राप्तियों के व्यापक ब्यौरे अनुबन्ध - I पर दिये गये हैं।

एक नयी उपलब्धि यह है कि अब पूर्ण आवेदन डाक विभाग की 'स्पीड-पोस्ट' नेटवर्क के द्वारा भी प्राप्त किये जाएंगे। राष्ट्रीयकृत बैंकों के जरिए इस नेटवर्क को और व्यापक बनाने का प्रस्ताव है।

पासपोर्ट जारी करने की प्रणाली में प्रबंधन की नयी तकनीकों को लाया जा रहा है। कुछ पासपोर्ट कार्यालयों के प्रबंधन और प्रक्रिया अध्ययन के लिए परामर्शदाता के रूप में प्रबंधन विशेषज्ञों की सेवाएं ली गयी हैं ताकि केन्द्रीय पासपोर्ट संगठन के कार्मिकों के लिए एक आदर्श प्रशिक्षण-सह-अभिप्रेरणा कार्यक्रम लाया जा सके।

पी आई ओ कार्ड

विदेशों में रह रहे छः मिलियन भारतीय नागरिक और भारतीय मूल के लगभग 14 मिलियन व्यक्ति भारत की विदेश नीति को संवर्द्धित करने में उत्तरोत्तर महत्वपूर्ण भूमिका

निभा रहे हैं। भारतीय राष्ट्रियों के हितों को उजागर करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करते हुए सरकार ने मार्च 1999 में सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट देशों में रह रहे भारतीय मूल के व्यक्तियों के लिए पी आई ओ कार्ड योजना की शुरुआत की थी। इससे वीजा मुक्त व्यवस्था लाये जाने के अतिरिक्त कुछ विशेष आर्थिक, शैक्षिक वित्तीय और सांस्कृतिक लाभ भी हुए हैं। उच्च शुल्क सहित अन्य विभिन्न कारणों से अब तक जारी किये गये पी आई ओ कार्डों की संख्या अधिक नहीं रही है। सरकार द्वारा इसकी जांच की जा रही है।

कोंसली सेवाएँ

विदेश स्थित सभी मिशन और केन्द्र वहाँ रह रहे भारतीयों की कोंसली आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील हैं। सभी मिशनों और केन्द्रों को किसी भी दिन और किसी भी समय प्रभावी और तत्काल सहायता उपलब्ध कराने के लिए तैयार रखा गया है। अनिवासी भारतीयों/कामगारों, विशेषकर खाड़ी के देशों में उनके नियोक्ताओं/प्रायोजकों के साथ विवाद सहित उनके समझ आने वाली अन्य समस्याओं का समाधान इन कार्यालयों के श्रम विंगों द्वारा किया जा रहा है। सरकार संयुक्त आयोगों जैसे संस्थागत तंत्रों सहित अन्य व्यवस्थाओं के जरिए खाड़ी देशों की सरकारों के साथ संपर्क बनाये रखती है ताकि इन देशों में कार्यरत भारतीय कामगारों की कोंसली समस्याओं का समाधान किया जा सके और उनकी स्थिति में सुधार लाया जा सके। विदेशों में भारतीयों की मृत्यु हो जाने की स्थिति में शवों को शीघ्र भेजे जाने से संबंधित औपचारिकताएँ पूर्ण करने, स्थानीय और भारतीय प्राधिकारियों के साथ संपर्क करने और मृत व्यक्ति के सगे संबंधियों को सूचना देने के लिए हमारे मिशनों और केन्द्रों द्वारा सहायता की व्यवस्था की जाती रही।

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान विदेशों में 9,243 भारतीयों को गिरफ्तार किया गया और मंत्रालय को विदेशों में 3,143 भारतीयों की मृत्यु की सूचना मिली। वर्ष 2000 के दौरान कोंसली आंकड़ों का सारांश अनुबंध-II पर है।

वीजा

पिछले वर्षों के दौरान हमारे मिशनों और केन्द्रों द्वारा वीजा प्रदान करने की प्रक्रिया

को कारगर बनाया गया है। कई मिशन और केन्द्र काउन्टर पर उसी समय अथवा उसी दिन और अधिकतर मिशन और केन्द्र 48 घंटे के भीतर वीजा प्रदान कर देते हैं।

खाड़ी, पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमरीका के मिशनों और केन्द्रों के कोंसली विंगों के कम्प्यूटरीकरण का कार्य आरंभ किया गया है और यह कार्य एक निजी कंपनी को दिया गया है। सर्वप्रथम उन मिशनों और केन्द्रों के कम्प्यूटरीकरण का कार्य किया जाएगा जो पर्याप्त मात्रा में सेवाएँ प्रदान करते हैं। भारतीय उच्चायोग ढाका और कोलम्बो के कोंसली विंगों के कम्प्यूटरीकरण के लिए एन.आई.सी.अलग से कार्य कर रही है।

1 जनवरी, 2000 से 30 जून 2000 तक विदेश स्थित भारत के 152 मिशनों और केन्द्रों ने 7,34,256 विदेशियों को कोंसली सेवाएँ प्रदान कीं।

सभी श्रेणियों की वीजा के लिए वीजा शुल्क में 1 अक्टूबर, 2000 से 30 प्रतिशत की वृद्धि की गयी है क्योंकि:-

- (i) 1991 के बाद रहन-सहन व्यय में डालरों के हिसाब से 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई है;
- (ii) विदेशों में कोंसली विंगों के व्यय में वृद्धि हुई है; और
- (iii) विदेश मंत्रालय सभी महत्वपूर्ण मिशनों/केन्द्रों के कोंसली विंगों को कम्प्यूटरीकृत करने का एक बड़ा कार्यक्रम चला रहा है।

द्विपक्षीय करार

संगठित अपराध, अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद तथा मादक द्रव्यों के दुर्व्यापार का मुकाबला करने और वित्तीय तथा अन्य अपराधों के बढ़ते हुए अंतर्राष्ट्रीय आयामों की पहचान करते हुए एक संस्थागत संरचना बनाने के उद्देश्य से अनेक देशों के साथ बातचीत की जा रही है ताकि इस अंतर्राष्ट्रीय प्रयास को एक विधिक आधार प्रदान किया जा सके। इन कोंसली करारों में प्रत्यग्रण संधियाँ, आपराधिक मामलों में आपसी विधिक सहायता से संबद्ध करार, नागरिक मामलों में आपसी विधिक सहायता से संबद्ध करार और कोंसली अभिसमय शामिल हैं।

मई 2000 में उजबेकिस्तान के राष्ट्रपति की भारत यात्रा के दौरान दो करार- प्रत्यर्पण

संधि और आपराधिक मामलों में आपसी विधिक सहायता से संबद्ध करार संपन्न किये गये। अप्रैल 2000 में द्यूनीशिया में द्यूनीशिया के साथ एक प्रत्यर्पण संधि संपन्न की गयी। जनवरी, 2001 में मंगोलिया के राष्ट्रपति की भारत यात्रा के दौरान प्रत्यर्पण संधि, आपराधिक मामलों में आपसी विधिक सहायता से संबद्ध करार तथा सिविल और वाणिज्यिक मामलों में आपसी विधिक सहायता से संबद्ध करार संपन्न किये गये। संयुक्त अरब अमीरात और रूस के साथ हुए प्रत्यर्पण संधियों को भारत के राजपत्र में अधिसूचित किया गया और ये क्रमशः 29-5-2000 और 30-5-2000 से प्रवृत्त हो गये हैं। आधिकारिक स्तर पर फिलीपींस और तुर्की के साथ क्रमशः नवम्बर, 2000 और दिसम्बर, 2000 में प्रत्यर्पण संधियों की पहल की गयी। ओमान और पोलैंड के साथ पहल की गयी प्रत्यर्पण संधियों पर हस्ताक्षर किये जाने के लिए इन्हें अंतिम रूप दिया जा रहा है।

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान आपराधिक मामलों में आपसी विधिक सहायता से संबद्ध करारों पर बातचीत करने के लिए सरकारी शिष्टमंडलों ने अमरीका, कजाकस्तान और फिलीपींस का दौरा किया। हांगकांग, ताजिकिस्तान और पोलैंड के साथ ऐसे ही करार किये जाने के लिए चल रही बातचीत में प्रगति हुई है।

रूस के साथ सिविल मामलों में आपसी विधिक सहायता से संबद्ध एक करार की पहल की गयी और कजाकस्तान तथा सिंगापुर के साथ भी इस क्षेत्र में बातचीत शुरू की गयी।

राजनयिक और सरकारी पासपोर्टधारकों के लिए वीजा में छूट से संबंधित उरुग्वे के साथ दिसम्बर, 1999 में किये गये करार का अनुसमर्थन कर दिया गया है और यह 31 अगस्त, 2000 से प्रभावी हो गया है। इसके अतिरिक्त राजनयिक और सरकारी पासपोर्टधारकों के लिए वीजा में छूट से संबंधित करार पर अनेक देशों के साथ चर्चा की गयी जिसमें सेन्जेन देश, तुर्की और मोरक्को शामिल हैं।

मंत्रालय आपराधिक, सिविल और वाणिज्यिक मामलों के अभियोगों के लिए विदेशी सरकारों से प्राप्त प्रत्यर्पण तथा अन्य विधिक सहायता के अनुरोध पर सक्रिय कार्रवाई

करता है। प्रत्यर्पण के ये अनुरोध विभिन्न देशों के साथ संपन्न प्रत्यर्पण संधियों और प्रत्यर्पण व्यवस्थाओं के अन्तर्गत हमारी बाध्यताओं के कारण प्राप्त होते हैं। इस वर्ष चल रहे मामलों के अतिरिक्त प्रत्यर्पण के 20 अनुरोध और विधिक सहायता के 61 अनुरोध प्राप्त हुए हैं।

इस वर्ष सी. पी. वी. प्रभाग में 2, 96,735 दस्तावेजों को साक्ष्यांकित किया गया जिनमें से 1,70,400 वाणिज्यिक दस्तावेज थे। यह सेवा उसी दिन प्रदान की जाती है जो निःशुल्क द्रुत और प्रभावी है।

केन्द्रीय पासपोर्ट संगठन (सी. पी. ओ.)

केन्द्रीय पासपोर्ट संगठन (सी. पी. ओ.) के कार्मिक 28 पासपोर्ट कार्यालयों और 20 वर्तमान पासपोर्ट संग्रहण केन्द्रों को चला रहे हैं। सी. पी. वी. संवर्ग में कार्मिकों की वर्तमान संख्या 1543 है जिसमें 176 अधिकारी और 1, 367 अराजपत्रित कर्मचारी हैं, व्यापक संवर्ग समीक्षा कर्मचारियों की महत्वपूर्ण मांगों में से एक है क्योंकि विभिन्न स्तरों पर गतिहीनता है, संवर्ग समीक्षा एवं पद बनाये जाने का एक प्रस्ताव सरकार के विचाराधीन है। वित्त मंत्रालय के कर्मचारी निरीक्षण एकक ने पासपोर्ट कार्यालयों में कार्यभार का आंकलन करने के लिए एक अध्ययन किया।

आदर्श

कोंसली, पासपोर्ट और वीजा कार्य से ही विदेश मंत्रालय से जनता का संपर्क होता है। जनता तुरन्त और व्यवहार कुशल सेवा की अपेक्षा करती है जिसमें कम से कम विलम्ब हो। मंत्रालय का लक्ष्य संपर्क बिन्दुओं, जहाँ से सेवाएँ प्रदान की जा सकें, के नेटवर्क का विस्तार करना, कार्रवाई करने और आंकड़ों के संग्रहण के लिए बड़े स्तर पर कम्प्यूटरीकरण करना और एक ऐसा संतोषजनक स्तर प्राप्त करना है, जिस पर यह गर्व कर सके।



विदेशों में अप्रवासी भारतीय तथा भारतीय मूल के व्यक्ति

विदेश मंत्रालय में नए एन. आर. आई/पी. आई. ओ प्रभाग की स्थापना

एन. आर. आई/पी. आई. ओ प्रभाग की स्थापना अप्रैल 2000 में की गई। यह प्रभाग विदेशों में रह रहे भारतीय समुदाय की एन. आर. आई/पी. आई. ओ मामलों से संबद्ध एक केन्द्रीय बिन्दु और एकमात्र संपर्क बिन्दु के रूप में कार्य करने के लिए एक पृथक मंत्रालय अथवा विभाग संबंधी एक दीर्घकालिक भाग के प्रत्युत्तर में सृजित किया गया।

इससे पहले 1977 में विदेशों में रह रहे भारतीय मूल के लोगों की समस्याओं का अध्ययन करने के लिए नीति नियोजन प्रभाग के एक भाग के रूप में एक भारतीय विदेश सैल का गठन किया गया था। इस प्रयोग को 1984 में दोहराया गया। तथापि, ओ. आई. सैल को समाप्त कर दिया गया और इसे कौंसली प्रभाग में शामिल कर दिया गया। एन. आई. आर. कमिशनर ने वित्त मंत्रालय और इन्डिया इन्वेस्टमेंट सेन्टर की साथ कार्य किया।

सरकार ने महसूस किया कि एन. आर. आई/पी. आई. ओ के प्रति दृष्टिकोण केवल निवेश पर केन्द्रित नहीं हो सकता। राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, कौंसली और अन्य मामलों सहित अपेक्षाकृत एक अधिक व्यापक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता पड़ी।

सरकार ने अप्रैल, 2000 में विदेश मंत्रालय में एक नए प्रभाग के सृजन संबंधी एक प्रमुख पहल की और वित्त मंत्रालय के कमिशनर कार्यालय (एन. आर. आई) को विदेश मंत्रालय के क्षेत्राधिकार के अंतर्गत स्थानान्तरित करने का फैसला किया (व्यवहार में,

यह व्यवस्था कार्य रूप में परिणत नहीं हो पाई और कमिशनर का कार्यालय विदेश मंत्रालय से स्वतंत्र रूप में कार्य कर रहा है)।

ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि

भारत समुदाय में 100 से अधिक देशों में रह रहे भारतीय मूल/भारतीय नागरिक लगभग 18 मिलियन हैं। भारतीय समुदाय मात्र ऐसा समुदाय है जिसका इतिहास शान्तिपूर्ण देशायटन का है। प्राचीन काल में उन्होंने सांस्कृतिक और सभ्यता मूल विरासत की शक्ति तथा मूल्यों एवं आयुर्वेद की उपचारी शक्तियों पर विजय प्राप्त की।

उन लोगों के वंशज, जो सुदूर विगत में सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संदेशवाहकों के रूप में सुदूर देशों के लिए चले गए थे, दक्षिण-पूर्वी और पूर्वी एशिया में स्थानीय लोगों के साथ मिल गए हैं और उनकी पहचान अब भारतीयों के रूप में नहीं की जा सकती है।

भारतीय प्रवासियों की भिन्न-भिन्न श्रेणियाँ हैं। आधुनिक काल में प्रथम श्रेणी ब्रिटिश शासनकाल में सूरीनाम, गयाना, ट्रिनीडाड एवं टोबेगो, फिजी और मारीशस इत्यादि देशों में भेजे गए करारबद्ध श्रमिकों की थी। दूसरी श्रेणी के उत्तरी अमरीका, कनाडा और यूरोप के कतिपय देशों के लिए गए प्रवासी व्यवसायी हैं, जहाँ उन्होंने स्वयं अपनी सांस्कृतिक विरासत और अपने मूल देशों के साथ संपर्कों को बनाए रखते हुए सामाजिक और आर्थिक संरचना को अपना लिया है।

विदेशों में रह रहे तीसरी श्रेणी के भारतीय मूल के वे लोग हैं जिन्हें विधिक रूप से राज्यविहीन घोषित किया गया है। इनमें वे बच्चे भी शामिल हैं जिनका नाम अभिभावकों के पासपोर्ट में दर्ज था जो बाद में नष्ट अथवा गुमशुदा हो गए थे, और अनेक वे मामले जिनमें अपने भारतीय मूल को प्रमाणित करने संबंधी कोई दस्तावेजी सबूत उपलब्ध नहीं है। यह श्रेणी तेजी से गायब हो रही है।

अन्य श्रेणीकरण अनिश्चितकालीन अवधि के लिए विदेशों में रह रहे भारतीय नागरिकों का हो सकता है (रोजगार, व्यवसाय, सरकारी कार्य या अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों में कार्यरत)। इन्हें विदेशी विनिमय नियमन आदि नियम, 1973 के तहत अप्रवासी भारतीय (एन. आर. आई.) के रूप में जाना जाता है। यह सापेक्षतः एक नवीन श्रेणी है, और बीसवीं सदी का एक परिदृश्य है जोकि प्रारम्भिक रूप से यूरोप में तथा इसके बाद पश्चिमी एशिया में नवीन तेल समृद्ध देशों में द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् अपेक्षाकृत विकास तेज करने के लिए श्रम की मांग संबंधी स्वैच्छिक प्रतिक्रिया के रूप में परिलक्षित हुआ। उत्तरवर्ती वर्षों में यह उन्नत विकसित देशों के लिए तकनीकी और व्यावसायिक रूप से योग्य कार्मिकों का एक प्रस्थान बन गया है। इनमें से अनेक का मेजबान देशों में नागरिकता प्राप्त करने के पश्चात् अप्रवासी भारतीयों दर्जा समाप्त हो गया। दूसरी श्रेणी में 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में अंग्रेजों द्वारा अपने साम्राज्य के विभिन्न भागों में भूमि का विकास करने अथवा महानगरों को समृद्ध करने के लिए ले जाए गए प्रवासी करार बद्ध श्रमिकों के वंशज प्रमुख हैं। ये सभी महाद्वीपों में 100 से अधिक देशों में पाए जाते हैं। भारतीय मूल के व्यक्तियों (पी. आई. ओ.) की सबसे अधिक संख्या फिजी, मलेशिया, वर्मा, श्री लंका, मारीशस, पूर्वी और मध्य अफ्रीका तथा वेस्ट इंडीज में पाई जाती है। भारत के साथ नेपाल की आरक्षित सीमा होने के कारण नेपाल में भारतीय मूल के लोगों की कई मिलियन जनसंख्या है।

इन समुदायों ने धीरे-धीरे कठिन परिश्रम के जरिए सापेक्ष समृद्धि प्राप्त की जिसके फलस्वरूप मूल निवासियों से दुश्मनी हो गई है। चूंकि ये नस्ल/शत्रुता से पीड़ित हैं इसलिए ये अपने आपको संगठित बनाने तथा अपनी भारतीय संस्कृति, धर्म और प्रथाओं को संरक्षित रखने के लिए मजबूर हुए हैं। दक्षिण अफ्रीका में उन्हें अंग्रेजों द्वारा सताया गया और काले अफ्रीकन उन्हें शंका की नजर से देखते हैं। ये सशक्त संगठित रहे और आज दक्षिण अफ्रीका और वहां की सरकार में एक महत्वपूर्ण घटक हैं।

प्रभाग के उद्देश्य

अप्रवासी भारतीय/भारतीय मूल के लोग ऐतिहासिक रूप से भारत के राजनैतिक और आर्थिक विकास पर एक गहरा प्रभाव डालते रहे थे। महात्मा गांधी कई वर्षों तक एक अप्रवासी रहे थे। ये हमारी विदेश नीति के एक महत्वपूर्ण घटक हैं और जिन देशों में पर्याप्त भारतीय समुदाय के लोग रहते हैं उनके साथ भारत के द्विपक्षीय संबंधों पर प्रभाव पड़ता है।

अप्रवासी भारतीयों/भारतीय मूल के लोगों ने अमरीका, यू. के. और कनाडा जैसे कतिपय देशों में राजनैतिक और आर्थिक शक्ति प्राप्त कर ली है जहाँ उन्होंने हमारी राजनीतिक और अन्य हित-चिन्ताओं को मत-निर्माताओं तथा निर्णयकर्ताओं के समक्ष पेश किया है। उनकी भारत की जी. पी. पी. (अनुमानतः 300 बिलियन अमरीकी डालर) के समान एक संयुक्त आय, उच्च स्तर पर तकनीकी कौशल और सूचना प्रौद्योगिकी और जैव-प्रौद्योगिकी जैसी सीमान्त प्रौद्योगिकियों में विशिष्टता है जिनमें उन्होंने सर्वभौमिक मान्यता प्राप्त कर ली है। उनके पास शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग, प्रबंधन और परामर्शी तथा विस्तृत स्वास्थ्य और व्यावसायिक उद्यमशीलता, कौशल जैसी प्रमुख सेवाओं में विशेषता है जिनमें वे भारत के विकास के प्रमुख क्षेत्रों तथा भारत के सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के लिए एक उन्नत और आधुनिक अर्थव्यवस्था और समाज में योगदान कर सकते हैं।

वे राष्ट्रीय संकट जैसे भारत पर आर्थिक प्रतिबन्धों के पश्चात् रिसर्जेंट इण्डिया बांड जिसने अपने लक्ष्य में शतप्रतिशत बढ़ोत्तरी की है, हाल के समान रूप से सफल इण्डिया मिले नियम बांड, राष्ट्रीय आपदा जैसे उड़ीसा का तूफान और हाल का गुजरात भूकम्प, काल में उदारतापूर्वक अंशदान देते हैं।

खाड़ी देशों में विशाल भारतीय श्रम शक्ति मुद्रा का एक प्रमुख स्रोत ही है जो हमारे विदेशी विनिमय भण्डार और हमारी अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण हैं।

भारतीय मूल के प्रधान मंत्री/राष्ट्रपति (मारीशस, गयाना और ट्रिनीडाड तथा टोबागो एवं सिंगापुर) और कई सौ मंत्री और सांसद हैं।

अप्रवासी भारतीयों/भारतीय मूल के लोगों के सामने अपने अंगीकरण के देशों तथा भारत में अनेक समस्याएँ पेश आती हैं। मुख्य रूप से आप्रवासन/उत्प्रवासन क्रिया-विधियों में तंग किए जाने, उनकी यात्रा/प्रवास में अत्याधिक जांच और नियंत्रण, मेजबान देशों

में अपर्याप्त विधिक और संवैधानिक संरक्षण, भारत में उनके बच्चों की शिक्षा से संबंधित समस्याएं, अपनी भारतीय सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने संबंधी सांस्कृतिक सुविधाओं से संबंधित समस्याएं, और मेजबान समाजों के साथ आत्मसात्करण की समस्याएं कई मेजबान देशों में जातीय और अन्य भेदभाव से संबद्ध समस्याएं हैं। उन्होंने आधारभूत सेवाओं और नौकरशाही अड़चनों के कारण भारत में अपने संसाधनों के मुक्त निवेश संबंधी कठिनाईयों का जिक्र किया दोहरी राष्ट्रिकता के न होने की भी बहुत शिकायत है। (सरकार ने इसे अभी तक सुरक्षा के लिहाज से प्रदान नहीं किया है, तथापि इसकी समीक्षा की जा रही है); अप्रवासी भारतीयों/भारतीय मूल के लोगों की शिकायत है कि उन्हें अपनी मातृभूमि की सेवा के लिए जो सम्मान व पुरस्कार मिलते हैं वे अपर्याप्त हैं।

अप्रवासी भारतीय/भारतीय मूल के लोग संकट काल में सुरक्षा और अपनी समस्याओं के लिए भारत से आशा करते हैं।

विदेश मंत्रालय ने जून 2000 को घोषणा की कि सरकार भारतीय समुदाय और मातृभूमि के साथ उनके संबंधों को निरंतर रूप से पर्याप्त महत्व दिया है। विदेशी भारतीय समुदायों की हित-चिन्ताएं, आवश्यकता तथा समस्या तथा भारत के सामाजिक-आर्थिक तथा प्रौद्योगिकी रूपान्तरण के लिए एक उन्नत और आधुनिक अर्थव्यवस्था तथा समाज के लिए उनकी क्षमता प्राथमिकता चिन्ता के मसले हैं। सांस्कृतिक और भावनात्मक संबंधों को प्रोत्साहन तथा उन्हें प्रगाढ़ करना विदेशी भारतीय समुदाय और भारत सरकार का साझा उद्देश्य है। सरकार उन्हें उन देशों के साथ द्विपक्षीय संबंध प्रगाढ़ करने में योगदान देने के लिए भी प्रोत्साहित करेगी जिनमें वे रह रहे हैं।

भारतीय समुदाय से संबद्ध उच्च स्तरीय समिति

सरकार द्वारा की गई एक अन्य प्रमुख पहल भारतीय समुदाय से संबद्ध, प्रधान मंत्री द्वारा अनुमोदित, डॉ. एल. एम. सिंघवी (केबिनेट सतर), सांसद और यू. के. में भूतपूर्व हाई कमिश्नर की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय समिति की स्थापना है। यह समिति विदेशी भारतीय समुदाय से संबद्ध नीतिगत और संगठनात्मक रूपरेखाओं को ध्यान में रखते हुए समस्त मसलों की जांच करेगी। यह देश विशेष के संबंध में कार्यवाई योजनाओं की भी सिफारिश करेगी। इस समिति ने अपना कार्य 1 सितम्बर 2000 को आरम्भ कर दिया और अपनी रिपोर्ट छह माह के भीतर देगी। समिति के विचारणीय विषय निम्न प्रकार से हैं :

- (क) भारतीय मूल के व्यक्तियों और अप्रवासी भारतीयों पर भारत में और उनके निवास के देशों में संविधिक प्रावधानों, कानूनों और नियमों के संदर्भ में उनकी स्थिति की समीक्षा;
- (ख) भारतीय समुदाय की विशेषताओं, आकांक्षाओं, प्रवृत्तियों, आवश्यकताओं, ताकत और कमजोरियों और भारत से उनकी अपेक्षाओं का अध्ययन;
- (ग) भारतीय मूल के लोगों और अप्रवासी भारतीयों की उस भूमिका का अध्ययन जिसे वे भारत के आर्थिक और सामाजिक तथा प्रौद्योगिकीय विकास में निभा सकते हैं;
- (घ) उस मौजूदा व्यवस्था की जांच करना जो भारत में भारतीय मूल के लोगों की यात्रा और आवास और भारत में भारतीय मूल के लोगों के निवेश को नियन्त्रित करती है और इन क्षेत्रों में अप्रवासी भारतीयों को आ रही समस्याओं को दूर करने के उपायों की सिफारिश करना;
- (ङ) क्षेत्र अथवा भारतीय मूल के लोगों और अप्रवासी भारतीयों के साथ परस्पर लाभप्रद संबंध बनाने के लिए विस्तृत परन्तु लोचनीय नीति गत संरचना और देश विशिष्ट योजनाओं की सिफारिश करना और भारत के साथ उनके क्रिया-कलापों को तथा भारत के आर्थिक विकास में उनकी भागीदारी को सरल बनाना।

यह समिति सभी महत्वपूर्ण मसलों पर विशेषज्ञ दलों का गठन कर रही है जिन में शिक्षा, संस्कृति, पर्यटन, कौसली समस्याएं विशेषरूप से विदेश स्थित भारतीय कामगारों से संबद्ध, दोहरी राष्ट्रियता, नागरिकता और राष्ट्रिकता मसले, अप्रवासी भारतीयों और भारतीय मूल के लोगों से संबद्ध संवैधानिक और विधिक प्रावधान, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, व्यापार, निवेश प्रवाह, बैंकिंग इत्यादि शामिल हैं।

समिति की ओर से अप्रवासी भारतीय/भारतीय मूल के लोग प्रभाग ने एक विस्तृत और व्यापक प्रश्नावली तैयार की है जिसे 100 मिशन में परिचालित किया गया है तथा विदेशी भारतीय समुदायों के संबंध में ढेरों आंकड़े और सूचना प्राप्त की गई है। इसके फलस्वरूप विश्व स्तर पर भारतीय समुदायों की एक विस्तृत रूपरेखा का विकास हुआ है।

पहली बार विभिन्न देशों में इन समुदायों की संख्या का संख्यात्मक सरकारी मूल्यांकन किया गया। यह अनुबन्ध-XX पर देखा जा सकता है।

अन्य सूचना में शामिल है; निवास के प्रत्येक व्यक्तिगत देश में इन समुदायों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उनकी संख्या और कमजोरियाँ, सामाजिक, आर्थिक शैक्षिक और सांस्कृतिक रूपरेखा, भारतीय पहचान को बनाए रखने के लिए मौजूदा सांस्कृतिक गतिविधियों की प्रकृति और विस्तार, इन समुदायों का मेजबान देशों और भारत तथा द्विपक्षीय संबंधों के संवर्धन में योगदान, मेजबान समाजों की मुख्यधारा के साथ एकीकरण की सीमा, विदेशी समुदायों के प्रमुख संगठन, महत्वपूर्ण क्षेत्रों में विदेशी समुदायों/विशेषज्ञों के प्रख्यात सदस्यों के रोस्टर, अप्रवासी भारतीयों/भारतीय मूल के लोगों के स्वामित्वाधीन महत्वपूर्ण आर्थिक इकाईयों की सूची और भारत में व्यापार और उद्योग में संभावित योगदान के क्षेत्र; अप्रवासी भारतीय/भारतीय मूल के लोगों के प्रकाशन और मीडिया तथा भारत के हितों के लिए योगदान, भारत के बारे में जागरूकता और सूचना का स्तर; भारत के साथ उनके संपर्क तथा भारत से उम्मीद; उनकी भावी योजनाएं, आवश्यकताएं और शिकायतें; जातिवाद तथा जातीयता के कारण समस्याएं, मेजबान देशों अथवा भारत में शिकायतें, अप्रवासी भारतीयों/भारतीय मूल के लोगों और भारत के बीच शैक्षिक आदान-प्रदानों की प्रकृति तथा भारत अध्ययन कार्यक्रमों से संबद्ध प्रख्यात शिक्षाविदों के रोस्टर, छात्र आदान-प्रदान कार्यक्रम, जिन देशों में भारतीय मूल/अप्रवासी भारतीयों/भारतीय मूल के लोगों के लिए उपलब्ध भारतीय शैक्षिक सुविधाएं; अप्रवासी भारतीयों/भारतीय मूल के लोगों के राजनीतिक संगठन, राजनीतिक नेतृत्व, अंगीकृत देशों में भूमिका; भारत की हित-चिन्ताओं और भारतीय समुदायों के समर्थन में राजनीतिकवादी, वे संगठन जो भारत विरोधी गतिविधियों में सक्रिय रूप से जुटे हैं।

संसदीय कार्य और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री, श्री प्रमोद महाजन ने 19 दिसम्बर, 2000 को भारतीय डायसपोरा से संबद्ध वेबसाइट का उद्घाटन किया था। राज्यमंत्री श्री यू. वी. कृष्णम राजू, डॉ. एल. एम. सिंघवी, सांसद तथा अध्यक्ष, उच्च स्तरीय समिति भी उद्घाटन में उपस्थित थे। यह वेबसाइट भारतीय समुदाय से संबद्ध उच्च स्तरीय समिति द्वारा विचार के लिए विभिन्न पहलुओं पर आम जनता और अप्रवासी भारतीयों/भारतीय मूल के लोगों से टिप्पणी, सुझाव आमंत्रित करने के लिए किया गया है।

डा. एल. एम. सिंघवी, अध्यक्ष भारतीय डायसपोरा से संबद्ध उच्च स्तरीय समिति ने उच्च स्तरीय समिति द्वारा विचार करने के लिए भारतीय समुदाय पर अपने विचार और सुझाव मांगते हुए विभिन्न संसद सदस्यों, राजनैतिक दलों के नेताओं, सिविल सेवकों, राज्यों के मुख्यमंत्रियों को पत्र लिखे हैं।

डॉ. एल. एम. सिंघवी, सांसद और अध्यक्ष, भारतीय डायसपोरा से संबद्ध उच्च स्तरीय समिति ने 12-18 जनवरी, 2001 तक ओमान, यू. ए. ई., कीनिया और दक्षिण अफ्रीका, 5-14 फरवरी, 2001 तक सऊदी अरब, कुवैत, पुर्तगाल, नीदरलैंड और यू. के. का दौरा किया। इस समिति के 31 मार्च, 2001 से पूर्व, कुछ अन्य उन देशों (अमरीका, कनाडा, सूरीनाम, ट्रिनीडाड एवं टोबेगो, गयाना, मारीशस और रियूनियन द्वीप समूह) जहाँ भारतीय समुदाय के लोग अधिक संख्या में रहते हैं, प्रत्यक्ष मूल्यांकन और क्रिया-कलापों के लिए दौरे पर जाने की उम्मीद है।

समिति की रिपोर्ट प्राप्त हो जाने पर, सरकार अप्रवासी भारतीयों/भारतीय मूल के लोगों के संबंध में कार्रवाई का एक ठोस कार्यक्रम तैयार करेगी तथा उसे क्रियान्वित करेगी। इस समिति का अप्रवासी भारतीय/भारतीय मूल के लोग प्रभाग द्वारा सहायता की जा रही है।

अप्रवासी भारतीयों/भारतीय मूल के लोगों से संबद्ध डाटाबैंक

यह प्रभाग बजट आवंटन की प्राप्ति होने पर, अप्रवासी भारतीयों/भारतीय मूल के लोगों पर एक व्यापक डाटाबैंक स्थापित करेगी जिसमें अप्रवासी भारतीयों/भारतीय मूल के लोगों के बीच गतिविधियों के प्रत्येक क्षेत्र में प्रख्यात व्यक्तियों, उद्यमी विशेषज्ञों, अप्रवासी भारतीयों/भारतीय मूल के लोगों द्वारा संचालित शीर्ष कम्पनियों, प्रमुख गैर-सरकारी संगठनों और संस्थाओं, विदेशी भारतीयों के संगठनों, उनके मीडिया, उन्हें प्राप्त विशेष सुविधाओं सहित इत्यादि से संबद्ध सूचना उपलब्ध होगी।

नई दिल्ली में छठा गोपियो अभिसमय

6 जनवरी, 2001 को नई दिल्ली में प्रधान मंत्री द्वारा भारतीय मूल के लोगों के छठे सार्वभौमिक संगठन, अप्रवासी भारतीयों/भारतीय मूल के लोगों के एक गैर-सरकारी मंच का औपचारिक उद्घाटन किया था। उद्घाटन समारोह के पश्चात् गोपियो अभिसमय में भाग लेने वाले सभी लोगों के लिए प्रधान मंत्री ने जलपान कराया। विदेश मंत्री श्री जसवंत सिंह ने भी 7 जनवरी, 2001 को गोपियो अभिसमय के विदाई सत्र को संबोधित किया था।



पिछले आम चुनाव के बाद श्री जसवंत सिंह ने विदेश मंत्री और श्री अजित कुमार पांजा ने विदेश राज्य मंत्री का कार्यभार ग्रहण किया था। श्री यू. वी. कृष्णन राजू ने 1 अक्टूबर, 2000 को विदेश राज्य मंत्री का कार्यभार ग्रहण किया।

अभी विदेशों में भारत सरकार के 157 आवासीय राजनयिक मिशन/केन्द्र तथा अन्य कार्यालय हैं।

मंत्रालय में भारतीय विदेश सेवा (क), भारतीय विदेश सेवा (ख) दुभाषिया और विधि एवं संधि संवर्ग के कर्मचारियों की कुल संख्या 3489 है (परिशिष्ट I)

2000-2001 के दौरान आरक्षण के तहत भरी गयी रिक्तियों सहित मंत्रालय में विभिन्न पदों पर नियुक्तियों को दर्शाने वाली तालिका परिशिष्ट II पर है।

मंत्रालय में भाषा प्रवीणता की सीमा परिशिष्ट III पर विभिन्न विदेशी भाषाओं में प्रवीण अधिकारियों की सूची में देखी जा सकती है।

समीक्षाधीन अवधि के दौरान प्रशासनिक प्रक्रियाओं को और भी कारगर बनाया गया जिनमें अन्य बातों के अतिरिक्त आई. एफ. एस. (पी. एल. सी. ए.) नियमों के अद्यतन, सरल और प्रयोक्ता अनुकूल संस्करण का प्रकाशन और “विदेश मंत्रालय का संगठन और कार्य का बंटवारा, 2000” शीर्षक से एक संकलन शामिल है। मंत्रालय में दो पुरस्कार योजनाएं आरंभ की गयीं; पहला पुरस्कार मंत्रालय के सबसे सुव्यवस्थित अनुभाग के लिए और दूसरा मंत्रालय के कर्मचारियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन और सरकार को बचत कराने के उद्देश्य से मंत्रालय के कर्मचारियों द्वारा दिये गये उत्कृष्ट सुझाव के लिए है।

वेतन आयोग की अनुशंसाओं के फलस्वरूप अधिकारियों और पेंशनभोगियों के वेतन और भत्तों के पुनर्निर्धारण के लिए पेंशन अनुभाग का नवीकरण और कंप्यूटरीकरण किया गया। सभी पेंशन मामलों को एक समय-बद्ध ढाँचे के अंतर्गत निपटाया गया।

स्थापना

विदेश मंत्रालय की संसदीय स्थायी समिति की सिफारिश के अनुरूप विदेश मंत्रालय ने विदेशी सम्पत्ति की खरीद/निर्माण/परिवर्धन के लिए विस्तृत योजना बनाई - जो 1995-96 से आरम्भ होकर 10 वर्षों से अधिक अवधि तक लागू की जाएगी। विदेश स्थित हमारे मिशनों में अपेक्षित परिसरों में सम्पत्तियां बनाने, नवीकरण एवं निर्माण की पूंजीगत लागत के अन्तर्गत क्रमिक व्यय की एक पंचवर्षीय योजना बनाई जो वर्ष 2000-2001 से वर्ष 2004-2005 की अवधि के दौरान क्रियान्वित होगी। विदेश स्थित भारत सरकार की निर्मित सम्पत्तियों की खरीद, उनकी मरम्मत तथा नवीकरण और निर्माण परियोजनाओं के लिए वाणिज्यिक आधार पर अर्जित भूमि खंडों अथवा पारस्परिक प्रबंधों के आधार पर विदेश अथवा भारत स्थित विदेश मंत्रालय के मिशनों/कार्यालयों को विधिवत प्राथमिकता देते हुए जहां परिस्थितियाँ प्रस्तावित परियोजना खरीद को तर्कसंगत ठहराती हों, (जैसे कि उच्च किराया व्यय और अवसरवादी बाजार स्थितियाँ इत्यादि) के लिए प्रत्येक वर्ष लोक निर्माण एवं आवास (मुख्य शीर्ष 4059 तथा 4216) पर पूंजीगत परिव्यय के लिए बजटीय शीर्ष के अन्तर्गत निधि आबंटित की जाती है।

वर्ष 2000-2001 में विदेश मंत्रालय के स्थापना प्रभाग ने भारत स्थित विदेश मंत्रालय और विदेश स्थित राजदूतावासों की इमारतों की नियमित मरम्मत, रख-रखाव, नवीकरण उनकी साज-सज्जा को बढ़ाने एवं आधुनिकीकरण का कार्य आवंटित बजट से किया।

मुख्य शीर्ष 4059 और 4216 अर्थात् लोक निर्माण एवं आवास के लिए पूंजीगत परिव्यय के अन्तर्गत स्थापना प्रभाग को 90 करोड़ रूपए आवंटित किए गए थे। उपरोक्त आवंटन में, निधि को आवंटित करते समय निष्पादन के प्रथम चरण की परियोजनाओं को प्राथमिकता दी गई – प्रमुखतः मारीशस आबू धाबी और बर्लिन में परियोजनाएँ: जबकि मारीशस में इन्दिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र परिसर और आबू धाबी में चांसरी तथा आवासीय परिसर का सिविल कार्य पूरा हो गया था, इन दोनों इमारतों में आन्तरिक सज्जा का कार्य शुरू किया गया है जो इस वित्तीय वर्ष के अन्त तक पूरा होने की आशा है। बर्लिन में चांसरी तथा आवासीय परिसर के निर्माण का कार्य जनवरी, 2001 में पूरा हो गया।

ढाका में, जहाँ वर्ष 1993 में अन्योन्य आदान-प्रदान के अन्तर्गत स्थानीय सरकार से लिए गए 12 बीघा वाले एक भूमिखंड पर चांसरी और आवासीय निर्माण का प्रस्ताव है, इस वर्ष 2.5 बीघा के एक अतिरिक्त भूमि खंड को लेने का कार्य इस वर्ष पूरा हो गया। यह कार्य और साथ ही काठमांडू, दोहा, मास्को, ट्रिनिडाड एवं टोबेगो, ताशकंद तथा वारसा में प्रस्तावित निर्माण परियोजनाएँ और इसी प्रकार प्रारम्भिक प्रक्रिया की विभिन्न अवस्थाओं में गैबरोन और सिंगापुर में नवीकरण/पुनर्निर्माण परियोजनाएँ क्रमशः चल रही हैं। मस्कट और बीर्जिंग में प्रस्तावित निर्माण परियोजनाओं के मामले में प्रारम्भिक रूपरेखा तैयार हो गई है और इस पर काम हो रहा है।

लंदन में हाई कमिश्नर के आवास के नवीकरण का कार्य अन्तिम चरण पर है और उसके फरवरी 2001 तक पूरा होने की उम्मीद है। मास्को स्थित भारत के राजदूतावास के परिवर्द्धन का कार्य मार्च 2001 तक समाप्त होने की आशा है। एक बार इनका कार्य पूरा होने के पश्चात, भारत सरकार की ये दोनों परिसम्पत्तियाँ न केवल प्रभावशाली कार्यात्मक ढंग से कार्य करेगी, अपितु विदेश स्थित भारत सरकार की अत्यन्त गौरवशाली सम्पत्तियों की सूची में भी शामिल हो जाएंगी।

भारत में निर्माण परियोजनाओं के मामले में प्रगति हासिल हुई है। विदेश सेवा

संस्थान की बढ़ती हुई महत्ता और इसकी कार्य-पद्धति के कारण परियोजना कार्यान्वयन की समय लेने वाली प्रारम्भिक अवस्थाओं में पर्याप्त प्रगति हुई – विशेषरूप से विस्तार योजनाओं पर – और अब परियोजना निर्माण कार्य पूरा होने के निकट है। केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, जिसे यह कार्य सौंपा गया था, उम्मीद है दिसम्बर के अन्त तक इस कार्य को ठेकेदार को सौंप देगा और दिसम्बर, 2002 तक यह योजना पूरी कर देगा।

विदेश मंत्रालय की अत्यधिक उच्च स्तर की आंकी गई परियोजना, विदेश भवन परियोजना के लिए इमारत के वास्तुकार के चयन के लिए डिजाइन प्रतियोगिता की गई। विदेश भवन के डिजाइन के लिए वास्तुकार की नियुक्ति फरवरी, 2001 तक हो जाएगी। प्रस्तावित चाणक्य पुरी आवास काम्पलेक्स अनुमानित लागत (वित्तीय मंजूरी लेने के लिए अपेक्षित) तैयार करने की अवस्था तक पहुंच गया है और पप्पनकला में निर्माण परियोजनाओं के मामले में (विदेश मंत्रालय के कर्मचारियों के लिए आवासीय क्वार्टरों) टाइप IV तथा V आवासीय क्वार्टरों का निर्माण कार्य पूरा होने को है।

नई दिल्ली स्थित अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के एकमात्र एफ्रो-एशियन लीगल कन्सल्टेटिव कमेटी मुख्यालय (ए.ए. एल. सी. सी.) के प्रस्तावित निर्माण को निष्पादित करने के साथ-साथ प्राथमिकता दी गई। अपेक्षित वित्तीय मंजूरी ले ली गई है और विधि एवं संधि प्रभाग के सहयोग से मुख्यालय इमारत के प्रस्तावित निर्माण कार्य के पर्यवेक्षण के लिए अनुदान 'ए. एल. सी. सी.' को दे दिया गया। कोलकत्ता में भा.सां.सं.प. की इमारत के खम्भे खड़े कर दिए गए हैं, इसी प्रकार कोलकाता में विदेश भवन तथा कई पासपोर्ट कार्यालयों के क्रियान्वयन कार्य प्रारम्भिक अवस्था में हैं और आगामी वित्तीय वर्ष में इसके गति पकड़ने की उम्मीद है क्योंकि निर्माण चालू हो गए हैं/प्रगति पर हैं।

पासपोर्ट कार्यालय, कोचीन और कोझीकोड में स्टाफ क्वार्टरों के निर्माण का कार्य पूरा होने वाला है। अहमदाबाद में पासपोर्ट कार्यालय की इमारत का निर्माण कार्य भी पूरा हो गया है। पणजी में पासपोर्ट कार्यालय, गोवा के लिए पणजी में कार्यालय तथा आवासीय काम्पलेक्स का निर्माण कार्य पूरा होने के अन्तिम चरण में है और पटना में पासपोर्ट कार्यालय के लिए मौर्या लोक काम्पलेक्स में खरीदे गए अर्धनिर्मित ढाँचे में पचपन लाख रूपए की लागत से आन्तरिक सज्जा का कार्य पूरा हो गया है। इसके अतिरिक्त, भुवनेश्वर, बंगलौर चंडीगढ़, चेन्नई, लखनऊ के पासपोर्ट कार्यालयों का योजना कार्य चल रहा है।

विदेशी भत्तों के सूचकांक की तृतीय वार्षिक समीक्षा की गई तथा विदेशी भत्तों को युक्तिसंगत करने की प्रक्रिया को और अधिक सुदृढ़ करने के लिए कदम उठाए गए।

विदेश मंत्रालय की संबंधित समिति द्वारा चयन करने के पश्चात विदेश स्थित मिशनों को कलात्मक वस्तुएं भेजने के बारे में, यह सुनिश्चित किया गया कि हमारे मिशनों में नुमाईश के लिए उच्च स्तर की हस्तकला की वस्तुएं भेजी गईं। विदेश मंत्रालय तथा विदेश स्थित मिशनों में नुमाईश के लिए श्रेष्ठ बुनकरों द्वारा बुने हुए कीमती वस्त्रों का संग्रह कपड़ा मंत्रालय से मंगवाया गया।

अपर सचिव (प्रशासन) की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय 'आई टी' टास्क फोर्स सरकार के ई गवर्नेंस के न्यूनतम कार्यक्रम के कार्यान्वयन को मॉनीटर करने के लिए गठित किया। 'आई टी' टास्क फोर्स ने इन्फार्मेशन टेक्नोलॉजी (आई टी) का प्रयोग करके उसके द्वारा प्रशासनिक क्षमता सुधारने के उपायों का पुनरीक्षण किया और सुझाव दिए। मंत्रालय में उच्च सुविधाएँ प्रदान करने और उनके आधुनिकीकरण के लिए कई प्रभागों में कम्प्यूटर हार्डवेयर को अपग्रेड किया गया। मंत्रालय के अधिकतम प्रभागों में अनुभाग स्तर पर कम्प्यूटर तथा ई-मेल सुविधा, प्रदान की गई। इन्टरनेट/ई-मेल सुविधा में स्पीड तथा विश्वसनीयता में सुधार को ध्यान में रखते हुए, मंत्रालय के कम्प्यूटरों को

अपग्रेड किया गया और क्रमश एन. आई. सी., साउथ ब्लॉक, अकबर भवन और पटियाला हाउस में पट्टे पर ली गई लाईनें लगाई गईं। अधिकतम कार्यकुशलता प्राप्त करने और कागजी कार्य को घटाने के लिए सुसंगत साफ्टवेयर के विकास को प्राथमिकता दी गई और इसमें प्रगति हुई।

आई. पी. ए. प्रभाग में स्थानीय क्षेत्र नेटवर्क आरम्भ किया गया और सी. पी. वी. प्रभाग के सभी क्षेत्रों के कार्यों के कम्प्यूटरीकरण में पर्याप्त प्रगति हुई है।

मंत्रालय की इमारतों के रख-रखाव, नवीकरण, उनकी साज-सज्जा संबंधी कई कार्य किए गए हैं तथा विदेश मंत्रालय के स्वामित्व की विभिन्न इमारतों को रख-रखाव समिति द्वारा मॉनीटर करके कार्यालय के परिवेश में पूर्ण सुधार का सुनिश्चित किया गया है।

इस वर्ष के दौरान कार्यालय उपस्करों की खरीद एवं वितरण को मॉनीटर करने की प्रक्रिया का पुनरीक्षण किया गया और कार्यालय तथा उपस्कर प्रबंधन प्रणाली को सुचारू करने के उद्देश्य से एक सॉफ्टवेयर बनाया और लगाया गया।



विदेश सेवा संस्थान

वर्ष 2000 में विदेश सेवा संस्थान की निम्नलिखित गतिविधियाँ थीं-

- 1) भारतीय विदेश सेवा परीक्षाधीन अधिकारियों (1999 बैच) हेतु राजनय तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का व्यावसायी पाठ्यक्रम
- 2) आवासी विदेशी राजनयिकों के लिए जानकारी कार्यक्रम
- 3) विदेश मंत्रालय से इतर अधिकारियों के लिए उन्मुखीकरण कार्यक्रम
- 4) विदेशी राजनयिकों के लिए व्यावसायिक कार्यक्रम

भारतीय विदेश सेवा के परीक्षाधीन अधिकारियों के लिए राजनय तथा अन्तर्राष्ट्रीय संबंध संबंधी व्यावसायिक पाठ्यक्रम, जो कि विदेश सेवा संस्थान का महत्वपूर्ण कार्य था, जनवरी 2000 से दिसम्बर 2000 तक 1999 बैच के भारतीय विदेश सेवा परीक्षाधीन अधिकारियों के लिए आयोजित किया गया। 2000 के बैच के परीक्षाधीन अधिकारियों का प्रशिक्षण लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी के फाउन्डेशन पाठ्यक्रम के पूरा होने के बाद जनवरी 2001 में शुरू हुआ।

इस पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य युवा भारतीय विदेश सेवा अधिकारी प्रशिक्षणों को राजनय, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, राजनीतिक रिपोर्टिंग तथा प्रोटोकाल तथा बहुत से अन्य ऐसे संबंधित क्षेत्रों, जिनका राष्ट्रीय सुरक्षा, बदलते हुए सार्वभौमिक परिदृश्य में प्रबंधन चुनौतियों तथा निवेश संवर्धन में महत्व बढ़ रहा है, जैसे परम्परागत क्षेत्रों में प्रशिक्षण दिलाना है।

1999 बैच के भारतीय विदेश सेवा के परीक्षाधीन अधिकारियों के प्रशिक्षण

पाठ्यक्रम में 26 माड्यूल थे जो विदेश नीति तथा राजनय संबंधी कार्यक्षेत्रों से थे। भारतीय विदेश नीति संबंधी अत्यन्त व्यापक माड्यूल में हमारे विदेश संबंधों के लगभग सभी पहलुओं को शामिल किया गया है।

हाल के वर्षों में आर्थिक राजनयता पर डाले गए विशेष बल को ध्यान में रखते हुए 'अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंध' तथा 'वाणिज्यिक राजनय' संबंधी माड्यूल को सघन बनाया गया। इसमें भारत में आर्थिक सुधार, विदेशों में अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक मिशन, निवेश संवर्धन, वाणिज्यिक वार्ताओं, बदलते सार्वभौमिक परिदृश्य में प्रबंधन चुनौतियों तथा अन्तर्राष्ट्रीय वित्त तथा पूंजी बाजारों में वाणिज्यिक कौंसलों की भूमिका पर जोर दिया गया। भारतीय उद्योग परिसंघ के सहयोग से व्यापक कार्यक्रम तैयार किया गया तथा भारतीय उद्योग परिसंघ के वक्ताओं ने उपर्युक्त मामलों पर परीक्षाधीन अधिकारियों को संक्षिप्त जानकारी दी। यह भारतीय उद्योग मण्डल की सक्रिय भागीदारी का दूसरा वर्ष था।

'अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के नए क्षेत्र' नामक माड्यूल में पर्यावरण, ऊर्जा, शरणार्थी, नशीली दवाएँ, आतंकवाद तथा मानवाधिकार जैसे गैर परम्परागत राजनयिक क्षेत्रों को रेखांकित किया गया।

रक्षा तथा सुरक्षा संबंधी माड्यूल में नाभिकीय अप्रसार, निरस्त्रीकरण, तथा शस्त्र नियंत्रण के अतिरिक्त भारत की रक्षा नीति, हमारी सशस्त्र सेनाओं की स्थिति, रक्षा प्रौद्योगिकी का विकास तथा हमारे सीमा क्षेत्र की सुरक्षा जैसे मसले भी शामिल किए गए हैं।

“विशिष्ट राजनयिक कौशल संबंधी अतिरिक्त माड्यूल में वार्ता कौशल, संचार कौशल, सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग, नेतृत्व कौशल का विकास तथा “एस्पिरिट डि कारर्स” पर जोर दिया गया। वार्ता कौशल के कृत्रिम सत्र आयोजित किए गए।

इन माड्यूलों के अलावा पूर्वोत्तर तथा जम्मू और कश्मीर जैसे देश के संवेदनशील क्षेत्रों की भू स्थिति की जानकारी देने के लिए परिवीक्षाधीन अधिकारियों की फील्ड यात्राओं पर बहुत जोर दिया। परिवीक्षाधीन अधिकारियों को प्रशिक्षण के लिए सशस्त्र सेनाओं के विभिन्न संबंधों के साथ भी लगाया गया।

पड़ोसी देशों की यात्रा के कार्यक्रम जारी रखते हुए भारतीय विदेश सेना के परिवीक्षाधीन अधिकारियों ने म्यामां तथा भूटान की करीब एक एक सप्ताह की यात्रा की।

संस्थान ने विदेश स्थित हमारे मिशनों में तैनाती पर जाने वाले भारत सरकार के अन्य मंत्रालयों के अधिकारियों के लिए भी संक्षिप्त अभिस्थापन कार्यक्रम आयोजित किए।

आवासी विदेशी राजनयिकों के लिए 27 नवम्बर से 1 दिसम्बर 2000 तक “भारत का परिचय” शीर्षक से 11वां परिचय कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम भारत में नए-नए आए राजनयिकों को भारत के बारे में प्राथमिक जानकारी देने के लिए तैयार किया गया था और इसमें भारत का संविधान, विदेश मंत्रालय और भारत सरकार का संगठन, भारत की आर्थिक नीति; भारत की ऐतिहासिक विरासत, भारतीय कला, संगीत तथा संस्कृति इत्यादि जैसे विषय शामिल किए गए थे। 23 आवासी राजनयिकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

2000-2001 की अवधि में विदेश सेवा संस्थान ने 5 जनवरी 2000 को क्रोएशिया गणराज्य के विदेश मंत्रालय की राजनयिक अकादमी के साथ सहयोग करने के लिए करार किया। क्रोएशिया गणराज्य के असाधारण राजदूत तथा पूर्णाधिकारी महामान्य डा. जोरान एन्ड्रिक ने क्रोएशिया की ओर से जबकि विदेश सेवा संस्थान के डीन श्री दिलीप मेहता ने भारत की ओर से इस करार पर हस्ताक्षर किए। विदेश सेवा संस्थान ने सहयोग के लिए दो समझौता ज्ञापन सम्पन्न किए - प्रथम 10 अगस्त 2000 को चिली के एकेडमिया डिप्लोमेटिका एन्डी बैलो के साथ जिस पर चिली सरकार के विदेश संबंध मंत्रालय के कार्यकारी सब सैक्रेटरी श्री मारियो हरनान अर्लाजा राक्सैल ने चिली की ओर

से तथा भारत के विदेश मंत्रालय में सचिव श्री रंजीत सिंह काल्हा ने भारत की ओर से हस्ताक्षर किए तथा दूसरा समझौता ज्ञापन गुयाना ‘कापरेटिव गणराज्य के विदेश मंत्रालय के साथ किया, इस समझौता ज्ञापन पर गुयाना कापरेटिव गणराज्य के विदेश मंत्री श्री क्लीमेंट जेम्स रोही ने अपने देश की ओर से तथा भारत गणराज्य के विदेश मंत्री श्री जसवंत सिंह ने भारत की ओर से हस्ताक्षर किए।

विदेशी राजनयिकों के लिए व्यावसायिक पाठ्यक्रम विदेश सेवा संस्थान द्वारा आयोजित प्रतिष्ठित पाठ्यक्रमों में से एक है। अब तक विदेशी राजनयिकों के लिए 25 व्यावसायिक पाठ्यक्रम आयोजित किए गए तथा 110 देशों (मध्य यूरोप, अफ्रीका, मध्य एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया, दक्षिण तथा पश्चिम एशिया तथा दक्षिण एवं मध्य अमरीका से) के 552 राजनयिकों ने इसमें भाग लिया। विदेशी राजनयिकों के लिए 25वां व्यावसायिक पाठ्यक्रम 28 सितम्बर से 9 नवम्बर 2000 तक आयोजित किया गया जिसमें 22 विदेशी राजनयिकों ने भाग लिया। विदेशी राजनयिकों के लिए 26वां व्यावसायिक पाठ्यक्रम 4 जनवरी 2001 से शुरू होकर 15 फरवरी 2001 तक खत्म होगा। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य इन कार्यों की मुख्य श्रेणियों में व्यावसायिक उन्मुखीकरण प्रदान करना है जिन्हें राजनयिक अपने व्यवसायिक कार्यकाल में करते हैं। इसमें राजनय, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, अंतर्राष्ट्रीय विधि तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठन, सुरक्षा, विशिष्ट क्षेत्रों, राजनयिक प्रथा तथा प्रोटोकाल, प्रतिनिधिक तथा मीडिया कौशल पर जोर देने संबंधी मूल क्षेत्रों को शामिल किया गया है। राजनयिकों को भारतीय राजतंत्र, भारत की विदेश तथा सुरक्षा नीतियों और भारतीय अर्थव्यवस्था, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, संस्कृति का भी समुचित ज्ञान कराया जाता है। पाठ्यक्रम के दौरान विदेशी राजनयिक व्यावसायिक पाठ्यक्रम के भागीदारों को आर्थिक, औद्योगिक, सांस्कृतिक महत्व के केन्द्रों पर ले जाया जाता है ताकि वे देश की विविधता से परिचित हो सकें और देश की उपलब्धियों, क्षमताओं तथा राष्ट्रीय विकास के विभिन्न क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त कर सकें।

विदेश सेवा संस्थान में आधुनिक, पूर्णतया सुसज्जित कम्प्यूटर प्रयोग शाला है जिसमें इन्टरनेट पहुँच के लिए लान नेटवर्क द्वारा 23 पेंटियम 2 पीसी आपस में जुड़े हैं। विदेश सेवा संस्थान निम्नलिखित पाठ्यक्रम चलाता है :-

- 1) कम्प्यूटर प्रशिक्षण का बेसिक प्रारम्भिक पाठ्यक्रम

2) एम एस -वर्ड में उच्च स्तरीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

3) विन्डो रिलीज-II हेतु अक्षर हिन्दी वर्ड साफ्टवेयर का प्रशिक्षण

इसके अतिरिक्त विदेश सेवा संस्थान वर्ड प्रोसेसिंग तथा इन्टरनेट का शीघ्र ही इन्टरमीडियट पाठ्यक्रम शुरू करेगा। यह सभी स्तर/उम्र के अधिकारियों को कम्प्यूटर के प्रयोग में आने वाली हिचक को दूर करने तथा वर्ड प्रोसेसिंग इन्टरनेट खोजने तथा ई मेल पर कार्य करने में रुचि विकसित करने के उद्देश्य से शुरू किया जाएगा। एक्सेल तथा एम एस एक्सेस के अन्य स्तरीय पाठ्यक्रम भी शीघ्र शुरू किए जाएंगे।

विदेश स्थित मिशनों में तैनाती पर जाने से पूर्व विदेश मंत्रालय के अनुभाग अधिकारी स्तर के कार्मिकों के लिए बेसिक व्यावसायिक पाठ्यक्रम एक अनिवार्य पुनश्चर्या पाठ्यक्रम है। इस पाठ्यक्रम में प्रशासनिक नियमों तथा प्रक्रियाओं, भारतीय मिशनों के

वित्त तथा लेखे कार्य, वीसा तथा कॉंसली कार्य से परिचय कराने के अलावा विदेशी राजनयिक परिवेश में एक टीम के रूप में प्रभावी कार्य करने के लिए अधिकारियों को तैयार करने पर जोर दिया जाता है। विदेश स्थित हमारे मिशनों में कार्यकाल के समय प्रत्येक भागीदार के प्रत्याशित कार्य प्रोफाइल के साथ निकट संबंध बनाने का प्रयास किया जाता है। संस्थान द्वारा नए माड्यूलों तथा संदर्भ सामग्री उपलब्ध कराकर इस पाठ्यक्रम का इस समय व्यापक संशोधन किया जा रहा है। पाठ्यक्रम के नए प्रोफोर्मा में संस्कृति, वाणिज्यिक सूचना तथा मिशनों में शिक्षण कार्य के माड्यूल शामिल किए जाएंगे। संस्थान इस तथ्य से भिन्न है कि हमारे मिशन हमारे देश की प्रथम झलक प्रदान करते हैं और इसलिए इसने मिशन के सदस्यों में उच्च स्तरीय नम्यता, सकारात्मक एवं सहृदयी व्यवहार बनाने के प्रयत्न किए हैं।



राजभाषा नीति का कार्यान्वयन और विदेशों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार

विदेश मंत्रालय अपने कार्यालयों और विदेश स्थित मिशन/केन्द्रों में हिन्दी को बढ़ावा देने और इसके प्रचार-प्रसार का प्रयास कर रहा है। भारत सरकार की राजभाषा नीति के क्रियान्वयन करने के अतिरिक्त यह विदेशों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। द्विपक्षीय संधियों, करारों, समझौता ज्ञापनों, प्रत्यय पत्रों, राष्ट्रपति के अभिभाषणों, पी ए सी पैरा, मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट और संसद में प्रस्तुत किए जाने वाले प्रश्नों को द्विभाषी रूप में जारी किया जाता है।

हिन्दी को राजभाषा घोषित किये जाने की स्वर्ण जयंती वर्ष में नियमित कार्यक्रमों के अतिरिक्त मंत्रालय ने मिशनों में विशेष कार्यक्रम आयोजित किये। इन कार्यक्रमों को आयोजित करने के लिए मिशनों को विशेष वित्तीय सहायता प्रदान की गयी।

मंत्रालय, क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालयों और विदेश स्थित मिशन/केन्द्रों में हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। हिन्दी टिप्पण-प्रारूपण, हिन्दी निबंध, हिन्दी आशुलिपि तथा हिन्दी टंकण जैसे अनेक सांस्कृतिक और प्रतियोगी कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें बड़ी संख्या में कर्मचारियों ने भाग लिया। हिन्दी पखवाड़े के दौरान माननीय गृह मंत्री का संदेश भी पढ़ा गया। मंत्रालय द्वारा शीघ्र ही आयोजित किये जाने वाले एक समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को उपयुक्त पुरस्कार दिये जाएंगे।

मंत्रालय के पास विदेशों में हिन्दी के प्रचार के लिए एक सुनिर्धारित योजना है। जिन देशों में भारतीय मूल के लोगों की उल्लेखनीय संख्या है वहाँ क्लास चलाने के लिए मंत्रालय हिन्दी शिक्षकों को प्रतिनियुक्ति पर भेजा जाता है। विभिन्न विदेशी विश्वविद्यालयों में हिन्दी प्रध्यापकों को भी प्रतिनियुक्ति पर भेजा जाता है। विदेश स्थित भारतीय मिशन

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा चलाये जा रहे पत्राचार कार्यक्रमों के जरिए हिन्दी शिक्षण को बढ़ावा देते हैं और इसमें सहायता प्रदान करते हैं। 2000-2001 में केन्द्रीय हिंदी संस्थान में हिंदी सीखने के लिए विभिन्न देशों के छात्रों के लिए 50 स्थान आबंटित किये गये हैं। दूतावास के और अन्य अधिकारियों के बच्चों को हिंदी सिखाने की एक विशेष योजना के अन्तर्गत विदेश स्थित मिशनों में 7 हिंदी शिक्षकों की नियुक्ति की गयी।

भारतीय संस्कृत, कला, साहित्य, भाषा इतिहास और दर्शन जैसे विभिन्न विषयों पर 15 लाख रूपए का मानक हिन्दी साहित्य भारतीय मिशनों को उनकी पुस्तकालयों के लिए तथा हिन्दी के प्रचार में लगी स्वैच्छिक संस्थाओं को दान के लिए भेजा गया। पाठ्य पुस्तक, शब्दकोश, श्रव्य-दृश्य कैसेट, कम्प्यूटर साफ्टवेयर, सी डी रोम इत्यादि सहित अन्य शिक्षण सामग्रियाँ भी भेजी जा रही हैं। स्वयं मिशन भी स्थानीय संगठनों और भारतीय समुदाय के साथ घनिष्ठ संपर्क बनाये रखते हैं और हिन्दी भाषा से जुड़ी उनकी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। हमारे कुछ मिशनों ने अपने प्रत्यायन के देशों में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए हिन्दी सम्मेलनों, सांस्कृतिक गतिविधियों, हिन्दी निबंध प्रतियोगिताओं इत्यादि का आयोजन किया। विदेशों में हिन्दी शिक्षण तथा हिन्दी और भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने में लगे संगठनों को उदार वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

हिन्दी विदेश सेवा संस्थान प्रशिक्षण कार्यक्रम का एक अभिन्न अंग है। प्रशिक्षुओं को सरकार की राजभाषा नीति और इसके क्रियान्वयन के बारे में गहन प्रशिक्षण दिया जाता है। विदेश सेवा संस्थान में प्रशिक्षण समाप्त करने से पूर्व भारतीय विदेश सेवा के सभी परीक्षार्थियों को हिन्दी की एक परीक्षा पास करनी होती है। अधिकारियों को अपना

अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित किया जाता है। ई टी एण्ड टि के साथ मिलकर विदेश सेवा संस्थान ने हिन्दी साफ्टवेयर के प्रयोग से संबंधित दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। विदेश स्थित 67 मिशन को 'लीप-ऑफिस' हिन्दी साफ्टवेयर उपलब्ध कराया गया है।

मंत्रालय ने अपना हिन्दी वेबसाइट भी आरंभ किया है जिसमें मंत्रालय की महत्वपूर्ण गतिविधियों के बारे में हिन्दी में जानकारी उपलब्ध करायी गयी है। इस वेबसाइट पर मंत्रालय की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी को अद्यतन बनाये जाने का प्रयास किया जाता है।

1999 में आयोजित छठे विश्व हिंदी सम्मेलन से पहले भारत सरकार और मारीशस सरकार के बीच मारीशस में विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना किये जाने से संबंधित एक समझौता ज्ञापन संपन्न किया गया था। जल्द से जल्द सचिवालय की स्थापना किये जाने के लिए दोनों सरकारों ने बातचीत की।

संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप-समिति ने मंत्रालय और क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बंगलोर का दौरा किया। मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति, जो हिन्दी की प्रगति को मॉनिटर करती है और आवश्यक दिशानिर्देश देती है, का गठन विदेश मंत्री की अध्यक्षता में किया गया है। समिति की बैठक शीघ्र होगी।

मंत्रालय संयुक्त राष्ट्र महाधिवेशनों के दौरान भारतीय शिष्टमंडल के नेता और उन सदस्यों को अनुवाद की सुविधा कराता है जो संयुक्त राष्ट्र महाधिवेशन को हिन्दी में संबोधित करना चाहते हैं। हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा बनाने के उद्देश्य से मंत्रालय ने इस मामले को उन देशों के साथ उठाने के लिए कहा है जहाँ बड़ी संख्या में हिन्दी भाषी लोग रहते हैं, ताकि इस प्रस्ताव पर उनकी प्रतिक्रिया का आकलन किया जा सके।



भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् (जिसे इसके बाद इसमें 'परिषद्' अथवा 'भा. सां. सं. प.' कहा गया है) की औपचारिक स्थापना 1950 में हुई जिसका उद्देश्य भारत और अन्य देशों के बीच सांस्कृतिक संबंधों और आपसी समझ-बूझ को स्थापित करना, पुनर्जीवित करना तथा उसे मजबूत करना है। इसके प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं।

- (i) भारत सरकार की ओर से अन्तर्राष्ट्रीय छात्रों के लिए छात्रवृत्ति योजनाओं का प्रशासन;
- (ii) प्रदर्शनियों का आदान-प्रदान;
- (iii) सेमिनारों तथा संगोष्ठियों का आयोजन तथा उनमें भाग लेना;
- (iv) मंचीय कलाओं और उनकी मंडलियों का आदान-प्रदान;
- (v) विदेशों में भारतीय अध्ययन के लिए पीठों एवं प्रोफेसरशिप स्थापित करना और उसे कायम रखना;
- (vi) पुस्तकों तथा वाद्ययंत्रों को उपहार स्वरूप प्रदान करना;
- (vii) विदेश मंत्रालय की ओर से मौलाना आजाद स्मारक भाषणमाला तथा मौलाना आजाद निबंध प्रतियोगिता एवं अन्य कार्यक्रमों का वार्षिक आयोजन;
- (viii) जवाहर लाल नेहरू अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना पुरस्कार के लिए सचिवालय की व्यवस्था;
- (ix) प्रकाशन;

- (x) विदेशों में भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र कायम करना तथा विशेष द्विपक्षीय कार्यक्रमों को प्रोत्साहन देना।

अन्तर्राष्ट्रीय छात्रों को छात्रवृत्तियाँ और उनका हित-चिन्तन

परिषद् अपनी विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत प्रतिवर्ष लगभग 2000 छात्रवृत्तियाँ देती है। 80 से अधिक देशों के अन्तर्राष्ट्रीय छात्र भारत में विभिन्न विश्वविद्यालयों और शैक्षिक संस्थानों में पढ़ते हैं और विभिन्न विषयों में स्नातकोत्तर अध्ययन से डाक्टरेट डिग्री तक के विविध पाठ्यक्रम पढ़ते हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत, नृत्य, पेंटिंग्स आदि जैसी भारतीय कलाओं के अध्ययन के लिए छात्रवृत्तियाँ भी दी जाती हैं। अप्रैल से नवम्बर, 2000 के दौरान 70 देशों के छात्रों को कुल 1015 नई छात्रवृत्तियाँ दी गईं।

सभी अन्तर्राष्ट्रीय छात्रों, छात्रवृत्ति पाने वालों और स्व-वित्त पोषित छात्रों के सामान्य कल्याण का कार्य भी भा. सां. सं. प. उत्तरदायित्वों का अंग है। परिषद् अन्तर्राष्ट्रीय छात्रों को भारत की राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति से अवगत कराने के लिए वर्ष भर विभिन्न प्रकार के कल्याण क्रियाकलापों का आयोजन करती रहती है। इस वर्ष के क्रिया-कलापों में अन्तर्राष्ट्रीय छात्र सलाहकारों की परस्पर मुलाकात और नई दिल्ली में सातवें अन्तर्राष्ट्रीय छात्र महोत्सव का आयोजन तथा भा. सां. सं. परि. के संस्थापक, मौलाना अबुल कलाम आजाद की वर्षगांठ के अवसर पर भा. सां. सं. प. के आठवें क्षेत्रीय कार्यालयों का सम्मेलन शामिल है। परिषद् ने ग्रीष्म और शीतकालीन शिविर भी लगाए जिनमें विदेशी छात्रों को भारत के विभिन्न भागों में ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के स्थानों की यात्रा करने का अवसर दिया जाता है। 'संस्कृति के

माध्यम से मित्रता' सार के साथ नई दिल्ली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय छात्र महोत्सव का उद्घाटन विदेश राज्य मंत्री श्री अजित कुमार पांजा ने 16 नवम्बर, 2000 को किया था।

परिषद् विदेशी छात्रों के लिए “एट होम इन इण्डिया” नामक एक समाचार पत्रिका का प्रकाशन करती है जो विदेशी विद्वानों के लिए भारत में अपने प्रवास के दौरान रुचिकर लगे अनेक विषयों पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करती है।

विदेशों में भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र

विदेशों में भारत की संयुक्त सांस्कृतिक विरासत के प्रति और अधिक जागरूकता और सम्मान बढ़ाने के उद्देश्य से परिषद् ने काहिरा (मिस्र) बर्लिन (जर्मनी), पोर्ट-लुई (मारीशस), पारामारिबो (सूरी नाम) जार्ज टाउन (गयाना), जकार्ता (इण्डोनेशिया), मास्को (रूस), लन्दन (यू. के.), अल्माती (कजाकस्तान), ताशकन्द (उजबेकिस्तान), डर्बन (दक्षिण अफ्रीका), पोर्ट ऑफ स्पेन (त्रिनिडाड और टोबेगो), जोहन्सबर्ग (दक्षिण अफ्रीका) और कोलम्बो (श्री लंका) में सांस्कृतिक केन्द्रों की स्थापना की है। ये सभी सांस्कृतिक केन्द्र विदेश स्थित अपने भारतीय मिशनों के प्रशासनिक नियन्त्रण में कार्य करते हैं।

सांस्कृतिक केन्द्रों के क्रिया-कलाप स्थानीय जनता की आवश्यकताओं के अनुरूप होते हैं। मारीशस, गयाना, सूरीनाम, ट्रिनिडाड और टोबेगो जैसे देशों जहाँ पर्याप्त संख्या में भारतीय मूल के लोग रहते हैं, भारतीय संगीत, नृत्य तथा योग की कक्षाओं जैसे क्रिया-कलापों का आयोजन करके अपनी भारतीय परम्पराओं से जुड़े रखने की स्थानीय जनता की इच्छा की पूर्ति करते हैं। लन्दन, बर्लिन और मास्को जैसे केन्द्रों में बौद्धिक क्रिया-कलापों जैसे व्याख्यानों, वार्ताओं, पैनल विचार-विमर्श, समकालीन तथा सांस्कृतिक हित के विषयों पर संगोष्ठियों के आयोजन, जिनका उद्देश्य परस्पर कार्यकलाप के जरिए भारत की समझ-बूझ को बढ़ाना है, पर ध्यान दिया जाता है। ये केन्द्र वार्ताओं, व्याख्यानों, दृश्य कला प्रदर्शनियों, निबंध प्रतियोगिताओं, नृत्य तथा संगीत की मंचीय कलाओं, नाटकों, भारतीय फिल्मों, नए बुलेटिनों का प्रकाशन भारतीय विषयों पर सेमिनारों का भी आयोजन करते हैं। मास्को और पारामारिबो में हिन्दी भाषा भी पढ़ाई जाती है। ये केन्द्र पुस्तकालय, अध्ययन कक्ष और अतिथियों के लिए श्रव्य-दृश्य पुस्तकालय भी रखते हैं।

अपने क्रिया-कलापों को आयोजित करने के साथ-साथ ये सांस्कृतिक केन्द्र विभिन्न सांस्कृतिक क्रिया-कलापों का समन्वय करने के लिए संबंधित भारतीय मिशनों को सहयोगी भूमिका भी प्रदान करते हैं। ये केन्द्र भारत की विपुल तथा विविध सांस्कृतिक विरासत की स्वच्छ छवि को उजागर करने के लिए स्थानीय नागरिकों विशेष रूप से छात्रों, अध्यापकों, शिक्षाविदों, मत-निर्माताओं तथा सांस्कृतिक गणमान्य व्यक्तियों के साथ सम्पर्क बनाते हैं और उसे विकसित करते हैं।

विदेशों में भारतीय अध्ययन के अतिथि प्रोफेसर और पीठ

परिषद् भारतीय भाषाओं और उससे संबंधित अन्य विषयों को पढ़ाने के लिए अतिथि प्रोफेसरों को विदेशों में भेजती है। विदेशों में प्रोफेसरों की प्रतिनियुक्ति द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों और विदेशों में हिन्दी के प्रसार की योजना के अन्तर्गत की जाती है। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् ने इस समय 17 प्रोफेसरों को प्रतिनियुक्ति पर भेजा हुआ है जो हिन्दी, संस्कृत, तमिल, मलयालम और आधुनिक भारतीय इतिहास पारामारिबो (सूरीनाम), बूडापेस्ट (हंगरी), पोर्ट लुईस (मारीशस), मास्को (रूस), सिओल (दक्षिण कोरिया), वारसा (पोलैंड), (दो पद हिन्दी तथा तमिल), (ट्रिनिडाड और टोबेगो) (2 पद हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय इतिहास), सोफिया (बुल्गारिया), अंकरा (तुर्की), बुखारेस्ट (रोमानिया), बैंकाक (थाईलैंड), पेरिस (फ्रांस) तथा ओश (किर्गिजस्तान) में पढ़ा रहे हैं।

प्रकाशन

परिषद् का प्रमुख प्रकाशन कार्यक्रम है जो वर्ष-दर-वर्ष बढ़ रहा है। परिषद् विभिन्न भाषाओं की सात तिमाही पत्रिकाएँ प्रकाशित करती है – “इण्डिया होरीजन्स” और “अफ्रीका क्वार्टरली” (दोनों अंग्रेजी में), “गगनांचल” (हिन्दी); पापेलीज डी ला इण्डिया (स्पेनी) “रिकोट्रे अवेक ल इंडे (फ्रांसीसी); “तकाफत-उल-हिन्द” (अरबी) और “इण्डियन इन डर गेगेनवार्ट” (जर्मन)।

चालू वर्ष के दौरान विशेष प्रकाशन निम्न प्रकार है:

- (i) “पापेलीज डी ला इण्डिया” का एक सहस्रत्राब्दि अंक।

- (ii) डॉ. जाकिर हुसैन पर एक स्मारक खण्ड – “डॉ. जाकिर हुसैन: अध्यापक जो राष्ट्रपति बने” तीन भाषाओं अर्थात् हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी जिसका विमोचन 21 जुलाई, 2000 को माननीय उप राष्ट्रपति, भारत/भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के अध्यक्ष श्री कृष्णकान्त द्वारा राष्ट्रपति भवन में संपन्न एक विशेष समारोह में माननीय भारत के राष्ट्रपति श्री के. आर. नारायणन को पुस्तक की प्रथम प्रतियाँ भेंट कर किया गया।

इसके अतिरिक्त, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् ने दिल्ली सिम्फोनी सोसाईटी को एक “नेशनल डायरेक्टरी आन प्रमोशन, ट्रेनिंग एण्ड डबलपमेंट ऑफ यूरोपियन कलासीकलम्यूजिक इन इण्डिया” प्रकाशित करने के लिए वित्तीय सहायता मुहैया कराई।

परिषद् ने एन. बी. टी के माध्यम से 21-23 अप्रैल, 2000 तक बुडापेस्ट में आयोजित सातवें अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक उत्सव में भी भाग लिया।

पुस्तकालय

मौलाना अबुल कलाम आजाद, परिषद् के संस्थापक राष्ट्रपति द्वारा वसीयत में दी गई पुस्तकों और हस्तलिपियों का व्यक्तिगत संकलन भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के पुस्तकालय का हृदय बन गया है।

चालू वित्त वर्ष में पुस्तकालय ने पुस्तकालय समिति के अनुमोदन से लगभग 157 पुस्तकें अंग्रेजी, 176 हिन्दी तथा 38 उर्दू में खरीद कर अपने संकलन का संवर्धन किया है। समीक्षाधीन वर्ष के दौरान लगभग 3800 व्यक्ति पुस्तकालय में आए।

पुस्तकालय ने संसाधनों के इष्टतम उपयोग के महत्वपूर्ण उद्देश्य को ध्यान में रखकर दिल्ली पुस्तकालय नेटवर्क (डेलनेट) के साथ संपर्क किया है।

लेखा

वर्ष 2000-2001 के लिए आई. सी. सी. आर. को इसकी सामान्य गतिविधियों के लिए 39.00 करोड़ रुपये का अनुदान दिया गया था। परिषद् की संभावित प्राप्तियाँ 0.35 करोड़ रुपये हैं। अक्टूबर 2000 तक 18.68 रुपये का व्यय हुआ। आई. सी. सी. आर. की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित होनी वाली विशेष गतिविधियों के लिए 1.00 करोड़ रुपये के अतिरिक्त अनुदान का अनुमोदन किया गया है।

सेमिनार/संगोष्ठी/सम्मेलन

समीक्षाधीन अवधि के दौरान आई. सी. सी. आर. ने निम्नलिखित गतिविधियाँ आयोजित कीं:

माननीय उप-राष्ट्रपति/आई. सी. सी. आर. के अध्यक्ष श्री कृष्णकान्त के आवास पर 20 मई, 2000 को मौलाना अबुल कलाम आजाद निबंध प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया।

ओमान सल्तनत की सरकार के माननीय विदेश मंत्री श्री बिन अल्वई अब्दुल्ला द्वारा 18 जुलाई, 2000 को तीन मूर्ति सभागार में आई. ओ. आर. ए. आर. सी. व्याख्यान दिया गया।

आई. सी. सी. आर. ने विख्यात बंगला कवि काजी नजरूल इस्लाम की जन्म वर्षगांठ मनाने के लिए 16-17 अगस्त, 2000 को नई दिल्ली में एक संगोष्ठी को सह-प्रायोजित किया।

परिषद् ने एशिया प्रशांत मंचीय कला नेटवर्क (ए. पी. पी. ए. एन.) की उपाध्यक्षा श्रीमती शांता सर्बजीत सिंह द्वारा 28-31 अक्टूबर, 2000 तक नई दिल्ली में आयोजित “अर्नी टू द ईस्ट” नामक तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन को सह-प्रायोजित किया।

संयुक्त राष्ट्र की 55वीं वर्षगांठ 30 अक्टूबर, 2000 को आजाद भवन के टैगोर हाल में मनाई गई। विदेश राज्य मंत्री श्री अजित कुमार पांजा इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे।

“सिविलिजेशन डायलॉग एण्ड नेशनल आइडेन्टिटी; डायलॉग सम्मेलन 17-19 नवम्बर, 2000 को नीमाराना में और 20 नवम्बर, 2000 को नई दिल्ली में हुआ।

परिषद् ने ‘सौन्दर्य’ नामक एक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित करने में सहायता प्रदान की जो 24-26 नवम्बर, तक आई. आई. सी. नई दिल्ली में हुआ था।

फिलीस्तीन के लोगों के साथ अन्तर्राष्ट्रीय एकता दिवस (पे. एल. ओ. दिवस) मनाने के लिए 29 नवम्बर, 2000 बुधवार को टैगोर हॉल, आजाद भवन, नई दिल्ली में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर विदेश राज्य मंत्री श्री अजित कुमार पांजा मुख्य अतिथि थे जिसमें अनेक राजदूतों ने भाग लिया। फिलीस्तीन राज्य के राजदूत डॉ. खालिद अल शेख ने इस अवसर पर श्रोताओं को संबोधित किया।

मंचीय कलाएँ

अप्रैल 2000से नवम्बर 2000 की अवधि के दौरान परिषद ने अनेक देशों जैसे कि चीन, जर्मनी, हंगरी, इरान, इटली, म्यामां, पोलैंड, रूस, खांडा, श्री लंका, स्वीडन, ट्यूनीशिया, तुर्कमेनिस्तान, अमरीका, उजबेकिस्तान और वियतनाम से कलाकारों/मंडलियों की यात्राओं की व्यवस्था की।

इन मंडलियों का स्वागत वर्तमान सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत और साथ ही विदेश स्थित भारतीय राजनयिक मिशनों और भारत स्थित विदेशी राजनयिक मिशनों के अनुरोध पर किया गया।

भारत में आयोजित की गयी महत्वपूर्ण गतिविधियों में 'तुर्कमेन सांस्कृतिक दिवस' (अगस्त 2000) "भारत में जर्मनी महोत्सव" (अक्टूबर 2000 - मार्च 2000) के अंतर्गत आठ मंचीय कला मंडलियों द्वारा 26 शहरों में प्रदर्शन और एक अंतर्राष्ट्रीय कठपुतली (नवम्बर, 2000) शामिल हैं। दिसम्बर 2000 में खजुराहो, बनारस, चित्रकूट ओर नई दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय रामायण महोत्सव आयोजित किया गया। "होरायजन" और "रेट्रोस्पेक्टिव" नामक प्रदर्शनों की अपनी दो लोकप्रिय कड़ियों के अंतर्गत परिषद ने नई दिल्ली और अन्य शहरों में आई. सी. सी. आर. के सदस्य पैनल के कलाकारों द्वारा प्रदर्शनों का प्रबंध करना जारी रखा। तथ्य, कि वर्ष 2000 में आई. सी. सी. आर. ने अपनी स्थापना के 50 वर्ष पूरे कर लिये हैं, को भारत के श्रव्य-दृश्य मीडिया में पर्याप्त जगह मिली।

परिषद ने विदेशों से विख्यात कलाकारों तथा मंडलियों के कार्यक्रम प्रस्तुतीकरण का प्रबंध किया (अप्रैल-नवम्बर 2000 की अवधि में 41 देशों की 46 मंडलियाँ)। कुछ महत्वपूर्ण कार्यक्रम/महोत्सव, जिनमें सांस्कृतिक मंडलियों ने भाग लिया, वे थे वेनेज्युएला में 12वां अन्तर्राष्ट्रीय थिएटर महोत्सव, डी. पी. आर. कोरिया में 'स्प्रिंग आर्ट्स महोत्सव', अमरीका में 'मई 2000 महोत्सव', 'सिंगापुर आर्ट्स महोत्सव', जर्मनी में "एक्सपो-2000" हैनोवर, पोलैंड में '14वां इंटरनेशनल आर्गन एण्ड चेम्बर म्यूजिक फेस्टिवल कोलोडजको - 2000" तथा 'क्राकवो महोत्सव', मोरक्को में 'प्रसिद्ध कलाओं का राष्ट्रीय महोत्सव', हंगरी में "बुडापेस्ट फेयरवेल फेस्टिवल 2000", दक्षिण अफ्रीका में 'ग्राहमास्टाउन महोत्सव', मिस्र में 'इस्लामेलिया अन्तर्राष्ट्रीय फोक्लोर महोत्सव', किर्गिजस्तान में 'ओश शहर की 3000वीं वर्षगांठ', सीरिया में 'बसरा महोत्सव', ईराक में 'बेबीलोन महोत्सव',

बंगलादेश में गायन एवं नृत्य महोत्सव', मेक्सिको में 'सरवान्टिनो महोत्सव', बहरीन में 'गायन महोत्सव', तथा पाकिस्तान में 'पांचवाँ अन्तर्राष्ट्रीय कठपुतली महोत्सव।

परिषद ने भारत के राष्ट्रपति की चीन यात्रा के साथ राजनयिक संबंधों की स्थापना की 50वीं वर्षगांठ को मनाने के लिए चीन लोक गणराज्य में विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किए। लाओस और वियतनाम में वियन्तियाने में गंगा-मेकांग सुवान्णफुम सहयोग की बैठक के

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत की यात्रा करने वालों में अपने देश तथा विदेश में सांस्कृतिक गतिविधियों में संलग्न प्रसिद्ध चित्रकार, विद्वान, लेखक, संग्रहालय विशेषज्ञ तथा अन्य विशिष्ट व्यक्ति हैं।

इस अवधि के दौरान, परिषद् ने भारत से विशिष्ट व्यक्तियों को भी विदेशों में अपने समकक्षों से मिलने/कार्यकलाप करने, संगोष्ठियों, सम्मेलनों तथा कार्यशालाओं में भाग लेने तथा विभिन्न विषयों पर भाषण देने के लिए भेजा। इन विशिष्ट व्यक्तियों में रॉयल इन्स्टीट्यूट ऑफ ब्रिटिश आर्किटेक्चर में आयोजित स्कूल ऑफ साउंड सेमिनार में भाग लेने के लिए संगीतकार श्री बहुद्दीन डागर, नेशनल सेन्टर फॉर मिडिल ईस्ट स्टडीज (काहिरा) द्वारा आयोजित संगोष्ठी में भाग लेने के लिए एक छः सदस्यीय शिष्टमंडल, ऑल सिलोन यंग मैन्स मुस्लिम एसोसिएशन के स्वर्ण जयन्ती अभिसमय में मुख्य भाषण देने के लिए भारत के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश ए. एम. अहमदी को कोलम्बो और श्री टी. एन. निनान (बिजनेस स्टैण्डर्ड) एवं प्रोफेसर रवीन्द्र कुमार (नेहरू मेमोरियल फंड) को “इंडिया: पर्सपेक्टिव फॉर द मिलेनियम” पर संगोष्ठी में भाग लेने के लिए जर्मनी भेजा।

उपहार

परिषद् ने अपने उपहार कार्यक्रम के अन्तर्गत विश्व की विभिन्न विदेशी हस्तियों, पुस्तकालयों, संस्थानों, स्कूलों को भारत की संस्कृति, कला, पाक-प्रणाली, नृत्य तथा गायन से सम्बद्ध पुस्तकें उपहार-स्वरूप दीं। भा. सा. सं. पं. ने विदेश स्थित मिशनों के माध्यम से उपहार देने के लिए भारतीय नृत्य एवं गायन से सम्बद्ध वाद्य-यंत्र, कलात्मक वस्तुएँ, वीडियो/आडियो कैसेटें/सी. डी. इत्यादि भेजे।

प्रदर्शनियाँ

परिषद् ने मारीशस, पनामा, यमन, बंगलादेश और चीन में महात्मा गांधी और रवीन्द्र नाथ टैगोर सहित राष्ट्रीय नेताओं की आवक्ष मूर्तियाँ लगाने के लिए भेजीं। रवीन्द्रनाथ टैगोर की ताबे की एक पूर्ण प्रतिमा मेक्सिको भेजी। सितम्बर 2000 में भारत के प्रधान मंत्री और अमरीका के राष्ट्रपति ने समारोह में महात्मा गांधी की एक प्रतिमा वाशिंगटन में स्थापित की।

परिषद् ने अपनी अजन्ता आर्ट गैलरी में हंगरी (अप्रैल) और चीन (नवम्बर) से प्राप्त दो प्रदर्शनियाँ आयोजित कीं। परिषद् ने समसामयिक ग्राफिक्स प्रिंटस (दक्षिण अमरीका), भारतीय गुड़िया और लिबास (यूरोप तथा दक्षिण अफ्रीका), फोटो प्रदर्शनी “मेरा देश मेरे लोग” (खाड़ी एवं मिडिल ईस्ट), मधुवनी चित्रकला (अमरीका) और महात्मा गांधी (बंगलादेश) पर भी प्रदर्शनियाँ भेजीं।

परिषद् ऑन लाइन

भारत संस्कृति पर सूचना सम्पर्क के व्यापक स्पेक्ट्रम के साथ दिसम्बर 1997 में वेबसाइट लांच की गई। परिषद् की कार्यक्रम न्यूजलैटर की वेबसाइट को भारत का संस्कृति के प्रवेश द्वार का पथ प्रदर्शक स्वीकार किया गया। इसे निम्नलिखित 3 यू. आर. एल. पर पाया जा सकता है।

एच टी टी पी//एजुकेशन.वी एस एन एल.कॉम/आई सी सी आर

एच टी टी पी//आई सी सी आर. टी आर आई पी ओ डी.कॉम

एच टी टी पी//आई सी सी आर.कल्चर.वेबजम्प.कॉम।



परिशिष्ट

परिशिष्ट I

वर्ष 2000-2001 के दौरान मुख्यालय और विदेश स्थित मिशनों/केन्द्रों में संवर्ग की संख्या (वे पद भी शामिल हैं जिनका बजट वाणिज्य मंत्रालय ने बनाया तथा जिसमें आस्थगित संवर्ग बाह्य पद भी हैं)

क्र. सं.	संवर्ग/पद	मुख्यालय में पद	मिशनों में पद	कुल
भारतीय विदेश सेवा (क)				
1.	ग्रेड-I	5	21	26
2.	ग्रेड-II	1	33	34
3.	ग्रेड-III	36	108	144
4.	ग्रेड-IV	35	98	133
5.	वशिष्ट वेतनमान कनिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड	44	137	181
6.	(i) कनिष्ठ वेतनमान	1	32	33
	(ii) आरक्षित परीवीक्षाधीन	27	-	27
	(iii) अवकाश आरक्षित	15	-	15
	(iv) प्रतिनियुक्ति आरक्षित	19	-	19
	(v) प्रशिक्षण आरक्षित	7	-	7
भारतीय विदेश सेवा (ख)				
7.	(i) ग्रेड-I	43	98	142
	(ii) प्रतिनियुक्ति आरक्षित	6	-	6
8.	(i) ग्रेड-II/III	99	175	274
	(ii) अवकाश आरक्षित	30	-	30

क्र. सं.	संवर्ग/पद	मुख्यालय में पद	मिशनो में मद	कुल
	(iii) प्रतिनियुक्ति आरक्षित	16	-	16
	(iv) प्रशिक्षण आरक्षित	25	-	25
9.	(i) ग्रेड-IV	252	410	662
	(ii) अवकाश आरक्षित	60	-	60
	(iii) प्रतिनियुक्ति आरक्षित	55	-	55
10.	(i) ग्रेड-V/VI	339	196	535
	(ii) अवकाश आरक्षित	60	-	60
	(iii) प्रतिनियुक्ति आरक्षित	55	-	55
11.	(i) साईफर संवर्ग का ग्रेड-II (साईफर सहायक)	57	141	198
	(ii) अवकाश आरक्षित	23	-	23
12.	(i) निजी सचिव	35	198	233
	(ii) अवकाश आरक्षित	14	-	14
13.	(i) वैयक्तिक सहायक	141	194	335
	(ii) अवकाश आरक्षित	33	-	33
	(iii) प्रशिक्षण आरक्षित (हिन्दी)	10	-	10
	(iv) प्रतिनियुक्ति आरक्षित	12	-	12
14.	आशुलिपिक ग्रेड-III	17	77	94
15.	भाषान्तरणकार संवर्ग	8	27	35
16.	विधि एवं संधि संवर्ग	16	-	16
	योग	1543	1946	3489

परिशिष्ट II

वर्ष 2000-2001 के दौरान विदेश मंत्रालय में विभिन्न समूहों में की गयी भर्ती, तथा अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/अन्य पिछड़े वर्ग के लिए आरक्षित पदों में से भरे गए पदों के आँकड़ों को दर्शाने वाला विवरण (अनन्तिम)

समूह	कुल रिक्त पदों की संख्या	रिक्त पदों की संख्या			अनारक्षित
		अनु. जा.	अनु. ज. जाति	अन्य पिछड़े वर्ग	
समूह 'क'	8	शून्य	1	3	4
समूह 'ख'	59	2	18	1	38
समूह 'ग'	30	1	1	1	27
समूह 'घ'	22	8	—	—	14

परिशिष्ट III

31.12.2000 को विभिन्न विदेशी भाषाओं में अर्हता प्राप्त अधिकारियों की सूची

क्रम सं.	अनिवार्य विदेशी भाषा	अधिकारियों की संख्या	क्रम सं.	अनिवार्य विदेशी भाषा	अधिकारियों की संख्या
1.	अरबी	84	16.	मंडारिन	1
2.	इंडोनेशियाई भाषा	13	17.	नेपाली	3
3.	बर्मी	1	18.	पर्शियन	20
4.	चीनी	51	19.	पुर्तगाली	16
5.	डच	1	20.	रूसी	75
6.	फ्रेंच	74	21.	सर्ब क्रोएशियाई	3
7.	जर्मन	32	22.	सिंहली	2
8.	गोरखाली	1	23.	स्पेनिश	61
9.	हिब्रु	2	24.	स्वीडिश	1
10.	हंगेरियन	1	25.	थाई	2
11.	इटैलियन	5	26.	तिब्बती	2
12.	जापानी	25	27.	तुर्की	6
13.	कजाक	1	28.	उक्रेनी	1
14.	किश्वाहिली	10	29.	वियतनामी	1
15.	मलयभाषा	1			

टिप्पणी: इस संख्या में भाषा प्रशिक्षु शामिल नहीं है।

परिशिष्ट IV

1 जनवरी से 31 दिसम्बर, 2000 तक प्राप्त आवेदन पत्रों, जारी किये गये पासपोर्टों और प्रदान की गई विविध सेवाओं और पासपोर्ट कार्यालयों के राजस्व और व्यय संबंधी आंकड़ों को दर्शाने वाला विवरण

क्र. सं.	पासपोर्ट कार्यालय	प्राप्त पासपोर्टों की कुल संख्या	जारी किए गए पासपोर्ट	प्राप्त विविध आवेदन	प्रदत्त विविध सेवाएं	तत्काल योजना के अंतर्गत जारी	तत्काल योजना के अंतर्गत अर्जित	अर्जित राजस्व (रुपयों में)	किया गया व्यय (रुपयों में)
1.	अहमदाबाद	189327	146977	13590	13119	3562	3897500	61095300	18089104
2.	बंगलौर	125838	123542	28432	27062	6349	8585000	53711785	15515672
3.	बरेली	34230	33150	1738	1930	687	842800	12149863	6428805
4.	भोपाल	39934	38301	3140	3105	1193	1603100	14295961	4723348
5.	भुवनेश्वर	15188	14636	1184	1154	443	558000	5721900	2145670
6.	कलकत्ता	112440	96435	10370	9554	3866	5254300	39485514	9425785
7.	चण्डीगढ़	140019	117431	11841	11261	2050	2811000	49595299	13622894
8.	चेन्नई	168087	150143	21761	21408	10633	15650500	71942971	18380830
9.	कोचीन	106714	100874	16749	15855	3286	4405000	40665720	15581132
10.	दिल्ली	189105	167394	26535	22656	12429	16490500	85612381	28147841
11.	गाजियाबाद	39059	32575	2571	2478	1760	2276500	15017926	3749504

12.	गुवाहाटी	18783	14960	1384	1105	3666	2972000	8698928	2813991
13.	हैदराबाद	231809	208156	23971	23627	8964	12874300	88760313	24178667
14.	जयपुर	73468	65613	4618	4142	1787	2370500	25769147	9959594
15.	जालन्धर	145654	120545	10583	8789	1669	1541100	46866488	13381219
16.	जम्मू	9672	7984	526	515	164	208000	3644835	2812018
17.	कोजीकोड़	146424	130854	16424	15929	3070	4281100	53770492	17587927
18.	लखनऊ	113743	89801	5932	5562	1154	1468054	37078367	24650265
19.	मुम्बई	181342	149974	26022	24105	11188	13815300	74398128	49603532
20.	नागपुर	20921	19275	1573	1566	904	1175000	7946381	2140449
21.	पणजी	19599	18730	7102	6980	1389	1827000	10322015	2249609
22.	पटना	57359	43603	3845	3562	1109	1417700	19838300	6727746
23.	पुणे	44813	35947	4199	3494	1983	2324000	14723850	4419809
24.	श्रीनगर	9372	5651	597	476	92	101900	3247070	3470669
25.	थाणे	53629	42416	497	487	2533	3107000	13999310	* *
26.	त्रिची	170512	147305	11435	10921	2757	3744500	55739555	16007407
27.	त्रिवेंद्रम	81016	75488	13508	13214	2439	3288500	34250184	12486292
28.	विशाखापटनम	50463	45273	3781	3598	1098	1506500	18219039	4514299
योग		2588520	2243033	273908	257654	92224	120396654	966567022	332814078

** क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, मुम्बई के आँकड़ों में शामिल

परिशिष्ट V

वर्ष 2000 के लिए कौंसली आँकड़े

1.	सरकारी लागत पर प्रत्यावर्तित भारतीयों की संख्या	79
2.	विदेशों में गिरफ्तार भारतीयों की संख्या	9243
3.	विदेशों में ऐसे मृतक भारतीयों की संख्या जिसकी सूचना मंत्रालय को प्राप्त हुई	3143

परिशिष्ट VI

वर्ष 2000-2001 के लिए विदेश मंत्रालय का वित्त

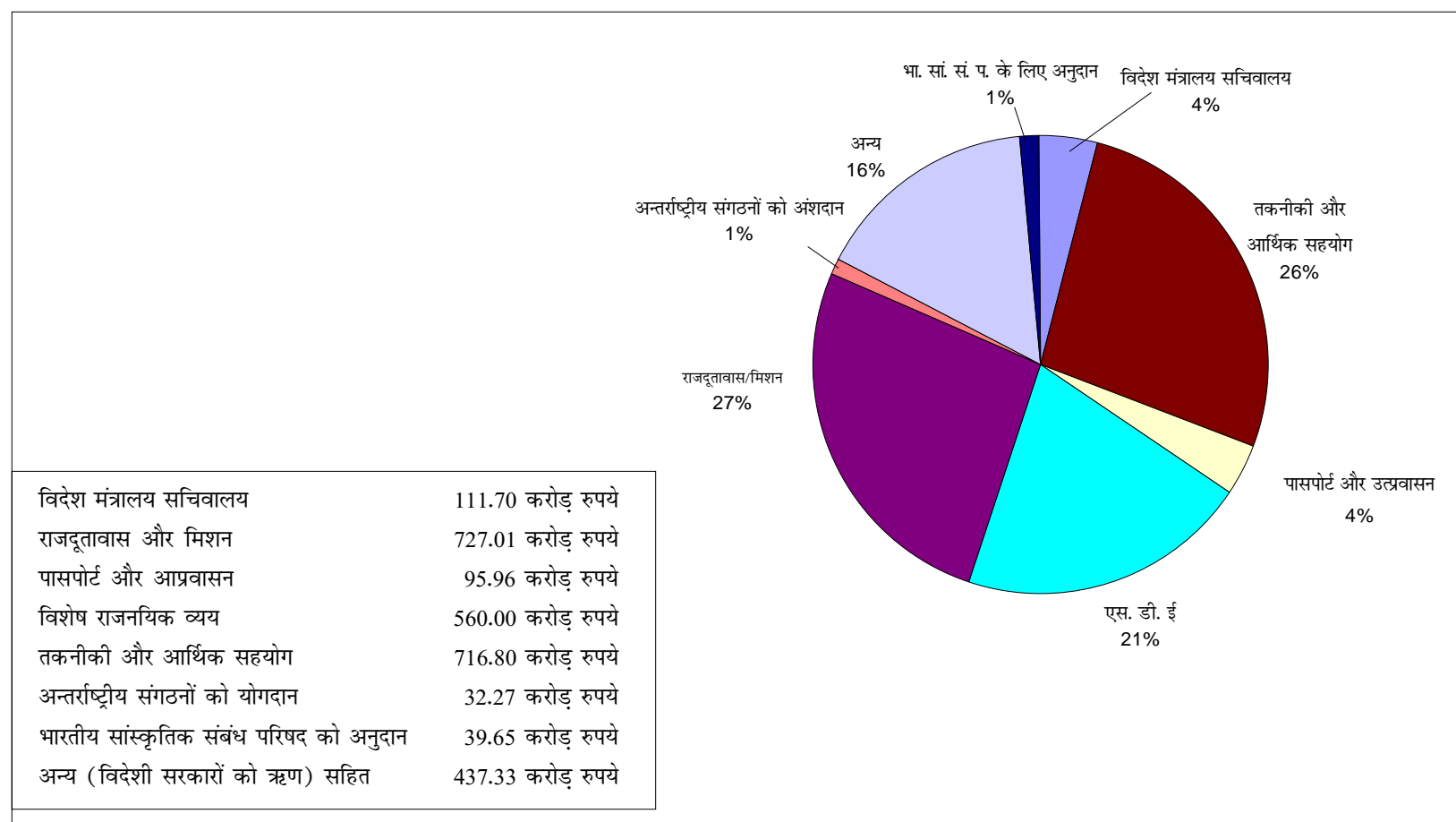
बजट अनुमान 2000-2001 के लिए विदेश मंत्रालय का बजट आवंटन 2625.72 करोड़ रुपये है जिसमें बजट अनुमान 1999-2000 की तुलना में 416.25 करोड़ रुपये अर्थात् 18.84% की वृद्धि और संशोधित अनुमान 1999-2000 की तुलना में 376.25 करोड़ रुपये अर्थात् 16.73% की वृद्धि है। संशोधित अनुमान 2000-2001 के लिए 2720.72 करोड़ रुपये है जिसमें बजट अनुमान 2000-2001 की तुलना में 3.62% और संशोधित अनुमान 1999-2000 की तुलना में 20.95% की वृद्धि है।

विदेश मंत्रालय के विगत तीन वर्षों के व्यय और बजट के तुलनात्मक आंकड़े नीचे दिए अनुसार हैं:-

वर्ष	वास्तविक (करोड़ रुपये)	% परिवर्तन
1997-98	1509.03	-
1998-99	2073.75	37.42
1999-2000	2133.16	2.86
2000-2001 (बजट प्राक्कलन)	2625.72	23.09
2000-2001 (संशोधित प्राक्कलन)	2720.72	3.62

परिशिष्ट VII

2000-2001 के विदेश मंत्रालय बजट के आवंटन



भारत का सहायता कार्यक्रम

भूटान को सहायता भारत के कुल सहायता बजट का 77% भाग है। भारतीय सहायता कार्यक्रमों के लिए अन्य महत्व पूर्ण स्थानों में नेपाल-9%, म्यामां - 3% और अन्य देश-11% हैं।

इसके अतिरिक्त भारत सरकार ने विकास परियोजनाओं के क्रियान्वयन में सहायता के लिए बंगलादेश और भूटान की सरकारों को ऋण दिए हैं। 2000-2001 के दौरान बंगलादेश की सरकार को 75 करोड़ रुपये और भूटान सरकार को 200.80 करोड़ रुपये के ऋण दिए हैं।

विदेश मंत्रालय का बजट अनिवार्यतः योजना भिन्न बजट होता है। 1996-97 से मंत्रिमंडल के अनुमोदन से एक योजना शीर्ष बनाया गया है। ऐसा प्रमुखतः कुछ ऐसी बड़ी विकास परियोजनाओं के लिए किया गया है जो भूटान में शुरू की गई हैं और भारत सरकार के 'भूटान को सहायता' कार्यक्रम में भूटान की सरकार के अनुरोध पर परियोजना सहायता का अंग हैं। भूटान में इस समय क्रियान्वित की जा रही जल विद्युत परियोजना अत्यन्त प्रतिष्ठित और महत्वपूर्ण परियोजना है। योजना शीर्ष से दो अन्य परियोजना कोष कुरिचु जल विद्युत परियोजना और डुंगसुम सीमेष्ट परियोजना है जो दोनों ही भूटान में हैं।

वर्तमान वित्तीय वर्ष के दौरान विदेश मंत्रालय के मुख्यालय अनुमानित व्यय 112 करोड़ रुपये के लगभग हैं जो मंत्रालय के कुल अनुमानित राजस्व व्यय का लगभग 5% है। विदेश स्थित भारतीय मिशनों और केन्द्रों का अनुमानित व्यय 727 करोड़ रुपये देने की संभावना है जो मंत्रालय के कुल राजस्व व्यय का लगभग 31% है।

पासपोर्ट तथा वीजा शुल्क और अन्य प्राप्तियों से विदेश मंत्रालय का राजस्व 479 करोड़ रुपये होने की संभावना है। अनुमान है कि पासपोर्ट शुल्क की राशी लगभग 167 करोड़ रुपये और वीजा शुल्क की राशि लगभग 283 करोड़ रुपये होगी।

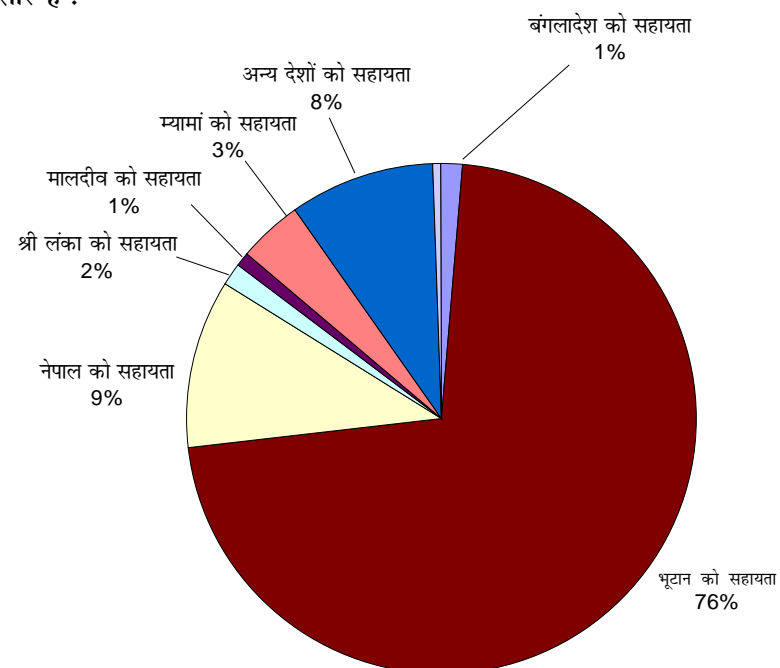
परिशिष्ट VIII

भारत के सहायता कार्यक्रम

भारत के सहायता कार्यक्रम

प्रमुख स्थानों को पूर्ण अर्थ में हमारे सहायता कार्यक्रम नीचे दिए अनुसार हैं :

देशों के लिए सहायता	करोड़ रुपये में
भूटान	549.20
बंगलादेश	8.75
नेपाल	62.00
श्रीलंका	11.00
अन्य विकासशील देश	51.59
म्यामां	19.15
मालदीव को सहायता	8.00
अफ्रीकी देश	5.00



परिशिष्ट IX

भारत द्वारा 2000 में अन्य देशों के साथ सम्पन्न/नवीकृत संधियाँ अभिसमय/करार

अभिसमय/संधियों/ करारों के शीर्षक	हस्ताक्षर/प्रवर्तन की तारीख	अनुसमर्थन/सहमति या स्वीकार करने की तारीख	प्रवृत्त होने की तारीख
बहुपक्षीय			
1. तेल प्रदूषण से होने वाली जान-हानि के मामले में समुद्र में हस्तक्षेप करने से संबद्ध अभिसमय	29.11.1969	30.5.2000	6.5.1975
2. तेल प्रदूषण हानि के लिए मुआवजे के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय निधि की स्थापना से संबद्ध अन्तर्राष्ट्रीय अभिसमय को संशोधित करने के लिए 1992 का प्रोटोकोल	7.11.1992	8.6.2000	30.5.1996
3. लोड लाइन्स, 1996 पर अन्तर्राष्ट्रीय अभिसमय से संबंधित 1988 का प्रोटोकोल	11.11.1988	26.7.2000	
4. समुद्र में जीवन सुरक्षा 1974 के लिए अन्तर्राष्ट्रीय अभिसमय से संबंधित 1988 का प्रोटोकोल	11.11.1988	28.7.2000	
5. विश्व व्यापार संगठन कानून पर सलाहकार केन्द्र स्थापित करने से संबद्ध करार	30.11.1999	8.12.2000	
6. भारत, ईरान, ओमान और रूसी परिसंघ के बीच अन्तर्राष्ट्रीय “उत्तर-दक्षिण” परिवहन गलियारे से संबद्ध अन्तर-सरकारी करार	12.09.2000		

क्षेत्रीय

- | | | |
|---|-----------|-----------|
| 1. एशिया और प्रशांत में उच्चतर शिक्षा के अध्ययनों, डिप्लोमा और डिग्रियों को मान्यता देने से संबद्ध क्षेत्रीय अभिसमय | 6.12.1983 | 14.6.2000 |
|---|-----------|-----------|

द्विपक्षीय

आर्मेनिया

- | | | |
|--|-----------|--|
| 1. भारत और आर्मेनिया के बीच वायु सेवा करार | 5.12.2000 | |
|--|-----------|--|

आस्ट्रेलिया

- | | | |
|---|------------|------------|
| 2. सूचना उद्योगों में सहयोग से संबंधित भारत गणराज्य की सरकार और आस्ट्रेलिया सरकार के बीच समझौता ज्ञापन। | 18.10.2000 | 18.10.2000 |
|---|------------|------------|

ब्राजील

- | | | |
|---|-----------|-----------|
| 3. सूचना प्रौद्योगिकी पर ब्राजील-भारत कार्य बल गठित किये जाने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं में सहयोग से संबद्ध ब्राजील संघीय गणराज्य के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय और भारत गणराज्य के सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन। | 9.11.2000 | 9.11.2000 |
|---|-----------|-----------|

बुल्गारिया

- | | | |
|---|------------|--|
| 4. भारत और बुल्गारिया गणराज्य के बीच वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक सहयोग से संबद्ध करार। | 10.11.2000 | |
|---|------------|--|

चीन

- | | | |
|--|------------|------------|
| 5. भारत गणराज्य के सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय और चीन लोक गणराज्य के सूचना उद्योग मंत्रालय के बीच सूचना प्रौद्योगिकी में सहयोग से संबद्ध समझौता ज्ञापन | 17.06.2000 | 17.06.2000 |
|--|------------|------------|

- | | | | |
|----|--|------------|------------|
| 6. | चीन लोक गणराज्य के विशेष प्रशासनिक क्षेत्र हांगकांग सरकार की सूचना प्रौद्योगिकी और प्रसारण ब्यूरो तथा भारत गणराज्य की सरकार के बीच सूचना प्रौद्योगिकी और सेवाओं में सहयोग से संबद्ध समझौता ज्ञापन। | 24.02.2000 | 24.02.2000 |
|----|--|------------|------------|

क्रोएशिया

- | | | | |
|----|---|------------|--|
| 7. | भारत और क्रोएशिया के बीच वायु सेवाओं से संबद्ध करार | 12.09.2000 | |
|----|---|------------|--|

जार्जिया

- | | | | |
|----|--|------------|--|
| 8. | भारत और जार्जिया के बीच विदेश कार्यालय परामर्श से संबद्ध प्रोटोकॉल | 00.05.2000 | |
|----|--|------------|--|

फ्रांस

- | | | | |
|----|---|------------|------------|
| 9. | फ्रांस गणराज्य के आर्थिक, वित्त, उद्योग मंत्रालय और भारत गणराज्य के सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के बीच सूचना प्रौद्योगिकियों में आपसी सहयोग से संबद्ध समझौता ज्ञापन | 28.09.2000 | 28.09.2000 |
|----|---|------------|------------|

आई. ए. ई. ए.

- | | | | |
|-----|---|------------|------------|
| 10. | भारत और अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आई. ए. ई. ए.) के बीच आई. ए. ई. ए. की तकनीकी सहयोग से जुड़ी गतिविधियों के अंतर्गत एजेंसी की क्षेत्रीय और अन्तर-क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम, एकल और सामूहिक फेलोशिप प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन | 11.05.2000 | 11.05.2000 |
|-----|---|------------|------------|

आयरलैंड

- | | | | |
|-----|---|------------|------------|
| 11. | सूचना प्रौद्योगिकी पर भारत-आयरलैंड कार्यकारी दल के लिए प्रस्ताव | 11.05.2000 | 11.05.2000 |
|-----|---|------------|------------|

जोर्डन

- | | | | |
|-----|---|------------|------------|
| 12. | भारत गणराज्य के विदेश मंत्रालय और जोर्डन के हाशमी राज्य के विदेश मंत्रालय के बीच परामर्शों से संबंधित समझौता ज्ञापन | 18.12.2000 | 18.12.2000 |
|-----|---|------------|------------|

मारीशस

- | | | |
|--|------------|------------|
| 13. मारीशस गणराज्य की सरकार और भारत गणराज्य की सरकार के बीच सूचना प्रौद्योगिकी में सहयोग से संबद्ध करार। | 10.03.2000 | 10.03.2000 |
|--|------------|------------|

फिलीपींस

- | | | |
|--|------------|------------|
| 14. भारत गणराज्य के विदेश मंत्रालय और फिलीपींस गणराज्य के विदेश विभाग के बीच नीति परामर्श वार्ता के लिए समझौता ज्ञापन। | 28.11.2000 | 28.11.2000 |
|--|------------|------------|

रूसी परिसंघ

- | | |
|---|------------|
| 15. भारत गणराज्य और रूसी परिसंघ के बीच सामरिक भागीदारी से संबद्ध घोषणा | 03.10.2000 |
| 16. भारत गणराज्य और रूसी परिसंघ (आई. एल. टी. पी.) के बीच वर्ष 2010 तक के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग के लिए समन्वित दीर्घावधिक कार्यक्रम | 03.10.2000 |
| 17. भारत गणराज्य और रूसी परिसंघ के बीच वर्ष 2000-2002 (सी. ई. पी.) के लिए सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और शैक्षिक आदान प्रदान कार्यक्रम | 03.10.2000 |
| 18. डाक संचार के क्षेत्र में सहयोग से संबद्ध संचार मंत्रालय और रूसी परिसंघ के सूचना मंत्रालय के बीच करार | 03.10.2000 |
| 19. गोपनीय सामग्रियों के आपसी संरक्षण से संबद्ध अन्तर सरकारी करार | 03.10.2000 |
| 20. भारत गणराज्य के राज्यों और संघ शासित प्रदेशों और रूसी परिसंघ की जनता के कार्यकारी निकायों के बीच सहयोग के सिद्धांतों पर अन्तर-सरकारी करार | 03.10.2000 |
| 21. सिविल और वाणिज्यिक मामलों में आपसी विधिक सहायता से संबद्ध संधि | 03.10.2000 |

- | | | |
|-----|---|------------|
| 22. | कृषि के क्षेत्र में सहयोग से संबद्ध अन्तर-सरकारी करार | 03.10.2000 |
| 23. | बिना तराशे हुए हीरों और बेशकीमती धातुओं के प्रसंस्करण और व्यापार के क्षेत्र में सहयोग से संबद्ध भारत के वाणिज्य तथा उद्योग मंत्रालय और रूसी परिसंघ के वित्त मंत्रालय के बीच आशय का प्रोटोकॉल | 03.10.2000 |
| 24. | भारत सरकार के कानून, न्याय और कंपनी मामलों के मंत्रालय और रूसी परिसंघ के न्याय मंत्रालय के बीच सहयोग से संबद्ध समझौता ज्ञापन | 03.10.2000 |
| 25. | भारत के आयात-निर्यात बैंक और नेशकॉनोम्बैंक के बीच समझौता ज्ञापन | 03.10.2000 |
| 26. | नये अन्वेषण लाइसेंसिंग नीति (एन. ई. एल. पी.) के अन्तर्गत भारत के पूर्वी किनारे पर संयुक्त अन्वेषण और एक ब्लॉक का निर्माण किये जाने के लिए भारतीय गैस प्राधिकरण लि. और रूसी परिसंघ के गाजपोर्म के बीच उत्पाद के बंटवारे से संबद्ध संधि | 03.10.2000 |
| 27. | सैन्य तकनीकी सहयोग पर एक भारत-रूसी अंतर-सरकारी आयोग की स्थापना से संबंधित अन्तर-सरकारी करार | 03.10.2000 |
| 28. | एयरक्राफ्ट कैरियर एडमिरल ओर्सकोव की रूस से भारत को आपूर्ति से संबद्ध अन्तर-सरकारी करार | 03.10.2000 |
| 29. | हिन्दुस्तान एरॉनाटिक्स लिमिटेड द्वारा 140 एस. यू. - 30 एम के आई लड़ाकू विमान, इंजनों और हवाई उपकरणों के प्रौद्योगिकी का अंतरण और वैध उत्पादन के लिए भारत और रूसी परिसंघ के बीच अंतर-सरकारी करार | 03.10.2000 |
| 30. | भारत द्वारा टी-90 टैंकों की खरीद के संबंध में भारत के रक्षा मंत्रालय और रूसी परिसंघ के राज्य निगम रोसवूरोयूजेनेइ के बीच करार | |
| 31. | नाभिकीय ऊर्जा के शान्तिपूर्ण उपयोग के क्षेत्र में समझौता ज्ञापन | 03.10.2000 |

32. सूचना के आदान-प्रदान में सहयोग पर आर. आई. ए. (नोवोस्ती) और पी. आई. बी. (भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की प्रेस सूचना ब्यूरो) के बीच करार

03.10.2000

सिंगापुर

33. सूचना एवं संचार तकनीकी एवं सेवाओं के क्षेत्र में कार्य बल गठित किये जाने से संबद्ध भारत गणराज्य और सिंगापुर गणराज्य के बीच समझौता ज्ञापन

30.03.2000

30.03.2000

सूडान

34. प्रसार भारती ब्रॉडकास्टिंग कारपोरेशन ऑफ इन्डिया और सूडानी रेडियो एवं टेलीविजन के बीच रेडियो और टी वी के क्षेत्र में सहयोग के लिए प्रोटोकॉल

09.04.2000

थाईलैंड

35. भारत और थाईलैंड के बीच शान्ति प्रयोजनों के लिए आणविक ऊर्जा के प्रयोग के लिए सहयोग पर द्विपक्षीय करार

10.06.2000

10.06.2000

ट्यूनिशिया

36. भारत गणराज्य की सरकार और ट्यूनिशिया, गणराज्य की सरकार के बीच प्रत्यार्पण संधि

04.04.2000

14.06.2000

37. भारत गणराज्य के विदेश मंत्रालय और ट्यूनिशिया गणराज्य के विदेश मंत्रालय के बीच परामर्श पर समझौता-ज्ञापन

08.12.2000

08.12.2000

38. भारत गणराज्य की सरकार और ट्यूनिशिया गणराज्य की सरकार के बीच करार

08.12.2000

08.12.2000

टर्की

- | | | |
|---|------------|------------|
| 39. भारत गणराज्य की सरकार और टर्की गणराज्य की सरकार के बीच निवेश के आपसी संवर्धन और संरक्षण के संबंध में करार | 17.09.2000 | 28.07.2000 |
|---|------------|------------|

यूनाइटेड किंगडम

- | | | |
|---|------------|------------|
| 40. सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (नेशनल सैम्पल सर्वे आरगेनाइजेशन), भारत सरकार और लंदन स्कूल ऑफ इकानामिक्स के बीच समझौता ज्ञापन | 06.06.2000 | 06.06.2000 |
|---|------------|------------|

उज्बेकिस्तान

- | | | |
|---|------------|------------|
| 41. भारत गणराज्य की सरकार और उज्बेकिस्तान गणराज्य के बीच आपराधिक मामलों में पारस्परिक विधि सहायता पर संधि | 02.05.2000 | 02.05.2000 |
| 42. भारत गणराज्य की सरकार और उज्बेकिस्तान की सरकार के बीच क्रेडिट संधि | 02.05.2000 | 02.05.2000 |
| 43. भारत गणराज्य और उज्बेकिस्तान गणराज्य के प्रत्यार्पण संधि | 02.05.2000 | 02.05.2000 |
| 44. भारत गणराज्य की सरकार और उज्बेकिस्तान सरकार के बीच सूचना एवं जन संपर्क साधन में सहयोग पर प्रोटोकोल | 02.05.2000 | 02.05.2000 |
| 45. भारत गणराज्य की सरकार और उज्बेकिस्तान गणराज्य के संस्कृति मंत्रालय के बीच सहयोग पर प्रोटोकोल | 02.05.2000 | 02.05.2000 |
| 46. भारत गणराज्य की सरकार और उज्बेकिस्तान गणराज्य की सरकार के बीच उनके सीमा-शुल्क प्रशासनों के बीच पारस्परिक सहायता से संबंधित करार | 02.05.2000 | 02.05.2000 |
| 47. नेशनल इन्फार्मेशन एजेंसी ऑफ उज्बेकिस्तान और प्रैस ट्रस्ट ऑफ इंडिया के बीच पारस्परिक व्यावसायिक सहयोग पर करार | 02.05.2000 | 02.05.2000 |
| 48. भारत गणराज्य की सरकार और उज्बेकिस्तान गणराज्य की सरकार के बीच कृषि अनुसंधान और शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग संबंधी समझौता ज्ञापन | 02.05.2000 | |

परिशिष्ट X

वर्ष 2000 के दौरान प्रदान की गई पूर्ण शक्तियाँ

क्रम. सं.	अभिसमय/संधियाँ	पूर्ण शक्तियाँ प्रदान करने की तारीख
1.	भारत गणराज्य की सरकार और उज्बेकिस्तान गणराज्य की सरकार के बीच आपराधिक मामलों में पारस्परिक विधि सहायता संबंधी संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए गृह मंत्री श्री एल. के. आडवानी को पूर्ण शक्तियाँ प्रदान की गयी।	27.4.2000
2.	भारत सरकार और इटली गणराज्य की सरकार के बीच पर्यटन सहयोग पर करार में हस्ताक्षर करने के लिए वित्त मंत्री श्री यशवन्त सिन्हा को पूर्ण शक्तियाँ प्रदान की गई।	23.6.2000
3.	भारत गणराज्य की सरकार और स्वीडन किंगडम की सरकार के बीच निवेश के पारस्परिक संवर्धन और संरक्षण पर हस्ताक्षर करने के लिए आर्थिक कार्य विभाग के सचिव, डॉ. ई. ए. एस. सरना को पूर्ण शक्तियाँ प्रदान की गई।	7.8.2000
4.	आतंकवाद, 1999 के वित्तीय रूप से दमन करने संबंधी अन्तर्राष्ट्रीय अभिसमय पर हस्ताक्षर करने के लिए संयुक्त राष्ट्र में स्थायी प्रतिनिधि और भारत के राजदूत श्री कमलेश शर्मा को पूर्ण शक्तियाँ प्रदान की गई।	7.8.2000
5.	भारत, रूस और ईरान के बीच अन्तर्राष्ट्रीय “नार्थ-साऊथ” परिवहन कारीडोर संबंधी अंतर्संरकारी करार पर हस्ताक्षर करने के लिए भूतल परिवहन मंत्री श्री राजनाथ सिंह को पूर्ण शक्तियों प्रदान की गई।	8.9.2000
6.	भारत गणराज्य की सरकार और आयरलैंड सरकार के बीच आय और पूंजीगत लाभ के मामलों में वित्तीय-अपवंचन से वचने संबंधी करार पर हस्ताक्षर करने के लिए केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड के अध्यक्ष श्री ए. बाला सुब्राहमणियम को पूर्ण शक्तियाँ प्रदान की गई।	4.11.2000

7.	भारत सरकार और साइप्रस गणराज्य की सरकार के बीच हवाई सेवाओं से संबंध करार के लिए साइप्रस में भारत के आयुक्त, श्री बी. कौशिक को पूरी शक्तियाँ प्रदान की गईं।	20.11.2000
8.	आर्थिक, वैज्ञानिक, तकनीकी एवं सांस्कृतिक सहयोग और आर्थिक वैज्ञानिक, तकनीकी और सांस्कृतिक सहयोग के इराकी-भारतीय संयुक्त आयोग के कानून पर इराक-गणराज्य की सरकार और भारत गणराज्य की सरकार के बीच करार के लिए भारतीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री श्री राम नायक को पूरी शक्तियाँ प्रदान की गईं।	20.11.2000
9.	भारत गणराज्य के विदेश मंत्रालय और फिलीपीन्स के विदेश विभाग के बीच नीति परामर्श वार्ता पर समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के लिए विदेश मंत्रालय के सचिव (ई. आर.) श्री एस. टी. देवरे को पूर्ण शक्तियाँ प्रदान की गईं।	21.11.2000
10.	कार्टजीना प्रोटोकॉल ऑन बायोसेप्टी टू द कन्वेंशन ऑन बायोलॉजिकल डाइवर्सिटी पर हस्ताक्षर के लिए संयुक्त राष्ट्र में स्थायी प्रतिनिधि और भारत के राजदूत श्री कमलेश शर्मा को पूर्ण शक्तियाँ प्रदान की गईं।	2.12.2000
11.	भारत सरकार की ओर से डब्लू. टी. ओ. कानून पर सलाहकार केन्द्र स्थापित करने संबंधी करार पर नीदरलैंड के किंगडम में भारत के राजदूत श्री प्रभाकर मेनन को पूर्ण शक्तियाँ प्रदान की गईं।	8.12.2000
12.	भारत गणराज्य की सरकार और मंगोलिया के बीच आपराधिक मामलों में पारस्परिक विधि सहायता संबंधी संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए गृह मंत्री श्री एल. के. अडवाणी को पूर्ण शक्तियाँ प्रदान की गईं।	2.1.2000
13.	भारत गणराज्य की सरकार और मंगोलिया के बीच सिविल और वाणिज्यिक मामलों में विधि सहायता पर संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए विधि न्याय और कम्पनी मामले मंत्री श्री अरूण जेटली को पूर्ण शक्तियाँ प्रदान की गईं।	2.1.2000
14.	भारत गणराज्य की सरकार और मंगोलिया की सरकार के बीच निवेश संवर्धन और संरक्षण संबंधी करार पर हस्ताक्षर करने के लिए भारत की ओर से वित्त मंत्री श्री यशवन्त सिन्हा को पूर्ण शक्तियाँ प्रदान की गईं।	2.1.2000
15.	भारत सरकार और ग्रैंड डची ऑफ लक्जमबर्ग के बीच हवाई सेवाओं संबंधी करार के लिए भारत की ओर से नागर विमानन मंत्री श्री शरद यादव को पूर्ण शक्तियाँ प्रदान की गईं।	4.1.2000

परिशिष्ट XI

वर्ष 2000 के दौरान जारी किए गए अनुसमर्थन/सहमति के दस्तावेज

क्रम सं.	अभिसमय/संधियाँ	दस्तावेज की तारीख
1.	तेल प्रदूषण आकस्मिकताओं के मामले में समुद्रों पर हस्तक्षेप से संबद्ध अभिसमय	30.5.2000
2.	तेल प्रदूषण क्षति प्रतिपूर्ति के लिए अन्तर्राष्ट्रीय निधि की स्थापना से संबद्ध अन्तर्राष्ट्रीय अभिसमय में संशोधन के लिए 1992 का प्रोटोकोल	8.6.2000
3.	लोड लाइन्स, 1966 पर अन्तर्राष्ट्रीय अभिसमय से संबद्ध 1988 का प्रोटोकोल	26.7.2000
4.	'सेफ्टी ऑफ लाटूफ एट सी 1974 पर अन्तर्राष्ट्रीय अभिसमय से संबद्ध 1988 का प्रोटोकोल	28.7.2000
5.	डब्ल्यू टी ओ कानून पर सलाहकार केन्द्र स्थापित करने वाला करार	8.12.2000
6.	एशिया और प्रशान्त में उच्चतर शिक्षा में अध्ययन, डिप्लोमा और डिग्री पर क्षेत्रीय अभिसमय	14.6.2000
7.	भारत गणराज्य की सरकार और ट्यूनिशिया गणराज्य की सरकार के बीच प्रत्यर्पण संधि	14.6.2000
8.	भारत गणराज्य की सरकार और टर्की गणराज्य की सरकार के बीच निवेश पारस्परिक संवर्धन और संरक्षण से संबद्ध करार।	28.7.2000
9.	भारत गणराज्य की सरकार और थाईलैंड किंगडम की सरकार के बीच निवेश के पारस्परिक संवर्धन और संरक्षण से संबद्ध करार	15.12.2000
10.	भारत गणराज्य की सरकार और आस्ट्रिया गणराज्य की सरकार के बीच निवेश संवर्धन और संरक्षण से संबद्ध करार	15.12.2000
11.	भारत गणराज्य की सरकार और चीन लोक गणराज्य की सरकार के बीच स्वापक द्रव्यों और मन प्रभावी पदार्थों के दुर्व्यापार और अन्य अपराधों का मुकाबला करने संबंधी करार	5.1.2000
12.	भारत गणराज्य की सरकार और स्वीडन गणराज्य की सरकार के बीच निवेश संवर्धन और संरक्षण संबंधी करार	5.1.2000
13.	भारत गणराज्य की सरकार और पुर्तगाल गणराज्य के बीच पारस्परिक निवेश संवर्धन और संरक्षण संबंधी करार	5.1.2000

परिशिष्ट XII

अप्रैल 2000 के बाद से आयोजित प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन/बैठकें

क्र.सं.	संस्था/गैर सरकारी संस्थाएं	सेमिनार/सम्मेलन	स्थान/तारीख
1.	आई डी एस ए,* नई दिल्ली	II आई पी आई एस आई डी एस ए - वार्ता	तेहरान/मई, 2000
2.	आई डी एस ए, नई दिल्ली	सी एस सी ए पी 13वीं बैठक	कुआलालम्पुर/जून, 2000
3.	आई डी एस ए, नई दिल्ली	सी एस सी ए के अधीन इण्टल कार्यशाला	अल्माते/ जून, 2000
4.	आई डी एस ए, नई दिल्ली	उत्तर-पूर्व एशिया पर सी एस सी ए पी की कार्यशाला	उलान बटोर/ जून 2000
5.	आई डी एस ए, नई दिल्ली	भारत इजरायल द्विपक्षीय संगोष्ठी	नवम्बर, 2000
6.	आई डी एस ए, नई दिल्ली	सी एस सी ए पी समुद्री सहयोग कार्यशाला दल की बैठक	मनीला/जुलाई, 2000
7.	आई डी एस ए, नई दिल्ली	2000 के उत्तरार्ध के लिए सी एस सी ए पी कोष के लिए अंशदान	-
8.	जवाहरलाल नेहरू विश्व विद्यालय,** नई दिल्ली	भारत-जापान संबंध उभरती प्रवृत्तियां	नई दिल्ली/अगस्त, 2000
9.	जवाहरलाल नेहरू विश्व विद्यालय, नई दिल्ली	भारत-रूस संबंध : सामरिक साझेदारी : समस्याएं और संभावनाएं	नई दिल्ली/ नवम्बर, 2000
10.	जवाहरलाल नेहरू विश्व विद्यालय, नई दिल्ली	मध्य एशिया पर सातवें इण्टरनेशनल ई एस सी ए एस सम्मेलन में भागीदारी	वियना/सितम्बर, 2000
11.	भारत लातिन अमरीकी फाइल, नई दिल्ली	लातिन अमरीकी देशों पर 4 संगोष्ठियां	नई दिल्ली/जनवरी, फरवरी, मार्च और मई, 2000
12.	मीमेशा प्रोडक्शन नई दिल्ली	बंगलादेश प्रवासन अध्ययन के लिए परियोजना आरंभ करना और भारत में उत्तर पूर्वी क्षेत्र पर उसका प्रभाव	
13.	संयुक्त राष्ट्र की पश्चिमी बंगाल संध, कोलकाता	“नई सहस्रवर्ष में संयुक्त राष्ट्र की विश्व फैडरेशन फैडरेशन, कोलकाता एसोसिएशन का 36वां पूर्णकालिक अधिवेशन	कोलकाता/अप्रैल, 2000

14.	नेटवर्क फॉर चाइल्ड डवलपमेन्ट, नई दिल्ली	मानव सुरक्षा और छोटे हथियारों पर कटौती	नई दिल्ली/ अप्रैल, 2000
15.	सोसाइटी फॉर इण्डियन ओशन स्टडीज, नई दिल्ली	इण्डोनेशिया : नई शुरुआत	नई दिल्ली/ मई, 2000
16.	इण्डियन पुगवाश सोसाइटी, नई दिल्ली	नाभिकीय हथियारों का उन्मूलन	नई दिल्ली / नवम्बर, 2000
17.	यूनाइटेड स्कूल इण्टरनेशनल नई दिल्ली	आणविक ऊर्जा का शान्तिपूर्ण उपयोग	नई दिल्ली / अक्टूबर, 2000
18.	पांडिचेरी विश्वविद्यालय, पांडिचेरी	नई दशाब्दी में भारतीय विदेश नीति और सुरक्षा नीतियां : दक्षिण एशिया में चुनौतियां और अवसर	पांडिचेरी/दिसम्बर, 2000
19.	आई सी सी ओर, नई दिल्ली	सभ्यता, वार्ता और राष्ट्रीय पहचान	नई दिल्ली
20.	दक्षिण एशिया अध्ययन केन्द्र, जयपुर	भूटान पर दस्तावेज प्रस्तुत करने किए भूटान यात्रा	थिम्पू/ अगस्त, 2000
21.	इंस्टीट्यूट ऑफ मार्केटिंग एण्ड मैनेजमेन्ट, नई दिल्ली	दक्षिण ओर पूर्वी अफ्रीकी देशों के साथ विपणन सहयोग	नई दिल्ली/जनवरी, 2000
22.	इण्टरनेशनल इंस्टीट्यूट एशिया-पैसिफिक स्टडीज, नई दिल्ली	भारत-रूस संबंध : संभावनाएं और समस्याएं और रूस आज	नई दिल्ली/ सितम्बर, 2000
23.	मोलाना अबुल कलाम आजाद इंस्टीट्यूट ऑफ एशियन स्टडीज, कलकत्ता	मध्य एशिया पर VIIवें ई एस सी ए एस एम्मेलेन में भाग लेने	वियना/ सितम्बर, 2000
24.	इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डस्ट्रियल इकोनॉमिक्स, नई दिल्ली।	चुने हुए विकासशील देशों में आर्थिक सुधारों के प्रभाव पर अध्ययन करना	
25.	एशिया सेण्टर, बंगलौर	हिन्द महासागर पर सम्मेलन	बंगलौर/अक्टूबर, 2000
26.	विदेश नीति अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली	नई सहस्रब्दि में भारत - रूस एकजुटता	नई दिल्ली/सितम्बर, 2000
27.	ए आर एस पी *** नई दिल्ली	भारतीय मूल के सर्वाभौम लोगों का अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन	नई दिल्ली/जनवरी, 2000
28.	ए आर एस पी नई दिल्ली	फिजी पर समाचार बुलेटिन निकालने	-
29.	श्री के के एस राणा	सम्मेलन में भाग लेने माल्टा यात्रा	माल्टा/मार्च, 2000
30.	सी ए एस आई ***** अमरीका	वार्षिक आवर्ती अनुदान	-
31.	सेण्टर फॉर पालिसी रिसर्च, नई दिल्ली	द्विपक्षीय वार्ता के विलए म्यामां से आए शिष्टमण्डल की मेजबानी	नई दिल्ली/मार्च, 2001
* आई डी एस एस : रक्षा अध्ययन और विश्लेषण संस्थान			
** जे.एन.यू. जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय			
*** ए आर एस पी अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद			
**** सी ए एस आई पेन्सिलवानिया विश्वविद्यालय, अमरीका में सेण्टर फॉर एडवान्स्ड स्टडीज ऑफ इण्डिया			

परिशिष्ट XIII

आई टी ई सी/एस सी ए ए पी प्रोग्राम के तहत प्रशिक्षण आयोजित करने वाले संस्थानों के नाम

1. भारतीय प्रशासनिक स्टाफ कालेज, हैदराबाद	14. एशिया और प्रशांत अंतरिक्ष एवं प्रौद्योगिकी शिक्षा केन्द्र, देहरादून
2. भारतीय मानक ब्यूरो, नई दिल्ली	15. भारतीय उद्यमशीलता विकास केन्द्र, अहमदाबाद
3. संसदीय अध्ययन एवं प्रशिक्षण ब्यूरो, नई दिल्ली	16. इलेक्ट्रॉनिक व्यापार एवं प्रौद्योगिकी विकास कारपोरेशन लि., नई दिल्ली - 110021
4. भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक, नई दिल्ली	17. द्रव नियंत्रण शोध संस्थान, पालघाट, केरल
5. सेन्टर मोहली पंजाब	18. हिन्दुस्तान मशीन टूल्स (अंतर्राष्ट्रीय) लि; बंगलौर
6. केन्द्रीय उर्वरक गुणवत्ता नियंत्रण एवं प्रशिक्षण संस्थान, फरीदाबाद	19. मानव आवास प्रबंधन संस्थान, नई दिल्ली
7. केन्द्रीय खादय प्रौद्योगिकी शोध संस्थान, मैसूर	20. अप्लाइड मानव शक्ति शोध संस्थान, नई दिल्ली
8. केन्द्रीय अंग्रेजी और विदेशी भाषा संस्थान, हैदराबाद	21. सरकारी लेखा एवं वित्त संस्थान, नई दिल्ली
9. केन्द्रीय उपकरण डिजाइन संस्थान, हैदराबाद	22. भारतीय विदेश व्यापार संस्थान, नई दिल्ली
10. कम्प्यूटर अनुरक्षण निगम लि, नई दिल्ली	23. भारतीय विधिक मौसम-विज्ञान संस्थान, रांची, झारखण्ड
11. केन्द्रीय पोल्ट्री प्रशिक्षण संस्थान, बंगलौर	24. भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली
12. केन्द्रीय वैज्ञानिक उपकरण संगठन, नई दिल्ली	25. भारतीय पैकेजिंग संस्थान, मुंबई
13. केन्द्रीय रेशम अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, मैसूर	

26. भारतीय पेट्रोलियम प्रबंधन संस्थान, कनसबहल, उड़ीसा
27. भारतीय दूर-संवेदी संस्थान, देहरादून
28. भारतीय ईख अनुसंधान संस्थान, लखनऊ
29. अंतर्राष्ट्रीय प्रबंधन संस्थान, नई दिल्ली
30. अंतर्राष्ट्रीय संख्यिकी शिक्षा केन्द्र, कोलकाता
31. सचिवालय प्रशिक्षण एवं प्रबंधन संस्थान, नई दिल्ली
32. राष्ट्रीय अपराध रेकार्ड ब्यूरो, नई दिल्ली
33. राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल (हरियाण)
34. राष्ट्रीय बैंक प्रबंधन संस्थान, पुणे
35. भारतीय शिक्षण योजना और प्रशासनिक संस्थान
नई दिल्ली-110016
36. राष्ट्रीय उद्यमी एवं लघु वाणिज्य विकास संस्थान,
नई दिल्ली।
37. एन आई आई टी लि., नई दिल्ली
38. राष्ट्रीय समुद्रविज्ञान संस्थान, गोवा

39. राष्ट्रीय औषधीय शिक्षण तथा अनुसंधान संस्थान, मोहाली
40. राष्ट्रीय लघु उद्योग विस्तार प्रशिक्षण संस्थान, हैदराबाद
41. उत्तरी क्षेत्र फार्म मशीनरी प्रशिक्षण एवं परीक्षण संस्थान,
हिसार (हरियाणा)
42. पेट्रोलियम इन्डिया इन्टरनेशनल, मुंबई
43. डाक प्रशिक्षण केन्द्र, मैसूर
44. निर्गुट एवं अन्य विकासशील देशों के लिए
शोध और सूचना प्रणाली, नई दिल्ली
45. दक्षिण भारत कपड़ा अनुसंधान संघ, कोयंबटूर
46. टाटा इन्फोटेक लि. नई दिल्ली
47. तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, चेन्नई
48. वी वी गिरी राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नोएडा, (यू पी)
49. भारतीय वन्य जीव संस्थान, देहरादून
50. जल संसाधन विकास प्रशिक्षण केन्द्र, रूड़की

आईटेक कार्यक्रम के अन्तर्गत शामिल देशों की सूची (30.11.2000 तक)

क्र. सं.	देश का नाम	मिशन का नाम	स्थान
1.	अफगानिस्तान	भारत का राजदूतावास, काबुल	मिशन बंद
2.	अल्बानिया	भारत का राजदूतावास, बुरवारेस्ट	4
3.	अल्जीरिया	भारत का राजदूतावास, अल्जीयर्स	6+3*
4.	अंगोला	भारत का राजदूतावास, लुआंडा	पूल
5.	अंगुला	भारत का उच्चायोग, पोर्ट आफ स्पेन	पूल
6.	एंटीगुआ और बरबूडा	भारत का उच्चायोग, पोर्ट आफ स्पेन	पूल+10 #
7.	अर्जेन्टिना	भारत का राजदूतावास, ब्यूनस आयर्स	*
8.	अर्मेनिया	भारत का राजदूतावास, येरेवान	10
9.	अर्जेन्टिना	भारत का राजदूतावास, बाकू	10
10.	बहमास	भारत का राजदूतावास, वशिंगटन	10 #
11.	बहरीन	भारत का राजदूतावास, बहरीन	5
12.	बंगलादेश	भारत का उच्चायोग, ढाका	41
13.	बरवाडोस	भारत का राजदूतावास, पारामरिबो	5+10 #
14.	बेलारूस	भारत का राजदूतावास, मिस्क	0
15.	बेलिज	भारत का राजदूतावास, मैक्सिको	5+10 #
16.	बेनिन	भारत का उच्चायोग, लागोस	2
17.	भूटान	भारत का राजदूतावास, थिम्पु	20
18.	बोलीविया,	भारत का राजदूतावास, लिमा	2
19.	बोस्निया हर्जगोविना	भारत का राजदूतावास, बुडापेस्ट	पूल
20.	ब्राजील	भारत का राजदूतावास, ब्रासिलिया	3*

21.	बुनेई दारूसलेम	भारत का उच्चायोग, बुनेई दारूसलेम	10**
22.	बुल्गारिया	भारत का राजदूतावास, सोफिया	5
23.	बुरकिना फासो	भारत का राजदूतावास, ओगाडुगु	10
24.	बुरुंडी	भारत का उच्चायोग, कम्पाला	पूल
25.	कम्बोडिया	भारत का राजदूतावास, नॉम-पेन्ह	22+10**
26.	केप वर्डी द्वीप	भारत का राजदूतावास, डकर	पूल
27.	केमन द्वीप	भारत का उच्चायोग, किंग्सटन	पूल
28.	मध्य अफ्रीकी गणराज्य	भारत का उच्चायोग, अकरा	पूल
29.	चाड	भारत का उच्चायोग, लागोस	पूल
30.	चिली	भारत का राजदूतावास, संतियागो	3*
31.	कोलंबिया	भारत का राजदूतावास, बगोटा	पूल
32.	कोमोरोस	भारत का राजदूतावास, अंतानानारिबो	5
33.	कांगो	भारत का राजदूतावास, लुआंडा	पूल
34.	कोस्टारिका	भारत का राजदूतावास, बोगोटा	पूल+10#
35.	क्रोएशिया	भारत का राजदूतावास, जगरेब	पूल
36.	क्यूबा	भारत का राजदूतावास, हवाना	20
37.	चेक गणराज्य	भारत का राजदूतावास, प्राग	5
38.	दजिबूती	भारत का राजदूतावास, आदिस अबाबा	2
39.	सी डब्ल्यू ऑफ डोमिनिका	भारत का उच्चायोग, जार्जटाउन	पूल+10#
40.	डोमिनिकन गणराज्य	भारत का उच्चायोग, किंग्सटन	10+3*
41.	मिस्र	भारत का राजदूतावास, काहिरा	
42.	अल सल्वाडोर	भारत का राजदूतावास, पनामा	पूल+10#
43.	इरीट्रिया	भारत का राजदूतावास, आदिस अबाबा	पूल
44.	इस्टोनिया	भारत का राजदूतावास, हेलसिंकी	पूल
45.	इथोपिया	भारत का राजदूतावास, आदिस अबाबा	20
46.	फिजी	भारत का उच्चायोग, सुवा	10+10#
47.	जार्जिया	भारत का राजदूतावास, कीव	10
48.	ग्रेनाडा	भारत का उच्चायोग, पोर्ट ऑफ स्पेन	पूल+10#
49.	ग्वाटेमाला	भारत का राजदूतावास, मैक्सिको	पूल

50.	गुयाना	भारत का राजदूतावास, आबिदजान	5
51.	गिनी बिसाउ	भारत का राजदूतावास, डकार	पूल
52.	गुयाना	भारत का राजदूतावास, जार्जटाउन	15+10#
53.	हैती	भारत का उच्चायोग, किंग्सटन	5
54.	होङ्गरास	भारत का राजदूतावास, मैक्सिको	पूल+10#
55.	हंगेरी	भारत का राजदूतावास, बुडापेस्ट	2
56.	इन्डोनेशिया	भारत का राजदूतावास, जकार्ता	20+3*+10**
57.	इराक	भारत का राजदूतावास, बगदाद	70
58.	आइवरी कोस्ट	भारत का राजदूतावास, आबिदजान	10
59.	जमैका	भारत का उच्चायोग, किंग्सटन	10+3*+10#
60.	जोर्डन	भारत का राजदूतावास, अम्मान	5
61.	कजाकस्तान	भारत का राजदूतावास, अल्माती	80
62.	किर्गीस्तान	भारत का राजदूतावास, विशकेक	50
63.	लाओ लोकतांत्रिक जन गणराज्य	भारत का राजदूतावास, विएनतिएन	31+10**
64.	लात्विया	भारत का राजदूतावास, स्टोकहोम	4
65.	लेबनान	भारत का राजदूतावास, बेरूत	2
66.	लाइबेरिया	भारत का राजदूतावास, अकरा	5
67.	लिबिया	त्रिपोली	10
68.	लिथुआनिया	भारत का राजदूतावास, मिंस्क	10
69.	मेकेडोनिया	भारत का राजदूतावास, सोफिया	5
70.	मेडागास्कर	भारत का राजदूतावास, अंतानानारिबो	15
71.	मलेशिया	भारत का उच्चायोग, क्वालालम्पुर	10+3*+10**
72.	मालदीव	भारत का उच्चायोग, माले	10
73.	माली	भारत का राजदूतावास, डकर	पूल
74.	मार्शल द्वीप	भारत का राजदूतावास, मनीला	पूल+10#
75.	मारितानिया	भारत का राजदूतावास, डकर	पूल
76.	मैक्सिको	भारत का राजदूतावास, मैक्सिको	4+3*+10#
77.	माइक्रोनेशिया	भारत का राजदूतावास, टोक्यो	5+10#
78.	मल्दोवा	भारत का राजदूतावास, बुरवारेस्ट	2

79.	मंगोलिया	भारत का राजदूतावास, उलान बटोर	35
80.	मॉरिसेट	भारत का उच्चायोग, पोर्ट आफ स्पेन	पूल
81.	मोरक्को	भारत का राजदूतावास, रबात	10
82.	म्यामां	भारत का राजदूतावास, यांगोन	40+10**
83.	नेपाल	भारत का राजदूतावास, काठमान्डू	30
84.	निकरागुआ	भारत का राजदूतावास, पनामा	पूल+10
85.	नाइजर	भारत का राजदूतावास, आबिदजान	5
86.	ओमान	भारत का राजदूतावास, मस्कट	10
87.	पलाऊ	भारत का राजदूतावास, मनीला	पूल
88.	फिलीस्तीन	आर पी आई, गजा सिटी	8
89.	पनामा	भारत का राजदूतावास, पनामा	15+10#
90.	पपुआ न्यू गिनी	भारत का उच्चायोग, पोर्ट मोर्सबी	12+10#
91.	पेरू	भारत का राजदूतावास, लीमा	पूल
92.	फिलीपींस	भारत का राजदूतावास, मनीला	15+10
93.	पोलैंड	भारत का राजदूतावास, वारसा	पूल
94.	कतर	भारत का राजदूतावास, दोहा	पूल
95.	रोमानिया	भारत का राजदूतावास, बुखारेस्ट	10
96.	रूसी परिसंघ	भारत का राजदूतावास, मास्को	70
97.	रवांडा	भारत का राजदूतावास, कम्पाला	10
98.	समोआ	भारत का उच्चायोग, वेलिंगटन	10#
99.	सेनेगल	भारत का राजदूतावास, डकार	10+3*
100.	सिंगापुर	भारत का उच्चायोग, सिंगापुर	10**
101.	स्लोवाक गणराज्य	भारत का राजदूतावास ब्रातिस्लावा	5
102.	सोलोमन द्वीप	भारत का उच्चायोग, कैनबरा	पूल+10#
103.	श्री लंका	भारत का उच्चायोग, कोलम्बो	50
104.	सेंट किट्स और नेविस	भारत का उच्चायोग, पोर्ट आर्फ स्पेन	पूल+10#
105.	सेंट लूसिया	भारत का उच्चायोग, जार्जटाउन	पूल
106.	सेंट विंसेंट और ग्रेनेडाइन्स	भारत का उच्चायोग, जार्जटाउन	पूल+10
107.	सूडान	भारत का राजदूतावास, खर्तूम	35

108.	सूरीनाम	भारत का राजदूतावास, पारामारिवो	15
109.	सीरिया	भारत का राजदूतावास, दमश्क	25
110.	ताजिकिस्तान	भारत का राजदूतावास, दुशान्बे	10
111.	थाईलैंड	भारत का राजदूतावास, बैंकाक	14+10**
112.	टोगो	भारत का उच्चायोग, अकरा	पूल
113.	टोंगा	भारत का उच्चायोग, सूवा	पूल
114.	ट्रिनिडाड और टोबैगो	भारत का उच्चायोग, पोर्ट आफ स्पेन	10
115.	ट्यूनीशिया	भारत का राजदूतावास, ट्यूनिश	2
116.	तुर्कमेनिस्तान	भारत का राजदूतावास, अश्गाबाद	20
117.	तुर्कस और साइकोस द्वीप	भारत का उच्चायोग, किंग्सटन	पूल
118.	यूक्रेन	भारत का राजदूतावास, कीव	10
119.	उजबेकिस्तान	भारत का राजदूतावास, ताशकन्द	80
120.	वनुआत	भारत का उच्चायोग, कैनबेरा	10#
121.	वेनेजुएला	भारत का राजदूतावास, कराकस	पूल+3*
122.	वियतनाम	भारत का राजदूतावास, हनोई	100+10**
123.	यमन	भारत का राजदूतावास, साना	25
124.	जायरे	भारत का राजदूतावास किंशाशा	मिशन बंद

संक्षेप

आईटेक	-	भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग
एच सी आई	-	भारतीय उच्चायोग
ई ओ आई	-	भारत का राजदूतावास
आर ओ आई	-	भारत का प्रतिनिधि

टिप्पणी

* 3 अतिरिक्त स्लाट जी-15 देश को आबंटित किए गए।

** 10 अतिरिक्त स्लाट आसियान देश को आबंटित किए गए।

10 अतिरिक्त स्लाट तकनीकी सहयोग के लिए विशेष निधि के अन्तर्गत आबंटित किए गए।

पूल - किसी निश्चित संख्या में स्थान आवंटित नहीं किया गया है परन्तु आवश्यकतानुसार प्रशिक्षण की व्यवस्था की जा सकती है।

परिशिष्ट XV

स्काप कार्यक्रम के अन्तर्गत आने वाले देशों की सूची (30.11.2000 तक)

क्र. सं.	देश का नाम	मिशन का नाम	सीटें	
1.	बोत्सवाना	भारत का हाई कमीशन, गोबोरोन	15	
2.	कैमरून	भारत का हाई कमीशन, लागोस	पूल	
3.	गाम्बिया	भारत का राजदूतावास, डकर	5	
4.	धाना	भारत का हाई कमीशन, अकरा	50	
5.	कीनिया	भारत का हाई कमीशन, नैरोबी	40+3*	
6.	लेसोथो	भारत का हाई कमीशन, प्रिटोरिया	10	
7.	मलावी	भारत का हाई कमीशन, हरारे	15	
8.	मारीशस	भारत का हाई कमीशन, पोर्टलुई	50	
9.	मौजाम्बिक	भारत का हाई कमीशन, मापुतो	5	
10.	नामीबिया	भारत का हाई कमीशन, विंडहाक	15	
11.	नाईजीरिया	भारत का हाई कमीशन, लागोस	40+3	संक्षिप्तियाँ
12.	सेशेल्स	भारत का हाई कमीशन, माहे	5	स्काप - विशेष राष्ट्र मण्डल अफ्रीकी सहायता योजना
13.	सिएरा लियोन	भारत का राजदूतावास, आबिदजान	पूल	
14.	दक्षिण अफ्रीका	भारत का हाई कमीशन, प्रिटोरिया	60	एच सी आई - भारत का हाई कमीशन
15.	स्वाजीलैंड	भारत का हाई कमीशन, मापूतो	पूल	ई ओ आई - भारत का राजदूतावास
16.	तंजानिया	भारत का हाई कमीशन, डार-एस सलाम	45	
17.	उगांड	भारत का हाई कमीशन, कम्पाला	55	* जी - 15 सदस्य देश के रूप में 3 सीटें अर्जित।
18.	जाम्बिया	भारत का हाई कमीशन, लुसाका	50	
19.	जिम्बावे	भारत का हाई कमीशन, हरारे	30+3*	

परिशिष्ट XIV

8 जनवरी 2001 से आरम्भ हो रहे नई दिल्ली में 41वें राष्ट्रीय रक्षा कॉलेज (एन डी सी) पाठ्यक्रम में विदेशी भागीदारी

क्र. सं.	देश का नाम	स्लॉटों की संख्या	श्रेणी	क्र. सं.	देश का नाम	स्लॉटों की संख्या	श्रेणी
1.	नेपाल	01(01)	एस एपी	14.	यू एस ए	01(01)	एस एफ एस
2.	श्रीलंका	02(02)	एस एपी	15.	आर ओ के	01(01)	एस एफ एस
3.	बंगलादेश	02(02)	आईटेक-I	16.	ईरान	01(01)	एस एफ एस
4.	म्यामां	01(01)	आईटेक-I	17.	ओमान	02(02)	एस एफ एस
5.	इंडोनेशिया	01(01)	आईटेक-I	18.	जर्मनी	01(01)	एस एफ एस
6.	वियतनाम	01(01)	आईटेक-II	19.	आस्ट्रेलिया	01(01)	एस एफ एस
7.	मलेशिया	01(01)	आईटेक-II	20.	यू ए ई	01(01)	एस एफ एस
8.	फिलीपीन्स	01(01)	आईटेक-II	21.	रोमानिया	01(01)	एस एफ एस
9.	रूस	01(01)	आईटेक-I	22.	बोत्सवाना	01(01)	एस एफ एस
10.	तंजानिया	01(01)	आईटेक-I	23.	फ्रांस	01(01)	एस एफ एस
11.	यू.के	01(01)	परस्पर		कुल	21 सीटें	
12.	ब्रेनुई	01(01)	आपसी		(18.12.2000 की स्थिति के अनुसार)		
13.	नाईजीरिया	01(01)	एस एफ एस				

परिशिष्ट XVII

56वें डी. एस. एस. सी. पाठ्यक्रम वेलिंगटन में (जून 2000) में विदेशी भागीदारी

क्र.स.	देश	सैना	नौ सैना	वायु सैना	कुल	श्रेणी
1.	बंगलादेश	01	01	01	03(03)	परस्पर
2.	श्रीलंका	02	01	01	04(04)	एस एपी
3.	नेपाल	02	-	-	02(02)	एस एपी
4.	भूटान	01	-	-	01(01)	एस एपी
5.	म्यांमा	01	-	-	01(01)	आईटेक-I
6.	उजबेकिस्तान	02	-	-	02(02)	आईटेक-I
7.	किर्गीजस्तान	01	-	-	01(01)	आईटेक-I
8.	चेक गणराज्य	01	-	-	01(01)	आईटेक-II
9.	इंडोनेशिया	-	01	-	01(01)	आईटेक-I
10.	वियतनाम	01	-	-	01(01)	आईटेक-II
11.	लाओ पीडी आर	01	-	-	01(01)	आईटेक-II
12.	मलेशिया	-	-	01	01(01)	आईटेक-III
13.	सिंगापुर	01	-	-	01(01)	एस एफ एस

14.	आर ओ के	-	01	-	01(01)	एस एफ एस
15.	ओमान	01	-	-	01(01)	एस एफ एस
16.	कतर	01	-	-	01(01)	एस एफ एस
17.	कुवैत	01	-	-	01(01)	एस एफ एस
18.	सीरिया	-	-	01	01(01)	आई टेक-II
19.	फिलीस्तीन	01	-	-	01(01)	एस एपी
20.	फ्रांस	-	-	01	01(01)	परस्पर
21.	यू के	01	01	01	03(03)	परस्पर
22.	बोत्सवाना	01	-	-	01(01)	आईटेक-II
23.	नाइजीरिया	01	-	-	01(01)	आईटेक-II
24.	सेसेल्स	-	01	-	01(01)	आईटेक-II
25.	तंजानिया	-	-	01	01(01)	आईटेक-I
26.	दक्षिण अफ्रीका	01	-	-	01(01)	आईटेक-II
27.	केन्या	01	-	-	01(01)	एस एफ एस
28.	यू एस ए	01	-	01	02(02)	एस एफ एस/परस्पर
कुल						33 सीटें

परिशिष्ट XVIII

वर्ष 2000-01 के दौरान आईटेक के कार्यक्रम के अन्तर्गत सामान्य प्रशिक्षण सीटों (सैना, नौसेना और वायुसेना) का आवंटन और उपयोगी स्वीकृति (एन. डी. सी. और डी. एस. एस. सी. सीटों को छोड़कर)

(30.11.2000 की स्थिति के अनुसार)

क्र. सं.	देश	आवंटित सीटें	उपयोग/स्वीकृति	क्र. सं.	देश	आवंटित सीटें	उपयोग/स्वीकृति
1.	बंगलादेश	36 सीटें	36 सीटें	11.	धाना	15 सीटें	प्रतिशत
2.	म्यांमा	20 सीटें	19 सीटें	12.	तंजानिया	03 सीटें	02 सीटें
3.	मारीशस	37 सीटें	37 सीटें	13.	नाईजीरिया	06 सीटें	02 सीटें
4.	इंडोनेशिया	11 सीटें	11सीटें	19.	कजाकस्तान	04 सीटें	04 सीटें
5.	वियतनाम	17 सीटें	10 सीटें	20.	किर्गीजस्तान	07 सीटें	प्रतीशित
6.	कम्बोडिया	04 सीटें	04 सीट	21.	ट्रिनीडाड एण्ड	02 सीटें	02 सीटें
7.	लाओ पी डी आर	03 सीटें	03 सीटें	22.	जमैका	02 सीटें	02 सीटें
8.	मलेशिया	09 सीटें	06 सीटें	23.	सेनेगल	02 सीटें	01 सीटें
9.	रोसेल्स	12 सीटें	12 सीटें	24.	मंगोलिया	07 सीटें	04 सीटें
10.	बोत्सवाना	05 सीटें	प्रतिशत		कुल	222 सीटें	171 सीटें
				(18.12.2000 की स्थिति के अनुसार)			

परिशिष्ट XIX

वर्ष 2000-01 के दौरान स्व वित्तपोषण योजना के दहत सामान्य प्रशिक्षण सीटें (सेना, नौसेना और वायुसेना) का आवंटन और उपयोगी स्वीकृति (एन. डी. सी. और डी. एस. एस. सी. सीटों को छोड़कर)

क्र.स.	देश	अवंटित	सीटें उपयोगी स्वीकृति	क्र.स.	देश	अवंटित	सीटें उपयोगी स्वीकृति
1.	बंगलादेश	03 सीटें	शून्य	9.	ओमान	08 सीटें	04 सीटें
2.	इण्डोनेशिया	03 सीटें	शून्य	10.	कीनिया	08 सीटें	01सीटें
3.	बोत्सवाना	22 सीटें	03 सीटें	11.	उगांडा	20 सीटें	08 सीटें
4.	धाना	50 सीटें	शून्य	12.	यू ए ई	03 सीटें	03 सीटें
5.	तंजानिया	09 सीटें	01 सीटें	13.	थाईलैण्ड	05 सीटें	शून्य
6.	मरीशस	07 सीटें	02 सीटें		कुल	187 सीटें	37 सीटें
7.	नाईजीरिया	32 सीटें	14 सीटें				
8.	यू एस ए	02 सीटें	01 सीटें				

(18.12.2000 की स्थिति के अनुसार)

परिशिष्ट XX

विदेशों में भारतीय समुदाय की संख्या देश वार

देश	भारतीय समुदाय की कुल संख्या	भारतीय मूल के लोग	भारतीय नागरिक	राज्य विहीन	देश	भारतीय समुदाय की कुल संख्या	भारतीय मूल के लोग	भारतीय नागरिक	राज्य विहीन
अल्जीरिया	26	5	21		ब्रुनेई	7600	500	7000	100
अंगोला	295	45	250		बल्गारिया	220			
अर्जेंटीना	1000	700	300		बुरुकीनाफासो				
आर्मेनिया	200		200		बुरुंडी	300			
आस्ट्रेलिया	91105	61807	29298		कम्बोडिया	155			
अजरबैजान	300				कैमरून	300			
आस्ट्रिया	12342	3504	8838		कनाडा	700000		150000	
बहरीन	130000		130000		केपवर्दे	1			
बंगलादेश	1000				चाड	30			
बेलारूस	100				चिली	650	39		
बेनिन	500				चीन (हांग कांग)	28500	6500	22000	
बेल्जियम	7000				चीन		5	300	
भूटान	1500		150		कोलम्बिया	20	1	19	
बोत्स्वाना	9000	3000	6000		कोमोरोस	50			
ब्राजील	1600				कोस्टारिका	16	1	15	

कोट डी आईवरी	250				जापान	2500			
क्रोएशिया	10	10			जोर्डन	930	30	900	
क्यूबा					कजाकस्तान	1127		1127	
साईप्रस	300				कीनिया	102500	85000	15000	2500
चेक गणराज्य	420	20	400		कोरिया (डी पी आर के)	5		5	
डेनमार्क	2252	1000	1252		कोरिया (आर ओ के)	1881	950	931	
एक्वाडोर	5		5		कुवैत	288589	1000	287589	
मिस्र	1390	40	1350		किर्गीजस्तान	122	100		
इथोपिया	125				लाओ (पी डी आर)				
फिजी	336830	336579	250		लेबनान	11025	25	11000	
फिन्लैंड	1170	410	750	10	लीबिया	12000			
फ्रांस	40000				लिथुआनिया	5			
गाम्बिया	80				मेडागास्कर	29000	25000	3000	1000
जर्मनी	40000				मलेशिया	1665000	1600000	15000	50000
यूनान	7000				मालदीव	9000			
गयाना	400000				मारीशस	715756	704640	11116	
हंगरी					मेक्सिको	150			
इंडोनेशिया	55000	50000	5000		मोरक्को	375	25	350	
इरान	800		800		मंगोलिया	35		35	
ईराक	80				मोरक्को	375	25	350	
आयरलैंड	100				मौजाम्बिक	20000		870	
इस्राइल	45500				म्यांमा	2920000	250000	2000	400000
इटली	38000				नामीबिया	150			
जमैका	61500	60000	1500		नेपाल				

नीदरलैण्ड	18500	1500	15000	2000	श्री लंका	338051	337620	431	
न्यूजीलैण्ड	55000	50000	5000		सूडान	1560	1200	360	
नाईजीरिया	30000				सूरीनाम	160208	160000	208	
नार्वे	5630				स्वीडन	10842	9244	1598	
ओमान	312205	1000	311205		स्विट्जरलैण्ड	13500	8400	4800	300
पनामा	10164	211	1953	8000	सीरिया	500			
पपुआ न्यू गिनी	800				ताजिकिस्तान	450		450	
पेरू	155	5	150		तंजानिया	95000	90000	5000	
फिलीपीन्स	38500	24000	2000	12500	थाईलैण्ड	60000	40000	10000	10000
पोलैण्ड	600				ट्रिनीडाड एवं टोबागो	520000			
पुर्तगाल	70000		4500		ट्यूनीशिया	24		24	
कतर	125000		125000		तुर्की	300			
रोमानिया	491	2	489		उगांडा	15000			
रवांडा	500				उक्रेन	4000			
रूस	16000	16000			यू.ए.ई	1200000		1200000	
रियूनियन	220055	220000	55		यू.के.	1000000			
द्वीपसमूह					यूएसए	1500000			
सऊदी अरब	1500000		1500000		ऊजबेकिस्तान	650			
सेनेगल	50	13			वेनेजुएला	3400			
शैसेल्स	7500	5000	2500		वियतनाम	330		320	10
सिंगापुर	217000		90000		यमन	109000	100000	9000	
स्लोवाकिया	100		100		जाम्बिया	15000	8900		
दक्षिण अफ्रीका	1092300	2000			जिम्बावे	16700	15500	1200	
स्पेन	30000	16000	14000						

